रीतिकाल के काव्यों में प्रयुक्त अरबी-फारसी शब्दों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन"

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल् उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध)

निर्देशक :

डा० सत्य प्रकाश मिश्र,

रीडर (हिन्दी विभाग)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

शोधकर्त्री

श्रीमती सावित्री पाण्डेय

(एम० ए० हिन्दी)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

हिन्दी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

1991

विषय-सूची

संकेत-सूची

कवि	रचनाका नाम	संकेत	पृ० से पृ० तक
आलम	आलम केलि	1	1 — 152
	माधवानल कामकंदला	2	1 — 94
केशव	रसिक प्रिया	1	
	वीर चरित्र	2	
	रतनबावनी	3	
	जहाँगीर जसचन्द्रिका	4	
	विज्ञानगीत	5	
	रामचन्द्रिका	6	
	छंद माला	7	
	शिख-नख	8	
	कविप्रिया	9	
कृपाराम	हिततरंगिणी	1	
गंग	गंगकवित्त	1	
ग्वाल	ग्वाल रत्नावली	1	
	ग्वाल काव्य संकलन	2	
घनानन्द	घनानन्द रत्नावली	1	
चन्द्रशेखर	हम्मीरहठ — ह०ह०	1	
चिन्तामणि	कृष्ण उल्लास	1	

कवि	रचना का नाम	संकेत	पृ० से पृ० तक
जसवंत सिंह	भाषाभूषण	1	
	दोवा	2	
	प्रबोध नाटक	3	
	आनन्द विलास	4	
	अनुभव प्रकाश	5	
	अपरोक्ष सिद्धान्त	6	
	सिद्धान्त बोध	7	
	सिद्धान्त सार	8	
	छूटक दोहा	9	
	श्रीभगवद्गीता (टीकाभाषा)	10	
	गीता महात्म्य	11	
ठाकुर	ठाकुर शतक	1	
तोष	सुधानिधि	1	
देव	भावविलास	1	
	रसविलास	2	
	सुमिल बिनोद	3	
देव ग्रंथावली	अष्टयाम	1	
	देवचरित्र	2	
	देवमाय प्रपंच	3	
	वैराग्यशतक	4	
	प्रेमचन्द्रिका	5	
	सुख सागर तरंग	6	
	काव्य रसायन	7	
	कुशल विलास	8	

कवि	रचना का नाम	संकेत	पृ० से पृ० तक
देव ग्रन्थावली	जयसिंह विनोद	9	
	भवानी विलास	10	
	भाव विलास	11	
	रस विलास	12	
	वैराग्य शतक में आत्म-दर्शन पच्चीसी	13	
	वैराग्यशतक में जगदर्शन	14	
	वैराग्यशतक में तत्वदर्शन	15	
	वैराग्यशतक में प्रेम-पच्चीसी	16	
	सुमिल विनोद	17	
नागरीदास	नागरीदास ग्रंथावली—		
	पद प्रबोध माला	1	1—15
	बनजर प्रशंसा	2	16—31
	ब्रजलीला	3	31—42
	गोपीप्रेम प्रकाश	4	53—60
	रामचरित्र माला	5	61—79
	छूटक पद	6	80—116
	उत्सव माला	7	117-219
	पद मुक्तावली	8	220—512
	पद मुक्तावलीका शेषांश	9	513—522
पजनेस	पजनेस प्रकाश	1	
पद्माकर	पद्माकर ग्रंथावली —		
	अनूपगिरि हिम्मत बहादुर की विरुदावली	1	
	पद्माभरण	2	

कवि	रचना का नाम	संकेत	पृ० से० पृ० तक
पद्माकर ग्रंथावली	जगद्विनोद	3	
	प्रबोध पचासा	4	
	गंगा लहरी	5	
	प्रताप सिंह विरुदावली	6	
	कलि पचीसी	7	
	प्रकीर्णक	8	
बिहारी	बिहारी सतसई	1	
बेनी प्रवीण	नवरस तरंग	1	
बोधा	बोधा ग्रंथावली —		
	विरही सुभान दंपति विलास या (इश्कनामा)	1	
	माधवानल कामकंदला चरित्र या विरहवारिश	2	
भिखारीदास	भिखारीदास ग्रन्थावली प्रथम खंड —		
	रस सारांश	1	
	शृंगार निर्णय	2	
	छन्दार्णव	3	
	भिखारीदास ग्रंथावली : द्वितीय खंड —		
	काव्य निर्णय	4	
भूषण	भूषण ग्रंथावली —		
	शिवराजभूषण	1	1–111
	शिवाबावनी	2	111–129
	छत्रसाल दशक	3	129–135
	स्फुट काव्य	4	135–153

कवि	रचना का नाम	संकेत	पृ० से पृ० तक
मतिराम	मतिराम ग्रंथावली –		
	रसराज	1	201–296
	ललितललाम	2	199–366
	फूल मंजरी	3	429–435
	मतिराम सतसई	4	369–426
रघुनाथ	दूषण उल्लास	1	
रसखान	प्रेमवाटिका	1	
	रसखान काव्य	2	
रसलीन	रसलीन ग्रंथावली –		
	रस प्रबोध	1	1–210
	अंग दर्पण	2	210–251
	मुतफरिक कवित्त या फुटकल कवित्त	3	302
	स्फुट दोहे	4	
वृन्द	वृन्द ग्रंथावली –		
	सम्मेत शिखर न्छन्द	1	1
	बारहमासा	2	2
	अक्षरादि दोहे	3	5
	भाव पंचाशिका	4	12
	शृंगार शिक्षा	5	35
	नैन बत्तीसी	6	26
	पवन पच्चीसी	7	51
	वचनिका अथवा रूपसिंह की वार्ता	8	115
	सत्य स्वरूप रूपक	9	262

कवि	रचना का नाम	संकेत	पृ0 से पृ0 तक
वृन्द	नीति सतसई	10	58
	यमक सतसई	11	204
	हितोपदेशाष्टक	12	304
	भाषा हितोपदेश	13	
	पुष्कराष्टक	14	307
	भारत कथा	15	308
	स्फुट छन्द	16	310
सेनापति	कवित्त रत्नाकर	1	
सोमनाथ	सोमनाथ ग्रन्थावली –		
	रसपीयूष निधि	1	1–224
	रास पंचाध्यायी	2	225–266
	शृंगार विलास पूर्वार्द्ध	3	267–312
	माधव विनोद	4	313–498
	महादेव जी को ब्याहुलो या शशिनाथ विनोद	5	499–546
	ध्रुव विनोद	6	547–586
	शृंगार विलास(उत्तरार्द्ध)	7	587–620
	सुजान विलास	8	621–816
	दीर्घ नगर वर्णन	9	817–828
	नवाबोल्लास	10	829–832
	संग्राम दर्पण	11	833–890
	प्रेम पच्चीसी	12	891–894

भूमिका

भूमिका

रीति काल की काव्यभाषा ब्रज है । इसमें बहुत से शब्द अरबी, फारसी और तुर्की के है । ये शब्द भारत में सर्वप्रथम संभवतः अरबों के भारत में आने के साथ-साथ आये क्योंकि अरब वालों का कथन है कि भारतवर्ष के साथ उनका सम्बन्ध मानव जाति की उत्पत्ति के आरंभ से है । उनका कहना है कि यह देश उनका पैतृक जन्म स्थान है ।

हिन्दुस्तान और अरब संसार के वे महादेश हैं, जो पड़ोसी कहे जा सकते हैं । ये दोनों देश समुद्र तट के आमने-सामने के देश हैं । समुद्र तट के देश स्वभावतः व्यापारी होते है । इसी वजह से इन दोनों देशों का आपस में परिचय और गहरा सम्बन्ध स्थापित हुआ । हजारों वर्ष पहले जल मार्ग द्वारा अरब व्यापारी भारतवर्ष के तट पर आते थे और यहां की उपज तथा व्यापारिक पदार्थों को (मिस्र और शाम देश के द्वारा) यूरोप तक पहुंचाते थे और वहां के पदार्थ भारतवर्ष तथा उसके पास के टापुओं (चीन और जापान) तक ले जाते थे ।

अरब व्यापारी जल मार्ग से मिस्र और शाम के नगरों से चल कर, स्थल मार्ग से लाल सागर के किनारे-किनारे जहाज को पार करके यमन पहुंचते थे । फिर पाल-वाली नाव से अफ्रीका व हबा देश को होते हुए समुद्र के किनारे-किनारे हजरत मौत उम्मान, बहरीन और इराक के तटों को पार करके फारस की खाड़ी के ईरानी तटों से होकर बलोचिस्तान के बन्दरगाह 'तेज' में उतरते थे । वे उससे आगे के बंदरगाह 'देबल' (कराची) में आते थे । आगे बढ़कर गुजरात काठियावाड़ा के बन्दरगाह 'थाना' (बम्बई) होते हुए फिर आगे बढ़ते थे और समुद्री मार्ग से ही कालीकट और कन्याकुमारी तक पहुंच जाते थे । मद्रास, लंका और अंडमान के तट पर होते हुए (रुकते हुए) बंगाल की खाड़ी से बंगाल के बन्दरगाहों को देखते हुए बरमा, श्याम व चीन तक चले जाते थे । और पुनः उसी मार्ग से वापस आते थे ।

संसार में समुद्री व्यापार करने वालों में सर्वप्रथम फिनिशियन जाति का नाम आता है । अन्वेषकों के कथनानुसार ये लोग अरब थे । जिनका पूर्वी देश के लिए पूर्व में वहरैन व पश्चिमी देश के लिए पश्चिम में शाम देश में भूमध्य सागर के तट पर बन्दरगाह था, इसी जाति के द्वारा यूनान में सभ्यता का प्रारंभ हुआ ।

पुरानी ईरानी भाषा और संस्कृत में स और ह आपस में बदला करते हैं । इसके कई उदाहरण है इसलिए जब फारस वालों ने भारत के एक प्रान्त पर अधिकार किया तब उन्होंने सिन्ध नदी का नाम हिन्द हो रख दिया । इससे इस देश का नाम भारतवर्ष के अलावा हिन्द पड़ गया । अरबों ने जो सिन्ध के सिवा इस देश के दूसरे नगरों को भी जानते थे सिन्ध को सिन्ध कहा और भारतवर्ष के दूसरे नगरों या प्रदेशों को हिन्द निश्चय किया । अन्त में यही नाम सारे संसार में भिन्न-भिन्न रूपों में फैल गया । इसके ह् का अ हो गया, जिससे फान्सीसी भाषा में इड व इण्डिया बना । खैबर से आने वाली जातियों ने इसका नाम हिन्दुस्थान रखा जो फारसी उच्चारण में हिन्दुस्तान बोला जाता है ।

इस्लाम के बाद अरबों का ध्यान भारत की ओर झुका । सर्वप्रथम सन् 15 हि० (सन् 636 ई०) में बम्बई के पास थाना नामक बन्दरगाह पर अरबों ने कब्जा किया फिर, भड़ौच और बरौस) देबल पर कब्जा किया । और इन बन्दरगाहों पर सिन्ध सीमा रक्षक के रुप में स्थायी पद नियुक्त किया गया । राजा दाहर (ब्राह्मण) के राज्य काल में मुहम्मद बिन कासिम का आक्रमण हुआ और उस आक्रमण में जिन भारतीय सैनिकों ने अरबों का सबसे अधिक सामना किया उनका नाम बिलाजुरी ने अपनी पुस्तक (155 हि० में लिखा गया) में तकाकिरा बतलाया है जो अरबी भाषा में ठाकुर शब्द का बहु० वचन रुप है । सन् 140 हि० (सन् 759 ई०) में हिशाम ने गन्धार में अपनी विजय के स्मारक में एक मस्जिद बनवाई । यह गुजरात देश इस्लाम का प्रथमचरण था और सिन्ध को छोड़कर बाकी भारत में यह पहली मस्जिद थी । यहाँ दो प्रसिद्ध अरबी रियासतें जिनमें एक मुलतान में और दूसरी सिन्ध के अरबी नगर मन्सूरा में थी ।

अरबों के विवरण से यह स्पष्ट रुप सेसिद्ध होता है कि हिजरी पहली शताब्दी के अन्त और इस्वी आठवीं शताब्दी के आरंभ में सिन्ध में बौद्ध धर्म का प्रचार था । अरब वाले बौद्धों को समनीयः कहते थे । भूगोल के सभी लेखकों ने यहाँ बुद्ध नामक

बस्ती का उल्लेख किया है ।[1] जिसका ठीक नाम चचेनामे में बुद्धपुर[2] है । फिर यहाँ नव बिहार नाम के एक उपासना मन्दिर का उल्लेख मिलता है: जो विशेष रूप से बौद्धों के मन्दिर का नाम है । उनके पुजारी का नाम समनीयः मिलता है, जो ब्राह्मण के विरोधी थे । इलियट साहब ने भी इसका समर्थन किया है ।

जब मुसलमानों को पहले पहल भारत की जातीयता से काम पड़ा तब सिन्ध में बौद्ध मत का प्रचार था । इसलिए निश्चित रूप से बुद्ध का मूल रूप बौद्ध है न कि फारसी शब्द बुद (बुत) जो कदाचित स्वयं भी बौद्ध शब्द का बिगड़ा रूप है ।

बुजुर्ग बिन शहरयार सन् 300 हि० — यह एक जहाज चलाने वाला था इसने अरबी भाषा में एक पुस्तक अजायबुल हिन्द नामक पुस्तक लिखी है, जिसमें जलमार्ग में जो जो बातें देखी सुनी थीं, उनका वर्णन किया है । इसमें सबसे अधिक महत्व की घटना एक हिन्दू राजा का कुरान का हिन्दी अनुवाद कराकर सुनना था । इस पुस्तक में विलक्षण बात यह है कि स्थान-स्थान पर व्यापार के लिए बानियानियाँ शब्द का व्यवहार किया गया है, जो स्पष्टतः हिन्दी शब्द बानिया है । उस समय छोटी नावों को अरब मल्लाह बरजा कहते थे । यह हिन्दी का बेड़ा शब्द है । इसका अरबी बहुवचन बवारिज है पर इस पुस्तक में बार-बार बवारिज शब्द का व्यवहार समुद्री डाकुओं के लिए भी किया गया है । डोली और डोलों के अर्थ में हिंडोला शब्द का और पलंग के अर्थ में बलंज शब्द का व्यवहार हुआ है ।

मसऊदी (सन् 303 हि०) — इसका नाम अबुल हसन अली था । इसकी दो पुस्तकें प्राप्त हैं – (1) किताब उल तम्बीह वलू अशराफ जो संक्षिप्त है । (2) मुरूजुज जहब व मआदुनुल जौहर है । दूसरी पुस्तक बड़ी है । इसमें अन्य बातों के

---

1. बुशारी मुकद्दसी और इब्न हौकल का जिक्रे सिन्ध ।

2. इलियट का इतिहास, पहला खण्ड : पृ० 138.

साथ-साथ यह भी लिखा है कि भारत में बहुत सी बोलियाँ बोली जाती है (पृष्ठ 163 और 381) इसने कन्धार को रहबूतों (राजपूतों) का देश बतलाया है ।

भारत के समुद्र तटों पर अरबों के आने जाने का यह प्रभाव हुआ कि अरबी यात्रा विवरणों और भूगोल में और अरब तथा फारस के मल्लाहों की जबान पर जहाजों और उनके सम्बन्ध में अनेक हिन्दी नाम चढ़ गये । उनमें से एक शब्द बारजा का ऊपर जिक्र किया गया है । जिस प्रकार रूम सागर में समुद्री डाकुओं को करसान कहते हैं और आज कल की अरबी भाषा में बारजा लड़ाई के जहाजों के बेड़े को कहते हैं । दूसरा शब्द दोनिज है जिसका बहुवचन दवानिज होता है । यह हिन्दी के डोंगी शब्द का अरबी रूप है । तीसरा शब्द होरी है, जिसे अब भी बम्बई वाले होड़ी कहते हैं ।

भारतवर्ष या भारतीय टापुओं के तीन और शब्द हैं जिनके ठीक-ठीक मूल रूप का पता नहीं चलता । बलीज= जहाज की छत, जोश = नाव का रस्सा, कनेर = नारियल के छाल की रस्सी को कहते हैं जो जहाजों के बाँधने और तख्तों के सीने के काम आती थी । ये शब्द भी भारतीय शब्दों से ही निकले हुए हैं । एक शब्द ऐसा है जो उस समय के पूर्वी सार्वराष्ट्रीय समुद्री व्यापार का संक्षिप्त इतिहास है । अरबी में इस शब्द का रूप "नाखुजा" है और इसका बहुवचन "नवाख़ज़ा" है, लेकिन भारत वाले उसके फारसी रूप नाखुदा से अधिक परिचित है । असल में यह शब्द नावखुदा है, इसमें नाव शब्द हिन्दी का और स्वामी के अर्थ में खुदा शब्द फारसी का है । हाफ़िज़ कहते हैं — "मा खुदा दारम मारा ना खुदा दरकार नेस्त" अर्थात् मेरे साथ खुदा है । मुझे नाखुदा (एक अर्थ ईश्वर रहित और दूसरा मल्लाह) की आवश्यकता नहीं है ।

इब्न बतूता अपनी पुस्तक में लिखता है कि कारो मंडल और मलाबार के बीच में हेली नाम का एक अन्तरीप है । इलायची शब्द का मूल यह नाम है । यह समझा जाता है कि संस्कृत में जो इसे एला और फारसी में हेल कहते हैं वह इसी हेली अन्तरीप के नाम से लिया गया है । इसी एला शब्द से उर्दू में उसीप्रकार

इलायची शब्द बन गया जिस प्रकार अगर या ऊद का नाम जो मँडल (कारोमँडल) से जाना था, अरबों में मन्दल हो गया । अरब वाले भारत के साथ जिन वस्तुओं का व्यापार करते थे, प्रायः उनके नाम कुछ तब्दीली के साथ ग्रहण किये हैं, जिन्हें देखने से पता चलता है कि ये हिन्दी से उत्पन्न अरबी रूप हैं । निम्न-लिखित अरबी के कुछ शब्द हिन्दी भाषा से निकले हुए हैं :—

अरबी	हिन्दी	उर्दू (या हिन्दी)
सन्दल	चन्दन	सन्दल
मस्क	मूषिका	मुश्क
तम्बोल	ताम्बूल	पान, तम्बोल
काफूर	कपूर	काफूर
करनफल	कनकफल	लौंग
फिलफिल	पिप्पली, पिप्पला	गोलमिर्च (संभवतः इसीसे अँग्रेज़ी का पेपर शब्द भी बना है ।)
फोफल	कोबल, गोपदल	सुपारी, डली
जंजबील	जंर्जबीरा	सौंठ, अदरख
नीलोफ़र	नीलोत्पल	नीलोफल
हेल	एला	एलायची, इलायची

ऊद (अगर) हिन्दी किस्त हिन्दी (कुट) साजज हिन्दी (तेजपत्ता) कुरुतुम हिन्दी (कुसुब) और तमर हिन्दी (हिन्दुस्तानी खजूर अर्थात् इमली) आदि शब्दों के साथ हिन्दी शब्द ही यह सूचित करता है कि ये सब चीजें भारत से जाती थी और भारत की थीं । ऊद या अगर की लकड़ी कोरोमंडल से जाती थी, इसलिए अरबवालों ने उसका नाम मंदल रख दिया ।

औषधियाँ

अरबी	हिन्दी	उर्दू (या हिन्दी)
जायफल	जायफल	जायफल
इत्रीफल	त्रिफला	इत्रीफल
शखीरा	शिखर (शिखिकंठ)	तूतिया
बलीलह	बहेड़ा	बहेड़ा
हलीलज	हरें	हलीला
बलादर	भिल्लातक	भिलावाँ

कपड़ों के प्रकार

कर्फस	कार्पास	मलमल
शीत	छींट	छींट
बौतः	पट लुगीवाल	रुमाल

रंग

नीलज	नील
किर्मिज	किरमिल

फल

मोज	मोचा	केला
नारजील	नारियल	
अम्बज	आम	
लेमूं	निम्बू	इसीसे अंग्रेजी का LEMON शब्द निकला है ।

इन शब्दों ने अरब में जाकर नया नाम पाया है ।

कुरान में जन्नत या स्वर्ग की प्रशंसा में इस स्वर्गतुल्य देश की तीन सुगन्धित पदार्थों

ये वस्तुएं तो भारत से बाहर जाती थीं पर इनके बदले में अरब वाले भारतवासियों को उनकी जरूरत की वस्तुएं देते थे जैसे कपड़े आदि । जो वस्तुएं यहां ली जाती थीं उनमें हिजरी तीसरी शताब्दी (ई० नवीं शताब्दी लगभग) में सिन्ध में सोने के सिक्कों की भारत में बहुत मांग थी जिन्हें अशर्फी कहते थे, पन्ने की अंगूठी (मिस्त्र से), मूंगा – साधारण पत्थर जिसका नाम दहंज था, मिस्र से शराब, रूम से रेशमी कपड़े, समूर, पोस्तीन और तलवारें आती थीं । फारस से गुलाबजल जो प्रसिद्ध था भारत में आता था बसेरे से देबल (सिंध के बन्दरगाह) में खजूर आती थी । कोरमंडल में अरब से घोड़े आते थे अरब से (या बाहर) से आनेवाली इन वस्तुओं और घोड़ों के नाम अरबी, ईरानी या फारसी होते थे धीरे-धीरे अरबी नामों ने देशी नामों को हटा दिया । सातवीं शती के पूर्वार्ध में 'बाण' ने रंगों के आधार पर घोड़ों के देशी नामों का भी उल्लेख किया है । जैसे शोण श्याम श्वेत पिंजर हरित तित्तिर कल्माष आदि । धीरे-धीरे घोड़ों के अरबी नाम बाजार में भर गये और देशी नाम हट गये । विशेषतः पश्चिम भारत में यहां तक कि बारहवीं शती में हेमचन्द्र ने अपने अभिधान चिन्तामणि नामक कोश में घोड़ों के अरबी और देशी नाम और संस्कृत नाम साथ-साथ दिये हैं । घोड़ों के कुछ नाम देखे जा सकते हैं । जैसे –

<u>तुखार</u> = तुखार देश के घोड़े तुखार मध्येशिया में शकों के एक कबीले और उनके मूल निवास स्थान की संज्ञा थी । वहां से कुषाण और गुप्त काल में आने वाले घोड़े तुखार कहलाते थे ।

<u>बांक</u>= बांके टर्रे, मुंहजोर ।

<u>तायन</u> = फा० ताजियाना, = चाबुक ।

<u>रथवाह</u> = रथ के घोड़े ।

<u>पैगह</u> = घुड़शाल ।

कैकानी = केकाण देश के घोड़े — गोमल नदी के पश्चिम में किकियाङना नामक प्रदेश पड़ता था । यहाँ के घोड़े व भेड़ें मशहूर थीं, ऊँ ये पूरे घोड़ों की नस्ल की तो विदेशों में बड़ी माँग थी, ब्राहुइयों का यह प्राचीन प्रदेश जो अब भी घोड़ों के अच्छी नस्लों के लिए प्रसिद्ध है, बोलन दर्रे के दक्खिन बलूचिस्तान के उत्तरपूर्व में मस्तुंग और कलात के इलाकों को घेरे हुए है ।

पखरै = धातु पक्खर, अश्व को कवच से सज्जित करना ।
काला, कुम्मैत, लील जरदा मुश्की — ये घोड़ों के मुख्य रंग हैं ।

कुम्मैत = वह घोड़ा जिसका रंग उन्नाब या ताजी खजूर की तरह स्याही मायल सुर्ख हो घोड़ों का यह रंग तमाम रंगों में अच्छा समझा जाता है । इस रंग का घोड़ा गर्मी सर्दी और सफर की तमाम तकलीफ सह सकता है । कुम्मैत अरबी भाषा का शब्द है यह अरब ईरान भारत सब जगह चला गया था । .

काला = सियाह=हाशमी — इसे ही संस्कृत में श्याम या कृष्ण वर्ण कहा जाता था । अनेक भेद होते हुए भी घोड़े के मूल रंग चार ही थे । सफेद स्याह लाल जर्द (हाशमी) ।

खंग = खिंग दूध की रंगत के समान सफेद रंग का घोड़ा इसीका एक भेद नुकरा तथा सेराह है ।

कुरंग = जिस घोड़े के रोएँ स्याह, सुर्ख व जर्द हो और जिसकी चमड़ी सुर्ख हो उसे कुरंग कहते हैं ।

बोर = सुर्ख रंग का एक उपभेद ।

बोज = बदामी रंग (भूरे रंग के लिए यह तुर्की शब्द था ।)

दुर = (अरबी दुर्र, फारसी दुर =मोती) मोती या मुखारीद की सफेदी के रंग का घोड़ा ।

केबी = चित्र-विचित्र रंग के घोड़े, केबू एक इसी प्रकार की चिड़िया होती है ।

अबलक = दो रंग का घोड़ा जो सुर्ख व सफेद रंग का या सियाह व सफेद रंग का होता है । जिसके चारों पैर सफेद हों ऐसे घोड़ों को भी अबलक कहते हैं । अरबी अबलक - कुला या कुल्ला नामक घोड़े में भी जेब्रा जैसी पट्टियां कही गई हैं ।

अबरस = अरबी अब रश वह कुम्मैत रंग का घोड़ा जिस पर खरबूजे की फांकों जैसी धारियां हों । बाज सवार सुर्ख और सफेद मिले रंग वाले घोड़े को भी अबरस कहते हैं । मूल रंग पर छोटे छोटे नुक्ते । फा० में एक शब्द आबसैर है जो मजे की चाल चलने वाले घोड़े के लिए प्रयुक्त होता है । संभव है अबरस पाठान्तर उसीके लिए हो ।

अगज = अग़श - अ० वह घोड़ा जिसका सिर एकदम सफेद रंग का हो । तुर्की में आकाश श्वेत रंग का वाचक है ।

सिराजी = शीराज नगर का घोड़ा ।

चौधर = सुरंग या लाल रंग के घोड़े की खाल में सफेदी का अंश और झलकने लगे तो उसे चौधर कहते हैं ।

चाल = सुर्खी मायल रंग के घोड़े सुर्ख व सफेद मिले जुले बालों वाला चकोर की रंगत वाला घोड़ा । तुर्की शब्द ।

समुंन्द = जिसका रंग सोने के रंग के समान हो । यह प्रसिद्ध रंग है । इसे सुतुरी भी कहते हैं । जर्दा या पीले काही उपभेद है ।

ताजी = अरब देश के घोड़े । अरबों का प्रसिद्ध नाम ताजिक था । आठवीं शती में जब अरब सौदागर और यात्री पश्चमी भारत में आने लगे तो यह नाम इस देश में चल गया ।

खुरमुज = ईरान की खाड़ी के उपरले सिरे पर खोरमूसा नामक समुद्री खाल (फा० खोर - समुद्र का भीतरी घुसा हुआ भाग) और उसी नाम का बन्दरगाह है । किसी समय वह घोड़ों के चालान का बड़ा बन्दरगाह था । वहाँ से आने वाले घोड़ों का व्यापारिक नाम खुरमूज या खुरमुजी पड़ गया ।

नोकिरा = एक रंग सफेद घोड़ा चाँदी के रंग की तरह चमकदार – फारसी – नुक़रई, अरबी नुकरः = चाँदी ।

जरदा = स्वर्ण के से पीले रंग का घोड़ा । अरबी में इसे असफर = पीले रंग का घोड़ा कहते हैं ।

अगरान = उस छोटे सफेद निशान को जो दिरहम (या अठन्नी) से छोटा हो फुरहः और घोड़े को अक़रह कहते हैं । यदि माथे पर सफेद निशान इससे बड़ा हो, तो उसे गु़र्रः और घोड़े को अग़र्रः कहते हैं । अगर्रः से ही सम्भवतः बहुवचन रूप अगरान था ।

पँच कल्यान = जिसके चारों घुटनों तक और मुख पर सफेदी हो । शरीर का रंग चाहे जो हो ।

सँजाब = जंगली चूहे और लोमड़ी की रंगत से मिलता हुआ घोड़ा । इसकी चमड़ी पर सफेद और काले निशान गुप्त रहते हैं । पानी से भिगोने पर जान पड़ते हैं । (फ्लिौट)

मुसुकी = स्याह घोड़ा (ईरान में प्रचलित शब्द) ।

हिरमिजी = हुरमुज से आने वाले घोड़े । फारस की खाड़ी में अब्बास के पास हुरमुज नाम का छोटा द्वीप है और मिनाब नदी के मुहाने पर एक बन्दरगाह भी है । मार्कोपोलो के अनुसार यह स्थान घोड़ों के व्यापार का मुख्य केन्द्र था ।

इराकी = इराक देश के घोड़े ।

तुरकी = तुर्क या रुम देश से आने वाले घोड़े ।

बुलाकी = फा० बलक का अर्थ काला सफेद मिश्रित घोड़ा है ।

बुजुर्ग बिन शहरयार का जिक्र करते हुए बनिया शब्द की चर्चा हो चुकी है । इन महाशय ने अपनी पुस्तक अजायब उल हिन्द में बीसों स्थान पर बनियाना के नाम से जहाज के दूसरे यात्रियों के रूप में भारतीय व्यापारियों का नाम लिया है । बल्कि एक स्थान पर तो उन्होंने बनियाना और ताजर (व्यापारी) ये दो शब्द अलग-अलग दिये हैं, जिससे क्रमशः हिन्दू व्यापारयों और अरब सौदागरों का अभिप्राय है । अरब में आज तक हिन्दू व्यापारी बनिया कहलाता है । इसका बहुवचन बनियाना होता है । वह आगे लिखते हैं कि "इराक़, बहरैन, उमान, सूडान, मस्रुअ, सईद, बन्दर और कायरों (मिस्र) में आज भी ये लोग व्यापार करते हैं । हज्जाज और मिस्र की यात्रा में इन बनियों से मेरी भेंट हुई है ।"

ये लोग नित्य प्रति की बाजारु अरबी भाषा ऐसी सुन्दरता से बोलते हैं कि हमारे यहाँ के मौलवी उनका मुँह ताकते रहें । ये लोग प्रायः सिन्धी, मुल्तानी और गुजराती होते हैं, जो ईश्वर जाने कब से इन देशों में आते-जाते रहते हैं ।[1]

जाहिज़ = अरबी का प्रसिद्ध लेखक दार्शनिक और तार्किक था यह बसेर का रहनेवाला था इसलिए भारत से भी इसके सम्बन्ध थे इसने एक छोटा निबन्ध —

---

1. अजायबुल हिन्द : पृ० 104, 165.

"गोरी व काली जातियों से कौन बढ़ कर है" पर लिखा था और अपना निर्णय काली जातियों के पक्ष में देता है। इस सम्बन्ध में उसका कहना है कि जितने (इराक में) सर्राफ है सब के यहाँ खजानची खास सिन्धी होगा या किसी सिन्धी का लड़का होगा क्योंकि उनमें हिसाब-किताब रखने और सर्राफी का काम करने का स्वाभाविक गुण होता है।[1] इससे यह साफ जाहिर है कि अरबी और फारसी ज्ञान भारतीयों को था।

जाहिज ने भारतीय पंडितों और वैद्यों के नाम दिये हैं जिन्होंने अरबी भाषा में गणित फलित ज्योतिष चिकित्सा साहित्य और नीति के बहुत से ग्रंथों का अरबी में अनुवाद किया जो बिना अरबी भाषा के ज्ञान के असंभव है। अरबवाले स्पष्ट रूप से कहते हैं कि उन्होंने 1 से 9 तक के अंक लिखने का ढंग हिन्दुओं से सीखा है। इसीलिए अरब वाले अंकों को हिन्द सा और इस प्रणाली को हिसाब हिन्दी या हिन्दी हिसाब कहते हैं।

भारतवर्ष से तीसरी विद्या 'चिकित्सा' अरब वालों को मिली। चिकित्सा-शास्त्र की संस्कृत में लिखी पुस्तकों का अरबी अनुवाद कराया गया। उनमें से दो पुस्तकें मुख्य हैं — एक तो सुश्रुत की पुस्तक है जिसे अरब वाले ससरो कहते हैं। यह पुस्तक दस प्रकरणों में थी। दूसरी पुस्तक चरक की है, जो भारत में चिकित्साशास्त्र का बहुत बड़ा ज्ञाता और ऋषि हुआ है। इस पुस्तक का पहले फारसी में अनुवाद हुआ था फिर अब्दुल्लाह बिन अली ने इसका फा० से अरबी में अनुवाद किया था।[2]

अरबी में दो शब्द सबसे बढ़कर विलक्षण है। एक दवा का नाम व दूसरा खाद्य पदार्थ का। दवा में इतरी फल है जो बहुत प्रसिद्ध है प्रत्येक चिकित्सक और रोगी इसका व्यवहार करता है। हिजरी चौथी शताब्दी में मुहम्मद ख्वारिज्म ने

---

1. रिसाला फखरु सु सूदान अलल् बैजान जाहिज मजमूआ रसायल जाहिज, पृ० 81.

2. इब्न नदीम, पृ० 303.

लिखा है यह हिन्दी शब्द तिरीफल (त्रिफला) है यह तीन फलों — हर्रे, बहेड़े और आंवले से बनता है । इसी प्रकार की एक दवा अँबजात है । ख्वारिज्म कहता है कि भारत में आम नाम का एक फल होता है, उसीको शहद नीबू और हर्रे में मिला कर अँबजात बनाते हैं । संभवतः इसको गुडम्बा या आमों का अचार या मुरब्बा कहना चाहिए । इनसे भी विलक्षण शब्द बहतः (या भातः ?) है, जिसके सम्बन्ध में ख्वारिज्म ने कहा है यह एक प्रकार का रोगियों का भोजन है, यह सिन्धी शब्द है, यह दूध और घी में चावल को पका कर बनाया जाता है । यह हमारा हिन्दुस्तानी भात है जो अरबों के विचार से रोगियों के लिए हल्का भोजन होगा । इसको चाहे खीर समझा जाये या फीरीनी ।

संस्कृत से अरबी व फारसी में बहुत सी पुस्तकों का अनुवाद हुआ जिसमें पशु चिकित्सा ज्योतिष व रमल प्रश्नों का रहस्य बृहज्जातक, सामुद्रिक शास्त्र (हस्तरेखा ज्ञान) गारुड़ी विद्या (सर्प विद्या), विष विद्या बेश = जहर यह हिन्दी के विष शब्द से बना है, जिसका अर्थ है जहर, संगीत शास्त्र, महाभारत, युद्ध विद्या और राजनीति, कीमिया या रसायन, तर्कशास्त्र की पुस्तकों का अरबी व फारसी में अनुवाद हुआ है । इन्द्रजाल पर अरबी में अनुवाद हुआ । कथा कहानी की कई पुस्तकों का अनुवाद अरबी में हुआ । संस्कृत की पुस्तक पंचतंत्र का फारसी व अरबी में कलेलादमना नाम से अनुवाद हुआ है । अरबी भाषा से इस पुस्तक का संसार भर की भाषाओं में अनुवाद हुए ।

बैरुनी अपनी पुस्तक किताबुल हिन्द, पृ० 12 पर लिखता है कि जब तक मैंने भारतवासियों की भाषा नहीं सीखी थी, तब तक तो मैं उनके सामने शिष्यों की तरह बैठता था पर जब मैंने उनकी भाषा कुछ-कुछ सीख ली और मैं उन्हें ज्योतिष तथा गणित के नये-नये सिद्धान्त और नई-नई बातें बतलाने लगा तब वे चकित हो गये और स्वयं मुझ से सीखने लगे और आश्चर्य से पूछने लगे कि तुम किस पंडित के शिष्य हो ? फिर जब मैं उनकी विद्या सम्बन्धी योग्यता की त्रुटियां दिखलाने लगा तब वे मुझे जादूगर और परोक्षदर्शी समझने लगे और मुझे विद्यासागर

कहने लगे ।[1]

बैरूनी ने सबसे बड़ा काम यह किया कि हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच विद्या विषयक दूत का काम किया उसने अरब और ईरानियों को हिन्दुओं की विद्याओं का ज्ञान कराया और हिन्दुओं को अरबों तथा ईरानियों के नये-नये अन्वेषणों से परिचित कराया । उसने अरबी जानने वालों के लिए संस्कृत से और संस्कृत जानने वालों के लिए अरबी से पुस्तकों का अनुवाद किया । उसने तीन पुस्तकें लिखीं – (1) अरबी से संस्कृत में (2) संस्कृत से अरबी में तथा (3) भारतीय विद्याओं और सिद्धान्तों की छानबीन और जाँच पड़ताल के सम्बन्ध में ।

खेल के विषय में – चौसर व शतरंज दोनों भारत की देन हैं । चौसर के खेल में चौसर की बिसात चौसर के चिह्न और चौसर का खेल, आकाश की राशियों 360 दिनों हर दिनों के 24 घंटे, 12 घंटे के दिन, 12 घंटे की रात का पूरा चित्र है । शतरंज का आधार कुल 64 घरों, फिर 32 फिर 16 फिर 8 और 4 घरों पर है । गणित के इन दाँव पेंच के अलावा दोनों खेल भारत की दो धार्मिक या दार्शनिक विचारधाराओं (शाखाओं) का सूचक है । चौसर इस बात का प्रमाण है कि आदमी सब प्रकार से विवश है और आकाश तथा नक्षत्रों के चक्कर जो कुछ चाहते हैं, वही उससे कराते हैं । संसार क्षेत्र में कोई भी आदमी स्वयं अपनी इच्छा और विचार से पैर नहीं उठाता बल्कि वह कोई और ही है, जो उससे बलपूर्वक पैर उठवाता है । हमारा लाभ व हानि दूसरे के हाथ में है । इसके विरुद्ध शतरंज इस बात का प्रमाण है कि संसार में जो कुछ होता है, वह मनुष्य के अपने प्रयत्नों का फल है । उसकी हार-जीत सफलता और विफलता दोनों उसकी बुद्धि विचार समझ-बूझ और दौड़-धूप पर निर्भर है । तात्पर्य यह है कि संसार की जिन समस्याओं का और किसी प्रकार निर्णय नहीं हो सकता, ये दोनों खेल उन समस्याओं का विद्वत्तापूर्ण निर्णय है ।

---

1. किताबुल हिन्द, पृ० 12.

अब कुछ शब्द पक्षियों के विषय में देखें —

(1) लगलग :

तुर्की० अन्य रूप लकलक, लक्लक्, लैलक, सारस पक्षी । अतएव हिन्दी में दुबले-पतले व्यक्ति के लिए हिन्दी में व्यंग्य से कहते हैं 'बड़े लगलग बने हुए हैं ।' फारस में इस चिड़िया को हाजी लगलग भी कहते हैं । उनका विश्वास है कि जाड़ों में यह हर साल मक्का को हज करने चली जाती है ।

(2) लफंगा :

शोहदा, आवारा । हिन्दी-तुर्की भाषा में एक चिड़िया का नाम लपंग या लफंग है । यह गिद्ध से मिलती है पर उससे छोटी होती है। पूछ की जड़ सफेद रंग की होती है । शिकार के लिए यह बिल्कुल निकम्मी और ढिलुआ समझी जाती है । वैसे भी बड़ी बुद्धू चिड़िया है । इसीसी लफंगा शब्द है ।

(3) चुगद :

फारसी में उल्लू के लिए आता है पर संभवतः तुर्की शब्द चुगदीक है जो एक चिड़िया का नाम है ।

(4) चील :

तुर्की व संस्कृत दोनों में प्राप्त है (चील, चील्ल) संभव है गुप्त काल से पहले यह चील शब्द तुर्की से संस्कृत में अपना लिया गया हो । शकों के द्वारा यह यहाँ लाया गया होगा ।

(5) हुदहुद :

एक चिड़िया (तुर्की) ।

(6) बुलबुल : एक चिड़िया (तुर्की) । हिन्दी में फारसी या अरबी के जरिये

धर्म के सम्बन्ध में एक शब्द है बुत जिससे बुतपरस्त (मूर्तिपूजक) और बुतखाना (मन्दिर) शब्द बने हैं। साधारणतः लोग बुत को फारसी शब्द समझते है पर वास्तव में बुद्ध शब्द से बुद और फिर बुद से बुत शब्द बना है। बुद्ध की मूर्ति की पूजा हुआ करती थी इसलिए फारसी में बुद शब्द का अर्थ ही बुत या मूर्ति हो गया इसलिए अरबी में बुत को बुद कहते हैं और इसका बहुवचन 'बुदूह' होता है।[1] मसऊदी कहता है कि "सिन्ध में वहाँ की भाषा है जो भारत की और भाषाओं से अलग है।" मन्सूरा के बन्दरगाह देबल के सम्बन्ध में बुशारी कहता है "यहाँ सब व्यापारी ही व्यापारी बसते हैं, उनकी भाषा सिन्धी और अरबी है।"[2] इससे यह अनुमान हो सकता है कि यहाँ की भाषा पर अरबी का कितना गहरा प्रभाव पड़ा होगा। इसका एक बड़ा प्रमाण आज भी मिलता है। सिन्धी भाषा में अरबी भाषा के शब्द उसी प्रकार मिले हुए हैं, जिस प्रकार उर्दू भाषा में मिले हैं। और सबसे बड़ा प्रभाव यह पड़ा है कि सिन्धी की लिपि आज भी ज्यों की त्यों अरबी ही है। भारत और खैबर की घाटी के उस पार के देशों में सदा से बराबर लड़ाई और मेल के सम्बन्ध चले आते थे। इस्लाम से पहले इन देशों की यह दशा थी कि जब कभी काबुल का बादशाह बलवान हो गया तब उसने हिन्द और पेशावर तक अधिकार कर लिया, और जब भारत के राजाओं को अवसर मिला तब उन्होंने काबुल और कन्धार तक सीमा बढ़ा ली। यही दशा सिन्ध की ओर भी थी कभी ईरान के बादशाह ने मकरान से सिन्ध नद तक अधिकार कर लिया और कभी सिन्ध के राजा ने बलोचिस्तान और मकरान लेकर ईरान की सीमा से सीमा मिला दी। ईसवी सातवीं शताब्दी तक बराबर यही हाल होता था। उसी समय से मुसलमान लोग देश को जीतते हुए इधर बढ़ने लगे और इन देशों के कबीले और जातियाँ मुसलमान होने लगीं। इस तरह धर्म के साथ जुड़े शब्दों का आगमन होने लगा जैसे – कुरान, अल्लाह,

---

1. देखें – फेहरिस्त इब्न नदीम पृ० 347 और सफरनामा (सुलेमान पृ०55-57)
2. मुरुजुज्जहब पहला खंड, पृ० 28।

मस्जिद, आयते आदि । उधर इस्लाम का सबसे पहला राज्य "समानी" था, जिसने बुखारा को अपनी राजधानी बनाया पर उसके समय में भी लोगों का ध्यान काबुल से आगे न जा सका । इसके बाद "सफ्फरी" राज्य हुआ जो थोड़े ही दिनों तक रहा उसने काबुल और कन्धार से आगे पैर बढ़ाये थे । अब्बासी खिलाफत ने सिन्ध का नाम मात्र का शासन भी इसीको सौंप दिया । इसके बाद समानी राज्य की सीमाओं से हट कर उसके एक तुर्क अधिकारी अल्पतगीन अपने स्वामी की सैनिक चढ़ाई और दंड से बचने के लिए इस दूर के इलाके में अधिकार जमाने का प्रयत्न आरंभ किया और गजनी में अपने स्वतंत्र राज्य की राजधानी बनाई । यह हिजरी चौथी शताब्दी के मध्य की बात है । इसी गजनी राज्य का चाहे दूसरा कहो चाहे तीसरा राजा महमूद गजनवी है । उसने अपने तैतिस बरस के राज्य में गजनी के चारों ओर के देशों और राज्यों को चाहे वे मुसलमान थे, चाहे नहीं थे अपने भीषण आक्रमणों से विवश करके अपने छोटे से पैतृक राज्य में मिलाकर एक बहुत बड़े साम्राज्य की नीव डाल दी । इसने गजनी के एक ओर काशगर के इस्लामी एलखानी राज्य को दूसरी ओर स्वयं अपने समानियों के राज्य को तीसरी ओर दैलमियों के राज्य को तबरिस्तान के राज्य आलजियार को पूर्व की ओर गोरियों के देश को जो अब तक न मुसलमान थे और न कभी किसी राज्य के आधीन रहे थे, और इसके बाद पूर्व में मुल्तान और सिन्ध में अरब अमीरों को और लाहौर तथा भारत के कुछ राजाओं को उलट-पुलट कर गजनी का साम्राज्य स्थापित किया था । इनमें से भारत और गोर के अतिरिक्त जितने राज्य थे सब मुसलमान के ही थे ।

यह तो उत्तरी भारत का हाल था । दक्षिण भारत की दशा कुछ और ही थी । सन् 416 हि० (सन् 1064 ई० में महमूद गजनवी, सन् 574 हि० (सन् 1178 ई०) में शहाबुद्दीन गोरी और सन् 592 हि० (सन् 1196 ई०) में कुतुबुद्दीन ऐबक् गुजरात पर धावे करके बादल की तरह आये और आँधी की तरह निकल गये । इसके सौ बरस बाद बघेले राजा और उसके मंत्री माधव की

---

1. ---- किताबुल् बिदअ बत्तारिख, पृ० 19 और मिलल व नहल, शहरिस्तानी, पृ० 240.

आपस में शत्रुता और मन मुटाव के कारण माधव के बुलाने पर सबसे पहले अल्लाउद्दीन खिलजी सन् 697 हि० (सन् 1297 ई०) में गुजरात का हाकिम बन गया। अल्लाउद्दीन खिलजी ने गुजरात से लेकर समुद्र के ~~किनारे~~-किनारे-किनारे कोरमंडल तक का प्रदेश जीत लिया पर उसके विजयों का क्रम जहाज की तरह था जो अपने बल से समुद्र का कलेजा चीरता हुआ आगे बढ़ता जाता है पर ज्यों ही वह एक कदम आगे बढ़ता है, त्यों ही उसके पीछे का पानी सिमट कर ऐसा हो जाता है कि पानी के ऊपर नाम के लिए भी किसी तरह का निशान नहीं रह जाता। यह मानो खिलजी सेनापति की एक सैनिक सैर या यात्रा थी, इससे अधिक कुछ भी नहीं। सन् 709 हि० (सन् 1309 ई०) में उसके एक सैनिक अधिकारी मलिक काफूर ने कर्नाटक जीत लिया। पर इसके बाद सन् 727 हि० (सन् 1323 ई०) में दक्षिण में बीजानगर का एक विशाल हिन्दू राज्य स्थापित हो गया जो कई शताब्दियों तक दक्षिण भारत को उत्तरी भारत के मुसलमान आक्रमण करने वालों से बचाता रहा। मलिक काफूर के विजय के प्रसंग में मअबर (कारोमंडल) में जो एक छोटा सा मुसलमानी राज्य बन गया था। वह भी चालिस बरस के बाद नष्ट होकर बीजानगर के राज्य में मिल गया।

पर इस लड़ाई-भिड़ाई और चढ़ाई आदि की सीमा से दूर और बिल्कुल अलग उन मुसलमान अरबों और इराकियों की बस्तियाँ थी जो स्थल मार्ग से उत्तर से दक्षिण नहीं आये थे, बल्कि समुद्र के किनारे से चल कर इन प्रान्तों में आ बसे थे और बराबर यहाँ आते जाते रहते थे।

यह एक बहुत स्पष्ट बात है कि उत्तरी भारत से पहले दक्षिण भारत में मुसलमान उपनिवेश स्थापित हुए थे और उनका सम्बन्ध असल में व्यापार के लिए आने जाने से था। उन प्रान्तों मेंग केवल बाहर से ही आकर मुसलमान लोग नहीं बसे थे बल्कि स्वयं उन देशों के निवासी भी मुसलमान होने लगे थे इस प्रकार भाषा में अरबी शब्दों का आगमन पर्याप्त मात्रा में होने लगा। क्योंकि इन उपनिवेशों में बोली जाने वाली बोलियाँ भारत की भाषाओं को प्रभावित करने लगी। इस प्रकार का प्रभाव और परिणाम होने के सम्बन्ध में कई प्रकार के प्रवाद प्रसिद्ध

है, जो इतिहास की पुस्तकों और यात्रा विवरणों में लिखे हुए हैं । उन सबका सारांश यह है कि यह प्रभाव दो प्रकार के आकर्षणों से पड़ा था । एक तो व्यापारियों के आने जाने के कारण और दूसरे उन सूफियों और मुसलमान फकीरों की करामात के कारण जो सरन्दीप के चरण चिह्न के दर्शन करने के लिए आया करते थे ।

मुसलमानों का पहला केन्द्र सरन्दीप :

फरिश्ता ने लिखा है कि "इस्लाम के पहले से ही अरब लोग इन टापुओं में व्यापार करने के लिए आया करते थे और यहाँ के लोग अरब जाया करते थे इसलिए सबसे पहले सरन्दीप के राजा को इस्लाम धर्म और मुसलमानों का हाल मालूम हुआ । मुहम्मद साहब के समकालीनों के समय सन् 40 हि० (ई०सातवीं शताब्दी के आरंभ में ही) वह मुसलमान हो गया ।"[1] फरिश्ता ने यह नहीं बतलाया कि उसे यह घटना किस ग्रंथ में लिखी हुई मिली थी । पर अजायबुल् हिन्द नाम की एक पुरानी पुस्तक से, जो सन् 300 हि० के लगभग लिखी गई थी, इस प्रवाद का पूरा पूरा समर्थन होता है । बुजुर्ग बिन शहर यार नाम का मल्लाह जो इन टापुओं में अपने जहाज लाया करता था, सरन्दीप का वर्णन करता हुआ भारत पुजारियों सन्यासियों और योगियों का विस्तृत वर्णन करते हुए कहता है इनके कई भेद हैं उनमें से एक बेकौर होते हैं जिनका मूल सरन्दीप से है । ये लोग मुसलमानों से बहुत प्रेम करते हैं उनके प्रति बहुत अनुराग रखते हैं । इसके वर्णन से लगता है कि वे लोग बौद्ध धर्म माननेवाले होंगे । हमारा मल्लाह फिर इस प्रकार कहानी आरंभ करता है कि "जब सरन्दीप के रहने वालों को इस्लाम के पैगम्बर के धर्म के प्रचार के लिए उठने का हाल मालूम हुआ तब उन्होंने अपने एक समझदार आदमी को पैगम्बर के बारे में जांच करने को अरब भेजा । मदीने पहुँचते-पहुंचते रसूल मुहम्मद साहब का देहान्त हो चुका था । अबूबकर सिद्दीक की खिलाफत का भी अंत हो चुका था और हजरत उमर का समय

---

1. फरिश्ता : दूसरा खंड, सिन्ध शीर्षक : आठवां प्रकरण : पृ० 3।।

था । उनसे मिलकर उसने पैगम्बर साहब की सब बातें मालूम की और लौटा । मकरान (बलोचिस्तान के पास) पहुँच कर मर गया उसके साथ एक हिन्दू नौकर था वह सरन्दीप पहुँच कर रसूल पैगम्बर साहब, हजरत अबूबकर और हजरत उमर के सम्बन्ध में सब बातें बतलाई और यह भी बतलाया कि वे कैसे नम्र और आतिथ्य सत्कार करने वाले हैं । वे पैबन्द लगे हुए कपड़े पहनते हैं मसजिद में सोते हैं । अब ये लोग मुसलमानों के साथ जो इतना प्रेम और अनुराग रखते हैं, उसका कारण यही है ।[1] इन घटनाओं से यह सिद्ध होता है कि हिजरी पहली शताब्दी में ही सरन्दीप में मुसलमानों का उपनिवेश स्थापित हो चुका था । अबूजैद सैराफी (सन् 300 हि0) ने हि0 तीसरी शताब्दी के अन्त में यहाँ अरब व्यापारियों के रहने और आने जाने का उल्लेख किया है ।[2]

दूसरा केन्द्र मालदीप :

इस ओर मुसलमानों और अरबों का दूसरा केन्द्र मालदीप का टापू था, जिसको अरब लोग कभी-कभी जँजीर तुल महल और कभी-कभी इन छोटे-छोटे सब टापुओं को मिलाकर दीबात कहते थे । इन टापुओं का विस्तृतवर्णन इब्न बतूता ने किया है । उस समय में (अर्थात् सुल्तान मुहम्मद तुगलक के समय सन् 700 हि0) में यह सारे का सारा टापू मुसलमान था इसमें अरबों तथा देशी मुसलमानों की बस्तियाँ थीं । सुल्तान खदीजा नाम की एक बंगाली महिला इस पर शासन करती थी । इब्न बतूता के समय यहाँ यमन आदि के बहुत से विद्वान और मल्लाह उपस्थित थे । उनकी जबानी इस टापू के लोगों के मुसलमान होने का हाल सुनकर उसने इस प्रकार लिखा है – "यहाँ के लोग मूर्तिपूजक थे । यहाँ हर महीने समुद्र से निकल कर देव के रूप में एक बला आती थी जब यहाँ के लोग उसको देखते थे तब एक कुआरी लड़की को बनाव श्रृंगार करके उस मन्दिर में छोड़ आते थे जो समुद्र के किनारे था । पर मराको के एक अरब शेख अबुल बरकात बरबरी मगरिबी संयोग से यहाँ आ गये थे । उनके आशीर्वाद से यह बला उनके सिर से टली थी ।

---

1. अजायबुल हिन्द : पृ0 155-57.
2. अबू जैद सैराफी : पृ0 221 : पेरिस ।

यह करामात देखकर वहाँ का राजा शनोराजा और सारी प्रजा शेख से आयों मुसलमान हो गई ।" इब्न बतूता कहते हैं कि इस्लाम ग्रहण करनेवाले इस राजा ने जो मसजिद बनवाई थी उसकी मेहराब पर यह लेख लिखा हुआ मिला था — "सुल्तान अहमद शनवराजः अबुल मगारिबी के हाथ से मुसलमान हुआ ।" तात्पर्य यह कि उस समय से लेकर आज तक ये सब टापू मुसलमान हैं और उनमें से बहुत से ऐसे लोग बसते हैं, जिनके वंश में अरबों का रक्त मिल गया है ।

तीसरा केन्द्र मलाबार :

इस्लाम और अरबों का तीसरा केन्द्र भारत का वह अन्तिम तट है, जिसको हिन्दुओं के पुराने समय में केरल कहते थे । पीछे से मलाबार कहने लगे (मलय इस प्रदेश के पर्वत का नाम है) । अरबी भूगोल लेखकों ने इसकी सीमा गुजरात की अन्तिम सीमा से लेकर कोलम नामक स्थान तक जो ट्रावन्कोर में है, बतलाई है ।मूलतुहफतुल् मुजाहिदीन में एक प्रवाद है जिसे 'फरिश्ता' ने उद्धृत किया है और इसके अनुसार इस्लाम से पहले और इस्लाम के बाद यहूदी और ईसाई व्यापारी यहाँ आया करते थे और यहाँ रहने लग गये थे । मूल तोहफतुल् मुजाहिदीन में एक दो और उद्धरण भी उपयोगी हैं, उसमें कहा है — भारत के पश्चिम समुद्र तट के बन्दरगाहों पर भिन्न-भिन्न देश से बहुत से व्यापारी आते हैं । इसका परिणाम यह हुआ कि नये नगर बस गये है, और मुसलमानों के व्यापार के कारण उनकी आबादी भी बढ़ गई है । सामूहिक रूप से मलाबार के हिन्दू राजाओं का मुसलमानों के साथ बहुत प्रतिष्ठा और दया का व्यवहार होता है, क्योंकि उनके देश में अधिक नगरों के बस जाने का कारण इन्हीं मुसलमान व्यापारियों का वहाँ बस जाना है । मलाबार के यही मुसलमान अरब व्यापारी जो अपना देश छोड़कर भारत में बस गये थे, भारत में मोपला और नायत के नाम से प्रसिद्ध है ।

कोलम — यह आज कल के ट्रावनकूर देश में है अरब मल्लाह बहुत पुराने समय से इसका नाम लेते चले आते है और कहते है यह मसालों वाले देश का

चौथा केन्द्र माबर या कारोमण्डल :

मद्रास में मलाबर के सामने दूसरी ओर जो समुद्र तट है, उसे अरब लोग मअबर या माबर कहते हैं । आज कल इसका नाम कोरोमण्डल प्रसिद्ध है । इब्न सईद मग़रिबी ने हिजरी छठी शताब्दी के अन्त में इसका वर्णन किया है । बताया है कि यह कोलम के पूर्व में तीन चार दिन के रास्ते पर दक्षिण की ओर झुका हुआ है[1] । जकरिया कज़्विनी (सन् 686 हि०) ने हिजरी सातवी शताब्दी में इसका नाम मन्दल लिखा है । यहाँ की अगर की लकड़ी की बहुत प्रशंसा की है ।[2] उसने इसीके पास कन्याकुमारी को स्थान दिया है । जिसे उसने रास कमरान लिखा है और इसी सम्बन्ध से इस ऊद या अगर को कामरूनी ऊद कहते थे ।[3] कोलम में बाहर से घोड़े लाये जाते हैं ।[4]

मार्कोपोलो जब यहाँ आया था तो उसने देखा कि यहाँ का राज्य पाँच हिन्दू राजाओं के हाथ में था, पर यहाँ का व्यापार, उस समय भी पूरी तरह से मुसलमान के ही हाथ था और अरब से यहाँ घोड़े आया करते थे । वह लिखता है — "इस देश में घोड़े नहीं होते हुरमुज और अदन के बन्दरगाहों से व्यापारी लोग हर साल यहाँ घोड़े लाते हैं और पाँचों राज्यों में हर साल दो-दो हजार घोड़े खरीदे जाते हैं । एक-एक घोड़े का मूल्य पाँच-पाँच सौ दिनार तक दिया जाता है ।"

अरब का पाँचवाँ केन्द्र गुजरात :

कठियावाड़ा कच्छ और कोंकन में था । अरब यात्री व व्यापारियों के यात्रा विवरण से पता चलता है कि अरब व्यापारियों और नये बसे हुए मुसलमानों के साथ

---

1. तकवी मुलु बुल्दान, पृ० 361.
2. आसारूल बिलाद, कजविनी, पृ० 82.
3. तकवीमुल बुल्दान, पृ० 355.
4. तारीख वस्साफ का रचनाकाल, 707 हि० ।

यहाँ के लोगों का बहुत अच्छा और मित्रतापूर्ण सम्बन्ध था, यही कारण था कि इस राज्य के नगरों में अरब लोग बहुत अधिक संख्या में बस गये थे और बिलकुल अंत समय तक बसे रहे थे ।

छठा केन्द्र सिन्ध :

अरबों ने सिन्ध प्रान्त जीतने के बाद वहाँ अपना उपनिवेश स्थापित किया था । मसउदी कहता है सिन्ध में वहाँ की अपनी भाषा है जो भारत की और भाषाओं से अलग है । मन्सूरा के बन्दरगाह देबल के सम्बन्ध में बुसारी कहता है यहाँ सब व्यापारी ही व्यापारी बसते हैं । उनकी भाषा सिन्धी और अरबी है ।[1]

इससे यह अनुमान हो सकता है कि यहाँ की भाषा पर अरबी का कितना गहरा प्रभाव पड़ा होगा । इसका प्रमाण आज भी मिलता है । सिन्धी भाषा में अरबी भाषा के शब्द उसी प्रकार मिले हैं, जैसे उर्दू भाषा में मिले हुए हैं । सबसे बड़ा प्रभाव यह पड़ा कि सिन्धी की लिपि आज भी ज्यों की त्यों अरबी ही है ।

यह तो अरब के उपनिवेशों की बात हुई । इन स्थानों में स्थानीय भाषा के साथ-साथ अरबी भी बोली जाती रही पर इससे भिन्न उत्तर भारत की दशा थी वहाँ के साम्राज्यों पर भी एक नजर डालनी होगी तब यह समझ आता है कि ये भाषाजनित बदलाव या प्रभाव उत्तर भारत को या मध्य भारत को क्यों प्रभावित न कर सका ।[2]

अरबों के पश्चात् तुर्कों का आक्रमण भारत पर हुआ और वे भारत में ही बस गये । ये इस्लाम धर्म को माननेवाले थे । इनकी बोलचाल की भाषा फारसी (तुर्की) और धर्म भाषा अर्थात् कुरान की भाषा अरबी थी । मुसलमानों के भारत में बस जाने के बाद उनकी भाषा का प्रभाव यहाँ कीभाषा पर पड़ना आवश्यक था

---

1. मुरूजहब : पहला खंड : पृ० 28।
2. अरब हिन्द ताल्लुकात : सुलेमान नदवी ।

और उनकी भाषा से भारत की भाषा प्रभावित होने लगी । महमूद गजनवी के बाद भारत पर मुहम्मद गोरी का सन् 1175 ई० में आक्रमण हुआ । उसने स्थायी मुसलमान राज्य स्थापित किया । इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ ही इस्लाम धर्म से सम्बन्धित अल्लाह, पैगम्बर, आयतें, मस्जिद, कलमा आदि शब्दों का आगमन हुआ । इससे उस समय की साहित्यिक भाषा भी प्रभावित हुई । बोल-चाल की भाषा फारसी व तुर्की के भी कुछ बहुत आवश्यक शब्द भाषा में आने लगे । इस प्रकार शब्दों के लेन-देन में सैकड़ों वर्ष लग गये । गोरी के बाद उसका दास कुतुबुद्दीन एबक दिल्ली का राजा बना और इसके बाद उत्तराधिकारी भी दास ही था और यह परंपरा 11 राजाओं तक चली इस तरह दिल्ली का राज्य दासों का राज्य था । अतः इसे दिल्ली सल्तनत कहा गया और वहां के नरेशों को दिल्ली का सुल्तान और इन ग्यारह राजाओं को गुलामवंश नाम दिया गया । इस समय तक सुल्तान (राजा) सल्तनत (राज्य) गुलाम (दास) आदि शब्द बहु-प्रचलित हो गये । बलबन के राज्य में सिजदा व पैबोस प्रथा प्रारंभ हुई । बलबन के राज्य में ही उर्दू का प्रारंभिक लेखक अमीर खुसरो हुआ है ।

दिल्ली सुल्तान का शासन काल भारत में मुस्लिम शासन व संस्कृति का शैशव काल है और मुगल शासन का युग इसकी प्रौढ़ता का समय है । अतः यह साफ जाहिर है कि अरबी फारसी व तुर्की के तमाम शब्द इसी दौरान भाषा में समय-समय पर लिये गये ।

हिन्दी काव्य भाषा का अध्ययन इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि काव्य भाषा के विकास में अरब और फारस के सम्बन्धों का विशेष महत्व है । मुगल दरबारों में तो फारसी के साथ ही साथ हिन्दी के भी कवि रहते थे । दरबारों में लाग डाँट और ग्रहणशीलता के तर्क से अरबी फारसी के माध्यम से एक प्रकार से हिन्दी भाषा का शहरीकरण हुआ । शहरीकरण का अरबी फारसी से घना सम्बन्ध है वैसे ही जैसे संस्कृतीकरण का सम्बन्ध है ।

मुगलों के आगमन के बाद भी भाषा साहित्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में गति आई । हिन्दी साहित्य के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि

मध्यकाल में एक नयी भारतीय संस्कृति विकसित हो रही थी । इस संस्कृति के प्रमाण में अनेक ऐसे उदाहरण दिये जा सकते हैं । मैंने रीतिकाल के संदर्भ में अरबी फारसी के शब्दों के उदाहरणों से एक प्रकार से सांस्कृतिक प्रक्रिया की खोज की है ।

मैंने शोध कार्य की शुरुआत डा० उदय नारायण तिवारी जी के निर्देशन में की । उन्होंने ही इस विषय का चुनाव करके रूपरेखा की तैयारी में उचित मार्ग-दर्शन किया । मैंने काफी कार्य उनके निर्देशन में किया भी सहसा वे दिवंगत हो गये । विश्वविद्यालय ने डा० सत्यप्रकाश मिश्र को मेरा निर्देशक नियुक्त किया । डा० तिवारी जी की मृत्यु के पश्चात् अवशिष्ट कार्य मैंने डा० मिश्र के निर्देशन में किया ।

शोध-कार्य करने का विचार सर्वप्रथम अपने पति की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ, जिसके लिए मैंने डा० जगदीश गुप्त जी से परामर्श करके इस कार्य को करने के लिए उचित मार्ग दर्शन की इच्छा व्यक्त की । इसके लिए उन्होंने मुझे भाषा विज्ञान से सम्बन्धित शोध करने की राय देते हुए डा० उदय नारायण तिवारी जी के पास भेजा । एक बार की ही भेंट में आपने उचित विषय का सुझाव देते हुए अपने निर्देशन में कार्य करने की अनुमति दे दी, विषय की रूपरेखा तैयार करने तथा कुछ कार्य हो जाने के पश्चात् उन्होंने मुझे डा० हरदेव बाहरी जी से मिलने का सुझाव दिया, जिनसे मिल कर मुझे अरबी फारसी लिपि के ज्ञान की आवश्यकता महसूस हुई और मैंने इसके लिए प्रयास किया, जिससे मेरा कार्य सहज व सरल लगने लगा। डा० उदयनारायण तिवारी जी के दिवंगत हो जाने के पश्चात् मुझे डा० सत्यप्रकाश मिश्र का निर्देशन प्राप्त हुआ । आज जब कि यह कार्य पूर्ण होने जा रहा है, मैं इसके लिए अपने गुरु जी डा० उदय नारायण तिवारी एवं डा० सत्यप्रकाश मिश्र की आभारी हूँ, जिनके अथक सहायोग एवं प्रोत्साहन से यह कार्य पूर्ण हो सका ।

इसी संदर्भ में डा० हरदेव बाहरी जी की आभारी हूँ जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर मुझे इस कार्य की बारीकियों को समझाते हुए अरबी-फारसी

लिखने व पढ़ने का ज्ञान होना आवश्यक है, पर बल देते हुए मुझे इसके लिए प्रेरित किया ।

मैं डा० जगदीश गुप्त जी की भी आभारी हूँ, जिनके उचित परामर्श से मुझे डा० उदयनारायण तिवारी जी जैसे गुरु की प्राप्ति हुई । मैं डा० रामस्वरूप चतुर्वेदी जी (विभागाध्यक्ष- हिन्दी विभाग) के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे डा० सत्यप्रकाश मिश्र को निर्देशन में प्रदान किया जिन्होंने मेरी हर समस्या को देखते हुए मुझे जल्द से जल्द कार्य पूर्ण करने के लिए सदैव प्रेरित किया ।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुस्तकालय, हिन्दी विभाग इलाहाबाद वि०वि० तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के उन सभी कर्मचारियों को मेरा धन्यवाद है, जिनसे समय-समय पर सहयोग प्राप्त हुआ है ।

अंत में अपने परिवार के सभी सदस्यों के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे हर तरह से सहयोग दिया है । अपनी पितामही गिरिजा देवी (90 वर्ष) के लिए जो इस समय मरणासन्न हैंजो सान्त्वनाओं से मुझे आशान्वित करके मेर मानसिक बल को बनाये रखने का गुरुतर कार्य करती रही है उनके प्रति आभार के लिए मैं क्या कहूँ मेरे पास शब्द नहीं हैं ।

इस कार्य को पूर्ण करने के लिए पर्याप्त समय देने में हर तरह का कष्ट उठाने के लिए मैं अपने पति श्री वृज किशोर पाण्डेय (अ० अभियन्ता) एवं अपने पुत्र चि० राहुल किशोर (कक्षा-3) की चिर ऋणी रहूँगी ।

—

रीतिकाल

रीति काल

हिन्दी साहित्य में रीति काल का आरंभ संवत् 1700 से माना जाता है । इस समय मध्यकालीन राजनीतिक व्यवस्था का आधार था व्यक्तिवादी निरंकुश राजतंत्र । इस प्रकार की व्यवस्था में शासक ही राष्ट्र के भाग्य का विधाता, युग चेतना का नियामक तथा कुछ सीमा तक एक विशिष्ट जीवन दर्शन का प्रतिपादक भी होता है । उसके सार्वभौम व्यक्तित्व में समस्त अधिकार केन्द्रित रहते हैं ।

रीति काल के पूर्व सम्राट् अकबर की दूरदर्शिता ने हिन्दू मुसलमानों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक विचारों तथा भावनाओं के समन्वय द्वारा एक बृहत् राज्य की प्रतिष्ठा की थी, उसकी मृत्यु के पश्चात् जहाँगीर ने राज्य सम्बन्धी गंभीर समस्याओं के समाधान में कोई महत्वपूर्ण योग नहीं दिया, हाँ मदिरा की सुराहियों और नारी सौन्दर्य के प्रति उसकी असंतुलित और लोलुप वृत्तियाँ उसके उत्तराधिकारियों को विरासत के रूप में अवश्य प्राप्त हुईं । जहाँगीर के बाद शाहजहाँ के सिंहासनारूढ़ होने पर स्थिति में कुछ परिवर्तन आया । उसकी रगों में यद्यपि राजपूती रक्त था तथापि धर्म के नाम पर वह अत्यंत असहिष्णु था । संस्कारों का यह मिश्रण उसके व्यक्तित्व की ग्रंथियों बनकर दो विरोधी तत्वों के रूप में प्रकट हुआ । एक ओर उसकी धार्मिक असहिष्णुता थी और दूसरी ओर सांस्कृतिक तथा कलागत उदारता । शाहजहाँ के समय की सबसे बड़ी विशेषता उस काल की शांतिपूर्ण समृद्धि है । इसी कारण उसे अपने जीवन की सबसे बड़ी महत्वाकांक्षाओं और प्रदर्शन प्रधान वृत्तियों की अभिव्यक्ति का अवसर मिला । जैसा कि पहले कहा जा चुका है, निरंकुश राजतंत्र में शासक ही एक विशिष्ट जीवन दर्शन का नियामक होता है । शाहजहाँ की प्रदर्शन वृत्ति से प्रेरणा प्राप्त कर अलंकरण तथा प्रदर्शन का स्वर उस युग में प्रधान हो गया । रीतिकाल का आरंभ शाहजहाँ के शासनकाल के उत्तरार्ध से होता है । देशव्यापी शांति तथा सम्राट् की व्यक्तिगत अभिरुचि साहित्य तथा कला की

उन्नति और विकास में बहुत सहायक हुई । अनेक कवि, संगीतज्ञ, चित्रकार, और वास्तुशिल्पी उसके दरबार में शरण लेने आते थे और प्रतिभावान कलावंतों को निराश नहीं लौटना पड़ता था । राजतंत्र सामंतशाही का पोषक होता है, अतः तत्कालीन कलावंतों को सामंतीय छत्रछाया भी सहज ही प्राप्त हो जाती थी । उस युग में सामंतों में कलावन्तों को आश्रय प्रदान करने के लिए पारस्परिक प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा चला करती थी ।

जब धर्म तथा दर्शन का विशाल संरक्षण प्राप्त कर हिन्दी सामान्य जनता को राम और कृष्ण के चरित्र पर मुग्ध कर रही थी, अकबर के समय में ही सम्राट् के दरबार की शोभा बढ़ाने वाले अनेक कवियों का प्रादुर्भाव हो चुका था । मुगल दरबार की भाषा फारसी थी । इस भाषा के विकास में जिस शैली का अनुगमन किया गया उसका स्पष्ट प्रभाव भी हमें हिन्दी पर दिखाई देता है । शाहजहाँ के समय में लिखे गये फारसी के साहित्य को शैली की दृष्टि से दो शैलियों में विभाजित किया जाता है — (1) भारतीय ईरानी शैली तथा (2) विशुद्ध ईरानी शैली ।

शाहजहाँ के अहं तथा प्रदर्शन भावना की परिपूर्ति के लिए उसके दरबार में फारसी शायरों का अच्छा जमाव था । परन्तु एक तो अकबर द्वारा स्थापित परंपरा की अपेक्षा संभव न थी, दूसरे भावी युवराज दारा की सहिष्णु नीति का प्रभाव भी शाहजहाँ के दरबार में पड़ रहा था । ऐसी स्थिति में शासित विधर्मियों के प्रति कट्टरता की नीति अपना कर भी उनके साहित्य तथा संस्कृति की उपेक्षा करना कठिन था । शाहजहाँ के जीवन की महत्वाकांक्षा थी मुगलगरिमा की अमर स्थापना । उसके समस्त कार्य इसी साध्य की सिद्धि के लिए किये गये थे । मुगल रंगीनियों में अपने दरबार को रंग देने के महत्वाकांक्षी शाहजहाँ द्वारा हिन्दी और संस्कृत विद्वानों का संरक्षण कुछ आश्चर्य की वस्तु अवश्य है, पर यह सत्य है कि उसने भारतीय कलाविदों को भी संरक्षण प्रदान किया । सुन्दरदास तथा चिंतामणि उसके द्वारा पुरस्कृत किये गये थे ।

शाहजहाँ की यश लाभ की महत्वाकांक्षा तथा दारा की सहिष्णुता के फलस्वरूप शाहजहाँ के शासन काल में भारतीय कला तथा साहित्य को संरक्षण प्राप्त हुआ और

मुगल दरबार में पोषित दरबारी काव्य का गहरा प्रभाव हिन्दी साहित्य पर पड़ने लगा। जीवन के व्यापक उपादानों को छोड़कर वह राज-प्रशस्ति और शृंगार वर्णन तक ही सीमित रह गया। पांडित्य प्रदर्शन के लिए सम-सामयिक भारतीय ईरानी काव्य-परंपरा ने फारसी की प्राचीन परंपराओं से प्रेरणा ग्रहण की। उसके समानान्तर हिन्दी कवियों के समक्ष संस्कृत के प्राचीन काव्यशास्त्र की विकसित परंपरा थी। प्रदर्शन तथा शृंगार-प्रधान जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति के लिए किसी परंपरा का अवलंबन आवश्यक था, क्योंकि शून्य वर्तमान अतीत का सहारा लेकर आगे बढ़ता है। मुगल दरबार तथा उसके प्रभाव से सामंतीय संरक्षण में जो हिन्दी कविता पल्लवित हुई उसे फारसी की स्पर्धा में रखे जाने योग्य तत्वों का अनुशोधन अपने देश की साहित्यिक परंपराओं में करना पड़ा। गजल की शृंगारिकता, गुलो-बुलबुल, शीरी फरहाद और लैला मजनू के साहसिक प्रेम की परंपरा भारत में नहीं थी। भारतीय नायक के आदर्श राम और कृष्ण थे और नायिकाओं की सीता तथा राधा। राधा के परकीया रूप में भी मांसलता और चांचल्य की अपेक्षा भावना और मार्दव अधिक था। फारसी काव्य की विलासमयी नायिकाओं की तुलना में नायिका-भेद की श्रेणियों में बद्ध नारी सौन्दर्य को ही रखा जा सकता था। इसी प्रकार 'कसीदा' की स्पर्धा में हिन्दी में राजस्तुति का महत्व बढ़ने लगा। व्यक्तिवादी राजतंत्र में राज दरबार की रुचि का प्रभाव तत्कालीन साहित्य कला तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में स्पष्ट लक्षित हो रहा था।

किंतु यह तो केवल रीतिकाल का आरंभ था। उसका पूरा इतिहास तो मुगल वैभव के पतन के साथ सम्बद्ध है। मध्य एशिया के आक्रमणों से मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का लगा दूसरी ओर साम्राज्य गंभीर समस्याओं के प्रति जहाँगीर की उदासीनता और शाहजहाँ में अपव्यय के कारण उसकी आर्थिक स्थिति भी अनुदिन क्षीण होती गई। सं0 1715 में शाहजहाँ भयंकर रोग से ग्रस्त हो गया। राजगद्दी के लिए शाहजहाँ के पुत्रों ने रक्त की नदी बहा दी। युवराज दारा के पराजय के साथ ही मुगल इतिहास के पृष्ठों में सहिष्णुता और उदारता का नाम मिट गया। दारा की पराजय में भारत के भाग्य के प्रति नियति का बड़ा भारी व्यंग्य छिपा हुआ था।

दारा की हत्या के साथ ही मध्यकालीन भारतीय वातावरण में अपवाद-रूप में उदित सहज मानवता की ही हत्या कर डाली गई। शान-शौकत, वैभव और ऐश्वर्य

का सम्राट् पृथ्वी के स्वर्ग का निर्माता शाहजहाँ सात वर्ष तक साधारण बंदी के रूप में जीवित रहा, यह शाहजहाँ ही नहीं समस्त उत्तरापथ के प्रति नियति का व्यंग्य था । औरंगजेब की कठोर अमानवीय धार्मिक नीति के कारण अनेक देशी नरेश उसके विरुद्ध हो गये । दूसरी ओर उसे सिक्खों तथा मराठों की जनशक्ति से लोहा लेना पड़ा । इस्लामी सल्तनत स्थापित करने की महत्वाकांक्षा में उसने मानवीय मूल्यों तथा अपनी नीति के व्यावहारिक परिणामों की चिंता नहीं की । वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था और इस संप्रदाय में जीवन के रागात्मक तत्वों के प्रति एक प्रकार का कठोर भाव मिलता है । सौंदर्य ऐश्वर्य और विलास का त्याग उसमें अनिवार्य है । फलतः जीवन के रागात्मक तत्वों को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली कलाओं तथा साहित्य के लिए औरंगजेब के आदर्श राज्य में कोई स्थान नहीं था । औरंगजेब के सिंहासनारोहण के पश्चात् ग्यारह वर्ष तक कुछ कलावन्त और कवि किसी प्रकार उसके दरबार में बने रहे, परन्तु अन्ततोगत्वा उन्हें बिल्कुल निकाल दिया गया । संगीत तथा नृत्य प्रदर्शन अवैधानिक ठहरा दिये गये ॥

औरंगजेब की कट्टरता तथा धर्मान्धता ने उसके लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दीं । मुगल साम्राज्य के प्रत्येक भाग में उठती हुई असंतोष और विद्रोह की चिनगारियाँ दिन-पर-दिन भड़कती ही गईं । ऐसी अवस्था में कला और संस्कृति की स्थिति बड़ी ही शोचनीय हो गई । न तो औरंगजेब के शुष्क व्यक्तित्व में इन रसात्मक वृत्तियों के लिए स्थान था, और न तत्कालीन अव्यवस्था में राजकीय संरक्षण की संभावना । मुगल दरबार के द्वारा संरक्षण के अभाव के कारण अनेक कलाविदों ने विभिन्न सामंतों तथा नरेशों की शरण ली क्योंकि उनके दरबार में कलावन्तों तथा कवियों की उपस्थिति उनके गौरव की प्रतीक थी । मुगल दरबार के अनुकरण पर अपने दरबारों को अलंकृत करने की प्रवृत्ति हमें उस समय के अनेक नरेशों तथा सामंतों में दिखाई पड़ती है । जहाँ मुगल दरबार में भारतीय ईरानी काव्य-परंपरा को प्रश्रय मिला वहाँ राजस्थान के नरेशों तथा सामंतों की छत्रछाया में हिन्दी कविता का दरबारी रूप पनपा । ओरछा कोटा, बूंदी, जयपुर, जोधपुर और यहाँ तक कि महाराष्ट्र के राजदरबारों में भी वही प्रदर्शन प्रधान और शृंगारपरक जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति में काव्यधारा चलती रही ।

औरंगजेब की मृत्यु के उपरान्त मुगल सिंहासन के अनेक उत्तराधिकारी उठ खड़े हुए । मुगल साम्राज्य के इस अन्तिम चरण की कहानी अव्यवस्था, रक्तपात और घोर नैतिक पतन की कहानी है । लेकिन इन उत्तराधिकारियों में से अनेक कला, साहित्य तथा संगीत के पारखी भी हुए । उनके संरक्षण में कला पनपी तो अवश्य परन्तु गंभीर प्रेरक तत्वों के अभाव के कारण उसका स्तर छिछला ही बना रहा । जीवन के प्रति एक अगंभीर और विलास प्रधान दृष्टि के कारण साहित्य और कला का प्रयोजन अनुरंजन मात्र ही रह गया । संगीत, वास्तुशिल्प और चित्रकला आदि में भी अभिव्यंजना का रूप परंपरागत और कृत्रिम प्रदर्शन प्रधान रहा, उसके आधारभूत विषयों में गाम्भीर्य का अभाव रहा ।

शाहजहां के समय से ही हिन्दी कवियों ने हिन्दू राजाओं के दरबार में आश्रय लेना आरंभ कर दिया था । औरंगजेब की कट्टरनीति के फलस्वरूप तो मुगल दरबार से हिन्दी का बहिष्कार हो ही गया था । इस प्रकार साधारणतः रीतिकालीन कविता को सामंतों के आश्रय में ही पोषण मिला । यहां की स्थिति और भी दयनीय थी । मुगल सम्राटों के सामने तो अनेक आन्तरिक और बाह्य समस्याएं बनी रहती थीं । अतएव विलास और ऐश्वर्य के साथ ही साथ कुछ उद्यम भी करना आवश्यक हो जाता था, परन्तु उनके कदमों पर चलने वाले सामंत और नरेश निर्विघ्न वैभव और विलास में तल्लीन रहते थे क्योंकि उनकी समस्याएं अपेक्षाकृत कम जटिल थीं । धीरे-धीरे उनमें से भी आत्म-निर्भरता, देशभक्ति प्राचीन कुल-मर्यादा की भावना इत्यादि जो शताब्दियों से राजपूत जाति के विशेष गुण माने जाते थे, लुप्त होते जा रहे थे । स्वातंत्र्य प्रेम मिथ्या आत्म-सम्मान के रूप में शेष रह गया था । राजपूतों के दृढ़ स्नायुओं में भीमुगल दरबार की नजाकत और कोमलता प्रवेश कर गई थी । राजस्थानी जौहर का स्थान भ्रष्टाचार ने तथा सबल पौरुष का स्थान अनैतिक विलास ने ले लिया था । कला का प्रयोजन केवल विलास-परक जीवन के उद्दीपन के रूप में ही शेष रह गया था । इन असमर्थ और अयोग्य शासकों की परिषद में भी अभिजात वर्गके दूरदर्शी तथा बुद्धिमान सामंत नहीं रह गये थे । इनके स्थान पर नाई, दर्जी, महावत, भिश्ती जैसे निम्न बौद्धिक स्तर के व्यक्ति उनके विश्वास पात्र बनगये थे । इस प्रकार के आश्रयदाताओं के संरक्षा में रहने वाले कवि के लिए स्वाभाविक था कि वह वैदग्ध्य और कल्पना के बल पर उनके भोग परक जीवन

और वैभवविलास के अतिरंजनापूर्ण चित्र अंकित करें । यही कारण है कि रीतिकाल में कला का विकास इन्हीं राजाओं की रुचि के अनुसार हुआ ।

निष्कर्ष यह है कि मध्यकालीन राजनीतिक व्यवस्था में राजतंत्र तथा सामंतवाद के प्राधान्य ने कला तथा साहित्य को ऐश्वर्य और अलंकार के रूप में स्वीकार किया । ऐसी स्थिति में साहित्य सर्जना का क्षेत्र अभिव्यंजनागत चमत्कार और आश्रयदाता के रुचिप्रसादन तक ही सीमित हो गया ।

औरंगजेब की संकीर्णता ने दिल्ली से हिन्दी का उन्मूलन अवश्य किया परन्तु हिन्दी जनभाषा होने के कारण धर्म और जीवन के अन्य व्यापक आधारों के सहारे पनपती रही । सामंतीय वातावरण में जो काव्य पल्लवित हुआ उसमें चाहे स्थूल शृंगार की नग्नता कितनी ही हो परंतु इस तथ्य को भी हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि प्राचीन की पुनः स्थापना का श्रेय भी तत्कालीन राजकीय संरक्षण की प्रदर्शनप्रियता तथा शृंगारप्रधान वृत्ति ही थी ।

भारतीय आस्तिकता को जीवन की प्रत्येक अभिव्यक्ति का मौलिक सम्बन्ध किसी-न-किसी प्रकार से अलौकिक शक्तियों से स्थापित करने का अभ्यास रहा है । प्रत्येक विधा किसी-न-किसी प्रकार ब्रह्म अथवा उसके किसी रूप से उद्भूत हुई है — ऐसी उसकी आस्था रही है । राजशेखर ने काव्यमीमांसा में साहित्य शास्त्र की उत्पत्ति का अत्यंत रोचक वर्णन किया है — सरस्वती पुत्र काव्यपुरुष को ब्रह्मा की आज्ञा हुई कि तुम तीनों लोकों में साहित्य शास्त्र के अध्ययन का प्रचार करो । निदान उसने सबसे पूर्व अपने मानसजात सत्रह शिष्यों के समक्ष इसका व्याख्यान किया और फिर इन ऋषियों ने शास्त्र को सत्रह अधिकरणों में विभक्त करके अपने-अपने विषयों पर स्वतंत्र रीतिग्रंथ लिखे — "तत्र कविरहस्यं सहस्राक्षः समाम्नासीत, औक्तिकमुक्ति गर्भः, रीतिनिर्णयं सुवर्णनामः, आनुप्रासिकं प्रचेतायनः, यमकानि चित्रं चित्रांगदः, शब्दश्लेषं शेषः, वास्तवं पुलस्त्यः, औपम्यमौपकायनः, अतिशयं पराशरः, अर्थश्लेषमुतथ्यः उभयालंकारिकं कुबेरः, वैनोदिकं कामदेवः, रूपक निरूपणीयं भरतः, रसाधिकारिकं नन्दिकेश्वरः, दोषाधिकारिकं धिषणः, गुणौपादानिकमुपमन्युः, औपनिषदिकं कुचुमारः इति ।

विद्वानों की राय है कि यह सूची अधिक विश्वसनीय नहीं है । वैसे भी कुछ नाम तो स्पष्टतः संगति बैठाने के लिए गढ़े गये मालूम होते हैं परन्तु कुछ नामों का उल्लेख यत्र-तत्र अवश्य मिलता है । जैसे कामसूत्र में औपनिषदिक के व्याख्याता कुचुमार और साम्प्रयोगिक के व्याख्याता सुवर्णनाम के नाम आते हैं । 'रूपक' या नाट्यशास्त्र पर भरत का ग्रंथ तो किसी-न-किसी रूप में आज भी उपलब्ध है । नन्दिकेश्वर के नाम से कामशास्त्र, गीत, नृत्य और तंत्र संबंधी ग्रंथों का उल्लेख तो मिलता है परन्तु रस पर उनका कोई ग्रंथ प्राप्त नहीं है। इस प्रकार राजशेखर का यह काव्यमय वर्णन रीतिशास्त्र की उत्पत्ति का इतिहास जुटाने में हमारी कोई सहायता नहीं करता ।

(1) <u>वेद-वेदांग</u> :

ऐतिहासिक दृष्टि से भारतीय ज्ञान का प्राचीनतम कोश वेद है । वैदिक ऋचाओं के रचयिता वाणी के रस से तो स्पष्टतः अभिज्ञ थे ही, इसमें कोई संदेह नहीं, इसके साथ ही नृत्य गीत छंद रचना आदि के सिद्धांतों का सम्यक् विवेचन और 'उपमा' शब्द का प्रयोग भी वेदों में मिलता है । परन्तु साहित्यशास्त्र का निश्चित आरंभ वेदों में ढूंढ़ना क्लिष्ट कल्पना मात्र होगी, वेदों के अतिरिक्त वेदांग संहिता ब्राह्मण तथा उपनिषद् आदि भी इस विषय में मौन हैं ।

(2) <u>व्याकरण शास्त्र</u> :

भारत का व्याकरण शास्त्र जितना प्राचीन है, उतना ही पूर्ण भी है । उसे तो वास्तव में भाषा का दर्शन कहना चाहिए । व्याकरण के आदि ग्रंथ हैं निरुक्त और निघंटु । यास्क ने वैदिक उपमा का विवेचन करते हुए उसके कुछ भेदों का विवरण दिया है । जैसे - भूतोपमा, जिसमें उपमित उपमान बन जाता है । रूपोपमा - जिसमें उपमित और उपमान में रूप साम्य होता है । सिद्धोपमा -जिसमें उपमान सर्वस्वीकृत और सिद्ध होता है । रूपक की समानार्थी लुप्तोपमा या अर्थोपमा जिसमें साम्य व्यक्त न होकर अव्यक्त ही होता है । पाणिनि के समय तक उपमा का स्वरूप निर्धारित हो चुका था । उन्होंने उपमित, उपमान, सामान्य आदि पारिभाषिक

शब्दों का स्पष्ट प्रयोग किया है । पाणिनि के उपरान्त पतंजलि का महाभाष्य भी इन रूपों की सम्यक् व्याख्या करता है । वास्तव में व्याकरण शास्त्र हमारे काव्यशास्त्र का एक प्रकार से मूलाधार है । वाणी के अलंकरण के जो सिद्धान्त काव्यशास्त्र में स्थिर किये गये, उन पर व्याकरण के सिद्धान्तों का स्पष्ट प्रभाव है । भामह, वामन तथा आनन्दवर्धन जैसे आचार्यों ने अपने ग्रंथों में व्याकरण की स्थान-स्थान पर सहायता ली है । ध्वनि का प्रसिद्ध सिद्धान्त व्याकरण के स्फोट सिद्धान्त से ही ग्रहण किया गया है ।

(3) दर्शन :

व्याकरण के उपरान्त काव्यशास्त्र का दूसरा आधार दर्शन है । उसके कतिपय प्रमुख सिद्धांतों का सीधा सम्बन्ध विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों से है, उदाहरण के लिए शब्द की तीन शक्तियों — अभिधा, लक्षणा, व्यंजना का संकेत न्यायशास्त्र के शब्द-विवेचन में मिलता है । नैयायिकों के अनुसार शब्द के अभिधार्थ से व्यक्ति, जाति, और गुण तीनों का बोध हो जाता है, इसके अतिरिक्त उन्होंने शब्दार्थ को गौण भक्त लाक्षणिक और औपचारिक आदि अर्थों में विभक्त किया है । शब्द प्रमाण के सम्बन्ध में न्याय और मीमांसा, दोनों में शब्द और वाक्य का वर्गीकरण तथा अर्थवाद आदि का सूक्ष्म विवेचन मिलता है । वास्तव में न्याय और मीमांसा से ही व्याख्यात्मक आलोचना का उद्भव समझना चाहिए । इसी प्रकार अभिनवगुप्त का व्यक्तिवाद, सांख्य के परिणामवाद से बहुत दूर नहीं है, जिसके अनुसार सृष्टि का अर्थ उत्पादन या सृजन न होकर केवल अभिव्यक्ति ही होता है । इससे भी अधिक स्पष्ट है वेदांतियों के मोक्ष सिद्धान्त का प्रभाव । इसके अनुसार मोक्ष का आनन्द बाहर से नहीं प्राप्त होता, वह तो आत्मा का ही शुद्ध-बुद्ध रूप है, जो माया का आवरण हट जाने के उपरान्त स्वतः आनन्दमय रूप में अभिव्यक्त हो जाता है । परन्तु यह वास्तव में संकेत अथवा अनुमान मात्र है, इससे काव्यशास्त्र की उत्पत्ति के विषय में कोई निश्चित सिद्धान्त स्थिर नहीं हो पाता ।

(4) काव्यशास्त्र का वास्तविक आरंभ :

निदान, काव्यशास्त्र का वास्तविक आरंभ हमें दर्शन और व्याकरण के मूल ग्रंथों

कि ईसा की पहली पाँच शताब्दियों में ही उसका जन्म माना जा सकता है । शिलालेखों की काव्यमयी प्रशस्तियाँ, अश्वघोष और भास के ग्रंथ तथा कालीदास का अलंकृत काव्य आदि सब इसी ओर संकेत करते हैं । भरत के नाट्यशास्त्र का मूल रूप तो स्पष्टतः इसी काल की अत्यंत आरंभिक रचना है । इतिहासज्ञ उसका रचना-काल ईसा की पहली शताब्दी के आस-पास स्थिर करते हैं । भरत ने कृशाश्व और शिलालिन् के नामों का उल्लेख किया है, उधर भामह ने मेधाविन् का और दंडी ने कश्यप आदि का, परंतु अभी तक इनके ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं । अतएव इनके विषय में चर्चा करना व्यर्थ है । भरत के उपरांत काव्य और काव्यशास्त्र दोनों ही समृद्ध होते गये । काव्यशास्त्र में क्रमशः अनेक वादों और संप्रदायों की प्रतिष्ठा हुई, जिसमें से पाँच अधिक प्रचलित और प्रसिद्ध हुए — रस संप्रदाय, अलंकार - संप्रदाय, रीति संप्रदाय, वक्रोक्ति संप्रदाय और ध्वनि संप्रदाय । मान्यता तथा ऐतिहासिकता दोनों की दृष्टि से सबसे पहले रस संप्रदाय ही आता है ।

(1) रस संप्रदाय :

संस्कृत काव्यशास्त्र के इतिहास में आदि से अंत तक रस निरूपण को किसी-न-किसी रूप में स्थान अवश्य मिला है । भरत ने रस विषयक प्रायः सभी सामग्री प्रस्तुत की है । उनके बाद लगभग सात सौ वर्षों तक यद्यपि अलंकार संप्रदाय का महत्व बना रहा, परन्तु एक तो अलंकारवादी आचार्यों ने रस की महत्ता स्थान-स्थान पर घोषित की है और दूसरे संभवतः इसी अंतराल काल में ही भट्ट लोल्लट आदि आचार्यों ने रस-स्वरूप निर्देशित भरतसूत्र की गंभीर व्याख्या प्रस्तुत करके रस संप्रदाय की धारा को अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित होने में सहयोग दिया है । अलंकारवादियों के बाद आनन्दवर्धन और अभिनव-गुप्त जैसे युग प्रवर्तक ध्वनिवादियों का समय आता है । इनके अनुकरण पर मम्मट, विश्वनाथ, जगन्नाथ सरीखे महान् आचार्यों ने रस को ध्वनि के एक भेद के रूप में स्वीकार किया है ।

रस नाटक का अनिवार्य तत्व है । इस दृष्टि से भरत मुनि के लिए अपने ग्रंथ नाट्य शास्त्र में रस विषयक चर्चा का समावेश करना अनिवार्य था । यही कारण है कि रस सम्बन्धी सभी आवश्यक उपकरणों का विवरण इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है ।

जनश्रुति के आधार पर नन्दिकेश्वर को रस का प्रवर्तक होने का श्रेय दिया गया है और भरत को नाट्य शास्त्र का । पर फिर भी भरत का रस के प्रति समादर भाव कुछ कम नहीं है । उक्त ग्रंथ के 'रस विकल्प' और भावव्यंजक नामक अध्यायों में उन्होंने रस और भाव के स्वरूपों का उल्लेख किया है, इनके पारस्परिक संबंध का निर्देश किया है । आठों रसों का परिचय देते हुए उन्होंने प्रत्येक रस के स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारीभाव और सात्त्विक भावों का नामोल्लेख किया है, रसो के वर्णों और देवताओं से अवगत कराया है तथा रसों के भेदों की चर्चा की है ।

भरत ने मूल रूप से रस चार माने हैं — शृंगार, रौद्र, वीर, और वीभत्स । फिर इनसे क्रमशः हास्य करुण अद्भुत और भयानक रसों की उत्पत्ति मानी है । शृंगार और हास्य, वीर और अद्भुत तथा वीभत्स और भयानक रस युग्म का पारस्परिक कारण-कार्य-भाव होने के कारण उत्पाद्योत्पादक सम्बन्ध स्वतः सिद्ध है । रौद्र और करुणा में भी यह सम्बन्ध मनःस्थिति के आधार पर परिपुष्ट है । सबल पक्ष का निर्बल पक्ष पर अकारण और निर्दयतापूर्ण क्रोध सामाजिक के हृदय में करुणा की ही उत्पत्ति करता है ।

इसी प्रकरण में भरत ने रसो के विभिन्न भेदों का भी उल्लेख किया है । आगे चलकर इनमें से कुछ तो प्रचलित रहे और कुछ अप्रचलित हो गये ।

प्रचलित भेद — शृंगार के संभोग और विप्रलंभ दो भेद, हास्य के (उत्तम, मध्यम और अधम कोटि के व्यक्तियों के प्रयोगानुसार) स्मित विहसितादि छः भेद तथा वीर के दानवीर, धर्मवीर, और युद्धवीर तीन भेद ।

अप्रचलित भेद — शृंगार के वाङ्‌नेपथ्यक्रियात्मक तीन भेद, हास्य के आत्मस्थ और परस्थ दो भेद । हास्य व रौद्र के अंग नेपथ्यवाक्यात्मक तीन-तीन भेद । करुण के धर्मोपघातज, अपचयोद्भव और शोककृत तीन भेद । भयानक के स्वभावज, सत्त्वसमुत्थ और कृतक तीन भेद तथा व्याज अपराधत्रासमत तीन भेद । वीभत्स के क्षोभज, शुद्ध और उद्वेगी तीन भेद । अद्भुत के दिव्य और आनंदज दो भेद ।

भरत के कथनानुसार विभाव अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है — विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद् रस निष्पत्तिः । उनके इस

दोनों ने अलंकार को शब्दार्थ का ही शोभाकारक धर्म माना है । दोनों वर्गों के मतों का विभेदक धर्म यह है कि रसवादी अलंकार द्वारा शब्दार्थ की शोभा से रस का भी उपकार मानते हैं, पर अलंकारवादी शब्दार्थ से आगे नहीं बढ़ते ।

अलंकारों की संख्या – भरतमुनि से लेकर अप्परय दीक्षित पर्यन्त वाणी-विलास की ज्यों-ज्यों सूक्ष्म विवेचना होती गई, अलंकारों की संख्या भी त्यों-त्यों बढ़ती गई । इसी बीच पिछले आचार्यों द्वारा स्वीकृत अलंकारों को अमान्य भी ठहराया गया । फिर भी नये-नये अलंकारों के समावेश द्वारा संख्या में वृद्धि होती चली गई । भरत ने केवल 4 अलंकार माने थे, भामह ने 39, दंडी ने 35, उद्भट ने 40, वामन ने 33, रुद्रट ने 52, भोजराज ने 72, मम्मट ने 67, रुय्यक ने 81, जयदेव ने 100, विश्वनाथ ने 82, अप्पय दीक्षित ने 124 और जगन्नाथ ने 71 अलंकार माने हैं ।

अलंकारों की संख्या न्यून करने के प्रयत्न भी समय-समय पर होते रहे हैं । इस दिशा में कुंतक का प्रयास विशेषतः उल्लेखनीय है । उन्होंने केवल 20 अलंकारों का निरूपण किया और इनमें भी प्रतिवस्तूपमा, उपमेयोपमा, तुल्ययोगिता, अनन्वय निदर्शना और परिवृत्ति इन छः सादृश्यमूलक अलंकारों का उपमा में समासोक्ति का श्लेष में तथा सहोक्ति का उपमा में अन्तर्भाव करके शेष 13 अलंकार ही मान्य ठहराये अन्य आचार्यों द्वारा सम्मत अलंकारों के सम्बन्ध में उनका कथन है कि या तो वे शोभा शून्य है या इन्हीं अलंकारों में उनका अन्तर्भाव हो सकता है । अतः वे मान्य नहीं हैं । इस दिशा में कुन्तक के उपरान्त जयदेव का नाम उल्लेख्य है । इन्होंने शुद्धिसंसृष्टि संकर, मालोपमा और रशनोपमा अलंकारों की अस्वीकृति की है ।

अलंकारों का वर्गीकरण – भामह ने वाणी के समग्र व्यापार को दो वर्गों में विभक्त किये हैं । वक्रोक्ति और स्वभावोक्ति । उनके मतानुसार वक्रोक्ति ही काव्य चमत्कार का बीज है, स्वभावोक्ति तो प्रकारान्तर से वार्ता मात्र है । पर दंडी ने समस्त वाङ्मय को उक्त दो वर्गों – वक्रोक्ति और स्वभावोक्ति में विभक्त करते हुए स्वभावोक्ति को अलंकारों में प्रथम स्थान देकर इसके प्रति अपना समादर प्रकट किया है । पर कुन्तक ने भी वक्रोक्ति को ही काव्य का सर्वस्व घोषित करते हुए स्वभावोक्ति

सिद्धान्त कथन में यद्यपि स्थायीभाव को स्थान नहीं मिला, पर जैसा उनकी अपनी व्याख्या से स्पष्ट है, उन्हें अभीष्ट यही है कि स्थायी भाव ही उत्तरविभावादि के द्वारा रसत्व को प्राप्त होते हैं ।

भरत प्रतिपादित सूत्र की व्याख्या परवर्ती विद्वान् आचार्य जिनमें से भट्ट-लोल्लट, श्रीशंकुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, ने किया है । इस कथन में विभाव, अनुभाव और व्यभिचारीभाव का जो स्वरूप भरत को अभीष्ट है, वही परवर्ती आचार्यों को भी है, पर विवादग्रस्त दो शब्द हैं संयोग और निष्पत्ति, जिन पर विभिन्न व्याख्यान उल्लिखित हैं ।

(2) अलंकार संप्रदाय — भरत से लेकर जगन्नाथ तक लगभग दो सहस्र वर्ष के इस सुदीर्घ काल में अलंकार को किसी-न-किसी रूप में काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में स्थान मिलता आया है । भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में केवल चार अलंकारों का निरूपण किया है — उपमा, दीपक, रूपक और यमक । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि —

(1) भरत के समय अलंकार नामक काव्यांग पूर्णतः प्रतिष्ठित नहीं हो पाया था ।
(2) भरत के कई सौ वर्ष उपरान्त भामह, दंडी, उद्भट आदि अलंकारवादी आचार्यों ने इसे काव्य का सर्वप्रतिष्ठित अंग स्वीकृत किया ।
(3) आनन्दवर्धन ने इसकी सर्वातिशय महत्ता को अस्वीकार किया ।
(4) आनन्दवर्धन के परवर्ती प्रायः सभी आचार्यों ने आनन्दवर्धन का अनुसरण करते हुए भी इसका विशद एवं विस्तृत निरूपण किया ।

अलंकारवादी आचार्य — भामह, दंडी और उद्भट अलंकार संप्रदाय के आचार्य हैं । इनमें से प्रथम दो आचार्यों के ग्रंथ क्रमशः काव्यालंकार और काव्यादर्श प्राप्त हैं पर उद्भट प्रणीत ग्रंथों में से केवल एक ही ग्रंथ काव्यालंकार सार संग्रह अद्यावधि उपलब्ध है । इस ग्रंथ के कुछेक स्थलों से यह अवश्य ज्ञात होता है कि वे अलंकारवाद के समर्थक रहे होंगे ।

उक्त तीनों आचार्यों को अलंकारवाद के समर्थक मानने का प्रधान कारण यह है कि ये सभी आचार्य किसी न किसी रूप में रस की महत्ता स्वीकार करते हुए भी इसे अलंकार में अन्तर्भूत करने के पक्ष में हैं । इन तीनों ने रस, भाव और रसाभास तथा भावाभास को क्रमशः रसवत् प्रेयस्वत् और उर्जस्वि अलंकारों के नाम से अभिहित किया है तथा उद्भट ने समाहित नामक अन्य अलंकार को भावशांति का पर्याय माना है । निष्कर्ष यह है कि अलंकारवादी आचार्य —

(1) अंगीभूत रस, भाव रसाभास, भावाभास और भावशांति को क्रमशः रसवत्, प्रेयस्वत्, उर्जस्वि और समाहित अलंकारों से अभिहित करते हैं, और

(2) अंगभूत रसादि को द्वितीय उदात्त अलंकार से ।

भामह आदि तीनों आचार्यों को अलंकारवादी मानने का दूसरा कारण है अलंकार के सम्बन्ध में इनकी प्रशस्तियां तथा अलंकार में अन्य काव्यों की स्वीकृति ।

(1) भामह के कथनानुसार जिस प्रकार सहज सुन्दर होने पर भी वनिता मुख भूषणों के विना शोभित नहीं होता उसी प्रकार सुन्दर वाक् (काव्य) भी अलंकारों के विना शोभा नहीं पाता ।

(2) दंडी के मतानुसार वैदर्भ मार्ग के प्राणभूत माधुर्य आदि दस गुण अलंकार ही हैं । मुख आदि पांच संधियों, उपक्षेप आदि 64 संध्यंगों, कैशिकी आदि 4 वृत्तियों, नर्मतत् आदि 16 वृत्यंगों तथा भूषण आदि 36 लक्षणों तथा विभिन्न नाट्यालंकारों को भी दंडी ने अलंकार माना है ।

(3) उद्भट गुण और अलंकार में कोई अंतर नहीं मानते थे तथा रूपक आदि वाच्य अलंकारों को उन्होंने अनेक स्थलों पर प्रतीयमान (व्यंग्य) रूप में भी दिखाया है ।

(4) रुद्रट — इनके ग्रंथ काव्यालंकार का नामकरण ही अलंकार के प्रति इनके झुकाव का सूचक है । भरत के पश्चात् सर्वप्रथम इन्होंने ही रस का स्वतंत्र निरूपण किया है । अलंकार के क्षेत्र में उनकी एक मौलिक और महत्त्वपूर्ण देन है अलंकारों का चार वर्गों में विभाजन ।

<u>अलंकार का लक्षण</u> — संस्कृत के काव्यशास्त्रियों में आनन्दवर्धन के पूर्व दंडी और वामन ने अलंकार लक्षण प्रस्तुत किया है और इनके पश्चात् मम्मट और विश्वनाथ ने । शेष परवर्ती आचार्यों के लक्षणों में मम्मट आदि की छाया है । दंडी और वामन के अलंकार लक्षणों में तारतम्य का अंतर है । दंडी के मत में काव्य (शब्दार्थ) की शोभा उत्पन्न करनेवाला धर्म अलंकार है तो वामन के मत में यह कार्य 'गुण' का है, अलंकार उस शोभा का वर्धक धर्म है :—

"काव्य शोभाकरान् धर्मानलंकारन् प्रचक्षते ।।" — दंडी, काद० 2/1.

"काव्य शोभायाः कर्त्तारो धर्मा गुणाः ।
तदतिशय हेतवस्त्वलंकाराः ।।" — वामन, का०सू० 3/1/1-2.

आनन्दवर्धन ध्वनिवादी आचार्य हैं और इन्होंने अपने अलंकार लक्षण में अलंकार को शब्दार्थ का आभूषक धर्म कहा है :—

"अंगाश्रितास्त्वलंकाराः मन्तव्या कटकादिवत् ।।" — ध्वन्या० 2/6.

इस लक्षण में उन्होंने अलंकार का रस के साथ कोई सम्बन्ध निर्दिष्ट नहीं किया, यद्यपि यह सम्बन्ध उन्हें अभीष्ट अवश्य था । यह कार्य मम्मट व विश्वनाथ ने किया । इनके मत में अलंकार शब्दार्थ की शोभा द्वारा परंपरा सम्बन्ध से रस का प्रायः उपकार करते हैं । इसी प्रकार जगन्नाथ ने भी अलंकारों को काव्य की आत्मा 'व्यंग्य' के रमणीयता-प्रयोजक धर्म मानकर ध्वनिवादियों का ही समर्थन किया है । रस ध्वनिवादी आचार्यों के मत में कुल मिलाकर अलंकार का स्वरूप इस प्रकार है :—

(1) अलंकार शब्दार्थ के शोभाकारक धर्म है,
(2) ये शब्दार्थ के अस्थिर धर्म है,
(3) ये शब्दार्थ की शोभा द्वारा परंपरा सम्बन्ध से रस का भी उपकार करते हैं, और
(4) कभी रस का उपकार नहीं भी करते ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पूर्ववर्ती और परवर्ती आचार्यों के अलंकार लक्षणों में जिस तत्व को किसी-न-किसी रूप में अवश्य स्थान मिला है, वह है अलंकारिता 'काव्य की शोभाजनकता — "अलंक्रियते नेनेत्यलंकारः" । दूसरी समानता यह है कि

को अलंकार रूप में भी स्वीकृत नहीं किया । उनके एतद्विषयक तर्क का अभिप्राय है कि स्वभाव कहते हैं स्वरूप को और स्वभावोक्ति कहते हैं स्वरूप के आख्यान को । किसी भी काव्यगत वर्णन के लिए उसके स्वभाव (स्वरूप) का आख्यान अनिवार्य है । क्योंकि स्वभाव से रहित वस्तु तो निरुपाख्य (अस्तित्वहीन) है । अतः स्वभाव की उक्ति को भी यदि स्वभावोक्ति अलंकार नाम दिया जाता है तो यह नितान्त असंगत है । वस्तुतः स्वभावोक्ति शरीर है, इसे ही अलंकृत करने के लिए अन्य अलंकार अपेक्षित हैं । स्वयं शरीर कभी भी अपना अलंकार नहीं बन सकता ।

अलंकारों को सर्वप्रथम व्यवस्थित रूप देने का श्रेय रुद्रट को है । इन पर उनसे भी पूर्व उद्भट ने इसका प्रयास अवश्य किया था पर उसमें वे सफल नहीं हुए । रुद्रट के पश्चात् रुय्यक ने अलंकारों का वर्गीकरण किया । विद्याधर ने रुय्यक का प्रायः अनुकरण किया । विद्याधर के ग्रंथ एकावली की तरल नामक टीका के कर्ता मल्लिनाथ ने रुय्यक और विद्याधर के वर्गीकरण का स्पष्टीकरण करते हुए पाठकों के लिए उसे सुबोध रूप दे दिया । मल्लिनाथ के अनुसार उक्त आचार्यद्वय का वर्गीकरण इस प्रकार है :–

(1) <u>सादृश्यमूलक अलंकार वर्ग</u> :

(क) भेदाभेद प्रधान – उपमा, उपमेयोपमा, अनन्वय और स्मरण ।

(ख) अभेद प्रधान – (अ) आरोपमूल – रूपक, परिणाम, संदेह आदि ।

(आ) अध्यवसायमूल – उत्प्रेक्षा और अतिशयोक्ति ।

(2) <u>औपम्यगर्भ वर्ग</u> :

(क) पदार्थगत – तुल्ययोगिता, और दीपक ।

(ख) वाक्यार्थगत – प्रतिवस्तूपमा दृष्टान्त निदर्शना ।

(ग) भेद प्रधान – व्यतिरेक, सहोक्ति विनोक्ति ।

(घ) विशेषण विच्छित्ति – समासोक्ति, परिकर ।

(ङ) विशेष्य विच्छित्ति – परिकरांकुर ।

(च) विशेषण विशेष्य विच्छित्ति – श्लेष ।

(छ) समासोक्ति से विपरीत होने के कारण अप्रस्तुत प्रशंसा को, अर्थान्तरन्यास में अप्रस्तुत प्रशंसा के समान सामान्य विशेष की चर्चा होने के कारण अर्थान्तरन्यास को, और गम्य प्रस्ताव के कारण पर्यायोक्त, व्याजस्तुति और आक्षेप को भी इसी वर्ग में स्थान दिया गया है ।

(3) विरोध गर्भ अलंकार वर्ग —

विरोध, विभावना, विशेषोक्ति आदि ।

(4) शृंखलाकर अलंकार वर्ग —

कारणमाला, एकावली, माला दीपक, सार ।

(5) न्यायमूलक अलंकार वर्ग —

(क) तर्कन्यायमूलक — काव्यलिंग, अनुमान ।

(ख) वाक्यन्यायमूलक — यथासंख्य, पर्याय आदि ।

(ग) लोकन्यायमूलक — प्रत्यनीक, प्रतीप आदि ।

(6) गूढार्थ प्रतीतिमूलक अलंकार वर्ग :—

सूक्ष्म, व्याजोक्ति, और वक्रोक्ति ।

विद्याधर के पश्चात् विद्यानाथ ने रुद्रट, रुय्यक और विद्याधर से सहायता लेते हुए अर्थालंकारों को प्रमुख चार प्रकारों में विभक्त किया है और फिर नई प्रकारों के कुल मिलाकर निम्नलिखित 9 भेद गिनाये हैं :—

प्रमुख चार — प्रतीयमान वस्तुगत, प्रतीयमान औपम्य, प्रतीयमान रसभाव आदि एवं अस्फुट प्रतीयमान ।

अवान्तर विभाग — (1) साधर्म्यमूल (भेद प्रधान अभेद प्रधान भेदाभेद-प्रधान), (2) अध्यवसायमूल, (3) विरोधमूल, (4) वाक्यन्यायमूल, (5) लोकव्यवहारमूल, (6) तर्कन्यायमूल, (7) शृंगलावैचित्र्मयमूल, (8) अपह्नवमूल, (9) विशेषण-वैचित्र्यमूल ।

संस्कृत काव्यशास्त्र में विभिन्न आचार्यों द्वारा उपरिनिर्दिष्ट वर्गीकरण किसी सीमा तक तर्कपूर्ण होते हुए भी एकांत रूप से स्वीकार नहीं हो सकते । फिर भी

व्यावहारिक दृष्टि से अलंकाराध्येता के लिए ये वर्गीकरण उपादेय अवश्य है ।

अलंकार संप्रदाय और हिन्दी रीतिकालीन आचार्य — अलंकार संप्रदाय के मूल आधार है भामह, दंडी और उद्भट के अनुकरण पर अलंकार की काव्य के सर्वस्व एवं सर्वोपरि तथा अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकृति, काव्य के अन्य अंगों का अलंकार में समावेश, यहाँ तक कि रस, ध्वनि जैसे महत्वपूर्ण काव्यांगों का भी अलंकार रूप में ग्रहण । इस दृष्टि से कोई भी रीतिकालीन आचार्य एकांत रूप से अलंकारवादी सिद्ध नहीं होता । रीतिकाल में अलंकार का निरूपण दो प्रकार से हुआ है — चिन्तामणि, जसवंत सिंह, कुलपति, देव, सुरति मिश्र, श्रीपति, सोमनाथ, भिखारीदास, जनराज, रणधीर सिंह आदि आचार्यों ने मम्मट, विश्वनाथ आदि के समान अलंकार प्रकरण को अपने विविधांग निरूपक ग्रंथों का एक भाग बनाया है तथा मतिराम, भूषण, श्रीधर कवि, रसिक सुमति, रघुनाथ गोविन्द कवि, दूलह, पद्माकर, प्रताप साहि आदि ने अप्पय दीक्षित के समान उस पर स्वतंत्र ग्रंथ लिखे हैं । इन दोनों प्रकार के आचार्यों ने इस प्रकरण के लिए मम्मट, विश्वनाथ, जयदेव तथा अप्पय दीक्षित में से किसी एक, दो, तीन अथवा चारों आचार्यों का ही आधार ग्रहण किया है, भामह, दंडी और उद्भट का आधार किसी ने भी नहीं लिया । हाँ, देव इसके अपवाद हैं । इन्होंने भावविलास में प्रायः दंडीसम्मत अलंकारों का निरूपण किया है और शब्द रसायन में प्रायः अप्पय्य दीक्षित सम्मत अलंकारों का । फिर भी भावविलास में निरूपित अलंकारों के आधार पर देव को अलंकारवादी नहीं मान सकते । कारण अनेक हैं । प्रथम यह कि देव ने दंडी के काव्यादर्श से सहायता न लेकर केशव की कविप्रिया से ही सहायता ली है, जिसे वे यथावत् एवं विधिवत् प्रस्तुत नहीं कर पाये । दूसरा कारण यह है कि इनका अपेक्षाकृत प्रौढ़ ग्रन्थ शब्द-रसायन मम्मट सम्मत सिद्धान्तों का प्रतिपादक है, न कि दंडीसम्मत सिद्धान्तों का । इस ग्रंथ में शब्द शक्ति के अन्तर्गत व्यंजना शक्ति तथा रस जैसे काव्यांगों की स्वीकृति एवं इनका स्वतंत्र निरूपण इन्हें मम्मट का अनुयायी मानने को बाध्य करता है, न कि दंडी का ।

इसी प्रसंग में रीतिकाल से पूर्ववर्ती हिन्दी आचार्यों पर भी विचार कर लेना समुचित होगा । रीतिकाल से पूर्ववर्ती अलंकार निरूपक तीन आचार्यों का नाम लिया

जाता है — गोपा, करनेस और केशव । इनमें से प्रथम दो आचार्यों के ग्रंथ अनुपलब्ध हैं । केशव के 'कविप्रिया' नामक ग्रंथ के आधार पर इन्हें अलंकारवादी माना जाता है । इन्हें अलंकार संप्रदाय का आचार्य मानने के निम्नलिखित चार कारण हैं :—

(1) केशव ने काव्य के सभी वर्णनीय सामग्री — वर्ण, वर्ण्य, भूश्री, राजश्री आदि को अलंकार के स्थान पर सामान्य अलंकार नाम दिया है ।

(2) रसवत अलंकार के अन्तर्गत शृंगार आदि नौ रसों का निरूपण कर प्रकारान्तर से केशव ने अलंकार्य 'रस' को ही अलंकार मान लिया है ।

(3) इनके मत में उपमा आदि अलंकार काव्य के अनिवार्य अंग है । इनके बिना सर्वगुण संपन्न रचना भी उस सुंदरी नारी के समान शोभाहीन है, जो आभूषण रहित हो ।

(4) काव्य के सभी सौंदर्य विधायक तत्वों को इन्होंने प्रकारान्तर से 'अलंकार' नाम दिया है ।

इनमें से अन्तिम धारणाओं का स्रोत भामह, दंडी, उद्भट और वामन के ग्रंथों में उपलब्ध हो जाता है, पर प्रथम धारणा वर्ण आदि वर्ण्य सामग्री को अलंकार कहना कदाचित केशव की निजी धारणा है ।

(3) <u>रीति संप्रदाय</u> :

यद्यपि रीति सिद्धान्त की स्थापना नवी शताब्दी के मध्य में या उसके आस-पास आचार्य वामन द्वारा हुई तथापि रीति का अस्तित्व उनसे पहले भी निश्चित रूप से था, इसमें संदेह नहीं ।

<u>रीति की परिभाषा</u> — <u>और स्वरूप</u> : वामन के अनुसार रीति का अर्थ है विशिष्ट पद-रचना । विशिष्ट का अर्थ है गुणसम्पन्न । गुण से तात्पर्य है काव्य के शोभाकारक धर्म । काव्य शोभा कारक शब्द और अर्थ के धर्मों से युक्त पद रचना को रीति कहते हैं ।

इसके बाद आनन्दवर्धन, राजशेखर तथा भोज ने रीति की परिभाषा दी ।

आनन्दवर्धन और उनके अनुयायियों के मतानुसार रीतिस्वरूप का सार इस प्रकार है :–

(1) पदों की संघटना का नाम रीति है ।

(2) रीतियाँ रस की अभिव्यक्ति में साधक है ।

(3) इनकी रचना गुण व्यंजक नियत वर्णों से होती है ।

(4) समस्त पदता की मात्रा इनका बाह्य रूप है ।

(5) काव्य में रीति का स्थान वही है, जो मानव शरीर में अंग स्थान अर्थात् अंगों की बनावट का है, न कि आत्मा का ।

उत्तर-ध्वनिकाल के आचार्यों में मम्मट और विश्वनाथ ने विशेष रूप से रीति के मूल तत्व पर प्रकाश डाला । मम्मट ने वृत्ति या रीति को वर्ण-व्यापार माना । और फिर वर्ण संघटन या गुंफ का गुण के साथ नियत सम्बन्ध स्थापित किया है । इनके अनुसार गुण व्यंजक वर्ण गुंफ ही रीति के मूल तत्व । विश्वनाथ ने प्रायः मम्मट का ही अनुसरण किया है । परन्तु उनकी रीतियों का आधार मम्मट की अपेक्षा अधिक व्यापक है । उनका रीति निरूपण इस प्रकार है –

वैदर्भी – इसके तीन आधार तत्व हैं – माधुर्य व्यंजक वर्ण, ललित पद रचना, समास का अभाव अथवा अल्प समास ।

"माधुर्य व्यंजकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका ।
अल्प वृत्तिरवृत्तिर्वा वैदर्भी रीति रिष्यते ।।" सा०द०, 9/2.

गौड़ी – के तत्व हैं ओज प्रकाशक वर्ण आडंबर पूर्ण बंध अथवा पद रचना और समास बाहुल्य —

"ओजः प्रकाश कैर्वर्णैबन्ध आडम्बरः पुनः समासबहुला गौड़ी ।।"सा०द०9/3.

उपर्युक्त विवेचन का सारांश यह है कि पूर्व ध्वनि काल के वामनादि आचार्य शब्द और अर्थ के प्रायः सभी प्रकार के चमत्कारों को रीति के तत्व मानते थे ।

वामन ने रीति शब्द का सर्वप्रथम उपयोग करते हुए 3 रीतियाँ माना । (1) वैदर्भी, (2) गौड़िया तथा (3) पांचाली ।

(1) वैदर्भी — समस्त गुणों से भूषित रीति ।

(2) गौड़िया — ओज और कांति से विभूषित रीति, एवं

(3) पांचाली — माधुर्य और सौकुमार्य से उपपन्न रीति का नाम पांचाली है।

(4) वक्रोक्ति संप्रदाय :

हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यों ने यद्‌यपि वक्रोक्ति संप्रदाय के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा पर नीतिकालीन कवियों की रचनाओं में कुन्तक सम्मत वक्रता के अनेक निदर्शन उपलब्ध हो जाते है तथा घनानन्द के कवित्तों में वक्रोक्ति के सिद्‌धांत पक्ष पर भी अनायास और अनजाने ही प्रकाश पड़ गया है । वक्रोक्ति संप्रदाय के प्रवर्तक कुन्तक के उपरान्त इस संप्रदाय का प्रचार नहीं हुआ क्योंकि ध्वनि जैसे भावपक्षप्रधान काव्यांग की तुलना में वक्रोक्ति जैसा कलापक्ष प्रधान काव्यांग संस्कृत के भी आचार्यों को स्वीकार्य नहीं हुआ परिणामतः मम्मट विश्वनाथ और जगन्नाथ जैसे परवर्ती आचार्यों के ग्रंथों की तुलना में कुन्तकप्रवीण 'वक्रोक्तिजीवित' ग्रंथ धीरे-धीरे विस्मृत होते-होते लुप्तप्राय हो गया । वक्रोक्ति संप्रदाय के विषय में हिन्दी के रीति आचार्यों के मौन का प्रधान कारण यही है ।

वक्रोक्ति संप्रदाय का प्रवर्तन आचार्य कुन्तक द्‌वारा दसवीं ग्यारहवीं शताब्दी में हुआ । इस काव्यांग के बीज उनसे पूर्ववर्ती अनेक काव्यों तथा काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में यत्र-तत्र बिखरे हुए मिल जाते हैं जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि अन्य सिद्‌धान्तों की भांति वक्रोक्ति सिद्‌धान्त का आविर्भाव भी आकस्मिक घटना न होकर एक विचार परंपरा का ही परिणाम था । इस पूर्व परंपरा को गति देने वाले कवियों में बाणभट्‌ट का नाम उल्लेखनीय है एवं आचार्यों में भामह और दंडी के अतिरिक्त वामन तथा आनन्दवर्धन का —

बाणभट्‌ट — वक्रोक्ति निपुणेन आख्यायिकाख्यान परिचय चतुरेण ।

यहां कवि का वक्रोक्ति से अभिप्राय इसके सीमित अर्थ शब्दालंकार रूप से न होकर व्यापक अर्थ से है और शायद इसी अर्थ को लक्ष्य में रखकर उन्होंने दूसरे ग्रंथ हर्षचरित में काव्य की इस प्रौढ़ शैली के विभिन्न अवयवों की गणना की है ।

"नवो र्थो जातिरग्राम्या श्लेषो क्लिष्टः स्फुटो रसः ।

विकटाक्षर बन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुर्लभम् ।।"

बाण भट्ट का वक्रोक्ति शब्द अपने व्यापक अर्थ का ही द्योतक होगा इसकी पुष्टी उनके दोनों ग्रंथों की शैली से ही हो जाती है । यही बात उनके पाँच-छः सौ वर्ष उपरान्त कविराज ने उनकी स्तुति में भी कही थी :-

"सुबन्धु बाण भट्टश्च कविराज इति त्रयः ।

वक्रोक्ति मार्ग निपुणाश्चतुर्थो विद्यते न वा ।।"—राघव पाण्डवीयम् ।।

भामह ने वक्रोक्ति शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ के लिए किया है । उदाहरण -

(1) वाणी का अलंकार अर्थात् काव्यगत चमत्कार वही अभीष्ट है, जिसमें वक्र अभिधेय (अर्थ) का और वक्र शब्द का कथन हो ।

(2) वाणी का वक्र अर्थ और वक्र शब्द कथन ये दोनों अलंकार के लिए अर्थात् काव्यालंकार के उत्पादन में समर्थ हैं ।

(3) वक्रोक्ति व अतिशयोक्ति दोनों एक ही हैं ।

(4) हर प्रकार का काव्य चमत्कार वक्रोक्ति के ही कारण होता है । कवि को इसी में प्रयत्न करना चाहिए । वस्तुतः इसके बिना कोई अलंकार है ही नहीं ।

(5) वक्रोक्ति विहीन तथाकथित अलंकारों को अलंकार नहीं मानना चाहिए । यही कारण है कि हेतु सूक्ष्म और लेश अलंकार नहीं हैं, ये वक्रोक्ति का कथन नहीं करते समुदायमात्र अर्थात् वार्ता समूह का अभिधान करते हैं ।

(6) न केवल मुक्तक काव्यों में अपितु प्रबंध काव्यों में भी वक्रोक्ति का ही चमत्कार है ।

दंडी ने भी वक्रोक्ति को व्यापक अर्थ में प्रयोग किया है । इनके अनुसार समस्त वाङ्मय के दो भाग हैं - वक्रोक्ति और स्वभावोक्ति । वक्रोक्ति से इनका अभिप्राय है काव्य के चमत्कारोत्पादक तत्व अर्थात् स्वभावोक्ति (जाति) को छोड़कर उपमा आदि सभी अलंकार ।

स्वभावोक्ति – यह भी एक अलंकार है, जिसके द्वारा पदार्थों का साक्षात् स्वरूप वर्णन किया जाता है ।

काव्य में चमत्कारोत्पादक तत्व स्वभावोक्ति से भिन्न अन्य अलंकार है, जो वक्रोक्ति कहते हैं क्योंकि इनके द्वारा पदार्थ वर्णन साक्षात् न करके वक्रता से किया जाता है ।

वामन – वक्रोक्ति का एक अर्थालंकार के रूप में निरूपण किया है ।

रुद्रट – वक्रोक्ति का एक शब्दालंकार के रूप में निरूपण किया और इसका प्रचलित दो रूपों का उल्लेख किया काकु वक्रोक्ति और सभंग वक्रोक्ति ।

आनन्दवर्धन – अतिशयोक्ति और वक्रोक्ति को एक-दूसरे का पर्याय माना व व्यापक अर्थ भी स्वीकृत किया ।

भोज – (क) शास्त्र और लोक में तो अवक्र वचन का प्रयोग होता है और काव्य में वक्र वचन का । – शृंगारप्रकाश ।

(ख) सब अलंकार जातियाँ वक्रोक्ति नाम से कथनीय हैं । भामह के कथनानुसार वक्रता ही काव्य की परम शोभा है ।

(ग) भोज ने अपने समय तक की एतत् सम्बन्धी मान्यताओं का वर्गीकरण करते हुए कहा कि समस्त वाङ्मय तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

"वक्रोक्ति श्च रसोक्तिश्च स्वभावोक्तिश्चेति वाङ्मयम् ।।"

रसोक्ति – "विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगात्तु रसनिष्पत्तौ रसोक्ति रिति"

(5) <u>ध्वनि संप्रदाय</u> :

इस संप्रदाय के अन्तर्गत अभिनव गुप्त आदि का नाम आता है । ध्वनिकारों ने शब्द की तीसरी व्यंजना पर आश्रित ध्वनि को काव्य की आत्मा घोषित किया ।

<u>ध्वनि</u> – जहाँ अर्थ स्वयं को तथा शब्द अपने अभिधेय अर्थ को गौण करके 'उस अर्थ' को प्रकाशित करते हैं, उस काव्यविशेष को विद्वानों ने ध्वनि कहा है ।

जहाँ विशिष्ट वाच्य रूप अर्थ तथा विशिष्ट वाचक रूप शब्द 'उस अर्थ' को प्रकाशित करते हैं, वह काव्य विशेष ध्वनि कहलाता है । 'उस अर्थ' से तात्पर्य उस प्रतीयमान स्वादु (चर्वणीय, सरस) अर्थ का जो प्रतिभाजन्य है और जो महाकवियों

की वाणी में वाच्याश्रित अलंकार आदि से भिन्न, स्त्रियों में अवयवों से अतिरिक्त लावण्य की भांति, कुछ और ही वस्तु है । अतः यह विशिष्ट अर्थ प्रतिभाजन्य है, स्वादु (सरस) है, वाच्य से भिन्न कुछ दूसरी ही वस्तु है और प्रतीयमान है ।

ध्वनि का प्रयोग पांच भिन्न-भिन्न परंतु परस्पर सम्बद्ध अर्थों में होता है । (1) व्यंजक शब्द, (2) व्यंजक अर्थ, (3) व्यंग्य अर्थ, (4) व्यंजना (व्यंजनाव्यापार) और (5) व्यंग्यप्रधान काव्य ।

ध्वनि के दो भेद हैं – (1) लक्षणामूला ध्वनि, (2) अभिधामूला ध्वनि ।

रीतिकाव्य का साहित्यिक आधार :

जिस साहित्यिक दृष्टिकोण की रूपरेखा हिन्दी में चिंतामणि के उपरान्त बंधकर निश्चित हुई, वह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी । उसका एक विशेष साहित्यिक पृष्ठाधार था । वह एक प्राचीन परंपरा का नियमित विकास थी, जिसके अन्तर्तत्व प्राकृत संस्कृत अपभ्रंश और हिन्दी के भक्तिकाव्य में धीरे धीरे ज्ञात अथवा अज्ञात रूप में विकसित होते रहे । यह प्राचीन परंपरा थी मुक्तक कविता की जो काव्य की अभिजात परिपाटी और उसमें निर्णीत उदात्त काव्य वस्तुओं को छोड़कर नित्य प्रति के सरल ऐहिक जीवन के छोटे-छोटे चित्रों को आंक रही थी । पंडितो का अनुमान है कि आभीर जाति के आगमन से आर्यों के मन परलोक चिन्ता से मुक्त हो नित्यप्रति के गृहस्थ जीवन के प्रति आकर्षित होने लगा । जीवन से बढ़कर इस प्रवृत्ति का प्रभाव काव्य पर पड़ा और कवि की कल्पना आकाश अथवा आकाशचुंबी राजमहलों से उतर कर साधारण जीवन के सुख-दुःखों में रमने लगी । इस दृष्टि परिवर्तन की सबसे पहले अभिव्यक्ति हाल की सतसई में मिलती है, जिसकी रचना चिंतामणि से कम-से-कम 13 शताब्दी पूर्व और अधिक-से-अधिक 16 वीं शताब्दी पूर्व हुई थी । हाल की सतसई रीतिकाव्य का सबसे प्रथम प्रेरक ग्रंथ है । इसके उपरान्त इस प्रकार के शृंगार मुक्तकों के दो प्रसिद्ध ग्रंथ संस्कृत में मिलते हैं – अमरुक कवि का अमरुशतक तथा गोवर्धन की आर्या सप्तशती, जो कि प्राकृत सतसई के आधार पर रची गई है । अपभ्रंश में इस प्रकार के कोई स्वतंत्र ग्रंथ नहीं मिलते केवल जयवल्लभ और हेमचन्द्र के काव्यानुशासन में स्फुट गीत छंद मिलते हैं । इनके अतिरिक्त संस्कृत साहित्य में ऐहिक मुक्तक काव्य

के कतिपय और भी ग्रंथों की रचना हुई जिनमें कालिदास के प्रचलित शृंगारतिलक, घटकर्पूर भर्तृहरि रचित शृंगारशतक, विल्हण की चौरपंचाशिका आदि अपने माधुर्य के लिए प्रसिद्ध है । इनमें अभिजात की गंध है जो सतसई व अमरुशतक के धरातल से पृथक् कर देती है । बारहवीं से चौदहवीं शताब्दी तक बंगाल और बिहार में राधा कृष्ण की भक्ति के जो छंद रचे गये वे काम के सूक्ष्म रहस्यों से ओतप्रोत हैं, विद्यापति के गीत इन्हीं के तो हिन्दी संस्करण हैं । इन ग्रंथों को भी अभिजात वर्ग में रखा जाता है । परन्तु हिन्दी रीतिकाव्य में जो राधा-कन्हाई सुमिरन के बहाने का एक निरंतर मोह तथा नायक के लिए कृष्ण और नायिका के लिए राधा शब्द का सप्रयास प्रयोग मिलता है, उसके लिए इन स्रोतों का प्रभाव बहुत कुछ उत्तरदायी है । वास्तव में रीतिकाव्य की आत्मा का सम्बन्ध यदि ऐहिक मुक्तकों की उपर्युक्त परंपरा से माने तो उसके बाह्य रूप (जिसमें राधाकृष्ण के प्रतीकों का प्रयोग हुआ है) के विधान में इन स्रोतों का कुछ स्पर्श अनिवार्यतः मानना पड़ेगा । इस सत्य को स्वीकार करने के लिए इसलिए और भी बाध्य होना पड़ता है कि स्वयं रीति युग में भी पहले (भक्तिपरक मुक्तकों-दुर्गा सप्तशती, चंडीशतक, वक्रोक्ति,- पंचाशिका, शिवपार्वती वन्दना, कृष्णलीला-मृत आदि स्रोत ग्रंथ) की भांति चंडीशतक चरणचंद्रिका आदि स्तोत्रवत् ग्रंथों की रचना यदाकदा होती रहती थी ।

इन दोनों श्रेणियों को प्रभावित करने वाली तीसरी चिंताधारा थी कामशास्त्र की — काव्य के वर्णन और मनोविज्ञान को इन्होंने निश्चित रूप से प्रभावित किया । ऐहिक शृंगार मुक्तकों, शिव और कृष्ण भक्ति के स्तोत्रों और नायिका भेद के ग्रंथों पर इनकी स्पष्ट छाप थी ।

संस्कृत की ये ही तीन मुख्य साहित्यिक परंपराएं थीं जिनसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में हिन्दी रीति काव्य ने अपने अन्तर्तत्वों को ग्रहण किया इसके उपरांत तो हिन्दी साहित्य का ही उदय हो गया ।

हिन्दी का आदिम युग वीर गीतों और वीरगाथाओं से मुखरित था । वीर-गाथा केकवियों में कुछ कवि विशेष कर चंदबरदायी (पृथ्वीराजरासो) के शृंगार चित्रों

में अनेक चित्र ऐसे मिल जाते हैं जिनमें रूप के उपमान को बहुत कुछ उसी प्रकार रीति में जकड़ कर उपस्थित किया गया जैसा रीति युग में । हिन्दी में वास्तव में सबसे पहले कवि विद्यापति हैं, जिनमें रीति संकेत असंदिग्ध रूप में मिलते हैं, परन्तु इनमें वह पूर्णता नहीं मिलती जो रीतिकाल के शृंगार चित्रों में अनिवार्यतः मिलती है । रूप के प्रति उनका दृष्टिकोण सर्वथा भागवत ही है वस्तुगत नहीं । चंद, विद्यापति, आदि के काव्य से यह सर्वथा स्पष्ट है कि इनको रीतिशास्त्र का पूरा-पूरा ज्ञान था और उस समय रीतिग्रंथों का बहुत कुछ प्रचार हिन्दी में भी निश्चित रूप से था । कृपाराम कृत हिततरंगिणी इस अनुमान को सार्थक करती है । इनकी रचना हिन्दी काव्य के अत्यन्त आरंभिक काल संवत् 1598 में हुई ।

"सिधि निधि शिवमुख चन्द्र लखि माघ शुद्ध तृतियास ।
हिततरंगिणी हौं रची कवि हित परम प्रकासु ।।"

हिततरंगिणी शुद्ध रीतिग्रंथ है और रीति परंपरा का पहला निश्चित स्फुरण है, उसकी वास्तविक गौरव प्रतिष्ठा हुई कविप्रिया और रसिक प्रिया की रचना के साथ ।

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन दोहरे नामों से हुआ है ।

(1) आदिकाल या वीरगाथा काल — सं० 1050 से 1375 वि० तक
(2) पूर्वमध्यकाल या भक्तिकाल — सं० 1375 से 1700 वि० तक
(3) उत्तरमध्यकाल या रीतिकाल — सं० 1700 से 1900 वि० तक
(4) आधुनिक काल या गद्यकाल — सं० 1900 से आज तक

रीति कवियों की व्यापक प्रवृत्ति :

रीतिकालीन रीति कवियों को प्रमुखतः दो वर्ग में विभक्त किया जा सकता है — (1) रीतिग्रंथकार कवि जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप में काव्यशास्त्र सम्बन्धी लक्षणग्रंथों पर काव्य रचे । जैसे केशव, मतिराम, भूषण आदि । (2) रीतिबद्ध कवि जिन्होंने अप्रत्यक्ष रूप में लक्षण ग्रंथों को दृष्टि पथ में रखकर अपने स्वतंत्र काव्य रचे, जैसे बिहारी ।

इन कवियों की व्यापक प्रवृत्ति का विश्लेषण निम्नांकित रूप में किया जा सकता है :—

(1) पृष्ठभूमि :

(क) राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ।

(ख) संस्कृत के आचार्यों की कृतियों का अनुकरण विशेषतः भानुदत्तकृत रसमंजरी का और जयदेवकृत चन्द्रालोक का ।

(2) वर्ण्य विषय :

राज्यविलास राजप्रशंसा, दरबारी कला विनोद, मुगलकालीन वैभव, नख-शिख ऋतुवर्णन, अष्टयाम, नायिका भेद, आलंबन, और आश्रय के रूप में राधा और कृष्ण अथाव कृष्ण और राधा, रस, अलंकार और छंद ।

(3) भाषा : संस्कृत, अपभ्रंश तथा कहीं-कहीं फारसी के शब्दों से प्रभावित ब्रजभाषा ।

(4) शैली : मुक्तक शैली ।

(5) छंद : दोहा, कवित्त और सवैया ।

(6) रस : शृंगार, वीर, किन्तु शृंगार रस की प्रमुखता ।

(7) अलंकार : शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक और श्लेष का बाहुल्य, अर्थालंकारों में उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा की प्रबलता ।

प्रधान रस शृंगार :

रीति ग्रंथकार कवियों तथा रीतिबद्ध कवियों के काव्यों पर दृष्टि डालने के उपरान्त हम यह कह सकते हैं कि उनमें शृंगार रस का ही प्राधान्य है । रीति-ग्रंथकार कवियों में केवल भूषण ने प्रधानतः वीररस की कविताएँ लिखी हैं, प्रीतम ने कुछ कविताएँ हास्य रस की लिखी हैं शेष सभी ने शृंगार रस के ग्रंथ ही प्रमुख रूप से लिखे हैं । भूषण कवि के भी कुछ शृंगार रस की रचनाएँ मिलती हैं ।

रीतिकाल के अन्तर्गत हमें तीन प्रकार के कवियों के दर्शन होते हैं :—
(1) रीतिग्रंथकार कवि, (2) रीतिबद्ध कवि — बिहारी, (3) रीतिमुक्त कवि ।

स्वामी की भक्ति भावना शृंगार संवलित रूप में दृष्टिगोचर होती है । शुद्ध भक्ति भावना में भक्त भगवान के चरणों का सान्निध्य चाहता है । भक्त की दृष्टि भगवान के चरणों में ही रहती है । किन्तु प्रेमी प्रियतम के मुखारविन्द का मकरंद पान करके ही जीवित रहता है । रीतिमुक्त कवियों में कुछ वीर रस के रचयिता हुए कुछ शृंगार रस के । लाल जोधराज सूदन आदि की रचनाएँ वीर रस प्रधान हैं, किंतु बनवारी आलम शेख घनानन्द, बोधा, ठाकुर, चन्द्रशेखर बाजपेयी, द्विजदेव आदि ने अधिकांशतः शृंगार रस में ही काव्य रचना की है । भक्तिकालीन कवि रसखान और सेनापति में तो शृंगार संवलित भक्ति के दर्शन होते ही हैं । आलम, घनानन्द और नागरीदास की भक्ति भावना पर भी शृंगार की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है । रसखान, आलम, घनानन्द और बोधा इन कवियों की भक्ति का प्रवाह शृंगार भावना को लेकर ही चला है, इसका प्रमुख कारण यह है कि कवि मानवीय प्रेम की सीढ़ी पर पाँव रखकर ईश्वरीय प्रेम की झाँकी देखने के लिए ऊपर चढ़े थे । इनमें इश्क मजाजी व हकीकी दोनों ही थे । अतः इनकी भक्ति में मानवीय प्रेम को प्रकट करने वाला शृंगार भी पर्याप्त रूपेण मिलता है । ये कोरे विरागी भक्त नहीं थे अपितु प्रेम की पीर को पहचानने वाले शृंगारी भक्त थे।

<u>रीतिमुक्त प्रवाह</u> :

रीतिकाल में कुछ ऐसे कवि भी हुए जिन्होंने केशव, मतिराम, भूषण आदि की भाँति न तो कोई रीति ग्रंथ लिखे और न बिहारी की भाँति रीतिबद्ध रचना ही की । ऐसे कवियों की संख्या पचास के लगभग है । इन्हें हम छः वर्गों में बाँट सकते हैं :—

<u>प्रथम वर्ग</u> — उन कवियों का है, जिन्होंने लक्षणबद्ध रचना नहीं की और जो स्वतंत्र रचना करके जनता को प्रेम की पीर सुनाते रहे । इनमें रसखान, घनानन्द, आलम, ठाकुर, और बोधा के नाम प्रसिद्ध हैं । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रसखान को दो रूपों में अंकित किया है । (1) कृष्णभक्ति शाखा के भक्त कवि, और (2) रीतिकाल के अन्य कवियों में । घनानन्द, आलम, ठाकुर आदि प्रेमोन्मत्त कवियों के साथ रसखान की कविताओं का अवलोकन करने पर वे रीतिमुक्त प्रवाह के ही कवि ठहरते हैं । उनमें शृंगार संवलित भक्ति का ही स्वर गूंज रहा है ।

द्वितीय वर्ग – उन कवियों का है, जिन्होंने विशेष रूप से कथा-प्रबन्ध काव्य लिखे । जैसे – छत्रप्रकाश के रचयिता लाल कवि, सुजानचरित्र के लेखक सूदन, हम्मीररासोकार जोधराज और हम्मीरहठ के लेखक चन्द्रशेखर ।

तृतीय वर्ग – दानलीला, मानलीला आदि वर्णनात्मक प्रबन्ध काव्य लिखने वाले कवियों का है ।

चतुर्थ वर्ग – में नीति सम्बन्धी पद्य रचने वाले कवि आते हैं, जिनमें वृन्द, गिरधर, घाघा और वैताल जैसे सूक्तिकार अधिक प्रसिद्ध है ।

पंचम वर्ग – में वे कवि हैं, जिन्होंने ब्रह्मज्ञान और वैराग्य सम्बन्धी उपदेशात्मक पद्य लिखे हैं ।

षष्ठ वर्ग – उन कवियों का है, जिन्होंने या तो भक्ति भाव में डूब कर विनय के पद गाये हैं या वीररस की स्वतंत्र फुटकल रचनाएँ की हैं ।

उपर्युक्त वर्गों के कवि वास्तव में रीतिमुक्त प्रवाह के कवि थे, क्योंकि इन्होंने न तो कोई लक्षण ग्रंथ लिखा और न लक्षण ग्रंथों से प्रभावित होकर अथवा बँधकर काव्य रचना ही की ।

रीतिकाल के समस्त कवियों को तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं – रीतिग्रंथकार, रीतिबद्ध तथा रीतिमुक्त । इस तरह देखते हैं रीति का प्रभाव प्रत्येक वर्ग के कवियों पर है । रीति शब्द के दो ही अर्थ हैं । एक विशिष्ट पद रचना दूसरा लक्षण ग्रंथ रीति ग्रंथकार कवियों और रीतिबद्ध कवियों की कविताएँ तो किसी न किसी प्रकार लक्षबद्ध थी ही । रही रीतिमुक्त कवियों की बात, उनमें भी एक प्रकार की कवित्वपूर्ण पद रचना का वैशिष्ट्य पाया जाता है । अतः हिन्दी साहित्य के उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल नाम से अभिहित करना ही अधिक उपयुक्त है । अलंकृत काल और शृंगार काल नाम उसकी आन्तरिक प्रवृत्ति का ठीक तरह से प्रतिनिधित्व नहीं करते ।

एक ही काल में, साहित्य जगत् में अनेक प्रकार की प्रवृत्तियाँ या विचारधारायें प्रचलित रहती हैं, उनमें से जो प्रवृत्ति या विचारधारा प्रबल होकर सबसे अधिक व्याप्त हो जाती है, उसीके आधार पर उस काल का नामकरण या सीमा निर्धारण होता है ।

संस्कृत काव्यशास्त्र में रीति शब्द एक काव्यांग विशेष के अर्थ में व्यवहृत होता रहा है । सर्वप्रथम (9 वीं शती) ने इसका स्वरूप विशिष्ट पद रचना निर्दिष्ट करते हुए इसे काव्य की आत्मा घोषित किया । किन्तु हिन्दी में रीति शब्द का प्रयोग एक अन्य अर्थ में भी चिंतामणि के समय से ही होता आया है और वह अर्थ है काव्य-रचना पद्धति (तथा उसका निर्देशक शास्त्र) । केशव तथा कुछेक रीतिकालीन आचार्यों ने इसी अर्थ में पंथ शब्द का भी प्रयोग किया है । रीति शब्द काव्यशास्त्र अथवा काव्यशास्त्रीय विधान का वाचक न होकर व्यापक अर्थ में विधान अथवा शास्त्रीय विधान का ही वाचक है । पर आज रीति शब्द का सम्बन्ध काव्यशास्त्र के साथ ही स्थापित हो गया है ।

भाषा :

रीतिकाल का हिन्दी साहित्य ब्रजभाषा और अवधी का साहित्य है, पर अवधी की परंपरा न तो उतनी दीर्घ है और न व्यापक । विचार करने पर लगता है कि ब्रजभाषा की लोकप्रियता और व्याप्ति के आगे उसका विकसित होना संभव न था ।

दूसरी बात जो ब्रजभाषा के पक्ष में जाती है, उसकी भौगोलिक स्थिति । यह मध्य देश की भाषा है, केन्द्रीय भाषा होने के कारण इस प्रदेश की भाषा को व्याप्ति का जितना अवसर मिल पाता था, उतना और किसी को नहीं । अत्यन्त प्राचीन काल से इस प्रदेश की भाषायें अपनी चौहद्दी तोड़कर बाहर फैलती रही और देश के एक बृहद् भूभाग के विचार विनिमय और साहित्य सर्जना के माध्यम के रूप में व्यवहृत होती रही । वैदिक संस्कृत, संस्कृत, पालि, शौरसेनी प्राकृत, शौरसेनी अपभ्रंश इसी हृदय देश की भाषायें थीं । जो अपने अविच्छिन्न रूप में आर्य सभ्यता और संस्कृति के उन्नयन और रक्षण में निरन्तर संलग्न रही । ब्रजभाषा शौरसेनी अपभ्रंश से ही विकसित हुई है ।

ब्रजभाषा की संपूर्ण परंपरा को विकास की तीन अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है -- प्रथम, द्वितीय और तृतीय । प्रथम अवस्था में सूर पूर्व की ब्रजभाषा, द्वितीय अवस्था में भक्तिकालीन ब्रजभाषा और तृतीय में रीतिकालीन ब्रजभाषा की गणना की जा सकती है । प्रथम अवस्था में ब्रजभाषा दर्पशौर्य की व्यंजना करती रही है । द्वितीय अवस्था इसके विस्तार और समृद्धि का काल है । भक्ति आंदोलन के माध्यम के रूप में यह बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात और पंजाब तक पहुँची । इस भाषा में केवल श्रीकृष्ण की बाँसुरी का ही जादू नहीं था बल्कि अपनी भी कुछ ऐसी विशेषताएँ थीं, जिनके कारण यह शताब्दियों तक सहृदयों का कंठहार बनी रही ।

सूरपूर्व ब्रजभाषा में निरंतर काव्यग्रंथ लिखे जाते रहे हैं और 14 वीं शताब्दी में इसका रूप भीबहुत कुछ स्थिर हो गया था । सं0 1598 में कृपाराम ने अपने हिततरंगिणी मे ' लिखा है :--

"बरनत कवि सिंगार रस छंद बड़े विस्तारि ।
मैं बरन्यो दोहानि बिच याते सुघरि विचारि ।।"

इस दोहे में कृपाराम का कहना है कि जिस शृंगार रस का वर्णन और कवियों ने छंदों में विस्तारपूर्वक किया है, उसे मैंने विचारपूर्वक संवार, संजोकर दोहो जैसे छोटे छंद में किया है । शृंगार रस से उनका तात्पर्य नायक-नायिका भेद से ही है, इसमें संदेह नहीं । यह कवि शास्त्रज्ञ कवियों की परंपरा में होने के कारण भक्ति कविता से सर्वथा दूर था, यह तो निर्विवाद ही है, साथ ही उसकी भाषा से स्पष्ट है कि वह इस परंपरा का पहला कवि भी नहीं था । उससे पहले कुछ अन्य कवियों ने भी ब्रजभाषा का प्रयोग किया होगा । कहने का तात्पर्य ये कि भक्त कवियों के साथ-साथ संभवतः शास्त्रज्ञ कवियों ने भी इस भाषा के विकास और समृद्धि में योग दिया है ।

भक्तिकाल के अनन्तर रीतिकाल में ब्रजभाषा अपनी समृद्धि के उच्चतम शिखर पर जा विराजी । इस समय की भाषा पहले से अधिक मंजसंवर कर भावाभिव्यंजना के अधिक अनुकूल हो गई । इस संस्कार और परिष्कार का अंतर सूर-तुलसी की पदावली और मतिराम, देव और पद्माकर की पदावली की तुलना से स्पष्ट किया जा सकता है । रीतिकालीन कवियों की पदावली के लोच और माधुर्य के आगे

विशेषताएँ :

मधुरता ब्रजभाषा की प्रकृति है । भाषा की प्रकृति का बहुत कुछ सम्बन्ध उसे बोलने वालों की प्रकृति से जोड़ा जा सकता है । बंगला और खड़ीबोली का अन्तर उक्त कथन को स्पष्ट कर देगा । फिर रससिक्त भक्तिपरक जिस पदावली को ब्रजभाषा ने रूप दिया उसने भी इसकी प्रकृति को ऋजु मसृण और मधुर बनाया । शुद्ध साहित्य के रूप में भी शृंगारिक कविताएँ ही इस भाषा में अधिक लिखी गईं । शृंगार वर्णन के लिए कोमलकांत पदावली की आवश्यकता होती है । यह गुण तो ब्रजभाषा में यों ही प्रस्तुत था । इस आवश्यकता के कारण उसे और भी ढूंढ निकाला गया । इसके फलस्वरूप अनेक शब्दों का आगम और अनेक का लोप हो गया । जैसे — स्त्री के आदि में इ और स्नान के आदि में अ का आगम उद्धृत किया जा सकता है । कठोर वर्णों श ण आदि के स्थान पर स र आदि रख कर उच्चारण को कोमल बनाया गया । स्वरसंकोच, जो ब्रजभाषा की मुख्य ध्वन्यात्मक प्रकृति है, इसकी मिठास को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ — जैसे दीठि < दिट्ठ < दृष्टि पैठि < पइट्ठि < प्रविष्ट ।

इस भाषा का मधुर और शृंगारोचित बनाने के लिए वर्णों का सरलीकरण किया गया । यहाँ पर श्रावण सावन, भाद्र भादौ, चन्द्र चंद, शृंगार सिंगार, कृष्ण कान्ह बन गये । इस तरह संस्कृत के बहुत से तत्सम तद्भव के रूप में प्रयुक्त होकर ब्रजभाषा में एक विशेष प्रकार की लोच ले आये । अपने लचीलेपन के कारण एक-एक शब्द के अनेक रूप बन गये । उदाहरणार्थ प्रिय के लिए पिय, पिया, पीतम, कृष्ण के लिए कान्ह, कन्हैया, आँख के लिए आँखिन, अँखियानि, अँखियन । ऐसे और बहुत से शब्द हैं । एक शब्द के विविध रूपों के कारण छन्दों और तुकों के बंधन को बहुत कुछ बाधा विहीन बना लिया गया ।

इस भाषा में प्रयुक्त होने वाले कारक चिह्नों के भी पर्याप्त पर्याय मिलते हैं । कर्ता की मुख्य विभक्ति ने है जो सकर्मक भूतकालिक क्रिया में कर्ता के साथ लगती है । इसके अतिरिक्त कई रूपों में उसके साथ पै, कौं या कौ आदि अन्य विभक्तियाँ भी लग जाती हैं । कर्मकारक में कौं को सौं आदि संप्रदान में को कौ

आदि, अपादान में ते, तें , अधिकरण में में, महं, पै आदि । विभक्तियों के इन सौष्ठव प्रदान किया है । इनके अतिरिक्त 'हि' विभक्ति अकेले ही अनेक विभक्तियों का काम चला देती है । इसलिए इसको डा०सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने एक सर्वनिष्ठ विभक्ति कहा है । इसके अलावा इस भाषा में निर्विभक्तिक प्रयोग की भी खुली छूट है, अपनी इन्हीं सुविधाओं के कारण ब्रजभाषा, के कवि इसको अधिकाधिक सुष्ठु मधुर, व्यंजक और लचकदार बना सके ।

ब्रजभाषा को संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश की समस्त भाव और शब्द संपदा उत्तराधिकार में मिली । इस अत्यंत गौरवशाली और समृद्ध दाय को प्राप्त करना अपने-आप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है । विकासशील और व्यापक काव्यभाषा होने के कारण इसने अन्य भाषाओं और बोलियों के शब्दों को ग्रहण कर अपने को और अधिक समृद्ध बनाया । राजस्थानी बुंदेलखंडी, अवधी, पूर्वी छत्तीसगढ़ी आदि अनेक बोलियों के बहुत से कोमल तथा व्यंजक शब्दों के आ जाने से इसकी अभिव्यंजना शक्ति बढ़ गई । अपनी उदार प्रवृत्ति के कारण इसने अरबी, फारसी जैसी विदेशी भाषाओं से भी शब्द चयन किया । इनमें से कुछ तो ब्रजभाषा के अंग हो गये पर कुछ की अपनी पृथक् सत्ता बनी रही । इनके कुछ उदाहरण उल्लेखनीय हैं ।

इनमें — जमुर्रद, गुल नहर गुलदावदी गुलाब, आबदार, किनारी, जोर, पनाह हमराही, सिपाही, पीर बजाइ, दरबार, गुनाह, मीर, तीर, कमान, रोजगार, रोज, खुदा, बंदगी, पसंदगी, कार बजा, दम, यार और दालान फारसी शब्द अविकृत रूप में आयेहैं। जब कि संदल जवाहिर, कहर, अजब, गजब, अजाब, मजलिस, महल, आमिल, फतूह, गनीम, आमखास, हाजिर, खबर, हिम्मत, आलम सैयद, तेग, जवाब, रजाइ, सलाम, गजब, गम, जब्र, ताला और करार मूल अरबी शब्द हैं । आगे बेस, पेस, सुमार, बेसुमार, परवा, आखिर, रंगरेज, अमेजे, गरद, दरद, करद, रौस जरी (जरतारी), नगारे, जेर बक्सी, साहनसाह, निवाज साहि, बखतर पोश, सफजंग, मजे बिलंद, मरद, बेदरद, गुनाहिन, निसान, पदाय अवसोस, दान और गुजारना क्रमशः बेश पेश शुमार बेशुमार परवाह आखिर रंगरेज़ आमेज़िस, गर्द दर्द कारद रविश ज़री नक्कारा ज़ेर बख्श शाहंशाह नवाज शाह बक्तर पोश, सैफ जंग मजः बलंद मर्द बेदर्द गुनाहगार निशान प्यादा, अफ़सोस दानः और गुज़र

इन फारसी शब्दों के तथा हौज हौस मुकाम मुकेस जहर सराबी नबाब तबीसा गरीब हजूर हुकुम अरज सैद बखत मसंद फौज हलके कदम और हक्क क्रमशः हौज़ हवस मक़ाम मुक्केश जह्र. शराबी नव्वाब तबीह ग़रीब हुज़ूर हुक्म अर्ज़ सैयद बख्तमसनद फ़ौज हल्कः क़दम और हक़ (हक्क) इन अरबी शब्दों के विकार हैं । चिक तुर्की के चिक़ का विकृत रूप है तथा बेगम फारसी के बे व अरबी के गम को मिलाकर बनाया गया है ।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ब्रजभाषा में बहुत-सी भाषाओं और बोलियों के शब्द मिश्रित हैं । ब्रजभाषा की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई है ।

मुसलमानों के आगमन के साथ ही उनकी भाषा और संस्कृति भी इस देश में आई । हिन्दी की प्रारंभिक अवस्था से ही उसमें अरबी और फारसी के शब्दों का प्रयोग होने लगा था । घुमक्कड़ी प्रवृत्तिवाले कबीर जैसे साधुओं की बात जाने दीजिए तुलसीदास जैसे भारतीय संस्कृति के पोषक ने भी अरबी फारसी के शब्दों का निःसंकोच प्रयोग किया । रीतिकाल में मुसलमानी सभ्यता और संस्कृति अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई थी और हिन्दू आचार-विचार पर उनकी गहरी छाया पड़ी । रीतिकाल के कई कवियों ने समय-समय पर मुसलमान राजाओं और रईसों का आश्रय ग्रहण किया । इसलिए इस काल की कविताओं में अरबी फारसी के शब्दों का अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग हुआ । बिहारी, भूषण, रसलीन ग्वाल, आदि में इस तरह के शब्द काफी संख्या में पाये जाते हैं । इन शब्दों में कुछ तो ऐसे हैं, जो बोल चाल की भाषा के अभिन्न अंग बन चुके थे । और कुछ केवल साहित्य में ही प्रयुक्त होते थे । पहले प्रकार के शब्दों में कुबत चसमा जोर बेकाम नेजा शिकार कबूल निवाजिबो निसान हद हमाम (बिहारी), गुलाम जोहारे तिलास(तलाश), फिरादी (फरियादी), बेगारी, बहरि, गिरद(गिर्द), कसीस (कशिश), कहर (कहर), करामति (करामात)(दास), जरह दस्ताने तमक जाहिर फबत चिराग कसाला, कलाम (पद्माकर), आदि का उल्लेख किया जा सकता है । दूसरे प्रकार के शब्दों में इजाफा, बदराह, ताफ्ता, रोहाल, सेल, रकम जोर, अमिर, मलिंग, छाहगीर, सबी(शबीह) (बिहारी), महल मखमल किर्च, कज्जाक सरीक (देव), महुम (मुहिम्म), गलीम (गनीम), सफजंग गिलमैं गजक(पद्माकर), आदि की गणना जायेगी । पर कुल मिलाकर

कवियों की जीवनी

कवि-कालक्रम

[illegible]

कवि	कालक्रम
1. कृपाराम	1541 ई०
2. रसखान	1590-1675 ई०
3. भूषण	1613-1715 ई०
4. मतिराम	1617-1690 ई०
5. गंग	1643-1723 ई०
6. वृन्द	1643-1723 ई०
7. सेनापति	1649 ई०
8. बिहारी	1652 ई०
9. चिन्तामणि	1666 ई०
10. देव	1673-1730 ई०
11. जसवंत	1682 ई०
12. रसलीन	1699-1748 ई०
13. बेनी प्रवीन	1700 ई०
14. तोष	1705 ई०
15. भिखारी	1728-1750 ई०
16. घनानन्द	1746 ई०
17. आलम	1750-1770 ई०
18. सोमनाथ	1756-1817 ई०
19. नागरीदास	1756-1821 ई०
20. रघुनाथ	1797-1827 ई०
21. बोधा	1809-1815 ई०
22. पद्माकर	1810 ई०
23. ठाकुर	1823 ई०
24. ग्वाल	1848 ई०
25 चन्द्रशेखर	1855 ई०

कृपाराम

कृपाराम के सम्बन्ध में कुछ खास पता नहीं चलता । इनका जीवन-वृत्त सर्वथा अज्ञात है अतः निश्चित रूप से कुछ भी कह सकना कठिन है । हिततरंगिणी[1] की ओर सर्वप्रथम बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर बी०ए० ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया था और उस ध्यानाकर्षण में इन्होंने चार पृष्ठों की एक सुविचारित भूमिका भी दी थी । इस भूमिका से निम्न तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है :—

(1) हिततरंगिणी की रचना संवत् 1598 में समाप्त हुई और जायसी के पद्मावत के पूर्व ही

(2) अनुमानतः ये पश्चिमी प्रदेश के निवासी ब्राह्मण होंगे ।

(3) कृपाराम की रचना में ऐसा कुछ पता नहीं लगता कि इन्होंने काव्य क्यों और कहां किया । इनकी रचना में कुल दो नदियों का नाम आता है — यमुना और बेतवा — जिससे यह मानना पड़ता है कि इनका कार्य क्षेत्र यमुना व बेतवा के बीच रहा होगा । इन्होंने अपनी रचना के सम्बन्ध में निम्न बात कही — "हिततरंगिनी की रचना का उद्देश्य कवियों के लिए परम हित का प्रकाश है और यह रस का पूर्ण धाम है । बड़े छंदों में विस्तारपूर्वक कवि अब तक शृंगार रस का वर्णन करते रहे हैं । पर छोटे छंद दोहे तथा थोड़े आखर में ज्ञानपूर्वक सरस लक्षण युक्त उदाहरण के साथ आचार्य भरत[2] की साखी पर इस बहु अर्थ वाले सुन्दर ग्रंथ की रचना व्यापक अध्ययन एवं चिन्तनपूर्वक करने का दावा कवि का है ।

---

1. हिततरंगिणी (कृपाराम विरचित) शृंगार रस के विवरण का एक अनूठा और प्राचीन ग्रंथ बाबू जगन्नाथदास रत्नाकर (बी०ए०) द्वारा प्रकाशित, जिसको बाबू रामकृष्ण वर्मा ने निज यंत्रालय भारत जीवन में पाठकों के विनादार्थ मुद्रित किया । काशी भारत जीवन प्रेस, सं० 1952.

2. दरस मिलन रति की हिए इच्छा सो अभिलाष ।
रस सिंगार के बीच लखि भरत मुनी की साखि ।। — पृ०81, तरंग5, दोहा 377.

रसखान

रसखान जन्मजात मुसलमान होते हुए भी अपनी जाति धर्म और संस्कारों के साथ सांसारिक वैभव त्यागकर कृष्ण के निस्पृही भक्त होकर अनुपम काव्य धारा बहाई, जिसमें संतप्त हृदयों को सरसता प्राप्त होती रही, किन्तु खेद की बात है कि रसखान के जीवन वृत्त जानने के लिए उपयोगी सामग्री का सर्वथा अभाव है। इधर-उधर से प्राप्त स्फुट उल्लेखों के आधार पर इनके जीवन के घटनाओं का कुछ पता इतिहासकारों ने लगाने की चेष्टा की किन्तु अनेक आवश्यक बातों का विश्वस्त रूप से कुछ पता नहीं चल पाया। उनके वास्तविक नाम का भी पता नहीं चल सका। प्रेमबाटिका नामक ग्रंथ में रसखान ने अपने विषय में केवल चार दोहे लिखे हैं - 48, 49, 50 तथा 51 संख्या के :-

देख गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनही बादसा बंस की, ठसक छोरि रसखान ।। 48 ।।
प्रेम निकेतन श्री बनही, आइ गोबरधन धाम।
लह्यो सरन चित चाहिकैं, जुगल स्वरुप ललाम ।। 49 ।।
तोरि मानिनी ते हियो, फोरि मोहिनी मान।
प्रेम देव की छबिही लखि, भयो मियाँ रसखान ।। 50 ।।
बिधु सागर रस इन्दु सुभ, बरस सरस रसखान।
प्रेमबाटिका रचि रुचिर, चिर हिय हरष बखान ।। 51 ।।

इससे स्पष्ट है कि राज्य लिप्साजन्य विप्लव के कारण दिल्ली नगर की श्मशानवत् दुर्दशा देखकर शाही वंश का गर्व क्षत्रमात्र में छोड़कर मानिनी मोहिनी प्रेयसी से अपना मन फेर कर रसखान ब्रज में आये एवं संवत् 1671 में प्रेमबाटिका की रचना की। मात्र इस उल्लेख के अतिरिक्त आत्म परिचय सम्बन्धी अन्य कोई बात इनकी रचनाओं में नहीं कही गई।

दो सौ बावन वैष्णव वार्ता के अनुसार रसखान पठान जी दिल्ली में रहते थे । वहाँ एक साहूकार का एक सुन्दर बेटा था । रसखान का मन उस लड़के से बहुत लगा था । उसी लड़के का जूठा खाना, उसीकी चाकरी करना व आठोपहर उसीके पीछे फिरा करते थे । अर्थात् उसीमें आसक्त रहते थे । इस प्रकार बड़े लोगों में इनकी बहुत निन्दा हुआ करती थी पर ये किसी की परवाह नहीं करते थे । एक दिन चार वैष्णव भगवत वार्ता कर रहे थे । उसी दौरान ऐसी बात किसी के मुँह से निकली कि भगवान में ऐसा चित्त लगाओ कि जैसे रसखान का चित्त साहुकार के बेटे से लगा हुआ है । रसखान के यह पूछने पर कि तुम मेरे विषय में क्या बात कर रहे हो तो उन्होंने सब बात बता दिया फिर तो रसखान ने भगवान का चित्र देखने की इच्छा जाहिर की । श्रीनाथजी का चित्र देखकर उनके दर्शन की इच्छा से वृन्दावन चल दिये और वहाँ सब मंदिर में घूम-घूम के दर्शन करने लगे पर उन्हें वह आनन्द नहीं आया । तब गोपालपुर में गये वहाँ ये पहचान लिये गये और लोगों ने इन्हें धक्का दे देकर निकाल दिया और ये गोविन्द कुंड पर रहे । तीन दिन अन्न जल बिना पड़े रहे । तब श्रीनाथ जी ने उन्हें दर्शन दिया और इधर गुसाईं जी को आदेश हुआ कि रसखान मेरा भक्त है, उसे शिष्य बना लो । श्री नाथ जी की आज्ञा से गुसाईं जी गोविन्द कुंड पर गये और उनको पुकारा । रसखान को एकबार फिर गुसाईं जी के रूप में श्रीनाथ जी के दर्शन हुए और तब से रसखान श्रीनाथजी में आसक्त हो गये ।

एक पाठ के अनुसार रसखान को सैयद पठान लिखा है । कथा में कुछ कल्पित अंश होते हुए भी इतना अवश्य पता चलता है कि ये दिल्ली के पठान थे बड़े प्रेमी जीव थे किसी घटनावश रातोरात घोड़े पर सवार होकर ब्रज पहुँचे और विट्ठलनाथ जी के शिष्य होकर कवित्त-कीर्तन द्वारा कृष्ण गुणगान करने लगे । चित्र द्वारा कृष्ण दर्शन की लालसा होने की बात वार्ता में बताई गई है, जिसका आभास इनकी कविता में भी मिलता है –

"प्रेम देव की छवि ही लखि भये मियाँ रसखान"

में यदि छवि शब्द का अर्थ चित्र लिया जाय तो वार्ता के विवरण की पुष्टि रसखान के इस दोहे से हो जाती है । छवि शब्द का साधारण अर्थ शोभा होता है किन्तु

हिन्दी तथा अनेक प्रादेशिक भाषाओं में इस शब्द का अर्थ चित्र भी होता है —

"या छवि पै रसखान अब वारौ कोटि मनोज ।
जाकी उपमा कविन नहि पाइ रहे सुखोज ।।
मोहन छवि रसखान लखि अब दृग अपने नाहि ।
ऐंचे आवत धनुष से छूटे सर से जाहिं ।। "

ऐसा भी कहा जाता है कि रसखान की एक प्रेयसी बहुत मानिनी थी । उससे असन्तुष्ट और दुखी हो ब्रज में चले आये । यह भी कहा जाता है कि एक बार श्रीमद् भागवत के फारसी अनुवाद में गोपियों का कृष्ण के प्रति प्रेम का वर्णन पढ़कर अथवा किसी कथाकार से सुनकर कृष्ण प्रेम में आसक्त होकर ब्रज में चले आये । वास्तव में दिल्ली नगर की भयंकर दुर्दशा से दुखी होकर अपने प्राण रक्षार्थ ही रसखान दिल्ली छोड़ ब्रज में आये थे । रसखान ने स्वयं इस तथ्य को बताया है अन्य सब कारण कल्पित ही जान पड़ते हैं ।

शेरशाह सूरी के मृत्यु के पश्चात् उसके बड़े पुत्र आदिल खाँ के स्थान पर छोटे पुत्र सलीमशाह उपनाम इसलाम शाह ने राज्य पर अधिकार कर लिया और उसी समय से राज्य लिप्सा जन्य गृह कलह का श्रीगणेश हुआ । सलीमशाह शक्की और ईर्ष्यालु निकला फलतः पुराने विश्वस्त सरदारों ने एक-एक कर उसका साथ छोड़ दिया । सलीम शाह अपने बड़े भाई की हत्या में सदैव प्रयत्नशील रहा । अतः आदिल खाँ को विवश होकर प्राणरक्षार्थ भागना पड़ा ।

शलीम शाह ने उसके पुत्र महमूद खाँ को नजरबंद किया व कुतुब खाँ सूर का दमन किया व अन्य कई सम्बन्धियों को दबाया । जलाल खाँ व उसके भाई का वध करवाया । फलतः शलीम शाह को मारने का षडयंत्र रचा जाने लगा । इसी बीच ग्वालियर में अचानक शलीम शाह बीमार पड़ा व वहीं सं० 1611 में (20 नवम्बर, सन् 1554 ई० में) मर गया । इस समय सलीम शाह का 12 वर्षीय पुत्र फिरोज को गद्दी पर बैठाया गया और तीन दिन बाद ही मुबारिजखाँ (जो शेरशाह का भतीजा शलीम शाह का चचेरा भाई और साला भी था) ग्वालियर

पहुँचा और अपने भांजे फिरोज को बड़ी क्रूरता से वध कर दिया और स्वयं मुहम्मद आदिलशाह (महमूद आदिल) का नाम धारण कर सं० 1611 में राज्य हस्तगत कर लिया पर इससे राज्य लिप्साजन्य हत्याकाण्ड का अन्त न हुआ ।

महमूद आदिलशाह ने सलीमशाह के समय के बाजार चौधरी के पद पर स्थित हेमू नामक एक हिन्दू को राज्य का पूर्ण कार्यभार सौंप दिया । हेमू का प्रभुत्व दिन-प्रतिदिन नित्यप्रति बढ़ने लगा, जिससे चिढ़ कर अन्य सरदारों ने विप्लव किया । महमूद आदिल शाह के चचेरे भाई और साले इब्राहिम खाँ ने राज्य हस्तगत कर महमूद आदिलशाह को पूर्व की ओर खदेड़ दिया उसने चुनार गढ़ में शरण ली और पूर्वी प्रदेश में थोड़ी बहुत सत्ता जमाये रखी । इस प्रकार कुछ महीने पहले प्राप्त राज्य सं० 1612 में खो बैठा ।

इसी समय पंजाब में अहमद खाँ ने इब्राहिम को फरा के युद्ध में 18 मार्च, 1555 में परास्त कर दिल्ली व आगरा हस्तगत कर लिया व सिकन्दरशाह नाम धारण कर गद्दी पर बैठा । यह भी शेरशाह का भतीजा था और महमूदशाह (पूर्व मुबारिज खाँ) का चचेरा भाई व साला था । इस विकट गृह कलह का सुअवसर पाकर हुमायूँ ने अपनी शक्ति पुनः संचित कर पंजाब के सरहिंद पर अधिकार कर लिया और दिल्ली की ओर कूच कर सं० 1612 (22 जुलाई, सन् 1555) में अपना खोया राज्य पुनः प्राप्त कर लिया । इस प्रकार नवम्बर, 1554 ई० से जनवरी, 1556 ई० के 15 मास के अल्पसमय में राज्य की लालसावश दिल्ली में ऐसा भीषण गृह-कलह हुआ कि सलीमशाह अदिलशाह इब्राहिमशाह और सिकन्दरशाह ये चार सुल्तान हुए और सभी अपनी राज्य सत्ता खो बैठे ।

इसी समय सं० 1612 (23 जनवरी, 1556 ई०) में पुस्तकालय की सीढ़ी से गिर कर हुमायूँ की अचानक मृत्यु हो गई और अकबर सं० 1612 (14 फरवरी, 1556 ई०) को गद्दी पर बैठा । उसने पठानों को खदेड़-खदेड़ कर अशक्त कर दिया और थोड़े समय में सबका दमन कर सूर वंश का नाम मिटा दिया ।

उपरोक्त इतिहास प्रसिद्ध गृहकलह को ही रसखान ने गदर का नाम दिया है । यह राज्य लिप्साजन्य परस्पर का कलह रसखान के निकट संबंधियों के बीच ही

हुआ था । वे स्वयं बादशाह वंश के पठान थे और संबंधियों में मारकाट मची देखकर व्याकुल हो गये थे । इसी वर्ष सं० 1612 में ही भीषण अकाल के कारण जनता की बड़ी दुर्दशा हुई । कहने का तात्पर्य यह कि रसखान सं० 1612 ई० की घटना से त्रस्त होकर अपने प्राण रक्षार्थ या संसार से विरक्त होकर दिल्ली छोड़ कर ब्रजवास किया ।

इस तरह यह पता चलता है कि इनका जन्म सं० 1590 के लगभग है । सं० 1612 के लगभग दिल्ली छोड़ ब्रज आये, 1627 के बाद विट्ठलनाथ जी के कृपापात्र हुए, 1634 से 1637 तक मानस की कथा सुनी, 1671 में प्रेमबाटिका की रचना की । 85 वर्ष की अवस्था में 1675 के आसपास इनकी मृत्यु हुई । इनकी शिक्षा-दीक्षा के बारे में कुछ भी पता नहीं चलता ।

भाषा :

भाषा व भाव के दृष्टि से रसखान का काव्य उत्कृष्ट श्रेणी का है । भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार पाया जाता है । इनके द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा आदर्श मानी जाती है । फारसी अरबी के वही थोड़े से शब्द उपयोग में आये हैं जो ब्रजभाषा में पहले से ही आत्मसात हो चुके थे ।

भूषण

भूषण महाराज कान्यकुब्ज ब्राह्मण, कश्यप गोत्री त्रिपाठी (तिवारी) थे। इनके पिता का नाम रत्नाकर था। ये त्रिविक्रमपुर (वर्तमान तिकवापुर) में रहते थे। जो जिला कानपुर परगना व डाकखाना घाटमपुर में मौजा अकबरपुर बीरबल से दो मील की दूरी पर बसा है।

रत्नाकरजी श्रीदेवी जी के बड़े भक्त थे और उन्हींकी कृपा से इनके चार पुत्र उत्पन्न हुए - (1) चिंतामणि, (2) भूषण, (3) मतिराम और (4) नीलकंठ उपनाम जटाशंकर। यह बात प्रसिद्ध है कि भूषण जी पहले अपढ़ और निकम्मे थे बाद में इन्होंने विद्याध्ययन में बहुत चित्त लगाया और थोड़े दिनों में कविता करने लगे। इनकी भाषा विशेषतया ब्रजभाषा है। प्राकृतवत् भाषा और ब्रजभाषा के अतिरिक्त भूषण ने कहीं-कहीं बुन्देलखंडी तथा खड़ीबोली का भी प्रयोग किया है, इसके अलावा अपनी कविता में यत्र-तत्र फारसी के असाधारण शब्द रखे हैं जैसे - जाबत करनहारे व तुजुक (शि०भू०न 38), दरियाव (शि०भू०न० 108), गाजी ज्वान तुजुक व इलाम (शि०भू०न० 198), मुहीम (शि०भू०नं० 180), बेइलाज (शि०भू०न०279), गुस्लखाना सिलहखाना हरम खाना, शुतुरखाना, करंजखाना व खिलवतखाना (शि०भू०न० 361) इत्यादि। इससे विदित होता है कि भूषणजी फारसी भी जानते थे, परन्तु अच्छी तरह नहीं, क्योंकि उपर्युक्त उदाहरणों में इन्होंने जाबता करनहारे हलाम तथा बेइलाज का प्रयोग वे मुहाविरे किया है, उपर्युक्त उदाहरणों के अतिरिक्त निम्नलिखित छंदों में फारसी के असाधारण शब्द आये हैं। इनमें कइ स्थानों पर शब्दों का अशुद्ध प्रयोग है। शिवराज भूषण छंद नं० 34, 103, 114, 159, 209, 242, 258, 283, 299, 315, 360; शिवाबावनी - छंद सं० 2, 6, 10, 14, 17, 20, 21, 22, 23, 29, 30, 33, 34, 40, 41; छत्रसाल दशक छन्द सं० 10.

यदि इन कवि के कुल शब्द गिने जायें तो अन्य अनेक ग्रंथ रचने वालों की अपेक्षा इनका शब्द समूह बड़ा ठहरेगा ।

भूषण जी दरबारी कवि थे, इन्होंने कई राजाओं का आश्रय ग्रहण किया है, जो निम्न है :—

(1) हृदयराम सुत रुद्रराम सोलंकी महोबा निवासी (सं० 1723)
(2) कुमायूं नेश ज्ञानचन्द्र (सं० 1757-65)
(3) फतेहशाह गढ़वाल नरेश सं० 1741-1773.
(4) शाहूजी भोसले सं० 1765-1805.
(5) बाजीराव पेशवा सं० 1770-1792.
(6) महाराजा अवधूत सिंह (सं० 1757-1812).
(7) सवाइ जयसिंह जयपुर नरेश (सं० 1765-1800).
(8) चिंतामणि चिमनाजी (सं० 1790).
(9) महाराजा छत्रसाल पन्ना नरेश सं० 1788-1789.
(10) राव बुद्ध सिंह बूंदी नरेश (सं० 1764-1805).
(11) दाराशाह (सं० 1716 तक)
(12) भगवंतराय खीची असोथर नरेश (सं० 1740-1797)
(13) शिवाजी महाराज

मतिराम

महाकवि मतिराम अत्यन्त भ्रमणशील थे, जिसका संकेत ग्रियर्सन ने किया भी है, इन्हें अनेक दरबारों में जाने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था किन्तु राव भाऊसिंह के आश्रय को छोड़कर कहीं अधिक दिन तक टिके नहीं। यश एवं अर्थ लाभ की इच्छा से प्रत्येक कवि एवं कलाकार मुगलों की सरकार तक पहुंचने का प्रयत्न करता था अपने कविता काल के प्रारंभिक काल में मतिराम ने भी ऐसा प्रयत्न किया था और परिणाम स्वरूप जहांगीर बादशाह की आज्ञा से उन्होंने फूलमंजरी नामक ग्रंथ भी लिखा किन्तु जहांगीर के दरबार में टिकने का उनके सम्बन्ध में कोई प्रमाण नहीं मिलता इनके प्रधान आश्रयदाता बूंदी के महाराजा भाऊ सिंह थे। जहां वे अधिक काल तक रहे।

(2) मतिराम श्रीनगर के फतेहशाहि बुन्देला के यहां भी रहे और इन्हीं के नाम से छन्दसार पिंगल नामक एक ग्रंथ रचा।

(3) मतिराम का कुमायूं के राजा उद्योत चन्द्र के यहां भी रहना बताया जाता है।

(4) बुन्देला छत्रसाल के यहां भी गये थे। यह पं० मायाशंकर याज्ञिक ने अपने 'मतिराम और भूषण' नामक माधुरी पत्रिका में लिखे लेख में एक ऐसा भी छंद उद्धृत किया है, जिससे इनका छत्रसाल बुन्देला के यहां जाना प्रमाणित होता है।

(5) कविवर मतिराम किसी भोग राजा के संपर्क में भी आये थे, जिसकी प्रशंसा उन्होंने मतिराम सतसई में की है।

<u>कवि मतिराम द्वारा रचित ग्रंथ</u> : (1) फूलमंजरी, (2) रसराज, (3) छन्दसार, (4) ललित ललाम, (5) साहित्यसार, (6) मतिराम सतसई, (7) लक्षण शृंगार, (8) अलंकार पंचाशिका। ये 8 ग्रंथ प्रामाणिक माने जाते हैं।

मतिराम दरबारी कवि थे अतः अन्य दरबारी कवियों की भांति इनकी भाषा में भी अरबी फारसी के शब्द देखने को मिलते हैं। मुसलमानों के संपर्क में आने के कारण हिन्दी भाषा से जिन विदेशी शब्दों का मेल हो रहा था, उनका प्रभाव मतिराम की कविताओं पर भी पड़ा है, यही कारण है कि उनकी कविताओं में यथा-स्थान अरबी के शब्द काफी संख्या में पाये जाते हैं। खलक दरियाव बखत साहपातसाह उमराव भोज दरियाव दीवान दिवाल सुल्तान सुबनि गरीबी गनीम बरगीन हजीव तलफत बक्सैया सुल्तानी बिलन्द गरद गुमान जहान अकसिबो बकसिबो फतुहै मजलिस रोज चिरावे[1] तथा हरामी मखतूल और दया दरियाव[2] आदि विदेशी शब्द ललित ललाम और सतसई में विराजमान हैं।[3]

---

1. ललित ललाम : छं०सं० 49, 52, 66, 373, 392, 41, 52, 58, 69, 172, 103, 131, 163, 165, 250, 373, 378.
2. मतिराम सतसई : छं० सं० 40, 137, 535.
3. महाकवि मतिराम : त्रिभुवन सिंह।

गंग

गंग का जीवन चरित्र हिन्दी-साहित्य को ज्ञात नहीं है । जो जानकारी है वह इतनी ही कि गंग अकबर के समकालीन थे और किसी राजा या नबाव की आज्ञा से हाथी के पैरों तले कुचलवा दिये गये थे । समाज में एक लोकोक्ति भी प्रचलित है 'बातें हाथी पाइये बातें हाथी पांव' । क्या आश्चर्य कि यह गंग कवि की मृत्यु से ही जन्मी हो ।

गंग ब्राह्मण भट्ट थे । यह निर्विवाद है । उनकी रचनाओं में भी भट्ट शब्द का व्यवहार है और बंदीजन परंपरा से ऐसा मानते भी आये हैं, दूसरे और कोई उन्हें अपनी जाति का नहीं बताता । उन्होंने याचक वृत्ति ग्रहण की थी और वे कीर्ति गाकर धनोपार्जन करते थे यह उनकी रचना से प्रमाणित है, जो भाट का धर्म है, उनके ऐसे कई छंद मिलते हैं, जिनमें याचना भाव का उल्लेख है, ब्राह्मण का अनादर इन्हें सह्य नहीं था ।

गंग के जन्मस्थान के विषय में निश्चित पता नहीं चलता है, उनकी जन्मभूमि निश्चित रूप से नहीं बताइ जा सकती । गंग का कोई वंशज भी नहीं मिलता कि कुछ अनुमान किया जा सके । गंग का अधिकांश जीवन दरबारदारी में ही बीता था मरे भी वे दरबार में ही । अतः उनका कोई निश्चित स्थान नहीं प्रकट होता । समय — अनुमान यही होता है कि कवि गंग का सम्बन्ध दरबारों से संवत् 1635 के पूर्व नहीं हुआ । जहांगीर के समय में उनका मरना निश्चित है ।

गंग जिस युग में हुए ऐतिहासिक दृष्टि से और साहित्यिक दृष्टि से भी वह युग भारत के नवोत्थान का युग था । राजनीति में एक ओर नवीन राजवंश अपनी सज धज और गौरव गरिमा के स्थापन में लगा था । साहित्य में दूसरी ओर भक्ति को नव स्फूर्ति से अनुप्राणित काव्यधारा समस्त देश के सेचन करने के निमित्त बढ़ रही थी । अकबर एक ओर अपने ठाट-बाट एवं ऐश्वर्य से सबकी आंख चकाचौंध

कर रहा था दूसरी ओर जनता की सुख समृद्धि का चिंतन तथा धर्म भावना का आदर कर उसने सबके हृदय में घर बना लिया । मुगलिया शासन के प्रारंभ की इस प्रवृत्ति का देश पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा । अकबर की इस नीति ने देश के सर्वतोमुखी (व्यापक) विकास का मार्ग प्रशस्त कर दिया था । उसके राजसी वैभव एवं मुक्तहस्तता ने भावना के क्षेत्र में विलासिता और शारीरिक सुखोपभोग के साधनों की वृद्धि के साथ-साथ साहित्यिक एवं कलात्मक प्रवृत्तियों को भी अत्यधिक प्रोत्साहित किया । उसके आश्रय में संगीत चित्र कला आदि तो खूब सजी-संवरी ही साहित्य को भी कल्पतरु का सहारा मिल गया । फारसी अरबी के कवियों और विद्वानों के साथ हिन्दी के कवियों एवं पंडितों का भी शाही दरबार में आदर होने लगा । अकबर के नवरत्नों में खानखाना, बीरबल आदि स्वयं उच्चकोटि के कवि थे जो दूसरे कवियों को सदैव प्रोत्साहित करते रहते थे ।

अकबर दरबार का रंग-ढंग कुछ निराला था वहाँ एक ओर तो शृंगार की धारा बह रही थी । संयोग और वियोग के चित्रण में नायक नायिकाओं के प्रेम की नव-नव परिस्थितियों एवं चेष्टाओं की उद्भावनाएं हो रही थीं । दूसरी ओर अकबर स्वयं पैगम्बर बनना चाहता था । अतः शाही दरबार की काव्य सरिता में दोनों रंगों की मिलावट अवश्यम्भावी थी । उस दरबार में जितने कवि मिलते हैं, सबने शृंगार की भी कविता की है और शांतरस की भी । शांतरस की कविता से तात्पर्य नीति वैराग्य आदि से सम्बन्धित कविता से है ।

उन दिनों हिन्दी साहित्य में कई प्रकार के कवि मिलते हैं :—

(1) जो नाथपंथियों की परंपरा से निर्गुण संत मत की भावना एवम् विचारधारा से ओतप्रोत थे, उन्हें वेदान्त की तरह की बातें अधिक पसन्द थी ।

(2) सूफी संप्रदायवादी मुख्यतः मुसलमान कवि थे, जिनके विचार इन्हीं से कुछ मिलते-जुलते तो अवश्य थे, पर प्रेम का पुट उनमें विशेष था और उनका सारा ब्रह्मज्ञान उसीमें घुसा हुआ था ।

(3) जो भागवत धर्म के अनुयायी थे और पुरानी वैदिक परंपरा में थे, इनमें भक्ति की प्रधानता थी । ये भक्त ऐसी नवीन चेतना लेकर अवतरित हुए थे

जिसमें प्रेम व ब्रह्मज्ञान दोनों का समन्वय तो था ही साथ ही संतों और सूफियों में कालान्तर में जो दोष आ गये थे, उनसे बचने की भी भावना थी, इसलिए इन कवियों पर पुराणों का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ।

(4) वे कवि थे, जो राजदरबारों में रहते थे उनमें भौतिकता अधिक थी चाहे यह कहा जाय कि जीविका के लिए ये राज दरबारों में थे चाहे यह कहा जाय कि ये काव्य को सांप्रदायिक धर्म भावना का अनुगामी बनाकर नहीं ले चलना चाहते थे, उसके शुद्ध भावनात्मक रूप को ही प्रधानता देते थे । हर हालत में यह तो मानना ही पड़ेगा कि इन कवियों की रचनाओं में यत्र-तत्र चाहे राजनीति का कुछ प्रभाव भले ही दिखाई देता हो, शुद्ध काव्य का रूप लेकर चलने वाले ये ही कवि थे, इनमें भी दो प्रकार के कवि थे —

(अ) जो चारण या बंदीजन कहे जाते हैं । इनका मुख्यतया काम था समय-समय पर आश्रयदाताओं की कीर्ति गाना उससे सम्बन्धित या और कोई बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना के विवरण सन् संवत् आदि छंदों में इस उद्देश्य से बांधना जो तत्काल तो स्तुति का ध्येय सिद्ध करे और भविष्य में इतिहास का काम दे । ऐसी रचनाएं प्रायः छप्पयों, कवित्तों आदि में होती थीं और किसी प्रसंग के दो-चार छंदों से अधिक नहीं होती थी । किन्तु मुगल दरबार के चारण कवियों में जिनके सरदार नरहरि गंग आदि थे, इतिहास लेखन की यह प्रवृत्ति नहीं थी । इसका एक कारण यह भी था कि विदेशी शासक अपनी पैतृक मातृभाषा फारसी में ही इतिहास लिखाना विशेष पसन्द करते थे ।

दरबारों में रहने वाले दूसरे प्रकारों के कवि वे थे जो शुद्ध काव्य की रचना में प्रवृत्त थे । काव्यशास्त्र में पारंगत विद्वान थे उनका उद्देश्य था किसी संप्रदाय या वाद के प्रवाह में न बहना । ऐसे कवियों के सरदार हुए केशवदास आदि, जिन लोगों ने रसिकप्रिया कविप्रिया आदि काव्य के अनूठे ग्रंथ लिखे । इसका यह अभिप्राय नहीं कि इन कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्ति की ही नहीं । इन लोगों ने वह भी किया और जहां जितनी आवश्यकता थी, वहां उतना किया

केवल उसीको सब कुछ मान कर नहीं चले इन लोगों ने अपने ग्रंथों के आदि-अंत में और कभी-कभी बीच-बीच में भी जब आश्रयदाता की प्रशस्ति का अवसर आया, तब उनकी प्रशस्ति अवश्य ही की । केशवदास जी ने आवश्यकता पड़ने पर जीवन चरित या इतिहास के अतिरिक्त शुद्ध यशगान भी किया, जैसे जहाँगीर जसचन्द्रिका में पर इनका महत्व उस चन्द्रिका के कारण उतना नहीं है, जितना कविप्रिया रसिकप्रिया और रामचन्द्रिका के कारण है ।

गंग कवि में दोनों ही प्रवृत्तियाँ थीं वे चारणों की भाँति यशगान भी करते थे प्रशस्ति के फुटकल छंद भी लिखते थे और नायिका भेद की परिपाटी पर शृंगार रस की रचनाएँ भी प्रस्तुत करते थे । अकबरकालीन कविता की सारी प्रवृत्तियाँ उनमें मिलती हैं । क्या नीति के, क्या भक्ति के, क्या संयोग के, क्या वियोग के, क्या प्रशस्ति के, क्या और किसी प्रकार के सभी विषयों के छंद उनकी रचना भण्डार की शोभा बढ़ा रहे हैं और सभी में उनकी नवीनता लक्षित होती है । अधिकार व्यक्त होता है । अकबर दरबार के राजा बीरबल जिस प्रकार हास्य विनोद के प्रतीक माने जाते हैं, किसी को विनोद का कोइ चुटकुला कहना हुआ चट से अकबर बीरबल का हिस्सा गढ़ लिया, उसी प्रकार शृंगार के क्षेत्र में किसी को कोई अनोखी सूझ व्यक्त करनी हुई तो तुरंत गंग कवि की आड़ ले ली । नीति के दोहों के बीच जैसे "कहै कबीर सुनो भाइ साधो" का प्रचलन है, वैसे ही कवित्त और सवैयों के बीच "कहै गंग या गंग कहै सुनि साह अकब्बर" की प्रसिद्धि है ।

भाषा के प्रयोग में कवि गंग आदर्श माने जाते रहे हैं । दास कवि की यह उक्ति "तुलसी गंग दुवो भये सुकविन के सरदार" हिन्दी कविता के लिए बहुत उपयुक्त है । तुलसी दरबार के बाहर भक्ति एवम् काव्यभाषा के प्रतिमान हैं और गंग दरबारी कविता के । हिन्दी के दरबारी कवियों ने तो शृंगार के साथ अद्भुत चमत्कार का ऐसा मेल किया है कि कहीं-कहीं चमत्कार के घटाटोप में शृंगार ही खो गया है । गंग का समय ही ऐसा था जब इस प्रकार की अतिरंजित उक्तियों की ही सर्वत्र पूछ थी । मुसलमानी बादशाहत फारसी के कलामों की कायल थी, अतः हिन्दुस्तानी कविता भी उसके सुर में अपना सुर मिलाने के लिए बाध्य थी ।

यों तो हिन्दी की पूर्वजा संस्कृत प्राकृत आदि भी ऐसे चमत्कारों से भरी हैं, किन्तु हिन्दी में इस प्रवृत्ति को सद्यः उकसाने वाली बादशाही रुचि ही थी, जो विदेशी थी। हिन्दी ने बादशाही रुचि तो रख ली पर अपनी परंपरा नहीं छोड़ी। कवि गण बुलबुल और नरगिस के चक्कर में न पड़कर सुमधुर कोयल और कमनीय कमल के ही वन में रसास्वादन करते रहे जो बड़े सौभाग्य की बात हुई। इतना ही नहीं उन्होंने अपनी सभ्यता और शिष्टता से फारसी की गंदगी भी साफ कर दी।

ये कवि उस युग में थे, जिसमें फारसी का चलन हो गया था, कहा जाता है, कि अकबर ने दरबारी अधिकारी टोडरमल ने राजकाज के लिए फारसी को ग्रहण किया यों भी मुसलमान बन्धुओं के आगमन के अनन्तर जन समाज में फारसी के विविध शब्द फैल रहे थे। संक्रान्ति काल में यहां की सर्वमान्य देशी-भाषा, सर्वग्राह्य संस्कृत भाषा और फारसी भाषा के पर्यायवाची शब्दों को लेकर कोशों का निर्माण किया गया। ये कोश फारसी लिपि और नागरी लिपि दोनों में पर्याप्त संख्या में लिखवा कर और ऊँटों पर लदवा कर वितरित किये जाते थे। इनके प्रचार व प्रसार से दोनों भाषाओं के ज्ञाताओं को ग्राह्य भाषा के पर्याय-वाचक शब्दों का ज्ञान हो जाता था। जनता सुभीते के लिए दोनों भाषाओं के शब्दों को यथास्थान एक साथ प्रयोग में लाने लगी इसी प्रवृत्ति के अवशेष धन-दौलत, हर एक, ब्याह-शादी आदि अनेक शब्द युग्मक जो अब भी जनता की जीभ पर नाच रहे हैं। यह स्थिति विदेशी भाषा के शब्दों को ही लेकर नहीं हुई पंजाबी भाषा व हिन्दी के शब्दों को भी लेकर हुई। खड़ीबोली में प्रचलित शब्द दिन दहाड़े प्रयोग में दहाड़े शब्द पंजाबी का है और उसका अर्थ दिन ही है। शब्द दहाड़ा है सप्तमी के बोध के लिए वह दहाड़े हो गया है। कहने का तात्पर्य यह कि भाषाओं के मेल की प्रवृत्ति सुभीते के लिए जनता की बोल-चाल तक में हो गई थी। कवि भी अपनी रचना में चमत्कार के लिए दोनों भाषाओं के शब्दों को मिलाकर प्रयोग करने लगे थे शब्दों की तो बात ही पृथक् है। भाषा समक की यह प्रवृत्ति अमीर खुसरो के नाम से प्रचलित कुछ छंदों में

तो है ही। रहीम कवि के नाम से प्रख्यात कुछ रचनाओं में भी है । इसका संकेत यह है कि मुसलमानी शासन की स्थापना के साथ ही इस प्रवृत्ति का उदय हुआ, पर यह न समझना चाहिये कि यह उद्भावना उसी युग की है, इसका चलन बहुत पहले से जान पड़ता है । संस्कृत में कुछ रचनाओं का पता चलता है, जिनमें कई देशी भाषाओं का मेल रहा करता था । इस प्रकार की शैली का उल्लेख चौदहवीं शताब्दी के महापात्र विश्वनाथ ने अपने साहित्य-दर्पण में किया है और उसके उदाहरणों के लिए उन्होंने अपने पूर्वजों की रचना का संकेत किया है । अन्तर यह है कि हिन्दी में चलन जिस शैली का हुआ वह सरल है । संस्कृत में यह शैली कठिन थी । संस्कृत में एक ही शब्दावली विभिन्न भाषाओं में ज्यों की त्यों काम देती थी, पर हिन्दी में ऐसा नहीं है । यहाँ दोनों भाषाओं की पदावली का नियोजन पृथक्-पृथक् होता है ।

उस युग के दरबारी कवि अपनी जानकारी का प्रदर्शन विविध भाषा के ज्ञान द्वारा तो किया ही करते थे, विभिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग द्वारा भी किया करते थे । इनकी ब्रजी की रचनाओं में फारसी के चलित प्रचलित शब्दों का प्रयोग तो बेधड़क होने ही लगा था । (गंग का छंद नं0 236) ।

"कोपि कसमीर ते चल्यो है साजि वीर - - -
लंका को मुहीम है ।"

साथ ही खड़ीबोली के प्रयोग भी यदा-कदा हो जाते थे । कुछ कवि भ्रमवश यह समझने लगे थे कि खड़ीबोली मुसलमानों की भाषा है । अतः वे उसका प्रयोग मुसलमानों के प्रसंग में ब्रजी के बीच में कर दिया करते थे। कुछ कवि ब्रजी और खड़ी दोनों को मिला देते थे । ब्रजी और खड़ीबोली दोनों ही पछाही भाषाएँ हैं ।

वृन्द कवि

वृन्द का काल सन् 1643 से 1723 तक है । वृन्द रीतिकाल के कवि थे । वृन्द ने प्रत्यक्ष रूप से अपने सम्बन्ध में कहीं कुछ नहीं कहा है । कुल मिलाकर उनकी कृतियों के द्वारा जो भी संकेत मिलते हैं, उनका आधार है कृतियों के आदि या अन्त में दिये गये रचना काल, रचना स्थान तथा उनके उन आश्रयदाताओं का उल्लेख जिनके आदेश पर ये लिखी गयी हैं । अंतः साक्ष्य के आधार पर मुख्य रूप से कवि के जीवनी से सम्बन्धित तीन तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है :—

(1) वृन्द ने दक्षिण में औरंगाबाद, उत्तर में अजमेरपूर्व में ढाका आदि स्थानों की यात्रा की थी । अतः देश-विदेश का पर्याप्त अनुभव रहा होगा ।

(2) दूसरे इनके आश्रयदाताओं का पता चलता है ये थे अजमेर के सूबेदार मिरजा कादरी, बंगाल के सूबेदार शाह अजीमुश्शान जो औरंगजेब का पौत्र था तथा किशनगढ़ के महाराजा मानसिंह ।

(3) तीसरा ये मेड़ता निवासी थे ।

बहिः साक्ष्य के अनुसार 'इतिहास राजस्थान' में स्व0 बारैठ राम नाथ जी रत्नू ने लिखा है "सुप्रसिद्ध ग्रंथ वृन्द सतसई के कर्ता कवि मेड़ता निवासी बादशाह के पास रहा करते थे । वहाँ से राजसिंह जी उनको अपने पितामह रूप सिंह जी का इतिहास छन्दबद्ध करवाने के लिए किशनगढ़ लाये । वृन्द जी बहुत उत्तम कवि थे ।"[1]

---

1. स्व0 बारैठ रामनाथ जी रत्नू कृत इतिहास राजस्थान, पृ0 220.

"हिन्दी साहित्य का इतिहास" में रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है कि (पृ/327) ये मेड़ता (जोधपुर) के रहने वाले थे और किशनगढ़ नरेश महाराजा राजसिंह के गुरू थे। संवत् 1761 में ये शायद किशनगढ़ नरेश के साथ औरंगजेब की फौज में ढाके तक गये थे।"

वृन्द के पिता को मूलतः बीकानेर निवासी बताया जाता है। इनके पिता द्वारा बीकानेर छोड़ने के बारे में एक किंवदन्ती बताई जाती है, कि जब उनको सुदीर्घ अवस्था तक भी कोई सन्तान नहीं हुई तब उन्होंने पुत्र कामना से गायत्री मंत्र व गोपाल सहस्रनाम के पाठ का अनुष्ठान किया तथा जगन्नाथपुरी व हिंगलाज देवी की पैदल यात्रा की वहाँ पर उन्हें सन्तान होने का स्वप्न हुआ। किंतु इसमें स्थान बदलने की शर्त थी, इसीसे यात्रा से लौटकर वे अपनी सहधर्मिणी के साथ बीकानेर से मेड़ता चले आये और यहीं पर वृन्द जी का जन्म हुआ। मेड़ता बीकानेर से निकट पड़ता है, संभवतः इसी वजह से ये मेड़ता ही आये।

मेड़ता कवि की जन्म भूमि होने पर भी उनका कवि कर्म किसीक्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं था वे अपने आश्रयदाताओं के साथ सतत यात्रा करते रहे। ये देवरा या देवलिया गोत्र के शाकद्वीपीय ब्राह्मण थे। वृत्ति से ये लोग या तो पौरोहित्य करते थे या अध्यापन कार्य। प्रधानतः ये लोग ओसवालों का पौरोहित्य ही करते थे उनके मंदिरों में पूजा करते विवाहादि मांगलिक कार्य कराते और आशीर्वाद देकर नेग-दस्तूर लेते थे।[2]

ऊपर लिखी जन्म सम्बन्धी किंवदन्ती से पता चलता है कि वृन्द के पिता परम ईश्वर भक्त और आचारनिष्ठ ब्राह्मण थे। वृन्द का अक्षरारम्भ सम्भवतः घर पर पिताजी ने ही कराया था। पश्चात् विद्याध्ययन के लिए उन्हें काशी भेजा गया। वृन्द के आरंभिक जीवन में उनके पौरोहित्य कर्म की सूचना मिलती है।

---

1. वृन्द विशेषांक पृ० 9-10, वृन्द सतसई, पृ० 2-3.
2. दे० राजस्थान की जातियाँ : बजरंग लाल लोहिया, पृ० 111-112.

इनकी प्रारंभिक रचना रचना काल संवत् 1725 बारहमासा और सम्मेत शिखर छन्द में आदि जिनेश्वर का महात्म्य और पूजा वर्णन किया गया है । संवत् 1728 में जोधपुर दरबार में सम्मानित होने और इसके बाद सं० 1730 में तो स्थाई रूप से दिल्ली दरबार से सम्बद्ध हो जाने का उल्लेख मिलता है ।[1] ये स्थाई रूप से औरंगजेब के दरबारी कवि थे किन्तु बादशाह ने भी उन्हें अपने पौत्र अजीमुश्शान को सौंप दिया था । पंडित श्रीकृष्ण शुक्ल के अनुसार ये अजीमुश्शान के अध्यापक नियुक्त हुए थे । दूसरी ओर जिन नवाब मुहम्मद खां ने औरंगजेब के दरबार में इनका प्रवेश कराया था, कहते हैं कि उन्होंने स्वयं ही इनसे काव्य शिक्षा ली थी ।[2]

नवाब मुहम्मद खां अजमेर के सूबेदार थे । वृन्द विशेषांक के अनुसार वृन्द कवि इनके पुत्र मिरजा कादरी के कन्या के भी कुछ समय तक शिक्षक रहे और उसको पढ़ाने के निमित्त ही उन्होंने शृंगार शिक्षा नामक ग्रंथ की रचना की थी ।[3]

ये किशनगढ़ नरेश महाराजा राजसिंह के गुरु थे । दिल्ली में रहते हुए सं० 1738 में किशनगढ़ के महाराजा मानसिंह के द्वारा इनके सम्मानित होने का उल्लेख मिलता है ।[4] आगे चलकर उन्होंने राजसिंह के पुत्रों के लिए हितोपदेश का भाषानुवाद करके उनको पढ़ाया था ।[5] इस प्रकार अध्यापन ही वृन्द जी की प्रधान वृत्ति दिखलायी पड़ती है । वृन्द जी एक कुशल नीतिज्ञ भी थे अध्यापक एवं नीतिकार के सम्मिलित गुण ही वे मूल आधार थे जिनके कारण उन्हें राज्याश्रय प्राप्त हुआ । वृन्द के अनेक आश्रयदाताओं के होने का पता

---

1. वृन्द सतसई, पृ० 3.
2. वही, पृ० 3.
3. वृन्द विशेषांक, पृ० 19.
4. वृन्द विशेषांक, पृ० 15.
5. वही, पृ० 26.

चलता है — (1) महाराजा जसवन्त सिंह, (2) औरंगजेब, (3) अजीमुश्शान, (4) अजमेर के सूबेदार मिर्जा कादरी तथा किशनगढ़ के महाराजा मानसिंह व राजसिंह ।

(1) महाराजा जसवन्त सिंह :

वृन्द विशेषांक के अनुसार[1] विद्याभ्यास समाप्त करके जब वृन्द जी काशी से लौटे तब आपको लेकर आपके पिता जी जोधपुर नरेश महाराजा श्री जसवंत सिंह जी के दरबार में उपस्थित हुए । यही आपके प्रथम आश्रयदता थे । परन्तु आश्रय पाने का कारण स्पष्ट नहीं है । यहाँ ये अधिक समय तक नहीं रहे, क्योंकि 1730 में इनके दिल्ली चले जाने का उल्लेख मिलता है ।

(2) औरंगजेब व अजीमुश्शान :

डा० मेनारिया जी ने लिखा है कि महाराजा जसवन्त सिंह ने इनका परिचय मुगल सम्राट् औरंगज़ेब के कृपा पात्र वजीर नवाब मुहम्मद खाँ से कराया इन्हीं नवाब के द्वारा बादशाह के दरबार में उनका प्रवेश हुआ । औरंगजेब के दरबार में अरबी फारसी के आलिमों के अतिरिक्त चिन्तामणि जैसे हिन्दी के पंडित कवि भी रहते थे । जैसा कि कवि वृन्द की वृत्ति के प्रसंग में कहा जा चुका है औरंगजेब का राज्याश्रय पाने का प्रधान कारण उनका अध्यापक और नीतिकार का सम्मिलित गुण अथवा व्यक्तित्व ही था । इसीसे शीघ्र ही ये अजीमुश्शान के अध्यापक (अथवा अभिभावक) नियुक्त करके उसको सौंप दिये गये । तब से वृन्द जी नियमित रूप से उसीके साथ रहने लगे । पं० रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार[2] — "यह (अजीमुश्शान) ब्रजभाषा और उर्दू का अच्छा कवि और कवियों का आश्रयदाता था" । पीछे जब वह बंगाल का सूबेदार बन कर चला गया तो अपने साथ इन्हें भी लेता गया और ये उसीके साथ ढाके में रहने लगे । सं० 1764

---

1. वृन्द विशेषांक पृ० 11.

2. कविता कौमुदी भाग 1, पृ० 454.

में औरंगजेब के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकारी युद्ध में राजसिंह (जो गत वर्ष पिता की मृत्यु के बाद अब किशनगढ़ के राजा हुए थे) अजीमुश्शान के पिता बहादुरशाह की ओर से हरावल फौज से लड़कर विजयी हुए । इस विजय के फलस्वरूप बहादुरशाह जफर ने महाराजा राजसिंह को उमदये राजहाय बुलन्द मकान महाराजा बहादुर की पदवी देकर सम्मानित किया और उनके मांगने पर पुरस्कार स्वरूप वृन्द कवि को उन्हें सौंप दिया तब से उनका मुगल बादशाह से सम्बन्ध टूट गया ।

(3) <u>मिरजा कादरी</u> :

इनके तीसेर आश्रयदाता थे । अजमेर के सूबेदार नवाब मुहम्मद खाँ के पुत्र मिरजाकादरी ने इनकी योग्यता का आदर करके इन्हें अपनी कन्या के शिक्षण के लिए नियुक्त किया इसी सम्बन्ध में मिरजा कादरी उनके आश्रयदाता थे । यह भी उतने ही समय के लिए जब तक ये उनकी कन्या को पढ़ाते रहे ।

(4) <u>किशनगढ़ के महाराजा मानसिंह व राजसिंह</u> :

इनके अन्तिम और प्रमुख आश्रयदाता थे किशनगढ़ के महाराजा राजसिंह । दिल्ली राज्य के अधीनस्थ राजा समय-समय पर दिल्ली जाया करते थे । अध्यापक के रूप में वृन्द जी की ख्याति हो चुकी थी फलतः महाराजा मानसिंह ने भी इनकी योग्यता का सम्मान करके अपने पुत्र की शिक्षा के लिए इन्हें योग्य समझा। किन्तु ये शाही परिवार से स्थायी रूप से सम्बद्ध थे और शाहजादा अजीमुश्शान उनका अधिकारी आश्रयदाता होकर इन्हें सदा अपने साथ रखता था । अतः किशनगढ़ के महाराजा वृन्द जी को स्वतंत्र रूप से अपने पुत्र का शिक्षक नहीं रख सकते थे और न स्वतंत्र आश्रय दे सकते थे । फिर भी इन दोनों आश्रयदाताओं में चूंकि निकट का पारिवारिक सम्बन्ध था, और मानसिंह अजिमुश्शान के मामा लगते थे, इसलिए उसके पास रहते भी वृन्द जी उनके राजकुमार को पढ़ा सकते थे । पीछे जब वे उसके साथ ढाके में रहने लगे थे तो वहाँ पर भी सं0।759

में उन्होंने राजसिंह के पुत्रों को पढ़ाया । इस प्रकार अपने राजकुमारों को शिक्षा दिलाने पर भी किशनगढ़ के महाराजा वृन्द के स्वतंत्र आश्रयदाता नहीं थे । सं0 1763 में मानसिंह की मृत्यु पर राजसिंह किशनगढ़ के राजा बने और अंत में 1764 में वृन्द जी को पुरस्कार में बहादुरशाह से माँग लिया तब से वृन्दजी अन्तिम समय तक उन्हींके आश्रय में किशनगढ़ में ही रहे । किशनगढ़ राज्य से ये इस प्रकार सम्बन्धित हो गये कि उनके पीछे वंशजों को भी बराबर राज्याश्रय मिलता रहा इस प्रकार इन दोनों परिवारों की वंशज परंपरा आगे भी परस्पर सम्बद्ध दिखाई देती है ।

भाषा के सम्बन्ध में वृन्द की त्रैभाषिक नीति परिलक्षित होती है । उनकी मातृभाषा राजस्थानी, साहित्यिक भाषा ब्रज व राजकीय भाषा फारसी थी। प्रधान रूप से इन तीनों भाषाओं के साथ वृन्द का निकट का सम्बन्ध था । उन्होंने संस्कृत भाषा एवं साहित्य का गंभीर अध्ययन किया था । उनके ऐतिहासिक काव्यों से पता चलता है कि उन्हें प्राकृत व अपभ्रंश का भी अच्छा ज्ञान था, इसके अतिरिक्त कवि के किसी प्रान्त विशेष में निवास के कारण यत्र-तत्र प्रान्तीय भाषा का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है ।

सम्मेत शिखर छन्द एवं बारहमासा की भाषा पर राजस्थानी का प्रभाव कुछ अधिक दिखाई देता है । भाषा (शब्दावली) की दृष्टि से वृन्द की ऐतिहासिक रचनाओं में विशेष कर उनकी वचनिका एक महत्वपूर्ण कृति है । इसकी प्रमुख भाषा ब्रजी है, किन्तु एक ओर राजस्थानी वातावरण तथा दूसरी ओर मुसलमानी वातावरण में राजस्थानी और फारसी अथवा उससे प्रभावित प्रादेशिक भाषा हिन्दवी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है । कवि वृन्द द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा पर एक ओर उनकी मातृभाषा राजस्थानी का तथा दूसरी ओर राजकीय भाषा फारसी अथवा हिन्दवी का प्रभाव पड़ा है, इसके अतिरिक्त संस्कृत प्राकृत एवं अपभ्रंश के पारंपरित रूपों का प्रयोग भी देखा जा सकता है । इन भाषाओं का प्रभाव विशेष रूप से इन चार अंगों पर लक्षित होता है । कारक, क्रियापद, कृदंत तथा शब्दावली ।

कारक – अनुपात की दृष्टि से वृन्द ने वास्तव में ब्रजभाषा के प्रत्ययों का अधिक प्रयोग किया है, क्योंकि यही उनकी प्रमुख माध्यम भाषा रही है ।

संज्ञा – कर्तृवाचक में दार (फारसी) प्रत्यान्त – छड़ीबरदार, छत्रबरदार, परवरैत – परवर (फा०), ऐत (राजस्थानी प्रत्यय) मुखजबां : मुख (तत्सम) जबां (फारसी प्रत्यय)

कवि की भाषा में पर्याप्त विदेशी (अरबी-फारसी) शब्द प्रयुक्त हैं :–

अरबी :

जालिम (बच० 16), मालिम (बच० 18), फते (बच० 39) हैरान (बच० 90), आलमपनाह (बच० 138), मुकाबला (बच० 138) अरज (बच० 221), मसला (बच० 241), अलाहदा (बच० 171), जमाति (बच० 278), तहकीक (बच० 318), नूर (बच० 196), महरनजर (बच० 196), फहरनजर (बच० 196), सलामत (बच० 201), मुलक (बच० 221), हजरत (बच० 221), इखलास (बच० 241), मसूर (मशहूर) (बच० 131), अलाहदा (बच० 171), जमाति (बच०278), तहकीक (बच० 318), क्यामति (बच० 278), हकीकत (बच० 318) ।

फारसी :

करवान (बच० 14), जहांन (बच० 36), जबरदस्त (बच 221), जेरदस्त (बच 221), लसकर-लष्कर (बच 256), फरजंद (बच 241), सिरताज (बच 27), सिकस्त (बच 36), दरगुजस्त (बच 221), बिरादरी (बच 241) ।

विदेशी शब्दों के अलावा क्रियाओं का भी प्रयोग मिलता है । जैसे अर्ज पहुंचाना, इसारत जताना, शिकस्त खाना । वृन्द की वचनिका चंपूकाव्य है । उसमें खड़ीबोली को कवि ने विशेष रूप से गद्य में ही प्रयुक्त किया है । हिन्दू राजाओं की अपेक्षा मुसलमान बादशाहों के प्रसंग में मुसलमानी प्रभावित

हिन्दवी का प्रयोग हुआ है । हिन्दू राजाओं की गद्य की भाषा ब्रजी है । वचनिका की भाषा अमीर खुसरो और कबीर की परंपरा में पड़ती है । यद्यपि वृन्द के समय में खड़ीबोली को साहित्यिक भाषा बनने का गौरव नहीं मिला था फिर भी मुसलमानों के संपर्क से बोलचाल में उसका काफी प्रचार हो चुका था । वचनिका में खड़ीबोली का जो रूप आया है, वह मुसलमान बादशाहों के प्रसंग में होने के कारण स्वभावतः उर्दू से अधिक प्रभावित है, उसमें अरबी फारसी के अनेक शब्द प्रयुक्त है । किंबहुना फारसी में कहीं-कहीं प्रत्यय परसर्ग तथा एकाध जगह फारसी शैली के समास भी आये हैं । इस प्रकार वास्तव में उसका स्वरूप तत्सम- बहुला हिन्दी की अपेक्षा फारसी बहुला उर्दू के अधिक निकट पड़ता है ।

फारसी शैली — उदाहरण (1) अरज भुरवेन (2) रंग बद

---

1. वृन्द और उनका साहित्य : डा० जनार्दन राव चेलेर 861/2166 एच, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा -2.

सेनापति

कविवर सेनापति ने अपना वंश परिचय कवित्त रत्नाकर के प्रारंभ में दे दिया है । उसके तथा अन्य अन्तःसाक्ष्यों के आधार पर उनका जन्म दीक्षित कुल में हुआ था । उनके पिता का नाम गंगाधर तथा पितामह का नाम परशुराम दीक्षित था । हीराराम दीक्षित के शिष्यत्व में उन्होंने विद्याध्ययन किया था :—

दीछित परसरान, दादौ है विदित नाम,
जिन कीने यज्ञ, जाकी जग मै बड़ाई है ।
गंगाधार पिता गंगाधर की समान जाकौं,
गंगा तीर बसति अनूप जिन पाई है ।।
महाजानि मनि, विद्यादान हूं कौं चिंतामनि
हीरामनि दीक्षित तैं पाइ पंडिताई है ।
सेनापति सोई, सीतापति के प्रसाद जाकी,
सब कवि कान दै सुनत कविताई है ।।

कवित्त रत्नाकर की पहली तरंग के एक कवित्त में सेनापति ने सूर्यबली नामक किसी व्यक्ति की प्रशंसा की है जो ब्रज प्रदेश का जान पड़ता है :—

सूरबली बीर जसुमति कौं उज्यारौ लाल
चित्त कौ करत चैन बैनहिं सुनाइ कै ।
सेनापति सदा सुर मनी को बसीकरन
पूरन कर्यौ है काम सब को सहाइ कै ।।
नगन सघन घरै गाइन को सुख कै
ऐसौ है अचल छत्र धर्यौ है उचाई कै ।
नीके निज ब्रज गिरिधर जिमि महराज
राख्यौ है मुसलमान धार तैं बचाइ कै ।

कुछ विद्वानों का अनुमान है कि सेनापति का सम्बन्ध मुसलमानी दरबार से था । राम रसायन के एक छंद से इसकी पुष्टि भी होती है :-

केतौ करौ कोई, पैये करम लिख्यौई, तातै
दूसरी न कोई उर सोई ठहराइयै
आधी तैं सरस गई बीति कै बरस, अब
दुज्जन दरस बीच न रस बढाइयै ।।
चिंता अनुचित तज धीरज उचित, सेना
पति ह्वै सुचित राजाराम जस गाइयै ।।
चारि बरदानि तजि पाइ कमलेच्छन के
पाइक मलेच्छन के काहे कौं कहाइयै ।।

इससे स्पष्ट है कि कवि को मुसलमानों की दासता से विरक्ति हो गई थी धनलिप्सा तथा अन्यान्य प्रलोभनों से बचना चाहते थे किंतु किस मुसलमान शासक के यहां वे नौकर थे, इसका कुछ पता नहीं चलता । जहांगीर के शासन-काल में बुलन्दशहर के अधिकांश बड़गुज्जर राजाओं ने मुसलमानी धर्म स्वीकार कर लिया था ।

छतारी, दानपुर, धरमपुर आदि के वर्तमान शासक इन्हीं बड़गुज्जर राजाओं के वंशज हैं । संभव है इनमें से किसी रियासत से सेनापति का सम्बन्ध रहा हो ।

सेनापति की रचनाओं से स्पष्ट है कि उन्होंने संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया था । साहित्यिक परंपरा से वे भलीभांति परिचित जान पड़ते हैं । यद्यपि उन्होंने रीतिकालीन परिपाटी पर रचना नहीं की है, फिर भी रीतियुग की प्रवृत्तियों की छाप उनकी रचनाओं में प्रचुरता से पाई जाती है । कवित्त-रत्नाकर में ऐसे बहुत से छन्द मिलेंगे जो विभिन्न साहित्यिक अंगों के उदाहरण से जान पड़ते हैं ।

अपने काव्य को सुरक्षित रखने की उत्कट इच्छा के साथ ही सेनापति ने अन्य कवियों के भावों को अपने काव्य में अधिक प्रश्रय नहीं दिया है । वैसे तो साहित्यिक क्षेत्र में प्रचलित साधारण भाव तथा उक्तियां उनके काव्य में भी हैं किंतु

दूसरों के भावापहरण का प्रयत्न नहीं किया है । वास्तव में सेनापति स्वाभिमानी प्रकृति के कवि थे । इसीसे दूसरों की कही हुई बातों के दोहराने को वे हेय दृष्टि से देखते थे । वे आत्म-सम्मान को ही सम्पत्ति समझते थे । सांसारिक सुखों की चिंता में मग्न रहना, उनको देखकर ललचाना आदि उन्हें पसन्द न था । कष्ट पड़ने पर भी तुच्छ व्यक्तियों से कुछ याचना करना उनकी प्रकृति के विरुद्ध था । समाज में समादृत होना ही उनके लिए सब कुछ था । सेनापति प्रधानतया राम के भक्त थे यद्यपि उनकी रचनाओं में कृष्ण तथा शिव सम्बन्धी छँद भी हैं ।

इनके जन्म तिथि तथा मृत्यु तिथि के विषय में कोई बात निश्चित रूप से नहीं कही जा सकती । कवित्त रत्नाकर सं० 1706 अर्थात् 1649 ई० में लिखा गया था । उसके भावों तथा विचारों से इतना तो निश्चित सा है कि उसके लिखने के समय तक वृद्ध हो चुका था । यद्यपि उसके कुछ छँद ऐसे हैं, जो सं० 1706 के पहले के लिखे हुए जान पड़ते हैं । संभवतः विक्रम की 17वीं शताब्दी के द्वितीय चरण के अन्त के लगभग इनका जन्म हुआ होगा । इनकी मृत्यु 18 वीं शताब्दी के प्रथम चरण में मानी जा सकती है ।

सेनापति के लिखे दो ग्रंथ बताये जाते हैं । (1) काव्य कल्पद्रुम तथा (2) कवित्त रत्नाकर । यही कवित्त रत्नाकर ही प्राप्त है । यह एक संग्रह ग्रंथ है । इसमें 5 तरंगे हैं । पहली तरंग में कुल 97 कवित्त हैं और अधिकतर कवित्त श्लिष्ट हैं । दूसरी तरंग में कुल श्रृंगार सम्बन्धी 74 छँद हैं । तीसरी तरंग में ऋतु वर्णन सम्बन्धी 62 छँद हैं 8 कुंडलियां हैं तथा शेष कवित्त हैं । चौथी तरंग में 76 छँदों में रामकथा सम्बन्धी रचना है, इसमें 6 छप्पय तथा अविशिष्ट कवित्त है । पांचवीं तरंग में भक्ति सम्बन्धी 88 छँद हैं, जिनमें से 12 छँद चित्रकाव्य के है । कुछ छँद ऐसे भी हैं जो कई तरंगों में समान रूप से पाये जाते हैं । पुनरावृत्ति वाले छँदों को छोड़कर कवित्त रत्नाकर के कुल मिलाकर 384 छँद हैं । वैसे छँदों की संख्या 394 है ।

रीतिकाल के कवियों में से बहुतों का सम्बन्ध राज दरबारों से रहा करता था । राजसी ठाट-बाट के दृश्य नित्य ही उनके आँख के सामने रहते थे ।

समाज में ये ही दृश्य भौतिक सुख के आदर्श माने जाते होंगे और साधारण जनता में इनके अनुकरण करने का चलन भी खूब रहा होगा । स्वभावतः कविगण अपनी रचनाओं में इन्हीं आदर्श मानी जाने वाली बातों का चित्रण भी करते रहते थे । व्यावहारिक दृष्टि से भी राजवैभव आदि का चित्रण करना उनके लिए आवश्यक होता होगा क्योंकि अपने संरक्षक को प्रसन्न करना उनके लिए अत्यंत आवश्यक था । इसलिए सेनापति के ऋतु वर्णन में प्रत्येक ऋतु में राज-महलों की स्थिति विशेष के वर्णन पाये जाते हैं । जेठ के निकट आते ही खसखानों और तहखानों की मरम्मत होने लगती है । ग्रीष्म की ताप से बचने के लिए शीतोपचार के उपायों की फिक्र होती है :-

जेठ नजिकाने सुधरत खसखाने, तल ताल तहखाने के सुधारि झारियत हैं ।
होति है मरम्मति बिबिध जल जुंत्रन की, ऊँचे ऊँचे अटा ते सुधा सुधारियत हैं ।।
सेनापति अतर, गुलाब, अरगजा, साजि, सार तार हार मोल लै लै धारियत है ।।
ग्रीषम के बासर बराइबे कौं सीर सब राजभोग काज साज यौं सम्हारियत हैं । — तीसरी तरंग, छंद 10.

इसी प्रकार अगहन मास में प्रभु लोगों के उपभोग की सामग्री का वर्णन पाया जाता है :-

प्रात उठि आइबे कौं, तेलहि लगाइबे कौं
मलि मलि न्हाइबे कौं गरम हमाम है ।
ओढ़िबे कौं साल, जो बिसाल है अनेक रंग
बैठिबे कौं सभा, जहाँ सूरज कौ घाम है ।
धूम कौ अगर, सेनापति, सोंधौ सौरभ कौं
सुख करिबे कौं छिति अंतर कौं धाम है ।
आसे अगहन, हिम पवन चलन लागे
ऐसे प्रभु लोगन कौं होत बिसराम हैं ।। — तीसरी तरंग छंद 43

किन्तु कवि की दृष्टि सदा बड़े-बड़े रंगीन दुशालों तथा गरम हम्मामों तक ही सीमित नहीं रही है । कभी-कभी आग जला कर अलाव तापते हुए साधारण स्थिति के मनुष्य पर भी पड़ गई है :—

सीत को प्रबल सेनापति कोपि चढ़्यो दल
निबल अनल गयौ सूर सियराइ कैं ।
हिम के समीर, तेई बरसै बिषम तीर
रही है गरम भौन कोनन मैं जाई कै ।।
धूम नैन बहैं लोग आगि पर गिरे रहैं
हिए सो लगाइ रहैं नैक सुलगाइ कैं ।
मानौ भीत जानि, महा सीत तैं पसारि पानि
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कैं ।। — तीसरा तरंग छंद 45

कवित्त रत्नाकर की भाषा का सौंदर्य अलंकारों के तड़क-भड़क के कारण है । सेनापति ब्रजभाषा लिखने में बहुत दक्ष थे । उन्होंने श्लिष्ट कवित्त में भाषा के साधारण से साधारण शब्दों द्वारा बहुत सुन्दर रचना की है । ब्रज भाषा से इतना परिचित होने के कारण ही उन्हें श्लिष्ट काव्य लिखने में अपूर्व सफलतामिली है, उनकी भाषा में संस्कृत शब्दों के तत्सम रूपों का प्रयोग कम हुआ है । विदेशी शब्दों में से कुछ शब्द फारसी भाषा के हैं । इनके भी तद्भव रूप ही मिलते हैं । राजनीतिक कारणों से इनका प्रयोग सर्वसाधारण में भी हो गया था । फारसी शब्द अधिकतर पहली तरंग में प्रयुक्त हुए है । उदाहरणार्थ — पाइपोस (पापोश), बरदार, दादनी रोसन (रोशन), भिही आसना (अशना), गोसे (गोशा), ज्यारी (जथारी), रुख (रुख) बाजी । दो एक अरबी के शब्द भी मिलते हैं — अरस (अर्श), लिवास, इतबार(एतबार), किंतु इन शब्दों की संख्या बहुत ही सीमित है ।

सेनापति की भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है । इनके भाषा में प्रसाद तथा ओज गुण प्रधानता से पाये जाते हैं । ओजपूर्ण भाषा लिखने में सेनापति बहुत निपुण है । ओजगुण लाने के लिए उन्होंने कुछ शब्दों के द्वित्व रूपों का

भी प्रयोग किया है । माधुर्य की ओर सेनापति का ध्यान अधिक न था । फिर भी कुछ कविताओं में शब्द सौंदर्य का विधान किया गया है । प्रसाद गुण श्लिष्ट रचनाओं को छोड़कर प्रायः सर्वत्र ही प्राप्त होता है । सेनापति की भाषा सुव्यवस्थित तथा परिमार्जित है, उसमें शब्दों के विकृत रूप अधिक नहीं मिलते हैं ।

बिहारी लाल

बिहारी के पितामह का नाम वासुदेव और पिता का नाम केशवदास था । ये मथुरा निवासी छहधरा चौबे थे । इनकी ऋग्वेद की आश्वलायन शाखा थी और तीन प्रवर थे । इनका जन्म सं० 1652 में कार्तिक शुक्ल अष्टमी बुधवार को श्रवण नक्षत्र में हुआ था । इनके तीन प्रवर – कश्यप, अत्रि एवं सारण्य थे इनकी कुल देवी का नाम महाविद्या था । इनकी बहन का विवाह मिश्र परिवार में हुआ था ।

इनके पिता केशव राय सं० 1660 के लगभग ग्वालियर छोड़कर ओरछा चले आये । बिहारी की अवस्था उस समय 8-10 वर्ष के लगभग थी । बिहारी के एक भ्राता व एक भगिनी भी थी । इसी बहिन से कुलपति मिश्र का जन्म हुआ था । उस समय ओरछा का शासन महाराज राम शाह करते थे । वृद्धावस्था एवं अतिशय कार्य-भार के कारण उन्होंने राज्य अपने लघुभ्राता इन्द्रजीत सिंह को सौंप दिया । इन्द्रजीत सिंह अत्यंत वीर निपुण लोकप्रिय तथा कला-विशारद शासक थे । इनके दरबार में महाकवि केशवदास तथा प्रवीण राय जैसे प्रसिद्ध नृत्यांगनाएँ रहती थीं जब केशव राय ओरछा पहुंचे तो स्वभावतः सत्कवि होने के कारण वे रामचन्द्रिकाकार केशवदास से भी जाकर मिले । वहीं पर बिहारी कवि का परिचय महाकवि केशवदास से हुआ । बालक बिहारी को प्रत्युत्पन्न मति जानकर महाकवि ने उसे अपना शिष्य बनाने की इच्छा प्रकट की । केशव राय तो यही चाहते ही थे । परिणामस्वरूप सं० 1664 तक बिहारी ने महाकवि केशवदास से काव्य कला की शिक्षा प्राप्त की । तभी केशवदास जी का गोलोकवास हो गया, और केशवराय अपने पुत्र बिहारी तथा अन्य दोनों बच्चों को लेकर ब्रज प्रदेश में चले आये । यहाँ आकर बिहारी ने विधिपूर्वक साहित्य तथा शास्त्र की शिक्षा ग्रहण की । इनके दीक्षा गुरु स्वामी नरहरिदास थे, जिनका जन्म गुढ़ो नामक ग्राम में हुआ था और कालान्तर में ब्रजभूमि में आकर बस गये थे । ब्रज में आने पर ही बिहारी की भगिनी का विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ । पुत्री के हाथ पीले कर देने के बाद केशव राय जी को बिहारी और उनके भाई की भी चिन्ता हुई । बिहारी के भाई का विवाह मैनपुरी में हुआ और स्वयं बिहारी मथुरा में ब्याहे गये । इनका विवाह

माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण परिवार में हुआ । विवाह के बाद वे अपनी ससुराल में ही रहने लगे । सं० 1675 में सम्राट जहाँगीर ने ब्रज प्रदेश की यात्रा महात्मा चिद्रूप के दर्शन लाभ के उपलक्ष्य में की । इसी समय वह स्वामी नरहरि दास से भी मिला । स्वामी जी की कीर्ति दूर-दूर तक परिव्याप्त थी । सम्राट के साथ यात्रा में युवराज शाहजहाँ भी था उसी समय संयोगवश बिहारी भी नरहरिदास के यहाँ पधारे । नरहरि दास ने बिहारी की प्रतिभा का परिचय शाहजहाँ को दिया । शाहजहाँ बिहारी के साहित्य एवं संगीत कला पर मुग्ध हो गया, परिणामस्वरूप बिहारी को मुगल दरबार में स्थान प्राप्त हो गया ।

श्री नरहरि नरनाह कौं दीनी बाँह गहाइ ।
सगुन आगरे-आगरैं रहत आइ सुख पाइ ।।

सम्राट् शाहजहाँ स्वयं काव्य संगीत एवं नृत्यादि कलाओं का मर्मज्ञ था । फारसी एवं संस्कृत पर उसका समान अधिकार था । पंडितराज जगन्नाथ की प्रतिभा का सही मूल्यांकन सम्राट् शाहजहाँ ने किया था । सुन्दर-दूलह तथा कुलपति मिश्र आदि अनेक हिन्दी कवियों को भी शाहजहाँ के दरबार में सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त था ।

कुछ समय पश्चात् साम्राज्ञी अर्जुमन्दबानू के गर्भ से राजकुमार दारा का जन्म हुआ । पुत्र जन्म के महोत्सव पर शाहजहाँ ने भिन्न-भिन्न राजवाड़ों के 52 राजाओं को आमंत्रित किया था । बिहारी शाहजहाँ के कृपाभाजन तो थे ही अतः आगत राजाओं ने भी उन पर अपना विशेष स्नेह प्रदर्शित किया । महाकवि रहीम से तो दरबार में ही उनका परिचय हो गया था । रहीम अत्यंत वीर कवि एवं दानी थे । गंग को एक छप्पय पर उन्होंने 36 लाख रुपया दान में दिया था और बिहारी को एक ही दोहे पर प्रसन्न होकर उन्होंने स्वर्ण मुद्राओं से ढक दियाउ था, संभवतः वह दोहा निम्नलिखित था :—

गंग गौछ मौछे जमुन अधरन सरसुति राग
प्रगट खान खानान के कामद बदन प्रयाग ।।

इस प्रकार मुगल सम्राट के मित्र राजाओं ने भी प्रसन्न होकर बिहारी को वार्षिक वृत्ति देना प्रारंभ कर दिया । बिहारी अधिकतर राजधानी में ही रहने लगे । समय-समय पर वृत्ति लेने के हेतु ये बाहर जाया करते थे, किन्तु यह क्रम अधिक दिनों तक नहीं चल सका । शाहजहाँ ने राजगद्दी प्राप्त करने के लिए जहाँगीर के विरुद्ध विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया । परिणाम यह हुआ कि महावत खाँ ने शाहजहाँ को सुदूर दक्षिण में जा खदेड़ा । 1678 से 1691 वि० तक बिहारी फिर मथुरा आकर रहे । संभवतः इसी बीच में उन्होंने ब्रजभाषा के साहित्यिक स्वरूप की स्थापना की ।

इसी समय बिहारी जोधपुर के राजा जसवंत सिंह के यहाँ अपनी वार्षिक वृत्ति लेने गये । जसवन्त सिंह वीर शासक के साथ-साथ काव्य कला निष्णात भी थे । उन्होंने एक विपुल अलंकार ग्रंथ की रचना की थी । कुछ विद्वानों का मत है कि उक्त ग्रंथ जसवंत सिंह की नहीं अपितु बिहारी की ही रचना थी यदि यह संभावना सत्य है तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि बिहारी ने सतसई से पूर्व इसकी रचना की होगी क्योंकि शैली की दृष्टि से यह ग्रंथ सतसई की कोटि में कदापि नहीं ठहर पाता । जोधपुर में एक विशाल दूहा संग्रह भी बताया जाता है, इसमें 15-16 सौ दोहों का संकलन है । इसके अधिकांश दोहे सतसई में भीप्राप्त हैं । संभवतः ये दोहे भी बिहारी कृत हैं । इसके अतिरिक्त पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने बिहारी कृत कतिपय कवित्तों का भीशोध किया है । इस प्रकार बिहारी ने विपुल साहित्य की रचना की थी ।

संवत् 1692 में बिहारी अपनी वार्षिक वृत्ति लेने के लिए जयपुर गये । इस समय यहाँ पर जयसिंह अथवा जयशाह का शासन चल रहा था । जयसिंह ने इस समय नया-नया विवाह किया था । वे नवोढ़ा पत्नी के स्नेह सरोवर में इतने डूब चुके थे कि उन्हें अपने राज्य तथा पहली पत्नी खौली के सरदार सांवलदास की कन्या अनन्त कुंवर चौहानी तक से पूर्ण विरक्ति हो गई थी । अनन्त कुंवरि चौहानी को जब यह ज्ञात हुआ कि बिहारी आये हुए हैं, तभी उन्होंने महाकवि को अपने पास बुला कर राजा जयसिंह की विलास जर्जर अवस्था का करुणा-पूर्ण वर्णन कह सुनाया । रानी यह भलीभांति जानती थी कि जयसिंह को केवल

बिहारी ही उचित मार्ग-निर्देश कर सकते थे । क्योंकि वे मुगल सम्राट् के कवि थे। और जयसिंह मुगल सम्राट् के प्रिय कवि का उल्लंघन अथवा तिरस्कार नहीं कर सकते थे । बिहारी ने अनन्त कुंवरि चौहानी की इस करुणापूर्ण कथा को सुनकर तुरन्त एक दोहा लिख कर राजा जयसिंह के निकट युक्तिपूर्वक भिजवाया जयसिंह पर इसकी सर्वथा अनुकूल प्रतिक्रिया हुई । वे विलास तन्द्रा को त्याग कर कर्तव्य के प्रशस्त मार्ग पर आ गये ।

नहि पराग नहि मधुर मधु नहिं विकास इहिकाल ।
अली कली ही सौं बध्यौ, आगे कौनु हवाल ।।

इस कविता पर जयसिंह ने बिहारी का भूरि-भूरि सम्मान एवं सत्कार किया । जयसिंह ने बिहारी को पुष्कल हेम मुद्राएं प्रदान की तथा उनसे इसी प्रकार के दोहे लिखने की प्रार्थना की । हर दोहे पर एक स्वर्ण मुद्रा देने का वादा किया ।

महाराज जयसिंह के स्नेह तथा सम्मानपूर्ण अनुरोध पर बिहारी वहीं ठहर गये और उन्होंने सतसई नामक अपने लोक विख्यात ग्रंथ का निर्माण किया । रानी अनन्त कुंवरि ने भी प्रसन्न होकर बिहारी को "काला पहाड़ी" नामक एक ग्राम प्रदान किया तथा बिहारी का एक तैलचित्र भी अंकित करवाया जो आज तक जयपुर के राजदरबार में सुरक्षित है । यह घटना अनुमानतः संवत् 1692 की है जब कि बिहारी ने सतसई नामक ग्रंथ का प्रारंभ किया इस समय बिहारी की अवस्था लगभग 40 वर्ष की रही होगी ।

कुछ काल के पश्चात् रानी चौहानी को पुत्र रामसिंह का जन्म हुआ । पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में बिहारी का पुनः स्वागत सम्मान किया गया इस अवसर पर बिहारी ने महाराज जयसिंह की प्रशस्ति स्वरूप राज्य दरबार में कविता पाठ किया । बिहारी की लोकप्रियता इस घटना के पश्चात् और भी अधिक बढ़ चली । जब कुंवर रामसिंह विद्याध्ययन के योग्य (7 वर्ष के) हुए तब बिहारी को ही उनका गुरू नियत किया गया और तब इन्होंने पाटी पूजन करवाया । बिहारी ने उन्हें अक्षर ज्ञान करवाया और उन्हें भावी शिक्षा प्रदान करने के लिए अपने लगभग 500 दोहों का एक संस्करण संकलित किया । इस संस्करण में कुछ अन्य कवियों की रचनाएं भी संकलित थीं ।

संवत् 1704 में औरंगजेब ने बलख पर आक्रमण किया । इस आक्रमण का अधिनायक जयसिंह को बनाया गया । जयसिंह इस युद्ध में वीरता से लड़े । फलतः विजयपताका उन्हीं की लहराई । युद्ध विजय के उपलक्ष्य में वे सम्राट् के पास आगरा आये । वहाँ उनका प्रभूत सत्कार किया गया । जयपुर आने पर भी उनके लिए विशेष स्वागत समारोह संपादित किया गया ।

बिहारी के जीवन के प्रमुख घटनाओं पर ध्यान देने से विदित होता है कि उनका जीवन बुन्देलखंड मथुरा आगरा और जयपुर में व्यतीत हुआ । बचपन उन्होंने बुन्देलखंड में व्यतीत किया अतः बचपन की भाषा का प्रभाव उनकी कविता पर अंत तक रहा ।

ओरछा दरबार में भी वे बचपन में गये थे । केशवदास और मधुकरशाह का संकेत इनके एक दोहे में प्राप्त होता है । केशव की कविप्रिया व रसिकप्रिया की छाप भी कहीं कहीं सतसई के दोहों पर पड़ी है । युवावस्था बिहारी ने ब्रज में व्यतीत की । नरहरिदास के संपर्क में संस्कृत साहित्य तथा संगीत का अभ्यास किया । इनके अनेक दोहों पर संस्कृत के रीति ग्रंथ की गहरी छाप इस तथ्य का समर्थन करते हैं । शाहजहाँ के साथ आगरा प्रवास में फारसी की शायरी और राजदरबारों के जीवन की झांकी का बिहारी ने जो परिचय प्राप्त किया था, उसे भी उनके दोहों में देखा जा सकता है । जयपुर राज्य में रहकर उन्होंने जीवन के विलास परायण दृश्य देखे थे । राजपूती शान और उत्थान-पतन देखा था । यह सब बिहारी ने अपने दोहों में पूरी तरह अंकित किया है । बिहारी का काव्य तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों के अध्ययन की प्रचुर सामग्री प्रस्तुत करता है । मुगलकालीन उत्तर भारत की सामाजिक दशा का जैसा चित्रण बिहारी सतसई में है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है ।

बिहारी ने रमणीय अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त भाषा का प्रयोग करके रीतिकालीन कवियों में भाषाविषयक व्यवस्था का सूत्रपात किया था । बिहारी ने शब्द की एकरूपता और प्रांजलता पर ध्यान दिया । इसके फलस्वरूप परवर्ती कवियों की भाषा में परिष्कार का मार्ग प्रशस्त हो सका । बिहारी सतसई की भाषा ब्रज है, ब्रजभाषा का काव्य क्षेत्र बहुत विस्तृत रहा है । ब्रज प्रदेश के अतिरिक्त राजपूताना बुंदेलखंड अवध मध्य भारत बिहार गुजरात और महाराष्ट्र तक

इस भाषा का काव्य भाषा के रूप में प्रचार था । ब्रजभाषा में पांडित्य प्राप्त करने के लिए ब्रज में निवास आवश्यक नहीं था । बिहारी का जन्म ग्वालियर में हुआ अतः बुंदेलखंडी भाषा के जन्मजात संस्कार उनके पास थे । यौवन मथुरा में व्यतीत हुआ । फलतः ब्रजभाषा से साक्षात् सम्बन्ध होने के कारण उनका ध्यान काव्य रचना करते समय भाषा की मूल प्रकृति की ओर बना रहा त्रुटियों से वे बचे रहे जो अवध या बुंदेलखंड के कवि प्रायः करते थे। शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग करने वाले बहुत कम कवि हुए हैं । बिहारी की भाषा को हम अपेक्षाकृत शुद्ध ब्रजभाषा कह सकते हैं । साहित्यिक ब्रजभाषा का रूप इनकी ही भाषा में सबसे पहले इतने निखार को प्राप्त हुआ । इनके बाद घनानंद और पद्माकर ने उसे और अधिक परिष्कृत किया । बिहारी की भाषा में बुंदेलखंडी और पूर्वी का प्रभाव है । घनानन्द पूर्वी प्रभाव से मुक्त हैं । बिहारी ने पूर्वी के प्रयोग कहीं तुक के आग्रह से और कहीं प्रयोग बाहुल्य के कारण स्वीकार किये हैं । किंतु बुंदेली के प्रयोग तो सहज रूप में शैशव के अभ्यास के कारण आये हैं । बिहारी की भाषा के शब्द कोश का आनुपातिक विवरण तैयार किया जाय तो सबसे अधिक संख्या संस्कृत के तत्सम परिनिष्ठित शब्द की होगी । बिहारी समास-पद्धति में संस्कृत पदावली के कारण सफल हुए हैं । संस्कृत के अतिरिक्त अरबी-फारसी के इजाफा, ताफता, बिलनबी, कुतुबनुमा, रोज इत्यादि शब्दों का प्रयोग भी मिलता है ।

बिहारी ने भाषा को प्रवाहपूर्ण तथा प्रेषणीय बनाने के लिए लोकोक्ति एवं मुहावरों का भी प्रयोग किया है । मुहावरों का प्रयोग प्रेषणीय और समर्थ पदावली के समन्वय से शोभन बन पड़ा है । भाषा पर सच्चा अधिकार रखनेवाला कवि ही ऐसी प्रौढ़ प्रांजल भाषा का प्रयोग कर सकता है ।

बिहारी के जीवन वृत्त काव्य और कृतित्व पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट लक्षित होता है कि बिहारी नागरिकता और नागरिक जीवन के प्रबल समर्थक थे । इनके काव्य में नागरिक भावनाओं, कामनाओं और लालसाओं का वर्णन है । उनकी मान्यता थी कि गुणों का विकास सदा नागरिकों में ही होता है । अपनी अन्योक्ति में इस बात का उन्होंने विविध रूपों में संकेत किया है । इसका कारण यह है कि उनका अधिकांश जीवन राजा महाराजाओं के निकट संपर्क में

व्यतीत हुआ था । वे चाहते थे कि समाज में असंस्कृत या ग्राम्य जीवन न रहे । उन्होंने बार-बार कहा है कि अपने वर्ग में ही रहना चाहिए और अपने वर्ग का अभ्युत्थान करना चाहिए । कुसंग का ज्वर भयानक होता है । अतः उससे बचना ही चाहिए । संपत्तिशाली व्यक्ति यदि कृपण हो तो वह वह नागरिकता से शून्य है और उससे सम्बन्ध न रखना ही ठीक है ।

चिन्तामणि

चिन्तामणि रीतिकाल के प्रमुख आचार्य कवि माने जाते हैं । वास्तव में रीति युग की शृंखला बद्ध परंपरा का प्रवर्तन इन्हीं के द्वारा हुआ । ये कानपुर जिले के तिकवांपुर गाँव के निवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे । इनका आविर्भाव सं० 1666 में हुआ । प्रसिद्ध कवि भूषण मतिराम और नीलकंठ इनके छोटे भाई थे । इन्होंने औरंगजेब, अकबर शाह (हैदराबाद), शाह सोलंकी जैनुद्दीन अहमद तथा मकरन्द शाह भोसला के आश्रय में रहकर अनेक शृंगारी ग्रंथों की रचना की । काव्यांगों पर लिखी गई इनकी कृतियाँ सर्वाधिक समादृत हुईं । अपनी रचनाओं में इन्होंने कहीं-कहीं मणि लाल छाप भी रखी है । अब तक इनके निम्नलिखित ग्रंथों का पता चला है – कविकुल कल्पतरु, काव्य विवेक, काव्य प्रभाकर, पिंगल छन्द विचार तथा रामायण ।

देव

देव कवि का पूरा नाम देवदत्त था, देव इनका उपनाम था। अपने भाव-विलास ग्रंथ के रचना काल का उल्लेख करते हुए इन्होंने लिखा है कि संवत् 1746 में मेरी 16 वर्ष की आयु थी —

शुभ सत्रह से छियालिस चढ़त सोरही वर्ष
कढ़ी देवमुख देवता भावविलास सहर्ष ।।

अतः इनका जन्म संवत् 1730-31 मानना चाहिए। इसी ग्रंथ में इन्होंने अपने को इटावा का निवासी तथा दूयोसरिया ब्राह्मण लिखा है

दूयोसरिया कवि देव को नगर इटायो वास
जीवन नवल सुभाव रस किन्हौं भाव विलास ।।

दूयौसरिया अथवा दुसरिहा कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की अल्ल होती है। देव के प्रपौत्र भोगी लाल के पास उपलब्ध वंश वृक्ष से भी देव काश्यपगोत्री कान्यकुब्ज ब्राह्मण सिद्ध होते हैं :—

काश्यपगोत्र द्विववेदी कुल कान्यकुब्ज कमनीय।
देवदत्त कवि जगत में भये देव रमनीय ।।

तथा इनके पिता का नाम बिहारी लाल दूबे ज्ञात होता है।

दुबे बिहारी लाल भये निजकुल मह दीपक
तिनके भे कवि देव कविन मह अनुपम रोचक ।।

देव को अपने जीवन निर्वाह के लिए अनेक आश्रयदाताओं के पास भटकना पड़ा था। अन्तः साक्ष्य के अनुसार इनके कतिपय आश्रयदाताओं के नाम ये हैं :—
(1) आजमशाह, जिन्हें इन्होंने अपने दो ग्रंथ भावविलास और अष्टयाम भेंट किये।

(2) चर्खी (ददरी) पति राजा सीताराम के भतीजे सेठ भवानी दत्त वैश्य। इनके नाम पर देव ने भवानी विलास ग्रंथ का निर्माण किया था। (3) फफूंद रियासत के राजा कुशल सिंह। कुशल विलास की रचना इनके नाम पर की गई। (4) राजा अथवा सेठ भोगी लाल, जिन्हें देव ने निम्नलिखित श्रद्धांजलि भेंट की है :—

भोगी लाल भूप लख पाखर लिवैया जिन
लाखनि खरचि खरचि आखर खरीदे हैं।

(5) इटावा के समीपवर्ती ड्योढ़िया खेरा के राजा (जमींदार) उद्योत सिंह। इन्हें देव ने अपना प्रेमचन्द्रिका ग्रंथ समर्पित किया था। (6) दिल्ली के रईस पातीराम के पुत्र सुजनमणि जिनके लिए सुजान विनोद की रचना की गई थी। (7) पिहानी के अधिपति अकबर अली खाँ जिन्हें देव ने सुखसागर तरंग समर्पित किया है।

देव की मृत्यु अनुमानतः संवत् 1824-25 में मानी जाती है। इस समय इनकी आयु 94-95 वर्ष हुई थी।

जैसा ऊपर कहा गया है, देव के उपलब्ध ग्रंथों की संख्या 18 है। इनकी सूची इस प्रकार है :—

क्रम संख्या	ग्रंथ	निर्माण काल
1. भा	भावविलास	संवत् 1746
2.	अष्टयाम	अनुमानतः सं0 1746
3.	भवानी विलास	,, सं0 1750-55
4.	प्रेम तरंग	,, सं0 1760
5.	कुशल विलास	,, सं0 1760
6.	जाति विलास	,, सं0 1780
7.	देव चरित्र	,, सं0 1780 के बाद
8.	रस विलास	,, सं0 1783
9.	प्रेमचन्द्रिका	,, सं0 1790

10.	सुजान विनोद या रसानन्द लहरी		अनुमानतः सं0 1790 के बाद
11.	शब्द रसायन या काव्यरसायन		,, सं0 1800
12.	सुख सागर तरंग,		,, सं0 1824
13.	राग रत्नाकर		,, सं0 अज्ञात
14.	जगद्दर्शन पचीसी	वैराग्य शतक अथवा देवशतक	अन्तिम दिनों की रचना
15.	आत्म दर्शन पचीसी		
16.	तत्वदर्शन पचीसी		
17.	प्रेम पचीसी		
18.	देव माया प्रपंच (नाटक)		अज्ञात

इन ग्रंथों को वर्ण्य विषय के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जा सकता है — काव्यशास्त्रीय ग्रंथ तथा अन्य ग्रंथ । प्रेमचन्द्रिका, रागरत्नाकर, देवशतक के चारों भाग, देव चरित्र व देव माया प्रपंच को छोड़कर शेष ग्रंथ काव्यशास्त्र से सम्बद्ध हैं ।

प्रेमचन्द्रिका — इसका वर्ण्य विषय प्रेम है ।

रागरत्नाकर — संगीत से सम्बद्ध लक्षण ग्रंथ है ।

देवशतक — इसमें चार पृथक पच्चीसियाँ हैं — (1) जगद्दर्शन, पच्चीसी, (2) आत्मदर्शन पच्चीसी, (3) तत्वदर्शन पच्चीसी, (4) प्रेम - पच्चीसी । प्रथम तीन का वर्ण्य विषय वैराग्य है । इनमें जीवन और जगत् की असारता, जीव के भ्रम का वर्णन और ब्रह्मतत्व का निरूपण है । (4) प्रेमपच्चीसी में प्रेमतत्व का वर्णन है । परमात्मा केवल प्रीति में मिलता है, प्रेम ही सार है, प्रेम के बल पर गोपियों ने उद्धव के निर्गुण ज्ञान को मिथ्या सिद्ध कर दिया था ।

देवशतक अत्यंत प्रौढ़ रचना है इसमें कवि ने दार्शनिक भावनाओं को पूर्ण अनुभूति के साथ अभिव्यक्त किया है । अतः वे कोरा दर्शन न रहकर काव्य बन गईं । देव की वृद्धावस्थाकी रचना होने के कारण इसमें भाषा और भाव दोनों की परिपक्वता है ।

देव चरित : यह ग्रंथ कृष्ण के आद्योपान्त जीवन से सम्बद्ध एक खंड काव्य है । इसमें कृष्ण जन्म से लेकर महाभारत में पाण्डवों की सहायता आदि अनेक छोटे बड़े प्रसंगों का अत्यन्त संक्षिप्त तथा खंडित वर्णन है ।

देवमाया प्रपंच : यह ग्रंथ प्रबोध चंद्रोदय की शैली पर लिखित पद्यबद्ध नाट्य रूपक है । कथानक के पात्र प्रतीकात्मक हैं । परपुरूष माया (मन) प्रकृति (बुद्धि), जनश्रुति तर्क आदि । कथानक का उद्देश्य अधर्म पर धर्म की विजय दिखाना है ।

काव्यशास्त्रीय ग्रंथ :

देव के काव्यशास्त्रीय ग्रंथों में शब्द रसायन विविध निरूपक ग्रंथ हैं, भाव विलास में शृंगार रस तथा अलंकारों का निरूपण है । भवानी विलास, प्रेमतरंग, कुशल विलास, जातिविलास, रसविलास, सुजानविनोद और सुखसागर तरंग, शृंगार रस और विशेषतः इसके नायक नायिका भेद प्रसंग से सम्बद्ध ग्रंथ हैं । अष्टयाम में नायक नायिका के आठों पहर के विविध विलास का वर्णन है । एक कवि द्वारा एक ही विषय से सम्बद्ध अनेक ग्रंथों के प्रणयन का परिणाम यह हुआ है । शृंगार रस तथा नायक नायिका भेद सम्बन्धी अनेक प्रसंगों का कई बार पुनरावर्तन हो गया है । यहाँ तक कि भाव विलास में जिन 39 अलंकारों का निरूपण है, उन सब की पुनरावृत्ति शब्द रसायन में कर दी गई है । इसके अतिरिक्त उदाहरणों की भी इधर-उधर पुनरावृत्ति अथवा उनमें परिवर्तन परिवर्धन करके नवीन ग्रंथ की सृष्टि कर दी गई है । इस दृष्टि से सुखसागर तरंग का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है । यह कवि के अन्तिम दिनों का वृहद काव्य ग्रंथ है, पर कुछ एक नवीन पद्यों को छोड़कर शेष इधर-उधर से संग्रहीत हैं । जीविका वृत्ति की तलाश में इधर से उधर भटकने वाले बेचारे देव के पास घटत बढ़त के अतिरिक्त भला और उपाय ही क्या था ?

शब्द रसायन में विविध काव्यांगों का निरूपण है, ये काव्यांग हैं । काव्यस्वरूप, पदार्थ निर्णय (शब्दशक्ति), नौ रस, नायक नायिका भेद, दस रीति (गुण) चार वृत्ति, अलंकार तथा पिंगल । भाव विलास में भी अलंकार को

स्थान मिला है । इस प्रकार इन ग्रंथों में लगभग सभी काव्यांगों का निरूपण हो गया जिसका आधार संस्कृत के प्रख्यात ग्रंथों काव्यादर्श, साहित्यदर्पण, तथा रसतरंगिणी और रस मंजरी से ग्रहण किया गया है ।

कवित्व : देव के काव्य का मुख्य विषय शृंगार है । शृंगारिक रचनाओं में देव के राग पक्ष का सबसे अधिक निखरा हुआ रूप दृष्टिगत होता है । उन्होंने सिद्धान्त रूप से रस की स्थापना जिस विश्वास के साथ की है, उसका सही निर्वाह उतने ही मनोयोग के साथ काव्य में देखने को मिलता है । किसी भी छंद में प्रेम का आवेग इतना अधिक है कि सहज ही उनकी रस चेतना की गंभीरता का आभास मिल जायेगा ।

चित्रों को सजीव बनाने तथा भाव सामग्री की निश्छल अभिव्यक्ति करने में भीदेव ने अत्यन्त सतर्कता से काम लिया है । विषय वस्तु के अनुरूप ही उन्होंने शब्दों का चयन किया है । इसमें संदेह नहीं कि व्याकरण की दृष्टि से उनकी भाषा अपेक्षाकृत सदोष है, उसमें शब्दों की तोड़मरोड़ और व्याकरण रूपों की अव्यवस्था है, पर ऐसा उन्होंने अपनी रचनाओं की सौन्दर्य वृद्धि के लिए ही करना पड़ा है । पुनरुक्ति अनुप्रास आदि भाषा प्रसाधनों की योजना तथा छंद में लय के आग्रह को वे उपेक्षित नहीं कर सके । फिर भीकाव्यगुणों को देखते हुए उनके ये दोष उपेक्षणीय हैं ।

जसवंत सिंह

मारवाड़ नरेश महाराज गजसिंह की मृत्यु के उपरान्त उनके द्वितीय पुत्र जसवंत सिंह 12 वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठे । ये महान तेजस्वी तथा सहित्य एवं दर्शन के पंडित थे । इतिहास में इनका नाम अपने प्रताप तथा विद्या प्रेम दोनों के लिए प्रसिद्ध है । शाहजहाँ तथा औरंगजेब दोनों के शासन काल में इनका महत्व रहा है । शाहजहाँ के समय में ये कई युद्धों में सम्मिलित हुए । औरंगजेब इनके तेज से आशंकित था । उसने इनको गुजरात का सूबेदार बनाया फिर शाइस्ता खाँ के साथ शिवाजी से युद्ध करने भेजा । कहा जाता है कि छत्रपति शिवाजी ने शाइस्ता खाँ की जो दुर्गति की थी उसमें जसवंत सिंह की अनुमति थी ।

जसवंत सिंह विद्वानों के आश्रयदाता तथा स्वयं विद्याव्यसनी थे । इन्होंने अपरोक्ष सिद्धान्त, अनुभव प्रकाश, आनन्द विलास, सिद्धान्त बोध, सिद्धान्त सार प्रबोध चन्द्रोदय नाटक आदि पुस्तकें पद्य में लिखी हैं । इन रचनाओं का विषय तत्व ज्ञान है । साहित्य की दृष्टि से इनकी पुस्तक भाषा-भूषण अमर रहेगी ।

भाषा भूषण से कुवलयानंद का अनुकरण करते हुए चन्द्रालोक शैली पर प्रौढ़ ग्रंथ रचना प्रारंभ होती है और भाषा भूषण ही इस शैली का सर्वोत्तम ग्रंथ है । आचार्य जसवंत सिंह ने केवल भाषाभूषण की रचना है । यह पुस्तक दोहा छंद में अलंकार विषय का लक्षण उदाहरणपूर्वक वर्णन करती है । भाषाभूषण में सब मिलाकर 212 दोहे हैं । यदि भूमिका तथा उपसंहार के 10 दोहे को अलग कर दें तो 202 दोहे में से 166 अलंकार विषय के हैं । शेष 36 दोहों में काव्य के अन्य अंग नायिका भेद आदि की सरल चर्चा है ।

भाषाभूषण अलंकार संप्रदाय का ग्रंथ है । इसमें चंद्रालोक के समान सभी काव्यांगों की चर्चा नहीं है प्रत्युत् कुवलयानंद के अनुकरण पर अलंकार विषय को सर्वसुलभ बनाने का सफल प्रयत्न है । लेखक का उद्देश्य भाषा में भूषण का

प्रकटीकरण, जो इस रचना के नाम तथा उपसंहार से भी स्पष्ट हो जाता है।

भाषा भूषण अपनी शैली का सबसे स्वच्छ तथा प्रौढ़ ग्रंथ है। जसवंत सिंह को विषय का निर्भ्रान्त बोध था और आचार्य पद से उसके प्रकटीकरण में भी वे कुशल थे। इस ग्रंथ की अद्यावधि प्रतिष्ठा इसका मूल्यांकन कर सकती है। संस्कृत में जो स्थान कुवलयानन्द का है, हिन्दी में वही भाषाभूषण का। कवि ने लक्षणों में और कहीं-कहीं उदाहरणों में भी कुवलयानंद से बड़े स्वच्छ अनुवाद किये हैं।

जसवंत सिंह ग्रंथावली (विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा संपादित) में निम्न 11 रचनाएं संग्रहीत है :-

(1) भाषा भूषण, (2) दोहा, (3) प्रबोध नाटक,
(4) आनन्द विलास, (5) अनुभव प्रकाश, (6) अपरोक्ष सिद्धान्त, (7) सिद्धान्त बोध, (8) सिद्धान्तसार
(9) छूटक दोहा, (10) श्रीमद्भगवद्गीता, (11) गीता महात्म्य।

रसलीन

रसलीन जिस क्षेत्र के थे आजन्म उस पर मुगलों का या उनके सूबेदारों का प्रभाव रहा । रसलीन के जीवन काल में मुगलों के बहादुरशाह (1707 ई० —1712 ई०), जहादर शाह (1712-1713 ई०), फर्रुखशियर (1713-1719ई०) मुहम्मदशाह (1719-1748 ई०), अहमद शाह (1748-1750 ई०) पाँच बादशाह गद्दी नशीन हुए ।

मुहम्मदशाह के नाम से 28 सितम्बर, सन् 1719 ई० को एक अनुभवहीन राजकुमार रौशन अख्तर मुहम्मद शाह रँगीला दिल्ली के तख्त पर बैठा और 26 अप्रैल, 1748 ई० गत हुआ । रसलीन का अधिकांश समय इसी सम्राट के कार्यकाल में बीता । अवध प्रदेश रसलीन की जन्मभूमि थी । दिल्ली और वाराणसी के रास्ते पर हरदोई के अन्तर्गत श्रीनगर (बिलग्राम) पड़ता था, जो रसलीन की जन्मभूमि थी । मध्यकाल की विद्या का यह महान केन्द्र आये दिन फौजों के चरण चापों से धूल-धूसरित होने वाले क्षेत्र में था ।इसलिए उस हलचल में इस स्थान का जनजीवन असामान्य था । ऐसे समय में भी ऐसे प्रदेशों में स्वाभिमानी साहित्यकार हुए हैं, जिन्होंने स्वाभिमानपूर्वक जीवन-यापन के लिए उस युग का स्वतंत्र आश्रय सैनिक रूप में ग्रहण किया और अपनी आस्था की अभिव्यक्ति साहित्य तथा अन्यान्य कलाओं के माध्यम से किया । रसलीन ऐसे ही कवियों में थे ।

मुगलों के समय में संस्कृत अरबी-फारसी तुर्की, हिन्दी (ब्रज) इतिहास आदि के एक साथ अध्ययन अध्यापन और लेखन के लिए ऐसे जिस एक नये स्थान ने देश में ख्याति अर्जित कर ली थी वह स्थान बिलग्राम था । यहाँ हिन्दू मुसलमान सबके सब शिक्षा के प्रेमी थे और साथ-साथ अरबी-फारसी संस्कृत हिन्दी और संगीत सब का अध्ययन करने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे । इनमें धार्मिक संप्रदाय सहिष्णुता भी थी । मुलतः फारसी संस्कृत और हिन्दी के अध्ययन एवं रचना केन्द्र

के रूप में देश-विदेश में बिलग्राम की प्रतिष्ठा थी । तो भी सन् 1722 ई० से मुहम्मद शाह रंगीला के दरबार में दक्खिन के श्रेष्ठ कवि 'वली' के प्रवेश से यह रेख्ता का भी केन्द्र बन गया था । यहाँ के लोग बहुभाषाविद् विनयी सबका सम्मान करने वाले रण कौशल में माहिर तथा जागिरदार होते हुए भी कला और संगीत के रसिक उपासक हुआ करते थे । इस बिलग्राम में रसलीन के पूर्वज सन् 1217 ई० में आये । गुलामनबी रसलीन बिलग्रामी एक इतिहास प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र में उत्पन्न ही नहीं हुए थे बल्कि उनकी वंश-परंपरा भी बड़ी उज्वल थी, जो मुहम्मद साहब से आरंभ होती है । रस प्रबोध में स्वयं उन्होंने अपने कुल का वर्णन 11 दोहों में किया है, इनका जन्म बिलग्राम में 30 जून, सन् 1699 ई० (मोहर्रम 2, हिजरी संवत् 1111) को सुप्रसिद्ध सैयद वंश में बाकर के पुत्र के रूप में हुआ था ।

ज्ञान के सभी क्षेत्रों में बिलग्राम की महिमा तो इतिहास में प्रतिष्ठित है ही तलवार के धनी भी यहाँ कम न हुए । देश में किसी एक ग्राम का ऐसा इतिहास मुस्लिम काल में शायद ही मिले । रसलीन की शिक्षा-दीक्षा भी ऐसे वातावरण में हुई । इनका घर और नाता पिता ज्ञान व शक्ति का उपासक तो था ही ये भी उसी साँचे में ढले ।

रसलीन हिन्दी के उच्चकोटि के शास्त्रीय कवि हैं, इन्होंने यथा आवश्यकता संस्कृत हिन्दी ग्रंथों के मतों का उल्लेख मात्र ही नहीं किया है, उन पर अपने चिंतन-शील विचार ही व्यक्त नहीं किये हैं, अपितु उर्दू और फारसी में उन्होंने रचना भी की है । राधाकृष्ण से लेकर हिन्दुओं की पौराणिक गाथाओं तक की चर्चा से लेकर अपने धर्म के चौदह मासूमों तक का वर्णन भी किया है ।

गुरु के अतिरिक्त रसलीन के श्रद्धास्पद मीर लुत्फुल्ला तद्था शाह बरकत-उल्ला पेमी आदि थे जो उच्चकोटि के संत और कवि तथा भारत के प्रचलित भाषाओं के विद्वान थे । मीर आजाद बिलग्रामी जैसे उच्चकोटि के विद्वान उनके मित्र थे । जिनके साथ ये शाहजहानाबाद व इलाहाबाद आदि में भी थे । इससे स्पष्ट है कि वे एक-दूसरे से प्रभावित थे और ज्ञान की सहसाधना भी करते थे[1] ।

---

1. सर्वे आजाद, 313

बिलग्राम के पूर्ववर्ती हिन्दी कवियों काअध्ययन रसलीन ने अवश्य किया होगा, क्योंकि गंगा के तीर पर कोई सुबुद्ध प्यासा नहीं रह सकता है। बिलग्राम के पूर्ववर्ती साहित्यकार एवं कवि इस प्रकार हैं :-

बिलग्राम और हिन्दी :

यहां हिन्दुओं में मन्नालाल, क्षेमराज, द्वारका हरवंश बलभद्र (सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि से इतर) देवीदीन आदि मिश्र परिवार में - राय बेनीराम, मनसाराम, रामप्रसाद, हरिप्रसाद, सुब्बाराम, शिवदयाल, जवाहर आदि राय परिवार में अच्छे कवि हुए। मिश्र ब्राह्मण थे व राय भाट (भट्ट ब्रह्म)।

अरबी- फारसी :

कवि	समय	रचनाएँ	भाषा ज्ञान
(1) शेख इनाय तुल्ला	मृ० 1688 ई०	स्फुट अनुपलब्ध	आरबी-फारसी हिन्दी-संस्कृत संगीतशास्त्र
(2) सैयद हुसेन	मृ० 1720 ई०	स्फुट अज्ञात	व्रजभाषा
(3) मीर अब्दुल्लाह	मृ० 1721 ई०	स्फुट अज्ञात	व्रजभाषा
(4) मीर अब्दुल्ल वाही जौक	मृ० 1721 ई०	शकरिस्तान ख़याल(अप्राप्य) कुछ हिन्दी रचनाएं हैं।	फारसी-हिन्दी
(5) अजीब	मृ० 1727 ई०	अप्राप्य	फारसी-हिन्दी मिश्रित भाषा व्रजभाषा
(6) मीर अजमत	मृ० 1729 ई०	अप्राप्य(दोहे व कवित्त)	अरबी-फारसी हिन्दी(व्रजभाषा)

कवि	समय	रचनाएँ	भाषा ज्ञान
(7) मीर लुत्फुल्लाह	मृ0 1734 ई0	अप्राप्य	फा0, हिं0ब्र0
(8) मीर सैयद मुहम्मद शायर	मृ0 1743 ई0	अप्राप्य-कवित्त-दोहे	अ0, फा0ब्रज0
(9) रसनायक	रचनाकाल-1746ई0	बिहारी सतसई रसिकप्रिया टीका स्फुट (सभी अप्राप्य)	फा0, अ0, हिं0
(10) सैयद मुबारक	1583-1687ई0	तिलशतक भक्ति अलकशतकशृंगार स्फुट कवित्त सवैया	अ0, फा0, सं0, हिन्दी
(11) सैयद निजामुद्दीन मधनायक	1591-1687 ई0	नाद चन्द्रिका, मधनायक शृंगार स्फुट छन्द	फा0, सं0, हिं0
(12) सैयद रहमत उल्लाह रहमत	1650-1706 ई0	पूर्ण रस (शृंगार) अप्राप्य, हिन्दी-काव्यशास्त्र, नख-शिख	हिं0, अ0, फा0
(13) मीर अब्दुलजलील	1660-1725 ई0	शिखनख, प्रेमकथा चौपाई, कसीद-ए-गर्राई-दोहा (बीच में हिन्दी छंद)	तु0, अ0, फा0 बरवै छंद, हिं0 सं0
(14) सैयद बरकत उल्ला प्रेमी	1660-1728 ई0	प्रेमप्रकाश (प्रका0) अवारिफे (भक्तिज्ञान)	अ0, फा0, सं0 हिं0, उर्दू ।

बिलग्राम में उत्पन्न इन पूर्वकालिक तथा सम-सामयिक मुसलिम कवियों की काव्यधारा का भी प्रभाव रसलीन पर अवश्य पड़ा होगा और उनके काव्य का अध्ययन करने का भी उन्हें अवसर मिला होगा । यद्यपि इनके अतिरिक्त बिलग्राम के हिन्दू कवियों के काव्य का भी उन्होंने अवलोकन अवश्य किया होगा ।

ऐसे तो बिलग्राम विद्वानों एवं कवियों तथा शायरों की खान ही था । रसलीन को फारसी, अरबी, संस्कृत, रेखता, ब्रज आदि भाषाओं का गंभीर ज्ञान था व काव्य रचना से प्रेम । उन्होंने फारसी लिपि में ठीक-ठीक हिन्दी लिखने के लिए एक ओर जहां फारसी लिपि में परिष्कार किया, संस्कृत के साहित्य शास्त्र के ग्रंथों से ज्ञान अर्जित किया, अन्यत्र के हिन्दी के श्रेष्ठ कवियों का अध्ययन किया, वहीं फारसी, ब्रज और रेखता में रचनाएं भी की ।

जीवन-यापन के क्षेत्र मे अपने कर्म के कारण वे प्रतिष्ठित थे । स्वाभिमान उनका ऐसा था कि किसी के सामने वे झुकने वाले नहीं थे । इसलिए गुरु ईश्वर धर्म दूतों पूर्वजों एवं संतों आदि की ही स्तुति एवं प्रशंसा की है, किसी राजा महाराजा नवाब या स्वामी की प्रशंसा से अपनी लेखनी का मुख मलीन नहीं किया ।

रसलीन की भाषा ब्रजभाषा है, ब्रजभाषा एक समय सारे देश के काव्य की भाषा थी, इसमें राजस्थानी बुन्देलखंडी अवधी पूरबी छत्तीसगढ़ी फारसी मागधी संस्कृत अपभ्रंश और खड़ीबोली इन सबका सम्मिश्रण किया गया और इसकी प्रवृत्ति यह हुई कि जिन संस्कृत के तत्सम शब्दों में मिठास नहीं है, उनके स्थान पर तद्भव शब्द का प्रयोग किया गया ताकि शब्द में उच्चारण-गत माधुरी बनी रहे । जिस शब्द का ब्रज भाषा में चयन किया जाता था, उसे इस रूप में ग्रहण कर लिया जाता था कि उसकी अनगढ़ता समाप्त हो जाये । ब्रजभाषा के माधुर्य गत इन सभी पक्षों का ध्यान रसलीन ने अपनी भाषा में रखा है । इसलिए उनकी भाषा में संस्कृत ब्रज अरबी फारसी अवधी छत्तीसगढ़ी और बुन्देलखंडी के शब्द मधुर रूप में घुल-मिल गये हैं । अरबी और फारसी के जानकार होते हुए भी उनसे जो शब्द इन्होंने लिये हैं, उनका भी आवश्यकतानुसार व तद्भव रूप में ग्रहण किया है, जैसे - 'अलह' 'अल्लाह' (अरबी), 'नेजा' (फा०), 'रौसन' 'रौशन' (फा०), 'हरोल' 'हरावल' (फा०) इत्यादि । श्रेष्ठ रचना के लिए व्यापक शब्द भंडार चाहिए । यदि शब्दों का ठीक-ठीक प्रयोग करना कवि नहीं जानता तो केवल व्यापक शब्द भंडार का ज्ञान मात्र होने से रचनाकार श्रेष्ठ नहीं हो सकता । रसलीन तत्कालीन प्रचलित भाषाएं अरबी, फारसी, रेखता, संस्कृत के पंडित तो थे ही इसलिए उनका शब्द भंडार व्यापक था ।

कुछ छंदों में जिनमें उन्होंने अपने गुरु, चौदह इमामों, देवदूतों, नबी, कुलवर्णन उच्चकोटि के संतों व कवियों का वर्णन या स्तुति किया है, अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग अधिकता से हुआ है । 10 प्रतिशत शब्द इसमें आये हैं, जिनमें से 7 प्रतिशत मुसलमानों से सम्बन्धित हैं ।

ये कवि रूप में किसी के दरबार में आश्रित नहीं थे और कविता को इन्होंने अपनी जीविका का आधार कर्म नहीं बनाया । उन्होंने किसी आश्रयदाता की आज्ञा से यह ग्रंथ नहीं रचा था । अपने स्वयंप्रभा ज्ञान से प्रेरणा पा आचार्यासनासीन होकर अपने शास्त्रज्ञान और लोकज्ञान के उज्ज्वल प्रकाश में इसका निर्माण अपने घर पर किया था ।

तोष

इनका असली नाम तोषमणि था । शृंगवेरपुर (सिंगरौर, जिला इलाहाबाद) के निवासी चतुर्भुज शुक्ल के पुत्र थे । सुधानिधि में अपना परिचय देते हुए इन्होंने लिखा है — शुक्ल चतुर्भुज को सुत तोष बसै सिंगरौर जहाँ रिषि थानो

दच्छिन देवनदी निकटै दसकोष प्रयागहि पूरब मानो ।।

शिवसिंहजी ने इनका उपस्थितिकाल सं० 1705 बताया है । सुधानिधि की रचना 1691 में हुई । अतः सरोजकार का उपर्युक्त निर्णय बहुत अंश तक ठीक लगता है ।

केशवदास के बाद समस्त रसों का वर्णन करने वालों तोष का सुधानिधि ग्रन्थ है । यह ग्रंथ सं० 1691 वि० की रचना है । 560 छंदों में यह ग्रंथ पूर्ण हुआ है । इसमें रसवर्णन के बहाने राधा कृष्ण की विलास लिलाओं का वर्णन है । अतः स्पष्ट है कि इसमें प्रयत्न काव्यात्मक है शास्त्रीय विवेचन का नहीं । इसमें नवरसों, भावों के वर्णन के साथ ही भावोदय भावशान्ति, भावशबलता, भावसंधि, रसाभास, रसदोष, वृत्ति एवं नायिका भेद का वर्णन किया गया है । सखा-सखी भेद भी विस्तार से वर्णित है । और हावों का वर्णन कवित्वपूर्ण है । इनका काव्य बड़ा ही ललित है । तोष की रचना में भाषा का प्रवाह और आलंकारिक सौन्दर्य है ।

भिखारीदास

अन्तः साक्ष्य के आधार पर दास का जीवन वृत्त जाना जा सकता है । भिखारीदास के प्रमुख एवं प्रामाणिक ग्रंथ ये हैं :- (1) काव्यनिर्णय, (2) शृंगार निर्णय, (3) रससारांश तथा (4) छन्दार्णव पिंगल । इनके अतिरिक्त इन्होंने नामप्रकाश, विष्णुपुराण भाषा तथा शतरंजशतिका नामक ग्रंथों की भी रचना की, जिनकी प्रामाणिकता में कोई संदेह नहीं ।[1] दास ने अपने जीवन के सम्बन्ध में कुछ संकेत काव्यनिर्णय तथा छन्दोर्णव पिंगल में विशेष रूप से किये हैं, जिनके आधार पर निम्नलिखित तथ्यों का पता चलता है ।

वंशपरिचय :

छन्दोर्णव पिंगल[2] तथा काव्य निर्णय[3] में दास ने निम्नलिखित पंक्तियों में अपना वंश परिचय दिया है ।

"अभिलाषा करी सदा ऐसनिका होय भ्रत्य सब ठौर दिन सब
याही सेवा चरचानि ।
लोभा लई नीचें ज्ञान हलाहल
ही को अंशु अंत है क्रियापताल निंदा रस ही को खानि
सेनापति देवी केर शोभा गनती को भूष पन्ना मोती हीरा हेम
सौदा हास ही को जानि
हीय पर देव पर बदे यश रटै नाऊ खगासन नग धर सीता
नाथ कोलापानि ।।"

उपर्युक्त कवित्त दास ने अपना वंश परिचय देने की दृष्टि से ही लिखा

---

1. देखिये खंड 2 का उत्तरार्ध 166/5.
2. छन्दोर्णव पिंगल, पृ० 4.
3. काव्य निर्णय, पृ० 244.

है, इस कवित्त से उनका वंश परिचय किस प्रकार प्राप्त हो सकता है, उसके लिए उन्होंने निम्नलिखित दोहा दे दिया है :-

"या कवित्त अंतवरण लै तु कंत दूवै छाडि ।
दास नाम कुल ग्राम कहि नाम भगति रस मंडि ।।"[1]

यदि उपर्युक्त कवित्त के अन्तर वर्णों (अर्थात् बीच में से एक-एक छोड़कर) को अलग लिख लिया जाय तो दास के नाम उनके वंश परिचय और उनके निवास-स्थान का पता चल सकता है । दोहे के अनुसार वंश परिचय जानने के लिए तुकांत के दो वर्णों को छोड़ना पड़ेगा अन्यथा कुल कवित्त निरर्थक हो जायेगा ।

उपर्युक्त निर्देशानुसार पढ़ने से कवि का नाम कुल परिचय इस प्रकार ठहरता है । भिखारीदास, कायत्थ बरन बहीबार माइ चैन लाल के शुत (सुत) कृपालदास को नाति वीरभान को पन्नाती रामदास को यरवर देश टैउंगा नगर ताथला । कवि का नाम भिखारीदास कायस्थ तथा वर्ण बहिवार था इनके भाइ का नाम चयनलाल (अथवा चैन लाल) पिता का नाम कृपालदास पितामह का वीरभानु तथा प्रपितामह का रामदास था । ये अरवर प्रदेश में टयौड्गा ग्राम के निवासी थे ।

विद्वत्ता एवं अध्ययन :

ये अपने समय के आचार्य माने जाते हैं क्योंकि इन्होंने न केवल अनेक ग्रंथों की ही रचना की अपितु हिन्दी साहित्य में परंपरा से चली आ रही काव्य परिपाटी को भी परिष्कृत किया तथा काव्यांगों के विवेचन एवं विश्लेषण द्वारा अपने आचार्यत्व की अभिव्यक्ति की इनका अध्ययन गंभीर व विशाल था ।

छन्दोर्णव पिंगल ग्रंथ की रचना करते समय भी उन्होंने यह स्वीकार किया है कि उन्होंने प्राकृत भाषा तथा संस्कृत के अनेकानेक पिंगल ग्रंथों का अध्ययन

---

1. छन्दार्णव पिंगल पृ० 4.

करने के पश्चात् ही भाषा में छन्दार्णव की रचना की है ।

"प्राकृत भाषा संस्कृत लखि बहुछन्दो ग्रंथ ।
दास किये छन्दोरणव भाषा रचि शुभ पंथ ।।"[1]

भिखारीदास ने अनेक प्राचीन तथा समकालीन कवियों एवं आचार्यों की रचनाओं का विशेष रूप से अध्ययन किया था और उनका विचार था कि इन्हीं की प्रेरणा से वे कविमार्ग पर अग्रसर हुए हैं ।

अपने पूर्ववर्ती आचार्यों तथा समकालीन कवियों के ज्ञान भंडार का अवलोकन कर तथा विविध प्रकार की भाषा पर अधिकार रखते हुए भी वे अपने सम्बन्ध में दृढ़तापूर्वक यह नहीं कह सकते थे कि वे कवि कोटि में आते भी हैं या नहीं क्योंकि वे विश्वास ही कैसे कर सकते थे कि उनकी कविता भविष्य में कवियों पर प्रभाव डालेगी या नहीं ?

आश्रयदाता :

इसके बारे में अन्तः साक्ष्य के आधार पर विशेष विवरण नहीं प्राप्त होता इतना पता चलता है कि वे अरबर प्रदेश के राजा पृथ्वीपति के भ्राता हिन्दुपति के आश्रित थे ।

"जगत विदित उदयाद्रि सो अरवर देश अनूप ।
रवि लौ पृथ्वीपति उदित तहाँ सोमकुल भूप ।।
सोदर तिनके ज्ञान निधि हिन्दुपति शुभ नाम ।
जिनकी सेवा में लह्यो दास सकल सुखधाम ।।"[3]

---

1. छन्दार्णव, 166/7. पृ०4
2. छन्दार्णव पिंगल, पृ० 4.
3. काव्य निर्णय, पृ० 2.

इससे पता चलता है कि इनके आश्रयदाता हिन्दूपति काव्यनिर्णय की रचना के समय तक स्वयं राजा न थे अपितु केवल अरवरपति के सहोदर थे । दास की अधिकांश रचना इन्हीं आश्रयदाता को प्रसन्न करने के लिए हुई थी ।

"श्री हिन्दुपति रीझि हित समुझि ग्रंथ प्राचीन ।
दास कियो शृंगार को निरनय सुनो प्रवीन ।।"[1]

नामप्रकाश के अंत में भिखारीदास ने अपने आश्रयदाता का नाम देते हुए बताया है कि वे महाराजा छत्रधारी सिंह के आत्मज थे ।

"इतिश्री भिखारीदासकृते सोम वंशावतंश श्री 108 महाराज छत्रधारी सिंहात्मज श्री बाबू हिन्दूपति सम्मते अमर तिलके नामप्रकाशे तृतीय-काण्डे अनेकार्थ वर्ग सम्पूर्णम् ।।"[2]

<u>प्रामाणिक जीवन-वृत्त :</u>

भिखारीदास प्रतापगढ़ प्रदेश के अन्तर्गत अरवर इलाके में ट्योंगा ग्राम के निवासी थे । ट्योगा के निवासी अरवर को अरउर कहते हैं ये अरवर ट्योंगा संपूर्ण को कहा जाता है । अरउर अर्थात् सम्पूर्ण ट्योगाखास तथा अन्य छोटे-छोटे पुरवे जैसे बागबाबू, पूरे चकइ, बिदुआ (मालिक अजीत प्रताप) पूरे चकइ बिदुआ (मालिक कामता सिंह) पटखौली, सराय रामसहाय, पूरे शेख अबुल तालिब और पूरे शुकाल सम्मिलित हैं । अरउर का यह प्रदेश किसी न किसी रूप में राजा प्रतापगढ़ के आधीन रहा है । ट्योंगा खास जहाँ भिखारीदास रहते थे, प्रतापगढ़ दुर्ग से लगभग डेढ़ मील पर है और यहाँ के निवासी प्रायः दुर्ग तक आते-जाते हैं ।

ट्योंगा खास में प्रायः कायस्थ ही रहते हैं । कवि के जन्म-मृत्यु का संवत् प्रामाणिक रूप से पता नहीं चलता पर रचना काल के आधार पर उनकी

---

1. शृंगार निर्णय, पृ० 2, 89/3.

2. नामप्रकाश, पृ० 359.

साहित्यिक मृत्यु सं० 1807 ई० है । इसके बाद की उनकी कोई रचना नहीं है ।

वंश परिचय :

उनके छन्दार्णव पिंगल में ठीक दिया है । भिखारीदास के एक पुत्र अवधेश लाल नाम का था और अवधेश लाल के एक पुत्र गौरीशंकर थे । गौरीशंकर संतान हीन ही मर गये । इस प्रकार भिखारीदास जी का वंश तो बहुत पहले समाप्त हो गया उनके भाई चयन लाल का वंश आज भी अविच्छिन्न रूप से चला आ रहा है ।

आश्रयदाता :

भिखारीदास जी का जो कुछ भी जीवन वृत्त उपलब्ध होता है, उससे पता चलता है कि वे अध्ययनशील प्रकृति के व्यक्ति थे उन्होंने प्राचीन ग्रंथों का तथा प्रसिद्ध भाषा कवियों द्वारा प्रणीत ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया था । उनके व्यापक अध्ययन तथा कवित्व शक्ति ने तत्कालीन प्रतापगढ़ अधिपति श्री पृथ्वीपति सिंह के ज्ञानी एवं काव्य कला प्रेमी भाई हिन्दूपति सिंह का ध्यान आकृष्ट किया और उन्होंने संवत् 1791 ई० के पश्चात् भिखारीदास को अपने यहाँ बुला लिया । दास जी संवत् 1807 ई० तक हिन्दू पति के आश्रय में रहे ।

दास के ग्रंथों में अरबी के शब्दों का बाहुल्य मिलता है, परन्तु इन पर ब्रजभाषा की स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है ।

(1) शामिल – ऐसी सामिल रीति मै नेत्र कहै क्यों कोइ ।।"[1]

(2) कबूल – जामग सिधोर नन्द नन्द ब्रज स्वामी
दास जिनकी गुलामी कबूलिगो ।।"[2]

(3) शायर – पंडित पंडित सा सुख मंडित सायर सायर के मन माने"[3]

---

1. काव्य निर्णय, पृ० 32.

2. वही, पृ० 35.

3. वही, पृ० 81.

(4) जाहिर – धीर न रहत जस जाहिर जहान है ।[1]

(5) जिक्र – स्क्रिनी औ मृगिनी की ता ठिग जिक्रि कहा ।[2]

कमाल – काव्यनिर्णय, पृ० 127,

आशिक– शृ०नि०, पृ० 3;90/10.

मुजरा – शृ०नि० पृ० 3, 90/11.

लायक – शृ०नि०, पृ० 3.

इशारा – शृ०नि०, पृ० 7, 93/23.

खवास – शृ०नि०, पृ० 9, 94/30.

अरबी में खवास नौकरानी के अर्थ में प्रयुक्त होता है । यहाँ दास ने मूल स्त्रीलिंग का हिन्दी भाषा के अनुसार पुनः स्त्रीलिंग बनाया है ।

कसूर – रसा०, पृ० 91.

फारसी :

दास ने फारसी शब्दों का भी अधिक प्रयोग किया है जिसको आवश्यकतानुसार उन्होंने कुछ परिवर्तन भी कर लिये हैं ।

फौज – का०नि०, पृ० 106.

नजदीक – वही, पृ० 109.

फरियाद – वही, पृ० 176.

जुदा – वही, पृ० 185.

अदलखमा – वही, पृ० 115.

फारसी के कुछ शब्दों को दास ने विकृत रूप में प्रयोग किया है, जैसे – उपर्युक्त उदाहरण में नजदीक के लिए नजीक और फरियाद के लिए फिरादी आदि ।

---

1. का०नि०, पृ० 96.

2. वही, पृ० 121.

घनानंद

घनानंद अथवा घन आनंद प्रसिद्ध सुजान प्रेमी कृष्ण भक्त हैं। धनानंद का जन्म कायस्थ वंश में सं० 1746 में हुआ था। ये दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह रंगीले (शासनकाल सं० 1776 से सं० 1805) के मीरमुंशी थे। कुछ शाही कृपापात्र और कुछ दरबार की नर्तकी सुजान के प्रेमी होने के कारण ये दरबारियों की आँखों पर चढ़ गये। वे इन्हें नीचा दिखाने की फ़िक्र में रहने लगे। एक दिन उन्हें एक अच्छी उक्ति सूझ गई। उन्होंने घनानन्द की अनुपस्थिति में बादशाह से इनके संगीतपटुता की बड़ी तारीफ की। उनकी प्रेरणा से मुहम्मद शाह ने इनसे गाना सुनाने का अनुरोध किया। घनानन्द ने दरबार के अदब को ध्यान में रखते हुए स्पष्टतया इनकार तो नहीं किया। किन्तु कुछ बहाना करके अपनी असमर्थता प्रकट की। विद्वेषी दरबारियों ने दाव खाली जाते देखकर दूसरा पांसा फेका। उन्होंने बादशाह से कहा कि आप की आज्ञा ये टाल सकते हैं किन्तु सुजान का अनुरोध नहीं टाल सकेंगे। यदि आपको इनके स्वर माधुरी का रस लेना है तो उसीसे कहलाइये। निदान सुजान बुलवाई गई उसके कहने पर घनानन्द ने इतनी तन्मयता से गाया कि सभी आनन्द विभोर हो गये। एक बेअदबी इस बार भी अनजाने ही उनसे हो गई। गाते समय उनका मुंह सुजान की ओर था, पीठ बादशाह की ओर। इस अशिष्ट व्यवहार से मुहम्मद शाह रुष्ट हो गये। घनानन्द को नगर से निकल जाने का हुक्म हुआ दिल्ली छोड़ते समय उन्होंने सुजान के साथ चलने को कहा किन्तु वह वारविलासिनी दुर्दिन में इनका साथ देने को राजी न हुई। उसके इस अप्रत्याशित व्यवहार से घनानन्द का अन्तःस्थ सत्व ज्योतित हो उठा। ये सीधे वृंदावन गये। वहाँ इन्होंने निम्बार्क संप्रदाय के महात्मा वृंदावन देव से दीक्षा ले ली। इनका साम्प्रदायिक नाम बहुगुनी रखा गया।

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद सं० 1817 में अहमदशाह अब्दाली का दिल्ली पर आक्रमण हुआ। मुहम्मदशाह के कुछ दरबारियों को निष्कासन के बाद भी

घनानन्द का अस्तित्व खटक रहा था । कहते हैं उन्हीं की प्रेरणा से मथुरा पहुंचने पर अब्दाली के सैनिकों ने घनानन्द को ढूढ़ निकाला और इनसे 'जर' माँगा । इस अकिंचन व्रजभूमि सेवी ने 'जर' के बदले उनके ऊपर तीन मुट्ठी ब्रज रज फेंक दी । इस अपराध में इनके हाथ कलम कर लिये गये । यही घटना इनके प्राणान्त का कारण बनी । घनानन्द जी के अन्तिम शब्द थे :-

बहुत दिनान की अवधि आसपास परे
खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को ।
कहि-कहि आवन छबीले मन भावन को
गहि गहि राखत ही दै दै सनमान को ।।
झूठी बतियानि के पत्यानि तैं उदास ह्वै कैं,
अब ना घिरत घन आनँद निदान को ।
अधर धेर हैं आनि करि कै प्रयान प्रान,
चाहत चलन ये सँदेशा लै सुजान को ।।

घनानन्द जी का सारा भक्त जीवन कृष्ण लीला गान में बीता । उनकी प्रेमानुभूति में विरह का स्वर प्रधान था । अनुरक्त जीवन की प्रेयसी सुजान विरक्त जीवन में उनकी आराध्या बन कर कृष्ण से अभिन्न हो गई । उसे लक्ष्य कर इनकी मर्म भेदी 'प्रेम की पीर' जिस सशक्त भाषा में अभिव्यक्त हुई है, वह व्रजभाषा काव्य की एक अमूल्य निधि है ।

घनानन्द जी की निम्नांकित कृतियां प्राप्त हुई हैं - सुजान सागर, विरहलीला, रस केलि वल्ली और कृपा कंद ।

आलम और शेख

इनका कविता काल साधारणतया सन् 1750 से सन् 1770 तक माना जाता है । यह हस्तलिखित प्रति जिसके अनुसार यह पुस्तक छपी है, सन् 1750 की लिखी गई है । इससे यह स्पष्ट है कि इसमें वे ही छन्द संग्रहीत हैं, जो उस समय तक बन चुके थे । यही कारण है कि इसमें आलम और शेख के कुछ अधिक कवित्त जो इस संग्रह के बाद रचे गये होंगे, नहीं मिलते, उदाहरणवत् आलम के ये मशहूर छंद इसमें नहीं हैं – जा थल कीन्हे बिहार - - - - ।

जीवन-वृत्त – कहा जाता है कि आलम कवि जाति के ब्राह्मण थे और सेख रंगरेजिन के प्रेम में फंस कर मुसलमान हो गये थे । सच्चे साहित्य मर्मज्ञ का मत है कि सच्चे कवियों का कोई धर्म नहीं वे तो धर्म के दिखाऊ बन्धनों को तोड़ कर सच्चे प्राकृतिक सौन्दर्यमय प्रेम पथ के पथिक होते हैं । सभी देशों और सभी कालों में ऐसे कवि होते आहे हैं, आलम भी वैसे थे ।

सेख केवल रंगरेजिन ही न थी वरन् ऐसा जान पड़ता है कि वह सच्चे प्रेम रंग में स्वयं भी रंगी हुई थी । बड़ी प्रतिभाशाली और हाजिर जवाब थी । शेख से उत्पन्न आलम का एक पुत्र भी था जिसका नाम जहान था ।

कहते हैं एक बार आलम के आश्रयदाता शहजादा मुअज्जम (औरंगजेब के पुत्र) ने मजाक में सेख से पूछा कि क्या आलम की बीबी आप ही हैं ? सेख ने हंस कर तुरंत जवाब दिया था हा हजूर जहान की मां मैं ही हूं । ऐसी प्रत्युत्पन्न मतिवाली और ऐसी प्रतिभावाली स्त्री पर रीझ कर आलम ने कुछ बुरा नहीं किया था ।

आलम ने रेखता नाम से कुछ ऐसे कवित्त लिखे हैं, जिनसे जान पड़ता है कि आलम जी फारसी भाषा और उसके साहित्य से भी अच्छी जानकारी रखते थे और खड़ीबोली में भी कविता करने के पक्षपाती थे ।

सोमनाथ

ये श्री छिरौरा (मथुरा के निकट एक गाँव) वंश के माथुर चौबे थे। इनके कुल में पठन-पाठन और विद्याभ्यास की परंपरा बड़ी पुरानी थी। इनके पूर्वज नरोत्तम मिश्र जयपुर के रामसिंह के मंत्री गुरु थे। उनके पुत्र – (1) देवकी नन्दन व (2) श्रीकान्त मिश्र थे। देवकीनन्दन मिश्र अपने समय के विख्यात कवि तथा विद्वान् थे। श्रीकान्त मिश्र भी कवि और लोक सिद्ध पंडित थे। देवकीनन्दन मिश्र के चार पुत्र थे – (1) नीलकंठ, (2) मोहन, (3) महामणि, और (4) राजाराम। सबके सब योग्य पंडित और रसिक कवि थे। नीलकंठ मिश्रकवि सोमनाथ के पिता तो हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे ही साथ में सुप्रसिद्ध अति प्रतिष्ठित ज्योतिषी भी थे। नीलकंठ के लड़के आनन्दनिधि, गंगाधर और सोमनाथ थे। सोमनाथ अपने समय के सर्वांग कवि पंडित आचार्य थे। परिवार एवं परंपरा से संपुष्ट एवं संरक्षित विद्वत्ता की परंपरा सोमनाथ के भीतर काव्य एवम् पांडित्य का बहुत प्रभावशाली संस्कार भर गया। उसके साथ ही जिस राजदरबार में कवि थे, वह गुणों का विद्वानों का और कलाविदों का स्वागत करने वाला तथा तेजस्वी कलाग्राही परिवार रहा है। वास्तव में जिस क्षेत्र में सोमनाथ थे, वह वर्तमान राजस्थान का अंग है, तो भी उसकी सारी संस्कृति और साहित्य ब्रज संस्कृति और साहित्य से प्रभावित रही है। और कलानिधि जैसा विख्यात कवि और साहित्यकार उनका सहकर्मी वहाँ था।

कविवर सोमनाथ का समय मुगल साम्राज्य के समय में जाटों के उदय का समय है। जाटों ने मुगल साम्राज्य के समय ही विभिन्न स्थानों पर अपने राज्य स्थापित किये। मुगल काल में सर्वप्रथम विद्रोह नन्दराम जाट ने किया जो सन् 1669 में दब गया था फिर गोखला जाट ने विद्रोह किया उसका भी वध कर दिया गया। इसके बाद राजाराम जाट ने सन् 1685 ई० में विद्रोह किया जब कि औरंगजेब दक्षिण में था। औरंगजेब के पौत्र बेदारबख्त ने उसके विरुद्ध कठोर

कदम उठाये । उसकी मृत्यु सन् 1688 ई० में हुई । उसके बाद मज्जसिंह ने जाटों का नेतृत्व किया, इसके बाद सन् 1690 में औरंगजेब के आदेश पर राजाराम का पुत्र जोरावर मारा गया । तदनन्तर राजाराम का भतीजा चूड़ामन इसका सरदार बना औरंगजेब की मृत्यु के बाद इसका प्रभाव बढ़ा । औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्र मुअज्जम (सम्राट) ने उससे सुलह किया और दरबार का सरदार बनाया । चूड़ामन सचमुच राजा बन बैठा । जाट साम्राज्य का सही संस्थापक चूड़ामन सन् 1721 ई० में मर गया । उसका भतीजा बदनसिंह सन् 1721 ई० में गद्‌दी पर बैठा । उसने 34 वर्ष तक शासन किया । यह कुशल राजनीतिज्ञ और साहित्य प्रेमी भी था यह बदन और बदनेश नाम से रचना करता था । यह कलाकारों व साहित्यकारों का संरक्षक था । कविवर सोमनाथ इसीके समय में जाटों के दानाध्यक्ष हुए । बदन सिंह के ज्येष्ठ पुत्र सूरजमल सन् 1755 ई० में गद्‌दी पर बैठा । इसने 1763 ई० तक राज्य किया । यह भी कलाप्रेमी, साहित्य संरक्षक था । इसका पुत्र जवाहरसिंह था जो सन् 1763 से सन् 1788 ई० तक शासक रहा । सन् 1788 ई० में इसका वध हो गया । इन तीनों राजाओं (बदन सिंह, सूरजमल, जवाहर-सिंह) के दरबार में सोमनाथ थे किन्तु मूलतः उनका सम्बन्ध प्रताप सिंह से था उन्होंने तीनों के लिए साहित्य रचना की थी। प्रोफेसर कानूनगो की मान्यता है कि प्रतापसिंह बहादुर सिंह का छोटा पुत्र था । फ्रैन्सू का कहना है कि यह मध्यवती पुत्र थे इनका स्थान दूसरा था । कविवर सोमनाथ भरतपुर के वैर के शासक श्री प्रताप सिंह के आश्रित परम पंडित कवि थे । यह तो हुई उन शासकों की बात जिनके दरबार में कविवर सोमनाथ रहे । मध्यकाल के यशस्वी शास्त्र कवि आचार्य सोमनाथ जाट नरेशों की काव्य प्रेम की परंपरा के प्रतीक है और इनका साहित्य हिन्दी की महत्वपूर्ण निधि है ।

वर्तमान भरतपुर राज्य की स्थापना बदन सिंह द्‌वारा सन 1718 ई० में हुई, इनके दो लड़के थे, सूरज मल जाट और प्रताप सिंह । सूरजमल सिंह को डीघ और प्रताप सिंह को वैर का शासन बदन सिंह ने सौंपा था । बदन सिंह के मृत्यु के पश्चात् सुजान सिंह (सूरजमल) गद्‌दी पर बैठे । प्रताप सिंह

सूरजमल के छोटे भाई थे । वे साहित्यकारों विद्वानों कलाकारों आदि को आश्रय देने वाले उदारमन महाराजा थे । उन्होंने सोमनाथ जी को अपने राजदरबार का प्रमुख कवि बनाया । बदन सिंह व सूरजमल सिंह का भी विश्वास स्नेह आश्रय सोमनाथ जी को प्राप्त था । वास्तव में बदन सिंह के समय से ही इस परिवार के यह आश्रित कवि थे । प्रताप सिंह के पुत्र बहादुर सिंह का आश्रय भी कवि को प्राप्त हुआ था ।

सोमनाथ का कविता काल संवत् 1756 ई० से 1817 ई० तक माना जा सकता है । इनके ग्रंथों को देखने से यह भी पता चलता है कि ये नवाब आजम खां (शाहआलम) के दरबार में भी कुछ दिन रहे और वहां नवाबोल्लास नामक ग्रंथ की इन्होंने रचना की ।

---

1. सोमनाथ ग्रंथावली (सं० सुधाकर पाण्डेय), पृ० 46-50.

नागरीदास

पूर्वज :

जोधपुर के राठौर राजा उदय सिंह मोटा राजा के नाम से प्रख्यात थे। इनके 12 पुत्र थे। सूरसिंह ज्येष्ठ पुत्र थे और कृष्ण सिंह दूसरे। दोनों सहोदर भाई थे। मोटा राजा उदय सिंह ने अपने द्वितीय पुत्र कृष्ण सिंह को आसोप नामक गाँव 1651 वि० में दे दिया था। परन्तु अग्रज शूर सिंह ने राजा होने पर आसोप जब्त कर लिया और दूधोड नामक एक गाँव इन्हें दे दिया पर शूर सिंह के मंत्री गोइनदास भाटी से अनबन होने के कारण इन्होंने दूधोड़ स्वयं छोड़ दिया। 1654 वि० में हिंडोल का परगना इन्हें दिल्लीश्वर की ओर से मिला। यही किसनगढ़ राज्य का स्थापना काल है। सं० 1668 में माघ शुक्ल 5 को कृष्ण सिंह ने किसनगढ़ को अपने नाम पर बसाया और यही नगर उक्त राज्य की राजधानी हुआ। कृष्ण सिंह जी अकबर के दरबारी नरवरगढ़ के कछवाहा राजा आसकरन सिंह के भानजे थे और अपने मामा के ही समान वल्लभ-कुल के अनुयायी थे। कृष्ण सिंह के चार पुत्र हुए – (1) सहसमल्ल, (2) जगमल्ल, (3) भारमल्ल, (4) हरि सिंह – इसमें केवल तृतीय पुत्र भार मल्ल का वंश चला।

भारमल्ल के पुत्र हुए रूप सिंह इन्हीं रूपसिंह ने 1705 वि० में रूपनगर की स्थापना की और राजधानी रूपनगर हो गई। रूप सिंह जी कवि भी थे यह नागरी दास जी के प्रपितामह थे। मुगल बादशाह शाहजहाँ के आदेश पर रूपसिंह बलख बुखारा फतह करने के लिये गये थे। रूप सिंह के पुत्र महाराजा मानसिंह हुए इनके समय में औरंगजेब की मन्दिर एवं देवमूर्ति विध्वंस नीति से त्रस्त होकर गोवर्द्धन स्थित श्रीनाथ जी की मूर्ति मेवाड़ गई महाराजा मानसिंह ने अपने राज्य में 40 दिन तक श्रीनाथ जी का आतिथ्य किया था। श्रीनाथजी का यह आतिथ्य किसनगढ़ से आधा कोस दक्षिण में स्थित पीताम्बर की गार (पर्वत की घाटी) में हुआ था।

मानसिंह जी के पुत्र राजसिंह जी हुए जो नागरीदास जी के पिता थे। मानसिंह जी की कछवाइ रानी के गर्भ से चार पुत्र उत्पन्न हुए — (1) सुखसिंह, (2) फतेह सिंह, (3) सावन्त सिंह और (4) बहादुर सिंह और रानीबंकावती से बीर सिंह उत्पन्न हुए। बंकावती जी कवियित्री थीं। इन्होंने श्रीमद्भागवत का ब्रजभाषा में पद्यानुवाद किया था। सुखसिंह योगी हो गये। फतेसिंह पिता के जीवनकाल में ही युद्ध में खेत रहे थे। अतः सं० 1804 में इनके देहावसान के अनन्तर सावन्त सिंह ही रूपनगर के गद्दी के अधिकारी हुए। यही सावन्तसिंह हिन्दी साहित्य में नागरीदास के नाम से प्रख्यात हैं। महाराज राजसिंह को दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह ने संवत् 1777 में सतहजारी मनसब प्रदान किया था। राजसिंह भी अच्छे कवि थे। इस प्रकार नागरीदास जी को साहित्य प्रेम, काव्य रचने की शक्ति एवं कृष्णभक्ति परंपरा से ही प्राप्त हुआ था।

नागरीदास जी का जन्म संवत् 1756 में पौष बदी द्वादशी को हुआ था, नागरीदास जी का विवाह 21 वर्ष की वय में मानगढ़ के राजा राजावात (कछवाहों की एक शाखा विशेष) यशवंत सिंह जी की कन्या से सं० 1777 को ज्येष्ठ सुदी 9 को हुआ। सावन्त सिंह जी (नागरीदास जी) संस्कृत और फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। यह चित्रकला एवं संगीत में भी निष्णात थे। यह अत्यंत साहसी एवं शस्त्र विद्या में निपुण थे।

संवत् 1804 में वैसाख सुदी 5 को नागरीदास जी रूपनगर की गद्दी पर बैठे इनके छोटे भाई बहादुर सिंह ने जब नागरीदास जी दिल्ली गये तो रूपनगर के राज्य पर अधिकार कर लिया। राज्य की पुनः प्राप्ति के लिए इन्हें कुमाऊँ की मुहिम में शामिल होना पड़ा। मराठों की सहायता से इन्हें रूपनगर का आधा राज्य सं० 1813 में मिला। इस कौटुंबिक युद्ध का संचालन इनकी ओर से इनके पुत्र सरदार सिंह जी ने किया था। यह वृन्दावन में ही रह गये थे। सं० 1814 में अश्विनी शुक्ल 10 विजयादशमी को अपने पुत्र सरदार सिंह को कृष्णगढ़ का युवराज बनाया और दूसरे दिन एकादशी को वृन्दावन के लिए प्रस्थान कर दिया।

अहमद शाह दुर्रानी के हमले के समय नागरीदास के कुटुम्ब वालों ने इन्हें रूपनगर बुला लिया था । छः माह बाद यह पुनः वापस आ गये थे और यहीं सं० 1821 में भादो सुदी 3 को इनका देहावसान हुआ । नागरीदास जी के दरबार में प्रसिद्ध कवि वृन्द हरिचरण दास जी हीरालाल मुंशी कन्हीराम, कल्लाह पन्ना लाल जी, वैष्णव विजय चन्द जी दाहिवां विजयराम जी आदि कवि थे ।

1. नागरीदास : सं० डा० किशोरी लाल गुप्त

बोधा

बोधा कवि खेत सिंह के दरबारी थे । विरहवारीश में इन्हीं खेत सिंह की प्रशस्ति मिलती है ।

"खेत सिंह नरनाह को - - - -" (इश्कनामा, पृ0 1/1 दोहा)

कवि के काव्य से पता चलता है कि इनका नाम बुद्धिसैन या बुद्धिसेन था । कुछ खोट हो जाने से राजा अप्रसन्न थे । एक वर्ष तक उनकी सुमुखता की प्रतीक्षा करनी पड़ी । इसी वियोग के समय विरह सिन्धु विरहवारीश बनाया । वियोग का कारण नरनाह की इतराजी थी। यह भी पता चलता है कि अनेक दरबारों में टक्कर (ठोकर) खा लेने के बाद खेत सिंह के दरबार में बोधा गये थे ।

"बढ़ि दाता बड़ कुल सबै देखे नृपति अनेक
त्याग पाय त्यागे तिन्है चित में चुभे न एक ।।"23/17.

उन्होंने किस-किस दरबार का चक्कर काटा था, इसका भी वर्णन 22/18 में कर दिया है ।

"देवगढ़ चाँदागढ़ा मंडला उज्जैन रीवाँ
साम्हर सिरोज अजमेर लौं निहारो जोइ ।
पटना कुमाऊ पैंथि कुर्रा व जहानाबाद
साकरी गली लौं बारे भूप देखि आयो सोइ ।
बोधा कवि प्राग और बनारस सुहागपुर खुरदा
निहारि फिरि मुरक्यो उदास होइ ।
बड़े-बड़े दाता ते अड़े न चित्त माहि
कहूँ ठाकुर प्रवीन खेत सिंह से लखो न कोइ ।

कवि की शिक्षा के बारे में कुछ खास पता नहीं लगता । वस्तुतः ये दरबारी कवि थे और इस कारण इनकी भाषा में राज दरबार में प्रयुक्त होने वाले आम अरबी-फारसी सभी शब्द आये हैं । ये रीतिमुक्त रचनाकार थे, ये पन्ना (बुन्देलखंड) के थे और खेत सिंह के आश्रित थे ।

क्षेत्र सिंह (खेत सिंह) पन्ना नरेश महाराजा छत्रशाल के पंती या पनाती (प्रपौत्र) थे और अमान सिंह के छोटे भाई थे ।

छत्रशाल

हृदयशाह — जगतरामजी

सभासिंह

हिन्दूपट — अमानसिंह — खेतसिंह

इश्कनामा

शब्द प्रतिपृ× पृष्ठ

कुल शब्द = 196 (200) × 19

विरहवारिश — 190=×228.

पद्माकर

पद्माकर रीतिकाल के लोक प्रसिद्ध कवि हैं । ये तैलंग ब्राह्मण थे । इनका जन्म सं० 1810 में सागर (मध्य प्रदेश) में हुआ था । इनके पिता पं० मोहन लाल भट्ट भी काव्य रचना करते थे । उनसे इनकी काव्य प्रतिभा के विकास में प्रेरणा मिली । अधिकांश रीतिकालीन कवियों की भाँति इन्हें भी अपना कवि जीवन अनेक आश्रयदाताओं के यहाँ घूम-घूम कर बिताना पड़ा । उनमें प्रमुख थे — महाराज रघुनाथ राव (नागपुर), महाराज प्रताप सिंह तथा जगत सिंह (जयपुर), नोने अर्जुन सिंह गोसाईं, अनूपगिरि (हिम्मत बहादुर, बाँदा) और दौलत राव सिंधिया (ग्वालियर), इनके निम्नांकित छंद से यह विदित होता है कि भगवन्त नामक किसी राजा के यहाँ भी ये कुछ दिन रहे थे ।

दूनी तेज दाहते है तिगुनी त्रिसूल हू तैं
    चौगुनी चलाके चक्र पानि चक्र चाली तैं ।
कहै पदुमाकर महीप भगिवंत सिंह
    ऐसी समसेर सिर सत्रुन पै घाली है ।
पंच गुनी पवि ते पचीस गुनी पाहन तैं
    प्रगट पचास गुनी प्रले की प्रनाली है ।
सौ गुनी है सर्प ते सहस्र गुनी सर्पिनी तैं
    लाख गुनी लूक ते करोर गुना काली है ।।

पद्माकर के काव्य संग्रह में उपर्युक्त छन्द की तीसरी पंक्ति में भगिवंत सिंह के स्थान पर रघुनाथ राव पाठ मिलता है । कहा जाता है यह छंद इन्होंने नागपुर के राजा रघुनाथ राव की युद्ध वीरता की प्रशंसा में पढ़ा था । 18 वीं शती के प्रसिद्ध युद्ध वीर असोथर के राजा भगवंत सिंह का सं० 1795 में ही देहान्त हो चुका था । पद्माकर का आविर्भाव उसके 17 वर्ष बाद हुआ । अन्य किसी भगवंत सिंह के आश्रय में इनका रहना प्रमाणित नहीं होता । ऐसी दशा में रघुनाथ राव का पाठ संगत प्रतीत होता है । अस्सी वर्ष की आयु भोगकर पद्माकर ने कानपुर में गंगातट पर सं० 1890 में शरीर छोड़ा ।

इनके द्वारा विरचित नौ ग्रंथ मिलते हैं । हिम्मत बहादुर विरुदावली, पद्माभरण, जगद्विनोद, प्रबोध पचासा, गंगा लहरी, राम रसायन, आलीजाह प्रकाश, हितोपदेश (गद्यपद्यात्मक अनुवाद) और ईश्वर पचीसी ।

ठाकुर

ये बुंदेलखंडी कायस्थ थे । इनके पिता का नाम गुलाब राय था । इनका जन्म सं० 1823 में ओरछा में हुआ था और सं० 1880 में ये परलोक वासी हुए । बुंदेलखंड के तत्कालीन राजाओं में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी । जैतपुर के राजा केसरीसिंह, बिजावर नरेश और बाँदा के हिम्मत बहादुर गोसाइं इनके प्रमुख आश्रयदाता थे । राज्याश्रय में जीवन यापन करते हुए भी ठाकुर कवि ने अपने आत्मसम्मान में कभी बट्टा नहीं लगने दिया । हिम्मत बहादुर के समक्ष पढ़ा गया निम्नांकित छंद उनकी स्वभावगत निर्भीकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

सेवक सिपाही हम उन रजपूतन के
दान किरपान कबहूँ न मन मुरके ।
नीत देन वारे हैं मही में महिपालन के
होकर त्रिसुद्ध है कहैया बात फुरके ।।
ठाकुर कहत हम बैरी बेवकूफन के
जालिम दमाद हैं अदेनिया ससुर के
चोजन के चोज रसभौजिनि के पात साह
ठाकुर कहावत पै चाकर चतुर के ।।

इनके पुत्र दरियाव सिंह चातुर और पौत्र शंकर प्रसाद भी अच्छे कवि थे ।

ठाकुर कवि की कोई स्वतंत्र रूप सेलिखीगई संपूर्ण रचना नहीं मिलती । लाला भगवानदीन जी ने इनकी कविताओं का एक संग्रह ठाकुर ठसक नाम से निकाला था । किंतु उसमें अन्य दो ठाकुर कवियों की भी रचनाएं मिल गई थी इनके फुटकर छंद की बड़ी संख्या यत्र-तत्र काव्य संग्राहों में बिखरे हुए मिलते हैं ।

ग्वाल कवि

ग्वाल जी का जन्म सं० 1848 की मार्गशीर्ष शुक्ल द्वितीया को माना गया है। ये जाति के ब्रह्म भट्ट (बंदीजन) थे। उन्होंने अपने रसिकानन्द ग्रंथ में अपनी वंश परंपरा का आरंभ माथुर राव से किया है। माथुर राव जगन्नाथ राव मुकुन्द राव मुरलीधर राव सेवा राम ग्वाल। जब ग्वाल जी की आयु केवल 8 वर्ष की थी तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। अतः उनके पालन-पोषण और शिक्षण आदि का भार उनकी निराश्रित माता पर आ पड़ा।

इनके प्रथम गुरु दयानिधि वृंदावनवासी थे। ग्वाल जी ने बाद में काशी में शिक्षा ग्रहण की। तदनन्तर मथुरा में आकर स्वामी दयानंद के गुरु संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित दंडी स्वामी विरजानंद जी से काव्य प्रकाश पढ़ा। इस प्रकार काशी तथा मथुरा में काव्यशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन के उपरान्त वे अपने कुल धर्मानुसार काव्य रचना में प्रवृत्त हुए।

काव्य गुरु :

बचपन में वृंदावन निवासी गो० दयानिधि उनके काव्य गुरु हुए थे किंतु उनके व्यवहार से असंतुष्ट होने के कारण ग्वाल जी ने उनको अपना गुरु नहीं माना। उन दिनों बरेली निवासी कविवर खुशहाल राय एक प्रसिद्ध काव्य शिक्षक थे। ग्वाल जी ने उनको अपना काव्य गुरु स्वीकार किया और उनसे भाषा काव्य-रचना की विधिपूर्वक शिक्षा प्राप्त की। अपनी बाल्यावस्था के विपरीत ग्वाल जी की विद्या बुद्धि और कवित्व शक्ति की अब दिन रात उन्नति होने लगी। काव्य-शास्त्र के पंडित होने के कारण उनकी कविता निर्दोष और उच्च कोटि की होती थी।

काव्यशास्त्र और काव्य रचना में पूरी तरह पारंगत हो जाने पर ग्वाल जी को जीविकोपार्जन की चिंता हुई। वे इसके निमित्त देशाटन करते हुए पंजाब की नाभा रियासत के अधिपति महाराज यशवंत सिंह की सेवा में उपस्थित हुए।

नामा में रहने के बाद ग्वाल जी महाराजा रणजीत सिंह के आश्रय में लाहौर चले गये थे । वहां पर रणजीत सिंह के मृत्यु के पश्चात् शेर सिंह शासक बने । इनके बाद इनके मंत्री राजा ध्यान सिंह के पुत्र हीरा सिंह गद्दी पर बैठे । हीरा सिंह के मारे जाने पर सिक्ख राज्य में योग्य शासक का अभाव हो गया, जिसके फलस्वरूप फिर घरेलू फूट आंतरिक विद्रोह और मारकाट का बाजार गर्म हो उठा । इस वजह से ग्वाल जी का मन फिर लाहौर में नहीं लगा । सं० 1902 के बाद उन्होंने लाहौर छोड़ दिया । कुछ समय तक ब्रज में अपने घर पर रहे और बाद में पंजाब की पहाड़ी रियासतों का दौरा करने चले गये ।

पहाड़ी रियासतों में सुकेत मंडी अधिक पसन्द आई । मंडी नेश ने उनकी बड़ी आवभगत की और उन्हें स्थायी रूप से अपने यहां रख लिया । ग्वाल जी अपने बाल बच्चों के साथ सुखपूर्वक मंडी में रहने लगे । बाद में मथुरा में यमुना तट पर हवेली बना कर रईसों की तरह ठाट बाट से रहने लगे । कभी-कभी देशाटन करने के अतिरिक्त वे प्रायः मथुरा में ही रहा करते थे ।

एक बार वे टोंक राज्य में गये । वहां के नवाब की इच्छानुसार उन्होंने कृष्णाष्टक बनाकर सुनाया था । उस रचना में आठो कवित्तों में अन्तिम चरण एक सा है । उसमें उर्दू फारसी शब्दों का अधिकता से प्रयोग हुआ है । उनमें से एक कवित्त उदाहरण के लिए प्रस्तुत है :-

जर्रे की जुलूसों में लोटता हमेसा रहै
सीमा-जर-गौहर का आप बख्सेंद है
जिसके ख्याल में खलक गिरफ्तार हुआ
हुवा गिरफ्तार वही मा के दस्तबंद है
ग्वाल कवि चलाया आफ्ताब उसे गोपिया
सिखाती रफ्तार हर चंद है ।
चार सर वाले से करिंदे हैं जिसी के
वही बंदे पर मेहरबान नजर बुलंद है ।

चन्द्रशेखर बाजपेयी

सन् 1903 की खोज रिपोर्ट के अनुसार चन्द्रशेखर बाजपेयी के चार ग्रंथों का पता चलता है - (1) हम्मीरहठ, हरिभक्ति विलास, (3) विवेक विलास, (4) रसिक विनोद ।

विवेक विलास में आलासिंह की वंशावली का वर्णन है । पटियाला नरेश नरेन्द्र सिंह के आश्रित थे । खोज में चारों ग्रंथों की जो पुष्पिकाएँ दी गई हैं, उनमें नरेन्द्र सिंह का उल्लेख है । हम्मीर हठ के उपक्रम के अन्तर्गत श्री नरेन्द्र सिंह की प्रशस्ति की गई है । ग्रंथों के उक्त विवरण से यह सिद्ध है कि इन्होंने अनेक प्रकार की रचनाएँ की हैं । शृंगार भक्ति और वीर तीनों रसों में इनकी समान गति जान पड़ती है । हम्मीरहठ का निर्माण काल यह है -

कर नभ रस अरु आतमा संवत फागुन मास ।
कृष्ण पच्छ तिथि चौथ रवि जेहि दिन ग्रंथ प्रकास ।।

रसिक विनोद :

संवत राम आकास ग्रह पुनि आतमो विचार ।
माघ सुकुल रवि सप्तमी भयो ग्रंथ अवतार ।।

रसिक विनोद नवरस वर्णन का ग्रंथ है - इसके सम्बन्ध में यह दोहा उसकी रूपरेखा बतलाता है।

महाराज के हेत यह रसिक विनोद सुग्रंथ ।
नवरस मे सेखर कियो निरखि भरत को पंथ ।।

इसके अतिरिक्त इनका नख शिख इन्हें रीतिबद्ध कवियों की श्रेणी में ही स्थापित करता है किंतु इनकी ख्याति हम्मीर हठ के कारण अधिक हुई । इसीलिए ये शुक्ल जी के इतिहास में रीतिकाल के अन्य कवियों में रखे गये हैं ।

हम्मीरहठ का निर्माण इन्होंने चित्रित हम्मीर काव्य के आधार पर किया -

यह हमीर को राय सो चित्र लिख्यो लखि सार
छंद बंद सेखर कियो निज मति केछ अनुसार ।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हम्मीर सम्बन्धी घटनाओं का एक निश्चित प्रवाह परंपरा में चल पड़ा था । अल्लाउद्दीन और हम्मीर के युद्ध के सम्बन्ध में यद्यपि यह कल्पना पारंपरिक ही है तथापि जोधराय ने जो रूप दिया वह इसमें पूरा का पूरा नहीं दिखाई देता ।

चन्द्रशेखर बाजपेयी के पुत्र गौरी शंकर बाजपेयी से जो वृत रत्नाकर जी को इनके सम्बन्ध में ज्ञात हुआ उसके अनुसार पौष शुक्ल दशमी सं० 1855 में मौजवाँबाद (फतहपुर) में इनका जन्म हुआ था । मौजवाँबाद कान्यकुब्ज (धन्नी के) बाजपेयी का प्रसिद्ध स्थान है । बाजपेयियों के चार वंश हीरा बीसा धन्नी और तारा असनी के बाजपेयी कहलाते हैं । असनी के ही निकट मौजवाँबाद है । यह धन्नी के बाजपेयीयों का स्थान है । इनके पितामणि राम जी अच्छे कवि थे । इतिहास से यह सिद्ध है कि असनी के आसपास कवि मंडल बहुत दिनों से रहता आया है । इस प्रकार कहना चाहिए कि ये कवियों के वंश में उत्पन्न हुए थे इनका वंश हुंडी से अपना जीवन निर्वाह करता था । इनके पूर्वज ईसराम सिक्खों के प्रसिद्ध गुरु श्री गोविन्द सिंह के आश्रित होकर काव्य रचना से अपना निर्वाह करने लगे थे । तभी से इनके वंश में यही जीवन-यापन का साधन हो गया । इनके हिन्दी काव्य के गुरु असनी के करनेस महापात्र थे । 22 वर्ष की वय में ये दरभंगा की ओर गये और सात वर्ष वहाँ रहने के अनन्तर वहाँ से जोधपुर पहुंचे । तत्कालीन नरेश मानसिंह की प्रशंसा में कवि मंडल के बीच इन्होंने निम्नलिखित रचना सुनाई —

द्वादस कला सो मारतंड ये उवैंगे चंड सेसवारी
साँसनि समस्त सत्रु जलि है ।
छाटि जैहैं अचल अवास अमेरु वारो कूट जैहैं
कहलि कलौ सी भूमि हलि है ।
सेखर कहत अलका में कलापात हुव हैं पावक पिनाकी
के त्रिसूल सो निकलि है ।

तू न तान भौहें मान वैसी भूप मान नातो जानि
लै है प्रलय पयोधि फटि चलि है ।।

इनकी रचना से प्रभावित होकर महाराज ने इनकी सौ रुपया मासिक वृत्ति कर दी छह वर्ष के अनन्तर मानसिंह की मृत्यु और तख्तसिंह के शासनारूढ होने पर इनकी वृत्ति आधी हो गई । इसलिए ये रणजीत सिंह के पास लाहौर चले गये । लाहौर से पटियाला पहुँचे और तत्कालीन नरेश कर्मसिंह के दरबार में उपस्थित हुए । इनकी रचना से प्रभावित होकर महाराज ने इनकी पाँच रसद पक्की कर दी । अंत तक वे पटियाला रहे वृंदावन बीच बीच में जाया करते थे । इनका शरीर पात सं० 1932 में हुआ । नीति संबन्धी वृहत ग्रंथ इन्होंने महाराजा कर्मसिंह के आदेशानुसार निर्मित किया । इनके अन्य ग्रन्थ कर्मसिंह के उत्तराधिकारी महाराजा नरेन्द्र सिंह के राज्य में निर्मित हुए ।

रसिक विनोद ग्रंथ में वंश वर्णन के अन्तर्गत इन्होंने लिखा है कि चन्द्रवंश में इन्द्र सरूप साहिब सिंह हुए इन साहिब सिंह के दो पुत्र थे — कर्मसिंह और अजीत सिंह । कर्मसिंह के दो पुत्र हुए — नरेन्द्र सिंह और दीपसिंह ।

विवेक विलास में नृप वंश वर्णन और पूर्व से आरंभ किया गया है कि चन्द्रवंश में आलासिंह हुए जिनके पुत्र शार्दूलसिंह थे । शार्दूलसिंह के अमर सिंह हुए । अमरसिंह के साहिब सिंह । साहिब सिंह के बड़े लड़के कर्मसिंह और छोटे अजीतसिंह थे । कर्मसिंह के बड़े पुत्र नरेन्द्रसिंह व छोटे दीपसिंह हुए ।

पजनेस

पजनेस कवि का जन्म पन्ना में हुआ था । शिव सिंह सरोज ने इनका जन्म सं० 1872 लिखा है । इनका लिखा कोई ग्रंथ प्रकाश में नहीं आया है । भारत जीवन प्रेस काशी से इनके शृंगारी कवित्त सवैया का एक फुटकर संकलन पजनेस प्रकाश प्रकाशित हुआ है । जिससे विदित होता है कि ये रीतिबद्ध मुक्तक परंपरा के अच्छे कवि थे । शिवसिंह सरोज में इनकी नखशिख और मधुर प्रिया नामक दो पुस्तकों का उल्लेख है, किन्तु अभी तक वे उपलब्ध नहीं हुई हैं । इनके काव्य का मूल्यांकन स्फुट पदों के आधार पर ही किया जा सकता है । शृंगारी प्रवृत्ति के कारण नखशिख वर्णन की ओर रुचि होना स्वाभाविक ही है ।

शृंगार रस के लिए इनकी भाव योजना तो परंपरामुक्त ही है, किन्तु भाषा में कुछ नवीनता है । फारसी शब्दों का प्रयोग स्थान-स्थान पर जानबूझ कर किया गया है । शृंगार की कोमल व्यंजना होने पर भी कर्कश कठोर शब्द का प्रयोग इनके काव्य में है । कदाचित ये प्रतिकूल शब्द योजना को निषिद्ध नहीं मानते थे । इतना होने पर भीपद-विन्यास का कौशल इनकी कविता में है, जिसके कारण इनके कवित्त सवैयों को पढ़ते समय लय स्वर के आनन्द में कोई व्याघात नहीं पहुंचता । शब्द चमत्कार पर ध्यान होने के कारण गंभीर भाव-योजना में कहीं-कहीं ठेस लगी है । नख-शिख की दृष्टि से ये अच्छे कलाकार प्रतीत होते हैं ।

नायिका के आनन का वर्णन :

चितवत जाकी ओर चख चकि चौंध कौंधे,
भनि पजनेस मातु किरन खरी सी है ।
छबि प्रतिबिंब छूट्यो छिति छूवै छपाकर ते,
छाजत छबीलो राजै कनक छरी सी है ।
कोनौ डर लुरक गुलाब को प्रसून ग्रास
झुकि झुकि झूमि झूमि झांकित परी सी है

न७ आनन अमल अरबिंद ते अमंद अति

अद्‌भुत अभून आभा उफनि परी सी है ।।

<u>नखशिख वर्णन में उरोज का आलंकारिक</u>
<u>शैली से वर्णन :</u>

संपुट सरोज कैधौ सोभा के सरोवर में,
लसत सिंगार के निशान अधिकारी के ।
कवि पजनेस लोल चित्त वित्त चोरिबे को,
चोर इकठौर नारि ग्रीव कर कारी के ।
मंदिर मनोज के कलित कुंभ कंचन के,
ललित फलित कैधौं श्रीफल बिहारी के ।
उरन उठौना चक्रवाहन के छौंना कैधौं
मदन खिलौना है सलौना प्रानप्यारी के ।।

फारसी शब्दों के प्रयोग द्‌वारा लिखा हुआ निम्नांकित सवैया पजनेस के भाषा ज्ञान का परिचायक है । रस की दृष्टि से इसमें अनेक त्रुटियाँ हो सकती हैं, किन्तु कवि ने अपना फारसी का ज्ञान इसके द्‌वारा पूरी तरह व्यक्त करने की चेष्टा की है ।

पजनेस तसद्‌दुक ता बिसमिल जुल्फे फुरकत न कबूल करे
महबूब चुना मदमस्त सनम अजदस्त अलायल जुल्फ बरे
बजमूर ज काफ शिकाफ रूए सम क्यामत चश्म रु खूँ बरसे
मिनगाँ सुरमा तहरीर दुताँ नुक्ते बिन बे किन ते किन से ।।

ध्वनि

(1) मूल शब्द

- (1) अरबी
- (2) फारसी
- (3) तुर्की
- (4) संयुक्त

(2) परिवर्तन –

(1) साधारण परिवर्तन –

- (1) क़ ख़ ग़ फ़ ज़ श   क ख ग फ ज स
- (2) अल्पोच्चारित ह का परिवर्तन ।

(2) विशेष ध्वनि परिवर्तन —

- (1) आगम
- (2) लोप
- (3) विपर्यय
- (4) मात्रा-भेद
- (5) समीकरण
- (6) विषमीकरण
- (7) घोषीकरण
- (8) अघोषीकरण
- (9) अल्पप्राणीकरण
- (10) महाप्राणीकरण
- (11) अनुनासिकता
- (12) संधीकरण
- (13) एन में हुए परिवर्तन

(1) बहु० बनाने में न् का प्रयोग

(2) बहु० बनाने में अन्य परिवर्तन

(3) अंत इकारान्त की प्रवृत्ति

(4) ए अ — आ ऐ

अ ए — इ अ

अ ऐ — य इ

आ ए — इ य

ल र — पालि की विशेषता

र ल — पैशाची की विशेषता

ब्रजभाषा की विशेषता

ज द

त

त य — अर्ध मागधी की विशेषता

द य — ,,

न र

द र

ब य

बः वै

य ल

ह य — ब्रजभाषा की विशेषता

ह न

ब उ

ब औ

व ब

ब व

ब म

(5) भिन्न वर्तनी —

ऊ	ओ	त	द
ऊ	औ	द	त
ओ	उ	ह	न
ए	इ	आमक	
अः	आ		
अः	इ		
ः	ए		

मूल शब्द

(1) अरबी मूल शब्द

(2) फ़ारसी मूल शब्द

(3) तुर्की मूल शब्द

(4) संयुक्त शब्द

(1) अरबी मूल शब्द

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
अंजीर	अ०पु० एक फल	नागरी	1	24/35
अंबर[1]	अ०पु० बहुमूल्य सुगन्धित पदार्थ, जो मछली के मुँह से द्रवित होता है एवं दवा का काम देता है ।	ग्वाल	1	117/92
अकस[2]	अ०पु० ईर्ष्या, वैर, विरोध	मतिराम	1	377/106
		भिखारी	1, 2	58/401, 227/177
		बिहारी	1	378/652
		वृन्द	9	118/27
अजीब	अ०वि० आश्चर्यजनक	गंग		/151
अदब[3]	अ०पु० आदर, तमीज, शिष्टता, सभ्यता	भूषण	4	153/51
		कृपाराम	1	5/238

1. अंबर अतर में अगर में न उमदा सबूर हूँ में
   है न दीप माला में । — ग्वाल कवि 117/92.
2. मनु ससि सेखर की अकस किम सेखर सत चंद । -- बिहारी
3. जोर रुसियन को है तेग खुरासान की है
   नीत इंग्लैंड चीन हुन्नर महादरी ।
   हिम्मत अमान मरदान हिंदुवानहू की
   रूम अभिमान हबसान हद नाद री ।
   नेकी अरबान सान अदब इरान
   त्योंहि क्रोध है तुरान त्यों फरास फंद आवरी ।।
   भूषन भनत इमि देखिये महितल पै
   वीर सिरताज सिवराज की बहादी ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
अदम	अ०पु० (1) यमलोक, (2) अभाव, (3) हीन	ग्वाल	ग्वा०रत्ना०	19/10
अदा	अ०पु० चुकाना बे बाक करना	नागरी	ना०ग्र०	185/165
		पद्माकर	हि०ब०	/122
अदालत	अ०स्त्री० न्यायालय, न्याय	वृन्द	9	156/227
		नागरी	ना०ग्र०	509/14
अनहद्द	अ०स्त्री० बेहद अपार (अत् प्रत्यय)	भिखारी		/46
अनीस	अ०वि० मित्र, सखा कवि- सेनापति कार्तिकेय	नागरी	ना०ग्र०	62/5
अबस[1]	अ०वि० व्यर्थ बेकार फजूल	भूषण	1	15/48
अबीर[2]	अ०पु० गुलाल	देवदत्त	2, 3	111/100 224/40, 63
		नागरी		172/133, 182/157.
		वृन्द	10, 12	229/229, 330/73, 227/268, 342/118.
		मतिराम	2	316/103.

1. अबस- चंदन मै नाग मद भरयो इन्द्रनाग विष भरो सेसनाग
   कहै उपमा अबस को ? -- भूषण

   खलक न मानै एक भी अबस किये बकवाद
   खूब कमावै इस्क को तब कुछ पावै स्वाद ।। -- नागरीदास

2. अबीर -- होरी हरे हरे आइ

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
अब्द[1]	अ०पु० दास सेवक, भक्त	भिखारी	छन्दार्णव	228/42
अब्बास + साहि	अ०पु० (1) रूखे स्वभाववाला, (2) शेर (3) हजरत मुहम्मद साहब के चचा कवि — फारस का एक बादशाह			
अमल	अ०पु० कर्मचारी	मतिराम		261/264
	कार्य	भूषण		26/87
	(नागरी) नशा	भिखारी		52/361
	शासनकाल	नागरी		200/206, 358/363.
	व्यवहार (पालनहार)	वृन्द	9	164/261.
अमली	अ०वि० कर्मठ, काम का हिन्दी में- नशेबाज	वृन्द	8	94/463
अमारी[2]	अ०स्त्री० हाथी का हौदा जिस पर एक छतरी भी होती है।	गंग		377
अमीन	अ०वि० अमानतदार, इमानदार अ०पु० न्यायालय का वह कर्मचारी जो बाहर-बाहर का का काम करता हो।	चिन्तामणि	दूषणउल्लास	28/2

1. अब्बास - साहिन मन समरत्थ जासु नवरंग साहि सिर
हृदय जासु अब्बास साहि बहुबल विलास थिर ।।
— भूषण 18/62.

2. अमारी - ऊपर अमारी गंग भारी बँब धौ धौ होत ।।
-- गंग

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
अमीर[1]	अ०वि० (1) धनाढ्य, (2) शासक, (3) हाकिम.	भुषण	2	111/118
		देवदत्त	4	303/18
		भिखारी	1	7/28
		केशव	2	525/6
		वृन्द	11	265/37
अरब[2]	अ०पु० अरब का निवासी, अरब देश, अरबका व्यक्ति	भूषण	2	125/40
		केशव	ज०ज०च०	629/99
अरबी	अ०वि० (1) अरब का निवासी, (2) अरबी भाषा अरब से सम्बन्ध रखनेवाला	वृन्द	10	233/347
~~अरबी~~	~~फा०पु०~~			
अलगोजा[3]	अ०स्त्री० एक प्रकार की बंसी	पद्माकर	5	पृ/84
अव्वल[4]	अ०वि० प्रथम पहल	रसलीन		उदा०
असर	अ०पु० (1) प्रभाव, (2) चिह्न, (3) गुण तासीर	नागरी	ना०ग्र०	502/757

1. अमीर - भुषन भौसिला छीनि छाइ जगती उमराव अमीरन हूँ की

2. अरब - सिवराज तेरे त्रास दिल्ली भयो भुवकंप
थर-थर कांपति विलायति अरब की ।। -- भूषण

3. अलगोजा -- अलगोजे बज्जत छिति पर छज्जत सुनि धुनि
लज्जत कोइ रहे ।। - पद्माकर

4. अव्वल - नूर के उदा० में देखो

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ०/छ०
आजम	अ०वि०	बहुत बड़ा, विशाल,	केशव	4	624/63
		वसीम, महान			625/67
आदमी[1]	अ०पु०	मनुष्य, मानव, सभ्य,	भूषण	1	56/189
		शिष्ट	केशव	4	638/167 638/168
आदी	अ०वि०	अभ्यस्त अनुसेवी, व्यसनी	रसखान	रसरत्ना०	179/9
		हिन्दी-स्त्री०अदरख			
आबाद	अ०पु०	अबद का बहु०व०	नागरी	ना०ग्रा०	512/43
		हमेशागियाँ नित्यतायें			
आमिल[2]	अ०वि०	शासक, ओझा	भूषण	4	638/168
आयत	अ०स्त्री०	चिह्न, निशान, कुरान का एक वाक्य	रसलीन	3	307/17
~~आलम~~					
आलम[3]	अ०पु०	संसार, दशा	केशव	2	513/31, 514/52, 515/61.
		जगत हालत	भूषण	1	76/258 109/370, 138/8.
				4	150/40
			मतिराम	2	302/28
	वि०पु०	बहुत अधिक कष्ट देनेवाला	वृन्द	11	299/335/332

1. आदमी - तो सो को सिवाली जेहि दो सौ आदमी सो
   जित्यो जंग सरदार सौ हजार असवार को ।। शि०भू०, भूषण, 56/189.
2. आमिल - बाजीराव गाजी है उबार्यो आप छत्रसाल
   आमिल बिठायो बल करि कै चकत्ता सो ।। – भूषण
3. आलम - लीजे कलंक न दिल्ली के बालम
   आलम आलम गीर कहाय कै ।।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
आला[1]	अ०वि०	उत्तम बढ़िया ताखा	देव	सु०सा०त०	637
		गौखा	ग्वाल	ग्वा०रत्ना०	38/58
			बेनीप्रवीण	।	5/16
आलीजाह[2]	अ०वि०	बहुत बड़े रुतबेवाला महामान्य	रसलीन	।	302/5
आसा[3]	अ०पु०	डंडा सोने चाँदी का डंडा जिसे बारात आदि में चोपदार शोभा के लिए लेकर चलते है ।	भिखारी बिहारी		उदा०
इज्तराब	अ०पु०	व्याकुलता, बेताबी इ लगाकर स्त्री० बताया गया है । (2) जल्दी घबड़ाहट	नागरी	ना०प्र०	185/166
इमाम[4]	अ०पु०	नेता नमाज पढ़ानेवाला	रसलीन		उदा०
इल्म	अ०पु०	विद्या दस्तकारी कला	ग्वाल	।	48/81
		बुद्धि विवेक शिक्षा	नागरी	।	508/6

1. आला – सोने की अगीठिन में अगिन अधूम होय
होय धूम धार हू तो मृग मद आला की ।। ग्वाल 38/58
क्वल्हिहि गुदि बबा की सौ गज मोलिल की पहिरी
अति आला ।। -- बेनी प्रवीण 5/6.

2. आलीजाह– एसो साह आलीजाह बाहुबली दीष नाह
सेर अलह अली नाह फातिमा ने पायो है ।। -- रसलीन

3. आसा – (1) आप कहूं आसा कहूं तसबी कहूं कितेब – बिहारी
(2) माँगत भीख औ कहावे भीख प्रभु हम
घरे याकी आसा याको आसा घरे देखिये ।। –भिखारीदास

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
इल्लत	अ०स्त्री०	कारण सबब रोग बिमारी बूरी लत कवि-दोष	बोधा	2	213/36
इलाज[1]	अ०पु०	चिकित्सा दवा दारु	भूषण		उदा०
इलाहा	अव्यय	हे ईश्वर			
इलाही[2]	अव्यय	मेरा ईश्वर, ईश्वर	रसलीन		उदा०
ईजार	अ०पु०	किराये पर उठाना फा० (पायजामा) मति०		1	389/253
ईमान	अ०पु०	धर्म पर दृढ विश्वास धर्म विश्वास	रसलीन	3	307/9
ईसा	अ०पु०	हजरत ईसा, ईसामसीह,	रसलीन	3	302/5
		ईसाई धर्म के संस्थापक	बोधा	2	54/35
उलूम	अ०पु०	इल्म का बहुवचन, विधाएँ,	रसलीन	3	305/12
		शास्त्र समूह		2	304/12
एन[3]	अ०पु०	नेत्र आँख छोटी नदी	सोमनाथ		उदा०
		सदृश्य तुल्य, यथार्थ	बेनी प्रवीण		25/162
			तोष	सुधानिधि	109/1
			जसवंतसिंह	भाषाभूषण	17/183, 20/54, 60/183
		गंग- बड़ी आँख	गंग		57

1. इलाज- चले न कछु इलाज भेजियत वेही काज
   एसी होय साज तो सिवा सो जाए लरिए ।। - भूषण
2. इलाही- तौ लौ न पावै इलाही को केंसुहुँ
   जौ लौ मुहम्मद मे न समाइ ।। - रसलीन
3. ऐन - सरनि ते पैने मीन मृगनि ते ऐने
   हैरे हियौ हरि लेने है सुजान सुख देने है ।। - सोमनाथ
   काहू सो न बोलै डोलै अनल कहूँ न कथ
   मेरे ऐन बैन सदा मेरे द्वारपाल है ।। -- बेनी प्रवीण, 25/162

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
एराकी	वि०	एराक सम्बन्धी	वृन्द	9	155/224
	पु०	एराक देश का घोड़ा			
औलिया		वली का बहुवचन उत्तराधिकारी	भूषण		462
		वारिस सहायक मददगार मित्र			
		दोस्त महात्मा ऋषि	केशव	4	638/168
		केशव — पहुँचे हुए फकीर			
		अन्त में न लगाने की प्रवृत्ति			
करम	अ०पु०	दया कृपा मेहरबानी	बोधा	2	25/33, 144/46
			केशव	4	638/168
		दानशीलता बख्शिश	रसलीन	1	/90
करामात	अ०स्त्री	कृपा प्रतिष्ठा बुजुर्गी	पद्माकर	6	9
		चमत्कार	मतिराम	1	384/192
		कवि चमत्कृत कर देनेवाला कार्य	भूषण	1	501
			जसवंतसिंह	1	57/43
				2	77/41
करीम	अ०वि०	कृपाल, 2 दानशील, सखी, 3 ईश्वर का एक नाम	नागरी	ना०ग्र०	510/26
कलंदर[1]	अ०पु०	मदारी, 2 एक प्रकार का रेशमी वस्त्र	बिहारी		
कलाम[2]	अ०पु०	वाणी, इल्मे कलाम कुरान	दास		122/155, 142/142
		की आयतें	बोधा	2	39/35
		भिखारी - बाढे	भिखारी	2	/242-बाढे
			रसलीन	3	304/11

1. कलंदर- (1) तदपि नचावत सठ हठी नीच कलंदर लोभ - बिहारी
(2) ताफता कलंदर बाफता बंदर सुसजर सुदर गिल मिल है ।

2. कलाम- (1) आज चन्द्र भागा चपलतिका विसारवा को
पठाई हरि बाग ते कलामैं करि कोटि कोटि—दास

(2) पुन जैन आबदीन बाकर महाप्रवीन जाफर से है

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
कसबाती[1]	अ०पु०	कसबे के रहने वाले	बिहारी		
		शासक से मिल जाने वाले	द्विजनन्द		
कायम	अ०वि०	स्थिर, स्थापित, निश्चित	वृन्द	वृ०ग्र०	161/249
किताब	अ०स्त्री०	पुस्तक, कापी	बोधा	2	56/58
		बोधा-कुरान			
कीमत	पु०	1. मूल्य, 2. महत्त्व	ग्वाल	1	119/98
कुदूरत	स्त्री०	1 मैल, गँदलापन	गंग	1	237
		2. मनोमालिन्य, 3. शकररंजी			
कुमैत	पु०	कालिमा लिये हुए लाल घोड़ा	केशव	2	553/26
		जिसके पूँछ व आयाल के			
		बाल काले हों।			
खाली[2]	अ०वि०	जिसमें कुछ भरा न हो,	कुमारमणि		उदा०
		रिक्त जिसमें कोई रहता न हो			
		गैर आबाद, केवल सिर्फ	रसखान		
		कवि सूना			

खाक

---

1. कसबाती - सिसुता अमल तगीर सुनि औ मिल मैन
कहो होत है कौन की ए कसबाती नैन ।।
एसी कसबाती तू तो नेक न डराती काहू छाती न
दिखाउ कोऊ छाती मारि नरिहै ।। -- द्विजनन्द

2. खाली - बेलनि नवेलिनि के केलि पुंज आली
खाली बनमाली बिन काली से डसत है ।।—कुमारमणि
कहा कहों आली खाली देत सब ठाली
पर मेरे बनमाली को न काली से छुरावहीं ।।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृष्ठ
खासा[1]	अ० पु०	एक प्रकार का महीन श्वेत सूती वस्त्र	ग्वाल	।	26/28
		(2) राजभोग, राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी	चन्द्रशेखर	।	उदा०
खिल्अत	अ० स्त्री०	राज की ओर से सम्मानार्थ दिये जाने वाले वस्त्र आदि जो तीन कपड़ों से कम नहीं होते, अपने शरीर से उतार कर दूसरे को वस्त्र पहनाना ।	पद्माकर	5	/16
खिलवतखाने[2]	अ० स्त्री०	एकान्त का कमरा	भूषण	।	106/361
गदर	अ० स्त्री०	बगावतपन, बलवा होना, उपद्रव होना, फल आदि पकने की स्थिति में होना ।	बेनीप्रवीण		3/21
गनी[3]	अ० वि०	धनवान, अमीर	ग्वाल आलम	ग्वा०रत्ना०	99/40

1. खासा - (1) खासा तनजेब के बसन वेस धारि धारि
भूषन सम्हारि कहा सोते सेजपाटी में ।। — ग्वाल
(2) ताजी रँग रँग के तुरँगन की छाजी छटा
राजी गजराजन की पालकी औ खासा ये ।।—चन्द्रशेखर

2. खिलवतखाने -- खिलवतखाने खीसैं खोले खसखाने खासित खबीस है ।

3. गनी - कौन मुख लैकै तोहि ऊधव पठायौ इहाँ
कैसी कही बानै हाय लँक लौ गनी बनै ।। — ग्वाल 99/40
गम के नसीब ते गनी है जैसे राज पाये
आसक गरीब को गुमान मनीमाल क्या ।। — आलम

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गनीम[1]	अ०पु०	शत्रु, दुश्मन	पद्माकर	3	/708
गौस[2]	अ०पु०	वली से बड़ा मुसलमान महात्मा ।	रसलीन	3	305/14
	वि०	दुहाई सुनने वाला			
गदर[3]			बेनीप्रवीण		3/21
जन्नत[4]	स्त्री०	स्वर्गलोक, बाग	रसलीन	3	305/10 12
जनाब[5]	अ०स्त्री०	ड्योढ़ी चौखट आस्तान;, सम्मुख, सामने, श्रीमान् महोदय, महाशय, पार्श्व पहलू दरगाह आश्रम	रसलीन		306/15

1. गनीम - कहे पद्माकर त्यों दुंदुभि धुकार सुने
   अकबक बोलै यों गनीम औ गुनाही हैं ।।
2. गौस - गौस सम दानी महबूब सुबहानी कहो
   तुम बिन दूजी कौन जाको ध्यान धरिए ।। -- रसलीन 305/14.
3. गदर - चोरी एक चित्त की फलन की गदरताइ
   डाकि रही कारन छबर दरबार के ।। - बेनीप्रवीण 3/21.
4. जन्नत- जन्नत खातून पुन हसन हुसैन ध्यान
   कीजै जिय लै यकीन ला असाल कूम सों
   आदि नबी अली जान जन्नत खातून आन हसन हुसैन ।। 304/10.
   जान मारे जे जुलूम के ।। 305/12.
5. जनाब- आली जिनके जनाब हिंद को दइ है आब
   हिंदु लवली खिताब विधि बानी दीन है ।। 306/15.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जवाहिर	अ० पु० बहु० व० जौहर का बहु० रत्न समूह	भिखारी	1	80/543
			2	91/12
		भूषण		83/283
		मतिराम	2	356/344
		देवदत्त	2	108/78
			1	9/53
			3	181/7
		बोधा	2	196/31
जाये (जाया)	अ० वि० नष्ट बरबाद व्यर्थ बेकार प्रभावहीन बेअसर	वृन्द	9	161/249
जारी	अ० वि० संचालित चलता हुआ काम आदि (2) प्रवाहित (पानी आदि), (3) लागू, चालू (कानून)	नागरी	1	512/44
जाल	अ० पु० कूटता जालसाजी छल वंचकता फरेब	पजनेस	प० प्र०	35/89
जासूस	अ० पु० गुप्तचर मुखबिर	वृन्द	वृ० ग्र०	163/256
जुहूर[1]	अ० पु० प्रकट होना अवतार	रसलीन	3	306/16
जेब[2]	अ० स्त्री० पाकेट खलीता	देव	3	191/35
				338/29

1. जुहूर - नूर भरो सो है दरबार पोर पोर बियो तूर (एक पर्वत) के तजल्ली को जुहूर आन छायो है ।। -रसलीन 306/16.

2. जेब - मोर पखा घुँघुचीन के जेवर जेब सो जेबरी बेचति डोलै ।।

-- देव 191/35.

मूल शब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जौहरी[1]	अ०वि० मणि कार, रत्न बेचनेवाला	देवदत्त	3	175/41
	(न् प्रत्यय लगाकर बहुवचन)	रसलीन	2	265/71
		बोधा	1	16/91
		भिखारी	1	80/543
तकसीर	अ०स्त्री० दोष, अपराध, भूल-चूक	तोष	सुधानिधि	139/177
तजल्ली	अ०स्त्री० प्रकाश, आभा, नूर, तेज, प्रताप, जलाल, अध्यात्म, ज्योति, नूरेहक्	रसलीन	3	306/16 जूहूरका उदा०
तमाम[2]	अ०वि० समस्त, समग्र, सब, सम्पूर्ण	देव		उदा०
	कुल, समाप्त, निर्मल	भूषण	2	128/48
	खालिस, अत्यधिक	बोधा	2	169/80
	बहुत ज़ियादा	भिखारी	4, 1, 2	81/73 55/384 95/34
तरह[3]	अ०स्त्री० न्यास, बुनियाद, शैली, तर्ज़, वेशभूषा, समान भांति, घटना तफ़्रीक़, प्रकार, ढंग, टालना, झगड़े को बढ़ने न देना, तरकीब, जुगत, मुशाइरे के लिए मिस्रा जिसमें उसकी बह्र और रदीफ़ो क़ाफ़िया जाना जाता है, समस्या (अर्थ संकोच)	भिखारी		उदा०

1. जौहरी - जोबन बजार बैठ्यो जौहरी मदन सब लोगनि को
हीरा वाके हाथ हूके बिकात है ।।— रस विलास ।

2. तमाम- डूबी बन बीथिन चकोर चतुराई मन मनसूबी
तुरगन की तमाम करियतु है ।। — देव

3. तरह - संगति में बानी की कितेक जुग बीते देखि गंगा पै न
सौदा की तरह तोरि [illegible] ।। [illegible]

मूलशब्द		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
तलब	स्त्री०	माँगना, वेतन, इच्छा, नशा, की चाह, खोज	बोधा	2	58/22
ताले[1]	अ०पु०	भाग्य किस्मत	रघुनाथ		उदा०
दफ[2]	पु०	(1) प्रकार, किस्म, (2) डफला, चंग गानेवालों का बाजा ।	बेनीप्रवीन		7/28
दलील[3]	अ०स्त्री०	तर्क युक्ति, प्रमाण सुबूत	रसलीन		301/2
दीन[4]	अ०पु०	धर्म, मजहब, पंथ, विश्वास	रसलीन	3,4	307/19 306/15
			बोधा	2	6/23 22/41
दुमाला[5]	अ०पु०	(1) दुमंजिला घर, (2) दोमालवाला घर	ग्वाल		117/92

1. ताले - बनक बिलोकि वाकी वरनौ कहाँ लो परप्रीतिक कहत
से वै ताके बड़े ताले हैं ।। -- रघुनाथ ।

2. दफ - धाइ धरि लीन्हीं लाइ उर मैं प्रवीन बेनी
कहाँ लौ गिनाँऊ अब कौतुक के दफ री ।। बेनीप्रवीण 7/28.

3. दलील - आदि दलील को अंत की कै रसलीन जो बात भइ पुनि पाइ

4. दीन - दीन के नगारे बाजे जब इसलाम गाजी
आए अजमेर काजी ख्वाजा मान दीन है ।।

5. दुमाला- ऐसी तो न गरमी गलीचन के फरसो मैं है
न बेसकीमत बनात के दुमाला मैं ।।
— ग्वाल 117/92

मूल शब्द		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दुलदुल[1]	अ०पु०	एक मादा खच्चर जो इस्कंदरीया के शासक ने हजरत मुहम्मद साहब को भेंट किया था और आपने उसे हजरत अली को दे दिया था। घोड़े के आकार का एक ताजिया वह घोड़ा जिसे पर सामान मातम लाद कर अजाखाने में ले जाते है।	रसलीन	3	307/7
दौलत	अ०स्त्री०	धन सम्पत्ति, रुपया, राज्य-सत्ता हुकूमत, भाग्य।	भुषण		58/195
नबी[2]	अ०पु०	ईश, दूत, अवतार	रसलीन	1,3	4/6, 301/3
			भिखारी	1	
नही	अ०स्त्री०	निषेध, रोक हिन्दी शुद्ध उच्चारण नह्य है (संघी कर०)	नागरी	ना०ग्रा०	409/486
नाजिर[3]	अ०पु०	(1) देख-भाल करनेवाला सरदार (2) अन्तःपुर का प्रबन्ध करने-वाली मुख्य परिचारिका।	चन्द्रशेखर		उदा०

1. दुलदुल -प्रभु आस के बंधैया औ सनाह के सजैया
दुलदुल के चढैया रुप दरसाइए ।। -रसलीन 307/7.
2. नबी- तौ बिनती करि औरन पास कहाइके आप गुलाम नबी-को
3. नाजिर -(1) नाजिर आरि दियो कर कागद भाजु कहीं उठि देर न लावै ।।
-- चन्द्रशेखर
(2) हाजिर पास खवास जे जे नाजिर सब धाम
सब मिलि देत ममारखी झुकि झुकि करै सलाम ।। - वही

मूल शब्द		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
नाल[1]	अ०पु०	(1) तलवार आदि के म्यान की साम जो नोक पर मढी रहती है। पास, निकट (पंजाबी)	गंग तोष	1 1	उदा० उदा०
निहायत[2]	अ०स्त्री०	अंत, छोर, हद, अत्यंत, बहुत, अधिक, अवस्था, दशा ।	बोधा	2	35/4 34/41
नुकरा[3]	अ०वि०	(1) सफेद रंग का (2) घोड़ों का सफेद रंग (3) चांदी	सोमनाथ		उदा०
नूर[4]	अ०पु०	प्रकाश	रसलीन	3	301/2
नूरानी[5]	अ०वि०	प्रकाशमान	,,	3	307/18
बका[6]	अ०स्त्री०	नित्यता, अनश्वरता	बोधा		

1. नाल - दसहूँ दिसि जोति जगामग होति अनूपम जीगन जालन की
मनो काम चूम के चढ़े किरचै उचटैं कल धौत के नालन की ।।- गंग
मानैं क्यों कनौड़ी बाल कीन्हो तुम ऐसो ख्याल मोड़िन
के नाल लाल भटकि भटकि जू ।। - तोष
2. निहायत-याते विधि की भूल अनैसी जो पैकरत निहायत ऐसी ।। - बोधा 34/41
3. नुकरा - हरे नीले नुकरा, सुरंग फलवारी बीज रंगे रंग जंग जितवैया
विव्त बेस के ।। - सोमनाथ
4. नूर - नूर इलाह ते अव्वल नूर मुहम्मद को प्रगट्यो शुभ आइ ।। रसलीन
5. नूरानी- नूरानी दरबार शाह लदूया जू को नित चित देत अनंद ।।
--रसलीन 307/18.
6. बका- खेलौ तौ खेलौ खुसी सौ लली
जौ न खेलौ तो छोड़ो ये रीति बकाकी ।।
- बोधा

मूल शब्द	अर्थ	कवि	रचना	प्र/छ
वखील[1]	वि० कंजूस, कृपण	वेणीप्रवीण	ना० भे० न० र० त०	4/6
बदन[2]	अ० पु० शरिर देह	भुषण	1	20/65
बरकत[3]	अ० स्त्री० प्रचुरता, अधिकता	बोधा	2	185/4
बिसात (बिसात न)	अ० स्त्री० (1) फर्श, (2) सतह, 3 साहस, 4 सामर्थ्य, 5 शतरंज का तख्ता, पूंजी, हैसियत । (न लगाकर निषेधात्मक बनाया है) पहुंच न- न कवि-बस नहीं चलता	गंग	1	/89
मकान	अ० पु० गृहभवन, स्थान जगह	ग्वाल	1	57/105
मगरूर	अ० वि० अहंकार घमंड़ी	बोधा	1	5/27
मगरूरी	अ० स्त्री० घमंड़, अभिमान	,,	1	5/29
			2	80/35 63/28 113/63 89/25
मजाजी	अ० वि० जो हकीकी न हो, भौतिक, कवि- लौकिक प्रेम	बोधा	2	25/38 54/40

1. वखील - पति प्रेम नेम जैसे गहत वखील हेम, गुरुजन सेवा सो प्रवीन बेनी मेवा कैदु ।। — बेनी प्रवीण 4/6.

2. बदन - पंचानन एक ही बदुन गनि तोहि मजानन गज बदन बिना बखानियतु है ।। - भूषण

3. बरकत - बरकत धूरि गइ असमान । परै लखि नाहि दूर्यो कल मान ।। → बोधा

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
मनसबदास	पु०	अधिकारी ओहदेदार	मतिराम	ललित	320/122
मनसूबो	पु०	ओं लगाकर बहुवचन			
मनसूबा	पु०	मनसूबा, युक्ति, विचार, इरादा	बोधा	।	6/32
मरातिब	पु०	झंडा पताका	केशव	वीरच०	505/107
मसल	अ०स्त्री०	लोकोक्ति, कहावत मिस्ल तुल्य	ग्वाल	।	103/51
मस्ती		(1) उन्माद, नशा, (2) काम वेग, (3) बेखबरी, (4) ईश्वर प्रेम का आधिक्य	नागरी	ना०ग्र०	508/5
माल	अ०पु०	धन, रकम, दौलत (2) अच्छे-अच्छे खाने, (3) बहुमूल्य वस्तु, (4) महत्व हकीकत ।	ठाकुर	ठा०श०	25/69
माहिरे (माहिर)	अ०वि०	दक्ष, कुशल, अभ्यस्त मश्शाक (अन्य शब्दों के साथ जुड़ कर माहिरे ही लिखा जाता है — जैसे — माहिरेफन फन का ज्ञाता ।	भिखारी (अमाहिर)	शृ०नि०	117/13
मीर	अ०पु०	अमीर का लघु०, अग्रगण्य, सरदार, आगे बढ़ जाने वाला,	चन्द्रशेखर	ह०ह०	9/51
		सैय्यदों की उपाधि कवि—मीर मुहम्मद वृन्द — एक पदवी	वृन्द	9	150/202
मीरन)	अ०पु०	अमीर का लघु रूप, सरदार, सैयदों की उपाधि ।	भूषण		40/123

मु०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
मुजरा किया	वि०	(1) हिसाब में जमा किया हुआ ।	वृन्द	वृ०ग्र० 4	172/331
	पु०	(1) जो जारी किया गया हो		2	137/143
		(2) महफिल का गाना			
		(3) अभिनन्दन			
		(4) अदा की गई रकम			
		कवि- आनन्द मनाया		2	137/143
मुतलक	अव्य०	कुछ भी, तनिक भी	नागरी	ना०ग्र०	511/32
	वि०	निपट निरा बिलकुल			
		कवि- रंचमात्र			
मुनासिब	वि०	उचित, योग्य, काबिल पात्र संतुलित	ग्वाल	1	89/184
मुलम्मा	पु०	गिलिट किया हुआ	नागरी	ना०ग्र०	167/97
		चाँदीका पानी चढ़ा हुआ			
		कलई पालिश			
मुसाहिब	पु०	किसी बड़े आदमी के पास उठने-बैठने वाला, पार्षद ।	नागरी	,,	214/239
		कवि- दरबारी			
मुसाहिबीन	नू	मुसाहिब का बहु०व० न प्रत्यय लगाकर बनाया है ।	चन्द्रशेखर	हम्मीर हठ	11/64
मौज[1]	स्त्री०	(1) लहर, उमँग, तरंग	भूषण		45/144
		(2) उत्साह, धुन, ख्याल			
		(3) आनन्द	मतिराम		303/80
		(4) पुरस्कार	पद्माकर	3	45
			बिहारी	1	399/717

1. मौज - रहति न रन जे साह मुख लखि लाखन की फौज।
जाँचि निराखर हूँ चले लै लाखन की मौज ।। — बिहारी 717

भिच्छुक भीख को आवे भोजह ते बढ़ि मौजनि साजे ।। 13/40

मूल शब्द		अर्थ	कवि	रचना	पृष्ठ
			मतिराम	2	361/373, 323/140
मौजनि	नी	प्रत्यय लगा कर बहु० व० बनाया	भूषण		13/38
मौजूद	वि	(1) उपस्थित, (2) सामने, (3) वर्तमान	वृन्द	वृ० ग्र० 9	156/227
मौलवी	पु०	इस्लाम धर्म का विद्वान् (2) बच्चों को पढ़ानेवाला (3) विद्वान् आलिम	रसखान	र० रत्ना०	61/13
यतीम	अ० वि०	वह बालक जिसका पिता मर गया हो । अनाथ	गंग	1	/236
रमल	अ० पु०	एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिससे पासे फेंक कर भविष्य की बातें जानी जाती है ।	रघुनाथ		
	स्त्री०	एक विद्या जिससे भविष्य में होने वाली घटनाएँ बता दी जाती है । इस विद्या का मूलाधार नुक्ते शून्य या बिंदिया है ।			
[illegible] ([illegible])		[illegible] ([illegible])			
वासिलात[1]		अ० स्त्री० कुल आय का जोड़ आमदनी का मीज़ान ।	बेनीप्रवीन		5/12 उवा०
संदल	अ० पु०	चंदन	ना० दा०	ना० ग्र० 1	449/749: 759

1. वासिलात - राख्यो है किसोरपन जोबन बढ़ायकरि मदन महीप
वासिलात बृद्धि लेन को ।। 5/12

मूल शब्द		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
सनदी	अ०वि०	प्रमाणित	बेणीप्र०	न०र०त०	11/59
सनद	स्त्री०	1) प्रमाण, 2)प्रमाणपत्र, 3)आश्रय, (4) विश्वास, 5)नमूना, 6) उदाहरण, 7) उपाधि			
सदा	स्त्री०	आवाज, फकीर की आवाज	नागरी	ना०प्र०	502/757
सबील[1]	स्त्री०	उपाय, प्रयत्न	बिहारी	1	372/631
सला	स्त्री०	दावत के लिए दिया जाने वाला निमंत्रण कवि— तौरतरीका	नागरी	1	105/141
सलातीन	पु०	सुल्तान का बहुवचन सुल्तानगण	बृन्द	9	161/249
सलाम	पु०	प्रणाम, शान्ति, सलामती	भूषण		117/17
		नौहे का एक किस्म घृणा व बेजारी के लिए भी बोलते हैं।	भिखारी	1	8/36, 69/478
सलाह	अ०स्त्री	अच्छाई भलाई, परामर्श	भूषण	8	81/276 34/104 77/26
		मशावुर; उद्देश्य मंशा, राय तजबीज	भिखारी	1	7/28, 21/141
सहन[2]	अ०पु०	आँगन, मकान के बीच में या सामने खुला हुआ भाग	बेनीप्र०	1	25/167
साइस	पु०	सईस, घोड़े का रखवाला	चन्द्र०	ह०ह०	14/48

1. सबील – बचेन बड़ी सबील हूं चील्ह घोसवा मांस । बिहारी
2. सहन – ऊपर महल के सहन परजंक पर

   बैठी प्रिय प्रेम की पहेलिका पढत भो ।।

   — बेनीप्रवीण

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं
साद[1]	वि०	पुनीत श्रेष्ठ शुभ मुबारक	तोष	·1	130/126
साबित	वि०	स्थिर प्रमाणित, मुसल्लम, समग्र, दृढ़, मजबुत	आलमशेख	आ०के०	115/271
सालिम	वि०	सम्पूर्ण समग्र (2) स्वस्थ्य, (3) सुरक्षित, (4) ज्यों का त्यों ।	वृन्द	वृ०ग्र० 9	145/175
साहब	वि०	मालिक, मित्र, सहायक, साथी, वाला जैसे साहिबे इल्म- इल्म वाला । सम्मान सूचक शब्द जो नाम के अंत में लगाया जाता है ।	भिखारी	1	20/397 /397
साहिबी	वि०	सरदारी अध्यक्षता स्वामित्व	भिखारी	1	20/16
सिलाह[2]	पु०	हथियार या शस्त्र पद्माकर — कवच	पद्माकर	1	/37
सिलाही[3]	वि०	सैनिक सिपाही, फौजी (सिलाह+ई प्रत्यय) फौजी कवि — कवचधारी	,,,ल	1	/78
सुराही	स्त्री०	पानी रखने का एक विशेष प्रकार का पात्र	ग्वाल	1	29/35

1. साद - बाद कियो वहि चंद हि मैन मनोहक चंद हि साद किये है ।।- तोष
2. सिलाह — सिरमौर गौर गराजि कै सोभित सिलाहैं साजि कै ।।
3. सिलाही - झमकत आवै झुंड झलनि झलान झप्यो ।
   तमकत आवै तेगवाही और सिलाही ।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
सूरतहराम	वि०	जो बिल्कुल निकम्मा हो	ठाकुर	।	27/74
हकीम	वि०	वैद्य, चिकित्सक, वैज्ञानिक	नागरी	ना०ग्र०	500/752
हद[1] (हद्द)	स्त्री०	पराकाष्ठा, सीमा छोर ओट आड़	भूषण	।	119/23 24/79
हरम	पु०	खुदा का घर, मक्के के आस-पास का क्षेत्र, जिसके अंदर किसी प्राणी की हिंसा करना महापाप है, श्रेष्ठजनों के घर की स्त्रियाँ, अन्तः पुर, वह बाँदी जिसे पत्नी बना लिया गया हो ।	भुषण		53/173
हरीफ[2]	पु०	प्रतिद्वन्द्वीः शत्रु, दुश्मन	तोष	।	182/419
हलका[3]	पु०	हाथियों का झुंड	गंग	।	23, 304, → 343
			मतिराम	।	
हलकान	नु म्र०	हाथियों का झुंड़	गंग	।	23 →
हलाल		जाइज, जिसका खाना-पीना धर्म में वर्जित न हो । जबूह किया हुआ ।	ठाकुर	ठा०श०	32/91

1. हद - रस खोट भये ते अगोट आगरे मे सातो चौकी
डाकि आनि घर किन्हीं हद्द रेवा है ।।— भूषण 24/79

2. हरीफ - उन बासुरी बजाया उन गाया बेस रागिनी
व पक्का है हरीफ लखि लक्का सा दुने गया ।। — तोष

3. हलका - माते-2 हाथिन के हलका हलक डारो ।
सत्ता के सपूत भाउ तैर दिए हलकानि,
बरनी उचाई कवि राजन की मति मैं ।। मतिराम

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
हवाई[1]	अ०स्त्री० वि०	वायु सम्बन्धी, वायु का, एक आतशबाजी, बान	दास	1	135/206
हवाल	पु०	(1) हाल, (2) वृत्तान्त, (3) परिणाम	गंग	1	/416
हाल	पु०	(1) अवस्था दशा, (2) समाचार, (2) विवरण, (4) तन्मयता, (5) वर्तमान	गंग	1	/158
		काल, (6) अभी तुरन्त	भिखारी	3	239/36
हाकिम	वि०	पदाधिकारी, मालिक, शासक, राजा, सरदार	ग्वाल	ग्वा०र०	18/7
हिम्मत	स्त्री	साहस जुर्अत, उत्साह, हौसला	भूषण		19/63
हिम्मति	स्त्री	,, ,, ,, ,, (इ प्रत्यय)	,,		132/6, 119/24, 153/51, 48
हिसाब	पु०	गणना, गणित, लेन-देन, दर दी या ली जाने वाली रकम कियामत के दिन नेकी बदी का हिसाब।	ना०	ना०ग्रं०	505/762
हुस्न	पु०	सौन्दर्य सुन्दरता छटा	ना०	,,	498/1 499/748 506/764 511/33
हूर	स्त्री०	हौरा का बहु० परन्तु उर्दू और फारसी में एक व बोलते हैं वह स्त्री जिसके बाल व आँखें बहुत स्याह हो और शरीर बहुत गोरा हो। स्वर्ग वधू।	ग्वाल	1	38/58

1. हवाई- पूस को भान हवाई कृसान सो, मूढ को ज्ञान सो मान लिहरो।

मू०शा०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
हैफ[1]	पु०	खेद अफसोस	चातुर		
हैरत	स्त्री०	आश्चर्य विस्मय निस्तब्धता चकितता	ना०दा०	ना०ग्रं०	445/587
हैवान	पु०	पशु वन पशु हर वह चीज जो प्राण रखती हो । कवि जड़ मनुष्य	गंग	।	/386

---

1. हैफ - हैफ मान जीव वसुधा के जसुधा के जबी
   टेर टेर तोहि मीर पीर तो फिरत है ।।

(2) फारसी मूल शब्द

मूल शब्द		अर्थ	कवि	रचना	पृष्ठ
अंकुस	पु०	आंकुस, अंकुश, कवि- हाथी को वश में करना ।	वृन्द	वृ० ग्र० 8	83/320
अंगूर	पु०	एक सुप्रसिद्ध फल भरते हुए ज़ख्म के लाल दाने	बिहारी	1	293/373
अदा	स्त्री०	हावभाव, नाज, अंदाज, पद्धति, तर्ज, प्रणाली	नागरी	ना० ग्र० 1	185/165 235/1
अनार	पु०	एक प्रसिद्ध फल, दाडिम	,,	1	24/35
			तोष	1	206/6
			रसखान	1	155/230
			वृन्द		22/39
			जसवंतसिंह	1	60/181
अब्रू	स्त्री	भृकुटी, भौं	नागरी	7	499/749
अरब्बी	पु०	तासा नामक बाजा	भिखारी	का० नि०	19/16
		घोड़ा	पद्माकर	हि० ब०	41
		पु० हिन्दी भिखारी, -उपेन्द्र, श्रीकृष्ण		6	14, 83, 35
			वृन्द	वृ० ग्र०	175/363
अलूमस्त	वि०	नशे में चूर, बहुत ही मस्त अलमस्त, (मध्यस्वरागम)।	बोधा	1	13/74
आँन	स्त्री०	छवि, छटा, टेक, बात, हावभाव ।	नागरी	ना० ग्र०	
आब[1]	पु०	पानी, चमक,	नागरी	ना० ग्र० 1	116/155, 158/69, 104, 502/759, 762

1. आब - भूषन भवर मन भनाल घननात घंट पग झननात मनो घन रहे घिरि है । जिनकी गरज सुनै दिग्गज बे आब होत मद ही के आब गड़काब होत गिरि है ।। - भूषण

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
आब			पद्माकर	8	45
			भूषण	1	97/340
		इज्जत	रसलीन		306/15
			वृन्द	9	180/400
आब+ताब	पु०+स्त्री०	आब–जल, चमक, शोभा ताब–गर्मी, चमक, बल प्रत्यय–रोशन करनेवाला जैसे आलमताब–संसार को चमकाने वाला ।	गंग	1	346
आबदार	वि०	चमकदार, धारदार, पानीदार, पानी पिलानेवाला ।	पजनेस	प०प्र०	46/116
आबदान	वि०	आबाद – अ०पु० अबद का बहुवचन, हमेशागिया, नित्यताएँ संपन्न, आबाद ।	नागरी	ना०प्र०	512/41
आबाद	फा०वि०	जिसमें आबादी हो, वसित वह जमीन जो बोई जाती हो चहलपहल हो, गुलजार ।	,,	,,	512/43

आली जिनके जनाब हिंद को दई है आब

हिन्दु लबली खिताब विधि बानी दीन है ।

दीन के नगारे बाजे जब इसलाम गाजी

आए अजमेर काजी ख्वाजा मोन दीन है ।।

— रसलीन ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
आमद	फा०स्त्री० आय, आमदनी, वह विचार जो मस्तिष्क में बिना सोचे आया हो ।	नागरी	ना०प्रा०	500/751
आमदनी	स्त्री० आय, आमद	रघुनाथ	दू०उ०	45/10
	कमाई, पैदावार	सोमनाथ	सो०प्रा०	पू०/152
आराम	पु० सुख, चैन, आनन्द, आसानी	नागरी	1	511/31
आह	स्त्री० हृदय से निकलनेवाला आर्त्तनाद, हाय, अफसोस, उच्छ्वास ।	भूषण		/539
कजदार	फा०वि० दार प्रत्यय, कज-टेढ़ा, दार-वाला ।	नागरी		178/149
कज+बंद	वि०+पु० कज-टेढ़ा बंद – कैद, पाशफंदा, पेच, रोक, गांठ, बंद किया हुआ ।	नागरी		177/148
कबूतर	पु० एक प्रसिद्ध चिड़िया, कपोत, पारावत ।	बेनीप्रवीण		44/302
		,,		,,
कबूतरी	इ लगाकर स्त्री० बनाया है	कृपाराम		/103
कमर	स्त्री० कटि, लंक, मध्यदेश	नागरी		244/54
कमान[1, 2]	स्त्री० धनुष, तीर, चलाने का यंत्र, (तोप)	भूषण	2	415: 119/24
		भिखारी	2, 84	130/188 23/47
		,,	3	255/55

1. (1) छूटत कमान और तीर गोली बानन के
मुसकिल होत मुरचान हूं की ओट मैं ।। भूषण 119/24

(2) भृकुटी कमान दोऊ दुहुंन को उपमान, नैन से कमल नासा कीर
मद घालही ।। -- दास 23/47.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
कमान		मतिराम	1	306/45, 325/151
			2	119/28
		देवदत्त	3	192/36,
			4	281/9, 303/18, 294/42
		बोधा	2	105/44, 118/39
		केशव	1	82/80
			2	504/91
	धनुष	रसलीन	1	103/528
			4	346/43
		वृन्द	4	17/17, 23/42
			8	77/250
			9	195/520, 179/392.
		चिन्तामणि	दू०उ०	30/13
		जसवंतसिंह	1	29/84
	तोप	गंग	1	333, 28, 37, 82
	तोप	केशव	रा० च०	13प्र/38छ
			शि० न०	458/6

(3) हेरि-हेरि मुख फेरि कत तानत भौंह निदान

बानन बधि कोऊ नहीं राखी चढ़ी कमान ।। * 103/528

(4) मारग सेन अरन्य लियान कमान ज्यो भ्रु दृग बानकसी से ।

(5) काननि लौ दृग बानन तान रहे जिहि भौंह कमान तनिय ।।

सुमिल विनोद देव 281/9

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
कस[1]	पु०	(1) बल जोर काबू	बिहारी	1	275/314 268/293
		(2) खींचा तानी			
		(3) अंगिया कसने की डोरी	आलम		
काकरेजी	पु०	लाल और काले रंग के मिश्रण	देव	सु०सा०त०	555
		से बनाने वाला रंग		रस०वि०	226/50
		— बैगनी रंग की।			
काकरेजा	पु०	(हिन्दी)	गंग	1	103
कामयाब	वि०	(1) सफल प्राप्त मनोरथ	नागरी		505/762
		(2) परीक्षा में उत्तीर्ण			
कारकुन[2]	पु०	प्रबन्धकर्ता, करिंदा	आलम		
कारचोबी[3]	पु०	जरदोजी, कसीदाकारी	ग्वाल		119/98
कारीगर	वि०	शिल्पकार, गुणवान	,,		64/123
		कुशल, छली			
कासनी[4]	स्त्री०	एक प्रकार का नीला रंग जो कासनी के पुष्प जैसा होता है।	बेनी प्रवीण		17/106

1. कस - (1) हौं कसु के रिस हूं करौं ये निसुके हँसि देत ।। - बिहारी
   (2) रहि न सक्यौ कस करि रहयो बस करिलीन्हौ मार ।। - वही
   (3) अंगिया सित झीनी फुलेलमली तरकी ठौरठौर कसी कस सौ।-आलम
2. कारकुन - करि कारकुन पिकबानी चीठी आइ जमा विरह बढ़ाइ छवि रैयति
   मरोरी है ।। - आलम
3. कारचोबी - कारचोबी कीमत के परदा बनाती चारु चमक चहूँधा समादान
   जोत जाला में ।। - ग्वाल 119/98.
4. कासनी - चम्पमति सुमुखि जरद कासनी है सुख चीनी श्याम
   लीला माह कावित्ती जनाई है ।। - बेनीप्रवीण 17/106.

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृष्ठ
कुन्नस[1]	स्त्री०	प्रार्थना, विनती	बोधा		उदा०
कुलंग[2]	पु०	एक प्रसिद्ध पक्षी जिसका सिर लाल व शेष शरीर मटमैला रंग का होता है।	भूषण केशव	 9	143/19 8/34
कूच	पु०	(1)प्रस्थान, रवानगी (2)मरण, (3)सेना का प्रस्थान।	केशव	2 5	494/13 कई स्थानपर 693/3, 4,5.
		तु० — पु० — नर भेड़ जो लड़ाई के काम आता है।			
कूजा[3]		जलपात्र, कुल्हाड़ा	नरोत्तमदास		उदा०
खाम[4]	वि०	(1) अनुभवहीन, कच्चा (2) चिट्ठीका लिफाफा (3) लिफाफे में चिट्ठीका बंद रहना।	ग्वाल द्विजदेव		उदा०

1. कुन्नस - इतने क्षण जन एक तह कुन्नस कर जोर अर्जवन्त
   ठाढो भयो नजर अग्र भय छोर ।। — बोधा
2. कुलंग - सारस से सूबा करबानक से साहिजादे
   मोर से मुगल मीर धीर मैं धचै नही।
   बगुला से बंगस बलूचियौ बतक ऐसे
   काबिली कुलंग याते रन मैं रचै नहीं ।।
3. कूजा— कूजा कंचन रतन युत, सुचि सुगन्ध जल पूरि ।। -नरोत्तम दास
4. खाम - (1) धाम की न धनि की न धन की न तन की
   तपन की न पात बात कीन्हीं सब खाम की ।।- ग्वाल
   (2) बाँचति न कोऊ अब वैसिये रहतिखाम
   जुवती सकल जानि गइ गलि बाकी है ।।
   — द्विजदेव ।

मू०शा०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
खिंग[1]	पु०	सफेद रंग का घोड़ा जिसके मुंह पर पट्टा तथा टाप गुलाबी लिये श्वेत रंग का होता है ।	पद्माकर		उदा०
खिलवत[2]	पु०	एकान्त, निर्जन	ग्वाल		75/150
खूं	पु०	खून का लघु रूप (1) रक्त, लहू (2) वध, कत्ल कवि - लाल	पजनेस		33/84
गंज[3]	पु०	निधि, खजाना, कोष, ढेर, समूह, हाट, बजार, अनाज की मंडी ।	पद्माकर	8	/8
गजा[4]	पु०	नगाड़ा बजाने का डंडा	केशव	6	19/53
गलीमन[5] (गलीम)	नू पु०	तीव्र काम, तीव्र कामवासना	चन्द्रशेखर		उदा०
गलीचा	पु०	कालीन			

1. खिंग - तहं खिंग निहारे सुख दिलवारे अधिक सुढारे तन चमकै ।।- पद्माकर
2. खिलवत - खेल में खिलावत खिलारी तै मिलाई खूब,
   खुलिगे खजानै खिलवत मैं खुसीन के ।।
3. गंज - गब्बिन को गंजन, गुसैल गुरु लोगन को
   गंजन को गंग, गोल गुबंज गजब को ।। - पद्माकर
4. गजा - सुर दुंदभि सीस गजा, सर राम को रावन के सिर
   साथ ही लाग्यो ।। - केशव
5. गलीमन - गंज गलीमन के मिलमैं गुलदार गलीचन की छवि छावत
   चारु चिराकन की अवली करि चारिउ दवार केवार लगावत ।।-चन्द्रशेखर

मू०शब्द		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गलीचन		कालीन	ग्वाल	1	117/92
		न लगाकर बहुवचन			
गलीचे		ए लगाकर बहुवचन	,,		36/54
गिरवी[1]	वि०	रेहन, बन्धक	देवदत्त	3	170/3
(ग्रौ)	सं० पु०				
गिरह[2]	स्त्री०	कुलांच, कलैया	बिहारी	1	390/687
		उल्टी कलाबाजी	चन्द्रशेखर	1	31/212
गिलम[3]	स्त्री०	ऊनी कालीन	बोधा	2	194/9
		मोटा गद्दा	भिखारी	1	23/152
गिलमनुह (भिखारी)		मोटे गद्दे पर भी	पजनेस	1	17/43
गिल	स्त्री०	मिट्टी	पद्माकर		
(गिलान)[4]		गारा गिलावा	ग्वाल		145/177
		कवि -			

1. गिरवी - राजा राइराने उमराइ उन माने
उन माने निज गुन के गरब गिरवी देहैं । देव

2. गिरह - ऊंचे चितै सराहियत गिरह कबूतर लेत । - बिहारी

3. गिलम - (1) झालरनदार झुकि-झूमत वितान बिछे
गहब गलीचा अरु गुलगुली गिलमैं ।। - पद्माकर

(2) गिलम गलीचन पै अतर सुपुष्पन के
चन्दन कपूर पै फुहार पिचकारी को ।। - पजनेस

4. गिलान - मीन मृग खन्जन सिखान भरे,
मैन-बान, अधिक गिलान भरे, कंज कल ताल के ।। - ग्वाल 145/177.
(कृष्ण के नेत्र) के वर्णन में ।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गुजरान[1]	स्त्री०	गुजर	बोधा	1	5/31
		प्रवेश, पहुँच, आगमन			
गुनाह[2]	पु०	पाप, पातक, दोष	भूषण	4	/70 151/45
			भिखारी	1	23/152
		अपराध, कुसूर	बोधा	2	27/53
			केशव	2	513/31
गुनहगार गुनाहगार	वि०	दोषी, अपराधी	जसवंत	9	/4
गुंफ	पु०	1. उलझान	सोमनाथ	सो०ग्र०प्र०ख०	175/
		2. गुच्छा			
		3. गलमुच्छा			
गुमान[3]	पु०	शंका, शक, भ्रम, बदगुमानी	भुषण		416
		कुधारणा	देवदत्त	1	8/140
				2	66/20
		(1) कल्पना		4	72/60
		(2) घमण्ड	मतिराम	1	297/18 340/250
			भिखारी	1	46/312
				4	19/5
			बोधा	2	72/53
			केशव	2 1	509/44 159/275

1. गुजरान – (1) बोधा कवि बन गुण रूप की कहाँ लौं कहौं,
दान औ पुरान गुँजरान घौस रैन की ।

(2) सो कजरा गुजरान जहाँ कवि बोधा जहाँ
उजरान तहाँ को ।।

2. गुनाह - सुनि बैन साह कहे यारो उमराओ जाओ
सो गनाह राव रुती के बीच के गयो ।।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृष्ठ
गुरदा	पु०	(1) रीढ़वाले प्राणियों के भीतर का अंग । (2) साहस (3) एक प्रकार की छोटी तोप	चन्द्रशेखर	ह०ह०	24/158
गुल	पु०	फूल, आँखों की फूली	पद्माकर	3	/526
				8	/38
गुलदार[1]	दार	फूलदार, बेलबूटेवाला	चन्द्रशेखर		
गुलाब	पु०	एक प्रसिद्ध फूल	भूषण	1	/22
		गुलाब जल	देवदत्त	2, 3	6/21, 292/22.
			मतिराम	1, 3	334/88, 336/103, 416/611
			भिखारी	1, 4	261/264 14/80, 25/54
			रसलीन	1	145/761
			केशव	2	579/16
गुलाल[2] गुल + आल फा० + तु० ↓ ↓ फूल लाल	पु०	लाल चूर्ण जिसे होली के दिनों में हिन्दू लोग उत्साह-पूर्वक परस्पर मुख पर मलते हैं ।	नागरी०	1	50/21 172/33 168/114 169/119 118 121

1. गुलदार - उदा० गलीमन में देखें ।

2. गुलाल - खेलत बृज होरी सजें, बाजे बजें रसाल पिचकारी चलती

जँह तँह उड़त गुलाल ।। - 10/30

पीरो रंग अँगन छायो असुँवन झरत गुलाल ।। - रसलीन

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गुले-गुलाब		गुलाब का पुष्प	पद्माकर	3	/209
गुलेशब	पु०	गुले = पुष्प	गंग	1	/243
(गुले-शब-बो)		शब = रात			
		बो = बू, खुशबूम			
		रजनीगंधा की एक जाति			
		कवि – रात का फूल अर्थात्			
		रात की खुशी ।			
गैर मिसिल[1]	पु०	अनुचित स्थान	भूषण		10/34
गोय[2]	स्त्री०	(1) कन्दुक, गेंद	बिहारी		322/469
	क्रिया	(2) गोपन, छिपाना	रहीम		
चमन	पु०	(1) उद्यान, बाग	नागरी	ना०प्र०	505/762
(कहीं-कहींचिमन(		(2) आराम			
चरखी[3]	स्त्री०	एक प्रकार की आतिशबाजी, जो मस्त हाथियों को भयभीत करने के लिए छुड़ाई जाती है।	सेनापति सोमनाथ	रा० श०	

1. गैरमिसिल - भूषण कुमिस गैर मिसिल खरे किये को
किये म्लेच्छ सुरक्षित करिके गराज को ।। - 10/34
जानि गैरमिसिल गुसीले गुसाधारि उर
किनो न सलाम न वचन बोले सियरे ।। - भूषण

2. गोय - गोय निबाहे जीतिये प्रेम खेल चौगान ।। - बिहारी
रहिमन निज मन की विथा मन ही राखो गोय

3. चरखी - सेनापति धायौ मत्त काम के गयन्द जानि,
चोप करि चपै मानौ चरखी छुटाइ है ।।
चरखी तड़ित अरु चमकि गरज मंजु बरसत नीर मिस मद
के पनारे है ।। - सोमनाथ

मु०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
चखम	पु०	नेत्र, आंख, (2) आशा	पजनेश	प०प्र०	33/84
चाकर[1]	फा०पु०	सेवक, दास, नौकर	वृन्द	9	182/423
			भूषण	1	49/161
चाकरी[2]	स्त्री०	(1) सेवा, (2) नौकरी	,,		37/112
चुना	फा०अ०	उस प्रकार का	पजनेस	1	33/84
चूक	पु०	गलती, भूल	मतिराम ~~कुलपति~~	1	/43
चोब[3]	पु०	(1) शामियाना खड़ा करने का बड़ा डंडा ।	ग्वाल	1	37/55
		(2) सोने या चांदी का मढ़ा हुआ डंडा ।	देव	2	275/20
चौगान	पु०	घेड़े पर चढ़ कर खेलेजाने वाला गेंद का खेल ।	बिहारी	1	322/469
जंग[4]	स्त्री०	रण, युद्ध, लड़ाई, शत्रुता	पद्माकर	6	/20
			मतिराम	2	41, 71, 122 272, 330, 129
			भूषण	2, 1	121/31, 40/125
			केशव	2	489/11.
			गंग	1	/38

1. चाकर - साहिन के साहि उसी औरंग के लीन्हे गढ़ जिसका तु चाकर और
   जिसकी है परजा ।। - भूषण 49/161.
2. चाकरी - मेवार ढुढार मारवाड़ औ बुंदेलखंड मगर खंड बाँधौ धनी
   चाकरी इलाज की ।। 37/112.
3. चोब - चांदनी है चौबन पै परदे दरीचन पै दुहरे दुलीचे है
   गलीचे गोल गद्दी मैं ।। ग्वाल 37/55.
   चैत को रुचिर चंद चांदनी सी चादनी मैं चांदी सो चंदोवा
   चामीकर चोब चारि को ।। देव

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जमादार	पु०	सिपाहियों का पहरेदारों आदि का प्रधान ।	ग्वाल	ग्वा०रत्ना०	32/42
जमीदोज[1]	पु०	एक प्रकार का खेमा	गंग	।	1377
	क्रि०	धराशायी होना नीचे की ओर आना	ग्वाल	।	51/90
जमुर्रद[2]	पु०	एक कीमती रत्न, पन्ना	पजनेस	।	14/34 14/35
जमेजाम[3]	पु०	एक विशेष प्याला जिसे ईरान के शासक जम्शेद ने संसार का हाल जानने के लिए बनाया था । ऐसा अनुमान है कि उस प्याला में कोई मादक वस्तु पिलायी जाती रही जिसे पीकर पीने वाला वास्तविक बातें बता देता था ।	,,	।	14/33
जर	पु०	सोना दौलत बुढा या बुढ़ी	बोधा	2	15त/20छ
जरब[4]	स्त्री०	चोट, आघात	मतिराम	2	340/280
जरबीला जरब+इला (प्रत्य).	वि०	चमकीला भड़कीला	भूपति	.	

1. जमीदोज - (1) रगमगे मखमल जगमगे जमींदोज और सबजे वे देस सूप सकलात है । - गंग
(2) अजब अनूठे विधि किले दूवे बनाये है सो ऊचे होत
आवत न होत जीमीदोज है ।। - ग्वाल

2. जमुर्रद - बिलौर की बारादरी जगै जोति जमुर्रद की कुरसी बजै बीन् ।।-पजनेस
जमुर्रद के तम जाम लिया चढ़ि सैन्दली ओढै सखी सब पेस ।।- वही

3. जमेजाम - या जमेजाम या सीसा सिकन्दरी या दुरबीन लै देखिबो कीजै ।।- वही

4. जरब - जोबन जरब महारुप के गरब गति, मदन के मद मद मोकल मतंग की ।। - मतिराम
नीले जरबीले छटे. केस सिवार समाज । कैलपद्यी बृजराजरम के लपट्यो

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जहान[1]	पु० संसार, विश्व	प्रायः अधिकतर कवियों ने प्रयोग किया है ।		
जादू	पु० अभिचार, मार डालने आदि का कर्म, इन्द्रजाल माया, हस्त कौशल ।	बोधा	2	71/40
जान	स्त्री० प्राण वायु, जीवनशक्ति,	,,	1	6/31
जानवर	न् प्र० लगाकर बहुवचन पु० प्राणी, पशु और पक्षी आदि, मनुष्य के अतिरिक्त और सब प्राणी । कवि—पशु	भूषण		105/360
जाम	पु० पियाला, शराबपीने का प्याला, पान-पात्र ।	बोधा	2	4/71

1. जहान - प्रवाट हुसेनी बासती बस जो सकल जहान
तामैं सैद अब्दुल फरह आए मधि हिंदुवान ।। 5/12
रौसन दोऊ जहान जिंद पीर सुर ज्ञान
जाके देखे ही से दृष्टि दलिद्दर हरन ।। 307/19

कवि	रचना	छंद
पद्माकर	4	2
मतिराम	2	373, 32, 49
भूषण	2	64/215
भिखारी	1	35/243
रसलीन	1 3	5/12 307/19
केशव	1, 2	57/5, 507/33
बोधा	1	6/31

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जिगर	वि०	शरीर का एक विशेष अवयव यकृत। साहस, हिम्मत कवि- चित्त	पद्माकर	हि० ब०	/120
जीन	पु०	घोड़े की पीठ पर कसी जाने वाली काठी पल्ययन । एक तरह का कपड़ा	केशव	2	568/23
जेर[1]	वि०	परास्त पराजित	बलदेव		
जौर	क्रि० वि०	(1) आवेश में, वेगपूर्वक	देव		
	पु०	(2) जुल्म, अत्याचार			
तंग (तंगकस्यो)	वि०	संकीर्ण, कोताह, अल्प, दरिद्र, परेशान, दुखी, मुश्किल, अपर्याप्त । हिन्दी- वृजभाषा	सोमनाथ		पृ/91 (तंग)
	पु०	~~xxxxxxx~~ जीन कसने का तस्मा कवि- घोड़े की सवारी करने के लिये जीन को पेटी से कसा ।	गंग	1	/298

1. जेर - टेर की जो ताकी विपता को गहि जेर की है
बेर सी लुटावे वीर सम्पति कुबेर की ।।
— बलदेव ।

चौरे कलगी धरे दौर बारिधि तरे जौर चढ़ि लरे
को इतहि भावै ।।
— देव

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
तँबूर[1] (तँबूरः) फा०	पु०	एक तारवाला बाजा जिसमें नीचे की ओर तुंबी होतीहै।	पजनेस	1	49/123
तँबूरची	चीप्र०	फा० तु० वि० कवि- ढोलबजाने वाला, तँबूरा बजाने वाला।	पद्माकर	8	/63
तनजेब	स्त्री०	महीन मलमल	ग्वाल	1	26/28
तबक[2]	पु०	चाँदी अथवा सोने का वर्क	केशव	8	459/11
			पजनेस	1	3/6
तमामी[3]	स्त्री०	एक प्रकार का देशी रेशमी वस्त्र।	बेनीप्रवीण	1	24/155
तरहदार[4]	वि०	सुन्दर आकृति वाले, अच्छी बनावट के।	गंग	1	/859
ताब	स्त्री०	गर्मी, आभा, चमक, बलपेच, जोर शक्ति, बरदास्त, सामर्थ्य प्रत्यय — रौशनकरने वाला, जैसे — 'आलम ताब' संसार को चमकाने वाला।	पजनेस	प०प्र०	43/108-111 3/6 42/107

1. तँबूर - काम के कंगूरे छविदार है तँबूरे ऐसे, कैधो
   मन भावती नितंब ये तिहारे है। पजनेस 49/123.
2. तबक - किधौं कमनीय गोल कामिनी कपोल तल
   किधौं कलधौत के तबक ताइ काढ़े है ।। केशव
   कवि पजनेस कंज मंजुल मुखी के गात
   उपमा धिक्कत कल कुन्दन तबक सी ।। — पजनेस
3. तमामी- सोने के पलंग मखमल के बिछावने है।
   तकिया तमामी के तमाम तरकीब के ।।-- बेनीप्रवीन 24/155
4. तरहदार - तावगीर तरुतोर तरुन तरहदार तरायल सहित मैगल
   धाइयत है ।। — गंग

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृष्ठ
तार	पु०	तन्तु, डोरा, धातु का पतला सूत, तार की खबर, झड़ी, कतार । हि० - संगीत के एक सप्तक, (वि०-निर्मल), करताल, तालाब, तरकी नामक गहना, तारा, ताल, तल डर, ताड़ना, अव्यय- लेशमात्र नाम को भी ।	भिखारी	4	215/9
तार-तार	वि०	टुकड़े-टुकड़े, रेजा-रेजा, बिल्कुल, फटा पुराना कपड़ा ।	आलम और शेख	आलम केलि	115/273
तावगीर [1]	वि०	घमंडी, अभिमानी शक्तिशाली	गंग		
तास	फा० पु०	बड़ा तश्त, परात, वह कटोरा जो जल घड़ी की नांद में पड़ता था । एक सुनहरे तारों का जड़ाऊ कपड़ा ।	देव	सु०स०ह०	146, 249, 325.
तीर	पु०	बाण, शर, इरानी महिना जो हिन्दी हिसाब से सावन होता है ।	भिखारी केशव	4 2	205/67 504/95
		बुधग्रह, शक्तिबल, हिन्दी- नदी किनारा, स्थान, क्रि०वि०- पास, निकट ।			
तुफंग तुंग	पु० फा०+सं	मिट्टी का बड़ा बर्तन जिसका पेट चौड़ा गर्दन छोटा और मुंह तंगहो (तुफंग) फा- हवाई बन्दूक, तुंग- उन्नत या ऊंचा ।	वृन्द	वृ०ग्र०	190/482 189/473

1. तावगीर - तावगीर तरु तोर तरुन - - - ।

मू०शा०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
तुंद[1]	वि०	तेज, प्रचण्ड	बेनीप्रवीन	1	59/425
		पेट	ग्वाल	1	50/87
तुका[2]	पु०	बिना फल का तीर, वह तीर जिसमें गासी की जगह घुंडी होती है ।	दास	2	1303
			कविन्द्र		
तूत	पु०	एक प्रसिद्ध पेड और उसका फल शहतूत।	भूषण	1	7/21
तूती[3]	स्त्री०	एक छोटी जाति का तोता ।	देव		
		मटमैले रंग की छोटी तथा सुन्दर चिड़िया ।	वृन्द	9	336/96
तूदा[4]	पु०	राशि, ढेर, समेह	नन्दराम		
दर[5]	पु०	दरवाजा	पद्माकर	हि० ब०	/102

1. तुंद - होत अरविन्द से तो आय के मलिदे ब्रंद लेते मधु बुंद
   कैद तुंद के तरारे से 50/87 — ग्वाल ।
   और अभरन अब काहे सजैगी बीर एक ही मैं बाढ़ी अंग-अंग छवि
   तुंद है ।। बेनी प्रवीन 59/425.
2. तुका - गाडे हूवै रहे ही सहे सन्मुख तुकनि लीक — दास ।
   काम के तुका से फूल गेलि गेलि डारै
   मन और किये डारैं ये कंदबन की डारैं री ।। — कविन्द्र
3. तूती - काम की दूती पढ़ावत तूती, चढ़ी पग जूती बनात लपेटा ।।—देव
   भारथ अकर कर तूतिन निहारि लही याते घनश्याम लाल तोते बाज अस्री।।दास
4. तूदा- ज्यों-ज्यों मोरन को कहति मोर पक्ष धर लाल
   काम खाक तूदा करत त्यों त्यों हनि शर जाल ।। नन्दराम
5. दर - जाके दर दरमादे होइ जात सहजादे
   दीन दुनी को बुजादे हुसन हुसैन है ।। - रस०
   घर-घर दूवार-दूवार गली गली फिरवैया,
   मोर ते पैसत सखि जिनकी कहा दर है ।। — ग्वाल

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दर	प्रत्यय– बहुत, ऊपर में	रसलीन	3	305/13
	गुणा, चीरने वाली	ग्वाल		
	जैसे – सूद दर सूद – ऊपर			
	व्याज पर व्याज, दह दर दह,			
	गुणा 10×10, सफदर- सेनाकी			
	पंक्ति को चीरने वाला ।			
	दरगुजर – दोष देखते हुए गुजर			
	जाना, शब्द के अर्थ में विशेषता			
	पैदा करता है ।			
	दरमियान – बीच (मियान बीच)			
	शब्द सौन्दर्य बढ़ा रहा है ।			
	कुदर – कु उप० – बुरा+दर फा०			
	पु० दरवाजा	वृन्द	5	33/42
	कवि – बुरा स्थान ।			
दरन्दर पु०	दरवाजा	ग्वाल		37/53
	कवि – जगह-जगह			
दर कूच		गंग	1	/328
दर + कूच	दर - फा०पु० अव्ययमें			
	कूच - फा०पु० प्रस्थान			
	मंजिल दर मंजिल ।			
दरगाह[1] पु०	चौखट, देहलीज,	रसलीन	3	308/20
	आस्तान, राजसभा, दरबार	भूषण		60/204
	किसी वली का मजार, रौजा ।			

1. दरगाह - देखे दरगाह यह साह बरकात के ।। -रसलीन

जाय दिली दरगाह सुसाहि को भूषन बैरि बनाय ही लीनो ।।- भूषन

मू०शा०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दरगुजस्त	वि०	बीता हुआ, व्यतीत, भूतकाल	वृन्द	वृ०ग्र०9	156/22
ःरदस्त		दर- फा०अव्य० - में भीतर	नागरी	ना०ग्र०	178/149 मूल रूप
		दस्त- फा०पु० कर, हस्तहाथ			
		पतला, शौच विरेचन ।			
दरबा	पु०	कबूतर आदि के रहने के लिए	बोधा	2	139/2
		काठ आदि का खानेदार संदूक।	केशव	2	551/19
दूरबनि		नि लगाकर बहुवचन ।			
(केशव)		बोधा — वृक्ष का कोटर			
दरबार[1]	पु०	राजसभा, बादशाही कचहरी,	मतिराम	1	302/26
		किसी वली का आश्रम या	रसलीन	3	306/16-17
		खान काह ।	भिखारी	1	69/478
				4	115/9
दरबारे			भूषण		118/23
दरबान	पु०	द्वारपाल, ड्योढीदार	चन्द्रशेखर	ह०ह०	9/53
दस्त	पु०	कर, हाथ, पतला शौच, विरेचन	वृन्द	वृ०ग्र०9	166/275
दस्तगीर	वि०	हाथ पकड़कर सहारा देनेवाला	रसलीन	3	306/14
		अर्थात सहायक ।			
दस्तूर	पु०	नियम विधान, रवाज, मैत्री,	भिखारी	1	21/40
		पद्धति, व्यवहार, हक,			8/40
		कटौती ।			
दहलीज[2]	पु०	बैठक	नरोत्तमदास		

1. दरबार — तुर भरे सो हैं दरबार पोर पोर
देखत ही दरबार शाह लद्ध जू को सुख ।।
पीर दस्तगीर आनि मेरी रछा करिए ।। 14.

2. दहलीज- बेईं हेम हिरन दिखान दहलीज मैं
बेईं मजराज हय गरज पिलन को ।। — नरोत्तमदास ।

मु०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दाऊदी[1]	स्त्री०	गुलदाउदी नामक सुन्दर गुच्छेदार पुष्प । (फा० गुल +दाऊदी)	रस०	5	326/68
दाना[2]	वि०	बुद्धिमान, अक्लमंद	दास		
दादनी[3]	स्त्री०	किसी को दी जाने वाली रकम पेशगी ।	सेनापति	1	15/45
दाम	पु०	फंदा, जाल, जंगली चौपाये, जो हिंसक न हो, दवाओं का एक तौल, रुपये का 40 वां भाग – । पैसे ।	ठाकुर	ठा०श०	25/69
दामनगीर	वि०	दामन पकड़नेवाला, दामन पकड़ कर रोकने वाला ।	भूषण		60/206
दारु	स्त्री०	इलाज, बारूद, अग्निक्रीड़ा, शराब ।	केशव	2	550/14
दारु[4]	स्त्री	बारुद	चन्द्रशेखर	1	33/229 34/230 50/364

1. दाउदी – सेवत हजार मखमल मैं कमल पद
रसलीन पछतानी दाउदी सुहाइ है

2. दाना – प्यारी तेरे दंतन अनारीदाना कढ़ि कढ़ि दाना ह्वै
कै कवि क्यों अनारी कहवाइहैं ।। – दास

3. दादनी – दादनी की बेर जब देनी होत सौं की ठौर बड़े है
निदान तब दो से एक देत हैं ।। – सेनापति ।

4. दारु – गढ मै सोधि सुरंग लगाइ ।
सत सहस्त्र मन दारु पाई ।। – चन्द्रशेखर ।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दिल	पु०	मानस हृदय, उत्साह	भूषण	1	49/161
		उमंग, हौसला, साहस,	बोधा	2	35/3
		हिम्मत, शौर्य, बहादुरी ।		1	4/23
दिल अन्दर (फा०फा०)		दिल के भीतर	बोधा	2	48/55
दिलदार	वि०	प्यार प्रेमिका, माशूका	बोधा	1	6/30, 12/68
				2	54/33
		बोधा – सहृदय, हृदयवाला, प्रिय (2)			
दीद	स्त्री०	दर्शन, दीदार	बोधा	2	46/35
दीदार	पु०	दर्शन, दीद, छवि	,,	2	53/27
दुकान	स्त्री०	सौदा बेचने की जगह	तोष	1	153/253
दुकानदार	पु०	दुकान में सौदा बेचने वाले पेशावर ।	बोधा	1	6/34
दुचंद	फा० वि०	दूना, दुगना	पद्माकर		297
		उत्तम, बढ़िया	द्विजदेव		
दुर[1]	पु०	मोती मुक्ता	पजनेस		
दोस्ती	स्त्री०	मित्रता	बोधा	2	128/70
नख[2]	स्त्री०	रेशम की डोर	बेनीप्रवीण		17/106
नग	फा० पु०	नगीन, का लघु रूप, नग, रत्न, अंगूठी पर जड़ा जानेवाला पत्थर ।	भूषण		147/29

1. दुर = दीन्हो दुर मुरुक में गुलाब को प्रसून गौस
झूलत झुकत झूलि झांकति परी सी है।।– पजनेस
2. लोटन लोटत गुली बंद तीरा रेखला की
नख तंग घाघरा म सुतरी बनाई है ।। – बेनीप्र० 17 पृ०/106 छ०

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
नाज़	कु उपसर्ग फा०पु०	हाव-भाव, नाजोअदा मान अभिमान घमंड गर्व पद्म । कु लगाकर बुरा का अर्थ देता है ।	देवदत्त	1	7/130
नादान[1]	वि०	अनभिज्ञ, मूर्ख, नासमझ	रसलीन	3	303/8
नाफा[2]	पु०	कस्तूरी की थैली, यह थैली कस्तूरी वाले मृगों की नाभि में मिलती है ।	ग्वाल		35/51
नावक[3]	पु०	शिकारी, एक प्रकार का छोटा बाण ।	बिहारी		
निगार[4]	पु०	चित्र, प्रतिमा, बुत, प्रेम-पात्र, प्रेमिका, हाथ पाँव पर मेंहदी से बनाया चित्र । प्रत्यय - चित्रित - जैसे जरनिगार-स्वर्ण चित्रित । कवि -- हसीन, सुन्दर ।	गंग	1	/243
निगाह	स्त्री०	दृष्टि, नजर,	नागरीदास	1	160/75

1. नादान - एसो है नादान जाहि आज लौं न आयो ग्यान
   कबो न तलै अजान आपनौ सुभाव रे ।
2. नाफा - ग्यानिन को ध्यान(ग्यान) अरु ध्यानिन को ध्यानमान
   मानिन को मान फार्यो मृगमद नाफा सौ ।। ग्वाल 35/51
3. नावक - सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर ।। -- अज्ञात
4. निगार - आनन्द होय तबै सजनी, दर सोहब - - -
   यार निगार नशीनम ।। गंग

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
निहाल[1]	पु०	पौधा	मतिराम	2	304/36
	वि०	प्रसन्न, समृद्ध, मालामाल	रसलीन	1	108/558
				2	253/14
नीमा[2]	पु०	नीचे पहनने की कुर्ती, एक पहनावा जो जामा के नीचे पहना जाता है ।	घनानन्द नागरी गंग	1 .	500/754 /801
नील (नीले)	वि०	नील का रंग, नील का पौधा ए लगाकर वि० बनाया कवि – नीला रंग	वृन्द	9	176/368
नेक (नेकी)	वि०	कुलीन, शरीफ, सदय, रहम-दिल, शुभ मुबारक सरल स्वभाव नेकी – भलाई, सज्जनता	भूषण	4	153/51
नै[3]	स्त्री	हुक्के की निगाली नदी, नीति	गिरधरकविराय		
पनाह	स्त्री	रक्षा त्राण हिफाजत	भूषण	1	37/112
		आश्रय, सहारा, प्राणरक्षा	मतिराम	1	302/28
पर	फा०पु०	पंख, पक्ष	नागरी	ना०प्रा०	503/759 (मुहावरा)

1. निहाल - जब सिंगार साजन लगी तब मैं लाल निहाल ।।
2. नीमा - दारिम कुसुम के बरन झीने नीमा मधि
   दीपति दिपति सु ललित लोने अंग की ।।
   – घनानन्द ।
3. नै - हुक्का बांध्यो फेंट में नै गहि लीन्हो हाथ ।
   चले राह में जात है लिए तमाकू साथ ।। –गिरधर कविराय

मु०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
पाक	फा०वि०	पवित्र, शुद्ध, निष्कलंक, स्वच्छ, निर्दोष, निर्मल, निर्लिप्त, सुरक्षित ।	नागरीदास	।	512/42
पाकदिल	वि०	जिसके मन में खोट न हो, अन्तः पवित्र ।	नागरी	ना०प्र०	449/603
पान	पु०	एक प्रसिद्ध पत्ता जो कत्था-चूना लगाकर खाया जाताहै ।	गंग	।	/275
(पाननि)	नि०	लगाकर बहु०वचन	4 नागरी	।	22/27 185/165 188/171
पानदान	फा०पु०	पान रखने की पिटारी	नागरी		221/3
पायक	पु०	पु० हरकारा, पियादा कवि– पैदल	चन्द्रशेखर	ह०ह०	/118
पीर	वि०	वृद्ध, वयोवृद्ध, धर्मगुरु	,,	,,	30/202
		सोमवार, मुर्शिदा	भूषण	।	49/161
पील	पु०	हस्ती, गज, हाथी	,,		48/157
		शतरंज का एक मोहरा कवि – औरंगज़ेब	चन्द्र	।	49/353
पीलवान	वि०	हाथीवान, अंकुशग्राह, उर्दू उच्चारण फीलबान है ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	19/11
पीलबानननि	नि०	लगाकर बहुवचन । हाथी चलानेवाला निषादी			
पेचदार	फा०वि०	जिसमें पेच हो, जिसमें बल हो जटिल, उलझा हुआ । कवि – घुघराले ।	नागरी	।	236/34
पै[1]	पु०	पट्टे के रेशे जो धनुष आदि पर चपकाये जाते हैं, करणकारक का चिह्न से के द्वारा ।			

1. पै – पै बिन ---- कसीस बिन ---- प्रमान है ।।
रघुबीर ---- परै ---- बैठी सी ---- बदन पै ---- ।।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
पोच	वि०	अधम, व्यर्थ, निकम्मा, अश्लील, नीरर्थक, अकुलीन, लोफर ।	दास	2	/89
फरमाना	फा० क्रि०	कहना भू० काल – फरमाया कहा	च०	1	22/140
बंद	पु०	अंग का जोड़, कैद, फंदा, पुश्ता, पेंच, रोक । गांठ, बंद किया हुआ । प्रत्यय– बंधा जैसे पाबंद, जिसके पांव बंधे हो, बांधने वाला, जैसे नाल बंद कवि– बन्धन ।	गंग	1	/131
बंदगी	स्त्री०	प्रणाम, सलाम, पूजा आज्ञापालन	भूषण	2	116/15
बजोर	फा० क्रि० वि०	जोर सहित, तेजी से, फा० अव्यय देखे बजब्र । अ० फा० अव्यय– बलात, जबरदस्ती, बलपूर्वक ।	चन्द्र	1	24/164
बदनाम	वि०	कुख्यात, जिसकी शोहरत बुरे रूप में हो ।	भूषण		26/87
बदनामी	स्त्री०	कुख्याति, अपयश,	पद्माकर	5	/49
बदमस्त	वि०	जो शराब आदि के कारण बहुत अधिक अचेत हो, उन्मत्त, मदोन्मत्त ।	पजनेस	1	33/84
बदरंग[1]	वि०	बुरे रंग का, जिसका रंग फीका हो गया हो । ताश में रंग के विरूद्ध पत्ता । (कवि–अपमान)	भूषण	1	40/125

1. बदरंग – तुरकान गन व्योम यान है चढ़त बिनु मान है चढ़त बदरंग अवरंग मैं ।। -- 40/125

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
बदर	वि०	बाहर	वृन्द	वृ०ग्र०	272/92
बदराह[1]	पु०	डाकू, बदमाश, कुमार्गगामी,	बिहारी	।	343/536
बदी	स्त्री०	पाप, गुनाह, दोष, अपराध	वृन्द	वृ०ग्र०	151/203
		निंदा, बुराई, अपकार, कृतघ्नता ।	नागरी	ना०ग्र०	316/238
		कवि– दुश्मनी, ना०भाग्य में लिख दिया ।			
बरजोर	वि०	अत्याचारी, बलवान	भिखारी	।	106
		कवि– बलपूर्वक			
बरजोरी	पु०	अत्याचार, बल, जबर्दस्ती	,,	।	399
बरबाद	वि०	ध्वस्त, तबाह, नष्ट, बेनामोनिशान, वीरान, विकृत	नागरीदास	ना०ग्र०	508/6
बलंद[2]	वि०	उच्च, ऊंचा	पजनेस	।	37/95
बलदार[3]	वि०	शिकनदार, टेढ़े, घुघराले	ग्वाल		[illegible]
बहार	स्त्री०	वसंत ऋतु, पुष्पकाल, शोभा,	भूषण		142/18
		रौनक, मनोविनोद, कौतुक, तमाशा, आनन्द, अच्छीअवस्था,	ग्वाल	।	35/50 38/58
बहाल	फा०अ० वि०	नीरोग पुनर्नियुक्त, स्वस्थ, खुश अव्यय–पूर्ववत्, यथावत् ।	भिखारी	।	69/477

1. बदराह – बदाबदी ज्यो लेत है ए बदरा बदराह ।। – बिहारी
2. बलंद – छूटे बादबानन बलन्द जे जहाज मानो आवत दिलत नित नेह नदवारे से ।। – पजनेस ।
3. बलदार – ग्वाल कवि विमल बिछात पै विसुधि सोई, बिथुरे सुबार बलदार चित्त चोरे से ।। – ग्वाल

मु०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ०/छ
बाजार	पु०	हाट, बजार	वृन्द	वृ०ग्र०	129/103
बाजू	पु०	भुजा, चिड़ियों के डैने, जिनमें पंख लगे होते हैं। सहायता, बल, गवैए के साथ स्वर मिलाने वाला।	,,	,,	167/287
बादवान[1]	पु०	जहाज में लगाया जानेवाला पर्दा, जिसमें हवा भरकर जहाज चलता है, पोतपट, पाल	भूषण		18/61
(बादबानन-पजनेस)		मरुत्पट।	पजनेस		37/96
	न	लगाकर बहुवचन व ब			
बादशाह	पु०	शासक, राजा	भूषण		
बाब[2]	पु०	सम्बन्ध, योग्य, लायक, दूवार, दरवाजा, परिच्छेद	रघुनाथ		
बारकसी[3]	स्त्री०	घोड़े का एक साज भारवाहर, बोझ ढोना।	पद्माकर		
बारगाह[4]	स्त्री०	डेरा, खेमा, तम्बू, ड्योढ़ी	उदयनाथ		
बारीक	वि०	महीन, पतला, सूक्ष्म लतीफ, गूढ़।	वृन्द	वृ०ग्र०	171/327
बाला[5]	वि०	जो ऊपर की ओर हो, ऊँचा, एक वर्णावृत, भार्या, हाथ में पहनने का एक कड़ा देवी, स्त्री।	व्यास सोमनाथ		

1. बादवान - बर बादवान किरवान धरि जस जहाज शिवराज तुव ।। - भूषण
2. बाब - ताको मिलबो को रह्यो कवि रघुनाथ
   आजु भावतो करत सोज रसो काम बाब की ।। -रघुनाथ
3. बारकसी - सबही पर माहिर जटित जवाहिर होती जाहिर बारकसी ।।-पद्माकर
4. बरगाह - किंकिन की धुनि तैसी नूपुर निनाद सुनि सौतिन के बाढ़त
   निषाद बरगाह की ।। - उदयनाथ
5. बाला - संग सखी परवीन अति प्रेम सो लीन मनि आभरन जोति छवि होति बलाहि
   कोटिक पाप कटे बिकट, छूटके दुख अकुलाइ
   आजु सुफल मानो जनमु लखि बाला के पाइ ।। - सोमनाथ

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
बीबी	स्त्री०	कुलीन स्त्री, पत्नी, स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द, अविवाहित लड़की । कवि – प्यारी ।	नागरी	I	443/581
बेकर (बेकारी)	फास्त्री	काम का अभाव, व्यर्थपन, निकम्मापन ।	बिहारी		
बेताब	वि०	व्याकुल, अधीर, अशक्त, बेचैन	गंग	I	71/237
बेदिल	फावि०	उदास, खिन्न, मनउचाट कवि – बेचैन होता है ।	आलम और शेख		115/272
बेवकूफन	वि०	मूर्ख	ठाकुर	I	26/73
	न	लगाकर बहुवचन ।			
मखतूल[1]	पु०	काला रेशम	देव	I	1/62
			केशव	I	59/20
मनी	वि०	ममत्व, मेरापन, अहंकार	आलम और शेख		115/271
मलंग[2]	पु०	फकीर योगी	बिहारी	I	346/547
मायल[3]	वि०	प्रवृत्त, मिला हुआ	घनानन्द	.	
माही[4]	स्त्री	मछली	केशव	2	519/52

1. मखतूल – लै मखतूल गुहे गहने रस मूरति बंत सिगार कै चाख्यौ ।। – देव
मखतूल के झूल झुलावत केशव भानु मनो ससि अंक लिय ।। – केशव
2. मलंग – कौड़ा आंसू बूंद कसिकर बरुनी सजल|कीन्हे बदन निमूँद,
दृग मलंग डारे रहत ।। – बिहारी
3. मायल – प्रानन प्यारे, भरे अति पानिप, मायल घायल चोप चटावत।।-घनानन्द
4. माही – माही जल मृग के सु तृन, सज्जन हित का जीव ।
लुब्धक धीवर दुष्ट नर बिन कारन दुख कीन ।। – व्रजनिधि ।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
मियाँ	पु	मालिक, पति, महाशय, पहाड़ी राजपूतों की एक उपाधि कवि- मुसलमानी धर्मावलम्बी ।	रसखान	र०रत्ना०	71/50
मियान	वि	मध्य	नागरीदास	ना०ग्र०	502/755
	स्त्री	तलवार की मियान, कोष, कमर, कटि ।			
मीना	पु	शराब का जग, वह रंगीन शीशा, जिससे सोने चाँदी पर नक्काशी होती है ।	वृन्द	वृ०ग्र०	179/387
मुदाम[1]	अव्य	सदैव, हमेशा	द्विजदेव		
मुहचँग		एक टेढे आकार का बाजा	नागरीदास		262/7
(मूल शब्द- चँग)	पु	मुट्ठी, पंजा, हर टेढ़ी वस्तु			
मेज[2]	पु	भोज सामग्री	ग्वाल		
मैदान (जिते)	पु	खुली लंबी चौड़ी जगह घोड़ा दौड़ाने का स्थान कार्य क्षेत्र, समतल भूमि, युद्ध-क्षेत्र । कवि-युद्धमें विजयप्राप्त करना ।	जसवंतसिंह	ज०ग्र० छूटकदोहा	6

1. मुदाम - सो अन्योन्य आयुस मैं दोऊ जहाँ उप कैं कहै कवि दूलह
   यो रचना मुदाम की ।।

2. दूलह बूडति अथाहै कुल धरम निबाहै कौन बावरी ?
   बिलोकि यह उकति मुदाम की ।। — द्विजदेव ।

2. मेज -- सब्जिन सुधारी सेज, मेज मंजू मौजकारी लखत लचारी
   होत ओट मैं किवारी की ।। — ग्वाल

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
यक[1]	वि	एक की संख्या	भूषण		88/305
यक रोज	विपु	एक दिन	,,	।	45/144
यारि	स्त्री	मित्रता, सहायता, कवि– प्रियतमा	बिहारी		198/87
रँगरेज	पु	कपड़ा रँगनेवाला कवि– घोड़ों के धूल से रंग जाने अर्थात् धावे के लिए चलने ही से ।	भूषण	।	37/114
रँगरेजना	क्रि०	रंग भरना, किसी रंग में रंगना रसमय करना ।	बेनीप्रवीण		
रँगामेज[2] (रँग+आमेज) फा० फा०	वि०	रंग मिलाने वाला आमोद-प्रमोद उत्पन्न करने वाला, आनन्दवर्धक ।	ग्वाल		
रफ	स्त्री	गति प्रभाव, ढंग	घनानन्द बेनी प्रवीन		

1. यक -औरन की जो जनम है, सो याको यक रोज
औरन की जो राज सो, शिवसरजाकी मौज ।।
तेरे चतुरंग के तुरंगन के रँगरेज
साथ ही उड़ात रजपुंज है परन के ।। – भूषण 37/144.
उरज उतंग अभिलाषी सेत कंचुकी है ।
राखी ना कछुक चित चोप रंग रेजे मैं ।। – बेनीप्रवीण
2. रँगामेज – साटन के सुख बिछौना विदे सेज पर रँगामेज भेज मनमौज
की निसा करै ।। – ग्वाल
3. रफ – सांझ समै न रहै रफ भानु की ता समै याको सुभाइबो
साधै । – बेनी
प्रिय के अनुराग सुहाग भरी रति हेर न पावति रूप रफै ।।

मु०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
रवाब	पु	सितार के प्रकार का एक बाजा	नागरी	ना०ग्रा०	190/180
रवा[1]	वि	उचित, वाजिब, विहित, हलाल			
		प्रत्यय— पूरा करने वाला जैसे — हाजतरवा, इच्छा पूरीकरनेवाला ।	नागरी	ना०ग्रा०	505/762
	पु	सम्बन्धी, सम्बन्ध रखनेवाला,	पद्माकर		
		रत्न का छोटा टुकड़ा ।कण ।	देव		
रान[11]	स्त्री	जाँघ	पद्माकर		
राह	स्त्री	मार्ग, तरीका, यत्न, प्रतीक्षा, आशा, उम्मीद ।	आलम और शेख	आ०केलि	115/271
राहदारी[2]	स्त्री	चौकीदारी, सड़क का कर, चुंगी महसूल ।	ग्वाल		
रिंद	पु	शराबी, रसिया, निश्चित	नागरी	ना०ग्रा०	189/177
रुख[3]	पु०	अव्यय — ओर, तरफ	देव		
(कुरुख)[4]	पु०	कपोल मुख	भूषण		10/34
रुमाल	पु	हाथ मुंह पोछने का जेब में रखने वाला कपड़ा, करपट।	नागरी		169/119

1. रवा - रन रोस के रवा है कैलाश है श्री सवाई के ।। — पद्माकर
क्यों छुवै अंग पै देखत है जु जराउ तरौना मैं रूप रवा के ।। — देव

11 रान - गोला से गयदंन के गोल खोलिबे में झिलेरान के इसारे लेत
बान के उचट्टा से ।। — पद्माकर

2. राहदारी — ग्वालन ते गोपन ते गहकि गहकि मिलैं ।
गली मैं चली है भली बात राहदारी की ।। — ग्वाल

3. रुख — सुने इतै रंग मौन चितै चित मौन रही चकि चौंकि चहूँ रुख ।।—देव

4. कुरुख =(मुंह बिगाड़ दिया क्रोध कर दिया)
मिलतहि कुरुख चकत्ता को निरखि कीन्हों ।।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
रोज[1]	पु	विषाद, आपत्ति, कठिनाई	बिहारी दास	1	293/370
लंगर[2]	पु	लंगोट, वह भोजन जो सदा गरीबों को बांटा जाता है,	सेनापति	1	15/45
		सदावर्त, ढीठ, बदमाश		वृ०ग्र०	177/380
		समुद्र में जहाज को ठहराने वाला भारी बोझ ।			
लगाम	स्त्री	रास, बाग, कवि का दंता-लिका ।	बिहारी		362/598
लब	फा०पु	अधर, ओठ, ओष्ठ, तट, फूल, किनारा ।	नागरी	ना०प्र०	503/759
संजाब	फा०स्त्री	एक जानवर जो घूस के बराबर होता है । उसकी खाल का पोस्तीन बनता है, जो बहुत अच्छा होता है । कवि – मतलब घोड़े के रंग से है ।	वृन्द	वृ०ग्र०	176/368
समंद	पु	अश्व, घोड़ा	वृन्द	वृ०ग्र०	176/368
सरासर	वि	नितान्त, एक सिरे से	पद्माकर	3	/53

1. रोज -रोज सरोजन के परे हँसी ससी की होय ।। – बिहारी
नारि उरोजबतीति कु रोजनि कान्ह उचाह भरे जिउ रोजनि ।। – दास

2. लंगर – लंगर को दाता अरु भूखन कनक देत एक साधु मनै बीस
बिस्वा राखि लेत है ।। -- सेनापति ।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
सितम	पु	अत्याचार, ईश कोप, गजब,	नागरी	ना०प्र०	505/762
		हठ, बहुत अधिक अंधेर ।	,,	,,	,,
सितमगर		अत्याचारी			
सिपर[1]	स्त्री	ढाल, वह अस्त्र जिससे तलवार को चोट को रोका जाता है।	गंग		
सिप्पै[2]	स्त्री	एक प्रकार की छोटी तोप निशाना (फा)	पद्माकर		
सिपाह	स्त्री	सेना, बल, फौज	भूषण		95/331
सुबुक[3]	वि	सुन्दर, खुबसूरत, हलका	नन्दराम		
सुम	पु	चौपाए का खुर कवि — घोड़े की टाप	पद्माकर	7	
सौदागर	पु	सौदा बेचने वाला वणिक ।	देवदत्त	3	170/3
हरगिज	अव्यय	कदापि, कभी नहीं	वृन्द	9	161/249
हरदम	वि	हरसमय, निरंतर, लगातार	नागरी	ना०प्र०	442/575
हिलाक[4]	पु०	मृत्यु	आलम		
हद[5] (द्द)	अनु प्र०	स्त्री० पराकाष्ठा, किनारा, अनहद्द — बेहद	भिखारी		अ182/छ46 19/46

1. सिपर - सार के प्रहार सांग सिपरि ललार पेलि ऐसे ठौर सिरदार सोर हूय हर के ।। -- गंग
2. सिप्पै - छुटे सब्ब सिप्पे करैं दिग्घ टिप्पे सबै सत्रु छिप्पै कहूँ है न दिप्पे ।। पद्माकर
3. सुबुक- सुबुक है कौनकार बूबू कहौ लाख बार
लाखहूँ के दीन्हें आँखि-आँखि मैं मिलावो नार ।। नंदराम ।
4. हिलाक - मुआ है हिलाक बीच मारना क्या मारे का ।। — आलम
5. कृत व्यक्त रक्त स्रोतस्विनी जत्र तत्र अनहद्द भुज तसु विक्रम कथ्य अकथ्य
जस मध्य समथ दसरथ्थ सुअ ।। — भिखारी

(3) तुर्की मूल शब्द

तुर्की शब्द

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
कारतूस	पूर्त०पु०बारूद भरी वह नाली जिसे बन्दूक में भरकर चलातेहैं ।	बेनीप्र०	1	42/283	
क़नात	तु०स्त्री मोटे कपड़े का पर्दा जिसकी दीवार खड़ी की जाती है । कवि — तंबू ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	12/129 5/27 2/15	कनात क़>क
करबीन[1]	तु०स्त्री० छोटी बन्दूक एक प्रकार का तोडेदार बंदूक जो सौ वर्ष पूर्व प्रचलित थी ।	पद्माकर	1	71/	
कुमक[2]	तु सहायता, मदद कवि-- छोटी बन्दूक ।	द्विजदेव			
क़ुली	तु०पु० सेवकदास स्टेशनों पर सामान ढोने वाला व्यक्ति ।	वृन्द	6	49/81	कुली क़>क
क़ैंची[3]	तु०स्त्री०कतरनी कपड़ा आदि काटने का यंत्र । कर्तनी ।	देवदत्त	3	243/63	कैंची
ख़ातून[4]	तु०स्त्री० सभ्य और शिष्ट स्त्री ।	रसलीन	3	304/10, 12	ख़>ख

1. करबीन — छुट्टै करै बीर चुट्टे करी, कथ दुट्टै इते उत्त बुट्टै ।।— पद्माकर ।
2. कुमक — केलि रस सामे दोउ थकित बिकाने तऊ, हाँ की होत कुमक सुनी की धूम धाम पर ।। -- द्विजदेव ।
3. कैंची — शील लटो तब हौ पलटो प्रगटो सु निरंतर अंतर कैंची । या मन मेरे अनेरे दलाल ह्वै हौ नन्दलाल के हाथ लै बेंची ।।
4. (1) ख़ातून ×× पुन हसन हुसैन ध्यान, कीजै जिय लै यकीन ला असाल कुम सो 304/10
   (2) आदि नबी अली जान जन्नत ख़ातून आन हसम हुसैन जान मारे जो जुलुम के ।। 304/12.

मू०शा०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
खान	तु० पु०	अध्यक्ष, अमीर, सरदार	केशव	2	507/15 520/6	
चाक[1]	तु० वि०	स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, सचेत, तत्पर,	भूषण	3	134/8	चाक क़ > क
		मुस्तइद, चुस्त, चालाक, फुर्तीला	पद्माकर		उदा०	
चिक़	तु०	चिलमन, पर्दा	पजनेस	प० प्र०	16/36-43	चिक
जर	तु० पु०	समुदाय, जन-समूह, जमाअत ढिंढोरा, मुनादी। त् लगा-कर बहुवचन बनाया गया।	भूषण		117/17	जारन
तुजुक[2]	तु० पु०	सज्जा, प्रबंध, सैन्य सज्जा राजसभा की सजावट, विधान, कानून, प्रथा, दस्तूर, अभिनन्दन। भूषण – शान, महत्व।	भूषण		58/198 13/38	तुजुक ज़ > ज
तुपक[3]	तु० पु०	तोप का अल्प रूप, छोटी तोप, बंदूक	केशव चन्द्रशेखर	2	517/29 उदा०	तुपुक
तुफंग[4]	तु०	संज्ञा स्त्री हवाई बन्दूक	सूदन		उदा०	

1. चाक – चंचल चुटीले चिक्क चाक चटकीले सबित सेगर तजै न लोय लंगर लराइ के ।। -- पद्माकर ।
   चाक चक चमूके अचाक चक चहूँ ओर चाक सी फिरति चाक चंपति के लाल को ।। *134/8
2. तुजुक भुभन भनत भौसिला के आय आगे ठाढ़े बाजे भए उमराय तुजुक करन के ।।
3. तुपक लिए तुपुक जार जार जमूरे ।। – चन्द्रशेखर ।
4. तुफंग- तोमर तलब तुफंग दाव लुट्टियो विडी छम ।। सूदन ।।

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
तुर्क[1]	तु०पु०	तुर्किस्तान का निवासी	भूषण	1	24 तुरकान 13/38
		सैनिक, योद्धा, प्रेमपात्र माशुक। कवि- मुगल।	मतिराम	1	304/35 अन्तर्व्यंजन आगम तुरकन
तुर्की[2]	तु०पु०	तुर्क-तुर्किस्तान का निवासी तुर्की का देश, तुर्कों की भाषा।	रसलीन	1	81/406 तुरकी
तुरमता[3]	तु०स्त्री०	बाज की भांति एक शिकारी चिड़िया।	भूषण		105/361 तुरमती अन्त इकारान्त प्रवृत्ति।
तोप	तु०स्त्री०	गोला फेंकने वाला यंत्र	भिखारी	4	102/37
बहादुर	तु०वि०	शूर, वीर, सूरमा	भूषण		22/77
बहादुरी	,,	शूरता, वीरता, शजाअत	,,		
मुग़ल	तु०पु०	तुर्किस्तान का निवासी	,,		124/37
		तुर्क, शुद्ध उच्चारण मुग़ुल है, परन्तु उर्दू में यही है।	वृन्द	9	156/227 ग़ > ग
सू	तु०स्त्री०	शराब	,,	11	294/300

---

1. ग्रीषम के भानु से खुमान को प्रताप देखि तारे सम तारे गए मूंदि तुरकन के।
तुरकान मलिन कुमुदिनी करी है हिंदुवान नलिनी खिलायो विविध विधान सों।।
— भूषण।

2. कछु खुलति कछु नहि खुलति तू तुरकी सी बात।।
— 81/406.

3. तुरमती— तहखाने तीतर गुसुलखाने कूकर
सिलह खाने कूकत करीस है। — भूषण 105/361

(4) संकर शब्द

संकर

दो भिन्न भाषाओं के तत्वों के मेल से बनने वाले शब्दों को संकर (मिश्रित या द्विज) कहते हैं। ये तत्व संज्ञा विशेषण क्रिया या प्रत्यय (पूर्व प्रत्यय, पर प्रत्यय या दोनों) हो सकते हैं।

हिन्दी में पाये जाने वाले संकर शब्दों के निम्न विभाग किये जा सकते हैं :-

(1) ऐसे संकर शब्द जिनके परवर्ती अवयव हिन्दी के अपने (तद्भव) शब्द है- हिन्दी + ईरानी, हिन्दी + अरबी आदि ।
(2) ऐसे संकर शब्द जिनकी परवर्ती अवयव ईरानी भाषा के हैं - ईरानी +
(3) ऐसे संकर शब्द जिनके परवर्ती अवयव अरबी भाषा के हैं - अरबी +
(4) ऐसे संकर शब्द जिनके परवर्ती अवयव संस्कृत के अर्थात तत्सम शब्द हैं - संस्कृत +
(5) ऐसे संकर शब्द जिनके परवर्ती अवयव अंग्रेज़ी के हैं।

(1) हिन्दी + अरबी, फारसी, तुर्की
(2) ईरानी +
(3) अरबी + फारसी, तुर्की, हिन्दी
(4) संस्कृत + फारसी
(5) अंग्रेज़ी
(6) फारसी + संस्कृत, हिन्दी, अरबी ।

हिन्दी+फारसी

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्वनि-परिवर्तन
एक+बार	हि०फा० पु० एकदफा	भिखारी	2	135/212	इकबार
(बार)	फा०स्त्री० बोझ, भार, इजाजत, पहुंच, दफा, मरतबा, गर्भ, प्रत्यय (प्रत्यय) बरसाने वाला जैसे अश्क-बार - आंसु बरसाने वाला ।				

हिन्दी-फारसी

मू०श०		अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
एक+बारगी	क्रि०वि०	एकही समय में अचानक	मतिराम	1	346/277	एकबारगी
चाँदनी+महल्ल[1]	अ०	मकान, स्थान, अवसर	देव	3	221/21	चाँदनी महल
(हि०स्त्री+अ०पु०)		हवेली, बीबी ।		4	280/7	
मुँह+जोर	फा०पु०	बल, ताकत, बस, प्रयत्न ।	बिहारी		598	
		अत्याचार, सहारा,	मतिराम	ल०ल०	333/201	
		तेजी, धाक ।			399/373	
		कवि				
बघ+रु[2]	हि०फा०पु	बाघ के समान (रु- मुखाकृति, चेहरा, मुँह)	पद्माकर	1	28	बघरु
कमखा+अचार —	फापु	प्रसिद्ध खटास, खटाई रसलीन		फुटकल कवित्त	325/66	कमखाचार (संधीकरण)
	हि०स्त्री०	एक वृक्ष या उसके खट्टे फल				
दाब+दार	हि०	रोब				
	फा०	प्रत्यय-वाला	भुषण	1	10/34	दाबदार

अ०फा०

अजब+बहार	अ०फा०वि०	अद्भुत, विचित्र, वसंतऋतु फलों का मौसम, शोभा, रौनक, तमाशा, आनन्द, मनोविनोद, अच्छी अवस्था, परिहास ।	बोधा	3	91/8	

1. चाँदनी महल — बैठी चाँदिनी के कौतुक की चाँदनी सी राधा बिछी चाँदिनी ।। — बिहारी 221/21
दीपनि समीप दीप सिखा ह्वै न पैये देव चंद मुखी चाँदनी महल मिलि जाति है ।। — देव

2. बघरु बघेले करचुली जिनकी न बात कहूँ डुली ।। — पद्माकर ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्व०प०
अदल+खाने	अदल—तर्कयुक्त संगतियुक्त खाने—गृह, आलय, कवि—न्यायालय ।	भिखारी	1	76/519	खानः खाने
अमल+दारी	अ० फा० स्त्री० शासन, सत्ता, राज्याधिकार । कवि—राज्यके लोग, सेवक ।	नागरी	ना० ग्रा०	86/21	अमलदार अन्तइ अ
आलम+गीर	अ० फा० वि० विश्वव्यापी, संसार में फैला हुआ विश्व विजयी । संसार पर अधिकार करनेवाला	भूषण	1	27/90 82/278 76/258 82/279	
		वृन्द	9	265/37	
आलम+नवाज़	अ० फा०—संसार पर कृपा करने वाला । कवि - जगत्पालक आलम—संसार, दशा, नवाज़— —फा० प्रत्यय, कृपा करनेवाला ।	चन्द्रशेखर	ह० ह०	13/78	आलमनिवाज
आलम+बादशाह	—अ० फा० पु०—संसार का राजा	वृन्द	9	271/89	आलम पतिसाह
आलम+पनाह	अ० प०+फा० स्त्री०—संसार की रक्षा करने वाला ।	,,	वृ० ग्रा०	135/138 156/227	आलम-पनाहतु
	पनाह—रक्षा त्राण जान का बचाव	केशव	के० ग्रा० ज० ज० च०	622/38	
	केशव संसार को शरण देने वाला।	भूषण		150/40	
आलम+पनाह+सलामत	अ० फा०+अ०—संसार की रक्षा उ० स्त्री०+स्त्री० करनेवालासुरक्षित, जीवित, तन्दुरुस्त रहें । पु० स्त्री स्त्री ।	वृन्द	9	162/256	आलमपनाँ सलामत

1. मैं ही अकेले गुन औगुन बिचार बिना बदति न जहँ हूवै बड़े अदलखाने —भिखारी

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
आलम+शाह	अ० फा० —संसार का बादशाह या शासक ।	केशव	4	624/63, 640/181	> साहि अन्त इकारान्त की प्रवृत्ति
आशिक+ज़ारज़े	अ० फा० वि०—आशिक—मुहिब, प्रेमी व्यसनी ॰ ज़ार— क्षीण दुबला-पतला, अशक्त, बेजार दीन दुखी कवि— घायल प्रेमी ।	नागरी	ना०ग्र०	507/764	आसिकेजार
आशिक+नवाज	अ० वि०—प्रेमी अनुरागी, लती फा० प्रत्यय – बजाने वाला कृपा करने वाला । कवि—प्रेमियों को तुष्ट करने वाला ।	"	"	" 499/749	> निवाज
इत्र+गुलाब +दान	अ० पु०+फा० प्रत्यय—पात्र, इत्र व गुलाब रखने का पात्र ।	वृन्द	6	49/82	> अतरगुलाबदानी
इश्क+चमन	अ० पु०+फा० पु०— प्रेम बाटिका	नागरी	ना०ग्र०	609/9, 10, 11	11 बार कुल प्रयोग इस्कचिमन
इश्क+तूदः	अ० पु०+फा० पु०—प्रेम+मिट्टी का ढेर, अंबारि राशि समूह । कवि—प्रेम से परितृप्त ।	बोधा	2	122/21	इस्कतुदा
इश्क+नामः	अ० पु०+फा० पु०—प्रेम+ग्रंथ, पुस्तक प्रेमका ग्रंथ । कवि—प्रेम की रचना (ग्रन्थ का नाम) ।	,,	1	1/1	इस्कनामा
इश्क+पियालः	अ० पु०+फा० पु०—प्रेम, प्याला	नागरी	1	252/75	इस्कपियाल
इश्क+बाग	अ० फॅा०—प्रेमोपवन	बोधा	2	91/6	
इश्क़+बाज़ी	अ० फा० स्त्री० प्रेम व्यवहार, इश्क करना ।	नागरी	1	502/757 512/768	इस्कबाजी क़ > क ज़ > ज

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
उम्र+अंदाजः	अ०स्त्री०+फा०पु०—आयु+अनुमान अटकल कियास, विचार, शक्ति, साहस, नमूना, चिह्न, निश्चय, इरादा । कवि- निश्चित उम्र या पूरी उम्र ।	ठाकुर	ठाकुर शतक	13/35	उम्र > उमर अन्दाजः > अंदाज
ऐब+दार	अ०फा०वि०—दोषयुक्त	गंग	1	13	
कत्ल+बाज	अ०फा०प्रत्यय— वध करनेवाला	पद्माकर	3	297	कतलबाज
करम+गुनाह					
कहर+कमान	क्रोध, कोप, गुस्सा, देवी कोप बलाए । अ०पु०+फा०स्त्री०—अस्मानी+धनुष कवि- विपत्ति ढानेवाला धनुष				
खबर+दार					
खातिर+नशा	अ०—शुद्ध रूप खातिर नशीं	वृन्द	वृ०ग्र०		खातर-निशां विपर्यय
	अ०फा०—हृदय में जमने वालीबात, बोधगम्य, हृदयंगम				
खास-दान[1] अ०+फा०	पान रखने का पात्र विशेष	गुमान मिश्र			
गर्ज+मन्द					
गरीब+नवाज[2] अ०+फा०	वि० दीन-दुखियों पर कृपा करने वाला- दीन वत्सल	भूषण ,, केशव	 2	47/154 13/40 501/52	गरिबनिवाज गरीब नेवाज

1. खासदान सो लैइड, बिरी खवासिन बाढ़ ।। — गुमान मिश्र
2. आजु गरीबनेवाज मही पर तो सो तुही सिवराज बिराजै ।।

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
जवाहिर+हार	रत्नों की माला	देवदत्त	2	60/18	जवाहरहारन न लगाकर बहुवचन ।
तबिअत+दार	(फा०प्रत्यय) वाला—भावुक, अ०स्त्री०—धर्म स्वभाव, खासीयत, आदत, मन, दिल, चित्त । कवि— रसिक ।	बोधा	1	6/33	तबियेदार त का लोप अ > ये
दावी+दार अ० फा०	पु० दावा करनेवाला, अपना अधिकार जतानेवाला, मुद्दई	पद्माकर	3	709	दावादारन ɂ का लोप न लगाकर बहु०
नज़र+बंद अ० फा०	वि०—कैद वह व्यक्ति जो राजा देश से किसी एक स्थान पर खुले तौर पर रहे परन्तु न तो कहीं आ-जा सके और न किसी से मिल सके । कैद, जादू का खेल ।	भिखारी	1	/129	नजरिबंद
बै+आनः[1]	पु० वह धन जो मूल्य तय हो जाने पर खरीदार बेचनेवाले को इसलिए देता है, कि बात पक्की हो जाय ।	पद्माकर			बैआनः > बयान
फर्श+बंद					
माल+हम	हममाल — एक जैसे दौलत या				
मुबारक+बाद	अ०का०वि० मुबारक हो, कल्याण हो, खुशखबरी, बधाइयाँ—याँ लगाकर बहुवचन ।	नागरी	ना०प्र०	226/27	मुबारकबादियाँ

1. ज्यौं पद्माकर वीर बयान मैं दै मन मानिक केरि न पैहो ।। — पद्माकर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
सफ़(फ़्फ़)+जंग अ० फ़ा०	सफ़—कतार, जंग—लड़ाई कवि— युद्ध क्षेत्र । सफ़ – कतार रेखा, लंबी चटाई । नमाज में मनुष्य की लंबी लाइन ।	पद्माकर	1	/36	> सफ़ेजंग > सफ़जंग
सफ़े+जंग	अ०फ़ा०स्त्री०—फौज की कतार, सेना पंक्ति । आमने-सामने पंक्ति बाँध कर लड़नेवाली सेना	,,	8	63	> सफजंगी इ लगाकर
हया+दार	अ०फ़ा० वि०— जिसमें लज्जा हो, लज्जाशील, लज्जाशालीन ।	भूषण		115/10	> हयादारी
हरम+खनः अ० फ़ा०	तु० अन्तःपुर	गंग	1	305	हुरमखाने
हुस्न+परस्तिश अ०+फ़ा० अव्यय	– सौन्दर्यपूजा	नागरी	ना०ग्र०	502/757	
हुस्न+परस्ती	– सुन्दर स्त्रियों की कद्रदानी सुन्दर चीजों पर मुग्धता ।				

अ० + तु०

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
आलम + खान	अ० वि०— जगत संसार तु०पु०— अध्यक्ष, अमीर सरदार, बहुत बड़ा और प्रतिष्ठित व्यक्ति ।	केशव	2	507/22	आलमखान ख़ > ख

1. मान मद भंगी सफ़जंगी सैन संगी लिये ।
रंगी रितु पावस फिरंगी स्वांग लायो है ।। – पद्माकर ।

अ0+हिन्दी

मू0शा0	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
आलम	अ0वि0+मित्र, हि0—संसार+मित्र संसार का मित्र ।	केशव		514/50>आलममित्र
इश्क+पंथ	अ0हि0—प्रेममार्ग	बोधा	2	52/17 इस्कपंथ 54/38
इश्क+पयोधि	हि0—प्रेम का सागर	बोधा	2	131/104 इस्कपयोधि
इश्क+मग	प्रेम डगर, प्रेम की राह	बोधा	2	119/43 इस्कमग
क़त्ल+काती	वध करने की कैंची छोटी तलवार, चाकू ।	भिखारी	1	38/264
नज़र+भार	निगाह का भार	भिखारी	2	/36 नजरिभार
मिज़ाज+वंत	मिजाज, प्रकृतिवाले, तबियतवाले घमंडवाले, नखरावाले	पद्माकर	8	1 मजेजवंत

संस्कृत+फारसी

अ+दाग[1]	फा0वि0-बेदाग़, शुद्ध साफ पवित्र	चिंतामणि	1	268/82 अदगु
गज+गौहर	फा0पु0—गुज मुक्ता, गजमोती, गज-हाथी ।	पद्माकर	3	213
कु+जवाब[2] अ0	उत्तर, प्रश्न का जवाब, अस्वीकृतित । इतुकार जोड़, मद्दे, मुकाबिल	भूषण	1	56/186 कुज्वाब ज > जु आदि स्वरलोप

1. चिंतामनि कहै जु और बचन की दौर
   मैन हसो कछु सुखमा के समूह अदगु है ।। — चिन्तामणि ।
2. ~~माधवी न मालती में जुही में न जोयत में~~
   ~~केतकी न केवड़ा में सरस सिताब में~~ ।। — ग्वाल ।

संस्कृत-फारसी

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
द्विवदल-हजार[1] फा	बारह हजारी सेना	लालकवि		द्विवदस > दुसह	
रस+हाल[2]	खुशहाल सुखी प्रसन्न	देव			
सिता+आब[3] सं०+फा०	सिता=मल्लिका (मोतिया या मल्लिका का मकरंद) आब=मकरंद कांति	ग्वाल			> सिताब संधिकरण
सु+रुख[4]	उत्तम, सदय, अनुकूल, घुंघची लाल ।	पद्माकर			
हेम+फ़र्द	सोने का कपड़ा फ़र्द - फा०स्त्री०हिसाब का रजिस्टर, हुक्मनामा, निमंत्रण का सूची पत्र । अ०पु० एक-व्यक्ति, अद्वितीय, रजाई, दुलाई, चादर ।	,, ,,	8	37	हेम फरद

फारसी+संस्कृत

ऐन+मैन[5]	वि० ठीक मोम की भांति ठीक मोम जैसा । -	ग्वाल	।	129/128

1. तौरंग साह कृपा कर भारी मनसब दीन्हों दुसहहजारी - लालकवि
2. नैकु चितौति नहीं चितु दै, रसहाल किये हूं हियेहून खोले - देव
3. माधवी न मालती में जुही में न जोयत में केतकी न केवड़ा में सरस सिताब में-ग्वाल
4. अमल अमोलिक लाल मय पहिरि विभूषन भार
   हरखि हिये परतिय धर्यो सुरुख सीप को हार ।। - पद्माकर
5. मैन की करी सी, ऐन मैन सुपरी सी अरीबेसुब परी सी,
   फैन बूंद मुखमरी सी ।। - ग्वाल, 129/128.

फारसी–संस्कृत

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
मिजाज+मणि[1]	गर्व शिरोमणि अत्यंत गर्वीला अतिशय घमण्डी ।	देव		मजेजमनी	
कंद+मूल	कंद अ० – सफेद दाना दार शकर कंद फा०– शकर शर्करा खंड कवि– (1) खांड या शकर से बनी खाने की वस्तु । (2) जंगल में पाई जानेवाली मीठी जड़े जो खाने के काम आती है ।	भूषण	2	114/8 /13	
रंग+भवन	आनन्द-गृह,	गंग		226	रंग+भौन
शिकस्तः जबाँ					
शिकस्ताः+वाणी –	फा०वि० खंडित वाणी टूटी-फूटी वाणी बोलने वाला तुतला कर बोलने वाला, अटक-अटक कर बोलने वालाजो शुद्ध भाषा न बोले ।				बैनसिकासी वाणी > बैन शिकस्तः > सिकासी

फारसी+हिन्दी

गुलाब+कली	गुलाब का बिना खिला फूल	भिखारी	2	119/140	
गुलाब+जल	गुलाब के फूलों का चुआया हुआ अर्क	,,	1	154/296	
गुजस+त[2]	प्रार्थना करना, चाटुकारित	,,			गुदरत

1. सेज पै सौति के जनि साल, मनोज के ओज मजेजमनी की ।। – देव
2. मीत न पैहै जान तू यह खोजा दरबार जौ निसि दिन गुदरत रहे ताही को पैठार ।। – दास

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गुल+चाँदनी पु० स्त्री०	फूल+ज्योत्स्ना, एक प्रसिद्ध फूल जो प्रायः चाँदनी रात में ही खिलता है ।	देव	दे०ग्रा०प्र०	/61 गुलचाँदनी
जाने+मन पु० +	प्राणाधार प्राणों का प्राण अर्थात् प्रेमिका ईश्वर(मू०श०जानेमों) कवि- प्रिय	नागरी	ना०ग्रं०	499/748 जान मन
तख्तराज				
दिलचोर	हृदय, उत्साह, साहस,हिम्मत वीरता, रुचि दानशीलता । कवि- हृदय चुराने वाला ।	भिखारी	4	164/36
मए+भीनी	शराब+हल्की सुगन्ध कवि – शराब में डूबे हुए	तोष	सुधानिधि	मय भीनो ए > य नी > नो
रंग+धाम पु०	फा०- रंग, वर्ण, रंगने का मसाला, आनन्द, खुशी, शोभा पद्धति, भोग-विलास,आचार व्यवहार, रंग-ढंग, होली का अबीर गुलाल आदि, बदन या चेहरे की रंगत विचित्र स्थिति धाम- घर	गंग		236
सरासर[1]+ सेत	फा०वि० पूर्णतया॥ पूर्णतया प्रकाशमय श्वेत- सफेद	पद्माकर		सरसेत सर का लोप

1. सांस लेत सरसे समूहन सुगन्ध लेत
सारी के सिरी सों सरसेत मन ह्वै रहै ।। – पद्माकर ।

फारसी+हिन्दी

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
संगीत+पौन	सख्त, कड़ा, कठोर, दुष्कर + वायु, हवा, प्रेतात्मा जीव तीन चौथाई				

फारसी–अरबी

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
अज+गैब[1]	स्त्री आज – अव्य से गैब – परलोक, नियम, भाग्य मूल अर्थ – स्वर्गीय, प्रभुता, शोभा	पद्माकर	8	7	अलगैबी
खुश+जाहिर	फा०वि०+अ०वि०–प्रसन्न, सुन्दरी, प्रिय-दर्शन, पवित्र, नेक, श्रेष्ठ । ज़ाहिर – प्रकट स्पष्ट, प्रत्यक्ष कवि– देखने में प्रसन्न ।	नागरी	ना०ग्रा०	500/760	खुशजाहिर ख़ > ख ज़ > ज
दिल+माहिर	– मन के मर्म का ज्ञाता, प्रिय	बोधा	1	2/10	दिलमाहिर
फा० अवि० माहिर–	दक्ष, कुशल, सहृदय		2	22/10	
नमक+हलाल अ०वि०	कृतज्ञ, स्वामी भक्त, हकशनास				
नमक+हलाली	–फा०अ०पु० – कृतज्ञता	वृन्द	वृ०ग्रा०	173/33।	नमक >निमक
पुर+नूर	फा०अ०वि०– ज्योतिर्मय, प्रकाशमान, रोशन ।	आलम और शेख	आ०के०	115/27।	पुरनूर
बद+जाती	फा०अ०स्त्री– नीचता, छल, धूर्तता, खबीस ।	ग्वाल		47/80	
बद+सूरत	फा०अ०वि०– बदशक्ल, कुरूप बुरी सूरत ।	भूषण	.	/47।	

1. कहै पद्माकर त्यौं तारन बिचारन को विगत-गुनाह
अजगैबी गैर आब की ।। – पद्माकर ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
बहर +हाल	फा०अ०क्रि०— हरहाल में हरप्रकार से जैसे बने वैसे ।	भिखारी	।	69/477	
बेश+कीमती	फ०अ०वि० — बहुमूल्य	ग्वाल	।	48/83	बेसकीमती
बे+हाल	फा०अ०वि० — अचेत बेखबर	बिहारी		629	
बे+हिजाब	फा०अ०वि० — बेपर्दा	नागरी	ना०ग्र०	177/148 505/762	
बे+इख़्तियार	फा०अ०वि०— सहसा, बेतहाशा, अधिकारहीन, विवश ।	नागरी	ना०ग्र०	500/751	बेअख़्तयार इ > अ ख़ > ख
बे+इन्साफ़	फा०अ०पु०—बिना न्याय का	नागरी	,,	509/16 (विपर्यय)	बेनिसाफ फ़ > फ इन > नि
बे+कस्त्र	फा०अ०स्त्री०— बिना कमी, बिना त्रुटि, बिना खामी । कवि — अत्यन्त	पदमाकर	।	114 कस्त्र > कसर	बेकसर
बे+तकल्लुफ़	फा०अ०वि०— घनिष्ठ गहरा निःसंकोच, संतोषपूर्वक, आराम से । कवि—स्वाभाविक	नागरी	ना०ग्र०	501/754	फ़ > फ
बे+नज़ीर	फा०अ०वि०—अद्वितीय, अनुपम	नागरी	ना०ग्र०	498/748	ज़ > ज
बे+फिक्र	फा०अ०वि०—निश्चित, बेपर्वा, अदूरदर्शी, अभय, निडर ।	भूषण		97/340	बेफिकिर क्र > किर समीकरण
बे+मेहर	फा०अ०वि०—निर्दय, बेरहम	नागरी		368/387	बेमहरम अन्तर्व्यंजन आगम ।
बे+वस्वसः	फा०अ०पु०— बे खौफ, (बुरा खयाल अनिष्ट की शंका, भ्रम, वहम)	,,	ना०ग्र०	510/19	बे उसवास व > उ सु > स स्वरभक्ति वसः > वास विपर्यय

मु०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
बेशक	फा०अ०वि०— निःसंदेह, अक्षय जरूर	नागरी	नाग्रा०	504/761	श > स
बेशकीमत					
बे+हाल	फा०अ०वि०—अचेत, बेखबर, बदहाल, मरणासन्न ।	भिखारी	।	69/477	बिहाल बे > वि
बे+हवास (स)	फा०अ०पु०—अचेत बेसुध, बेहोश, हवास—हास्सः का बहुवचन, इंद्रियां, चेतना, सुध, होश ।	पजनेस	प०प्र०	31/78	
मस्तेजाम	फा०अ०वि०— विचारमग्न जाम — अ०पु०— विचारधारणा ।	नागरी	ना०ग्रा०	505/762	मस्तेजाम ऍन का लोप
मस्त+हाल फा०वि०अ०पु०	मस्त— नशे में चूर उन्मत्त, अचेत, बहुत अधिक प्रसन्न बेपर्वा । हाल—दशा, वृत्तान्त झूमना । कवि— तल्लीन ।	नागरी	ना०ग्रा०	504/761	मस्तहाण
मेह +नजर	फा०स्त्री०+अ०स्त्री० दया+नज़र दृष्टि, विचार, ध्यान, जांच, कुदृष्टि । कवि—दयादृष्टि, कृपा नज़र ।	वृन्द	वृ०ग्रा० 9	150/201	महर नजर
रंग +महल	फा०अ०पु०— बड़े लोगों के भोग-विलास का स्थान, रंगशाला	नागरी	ना०ग्रा०	437/560	
रंग +रक्स	फा०अ०पु०—आनन्द वर्ण खुश रक्स— दृश्य, नृत्य, नाच ताड़व कवि— नाच के मजे में (युद्ध में कटी लाशों का नृत्य है) ।	भूषण		105/359	रंग रक्त

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
रुर +सम		पजनेस		
लबे आब	फा०अ०पु०—पानी का किनारा कवि— नदी के किनारे	नागरी	ना०प्र०	503/759
सरु +खाना	फा० (सरु-पराजित)			

साधारण ध्वनि परिवर्तन

ध्वनि परिवर्तन :

क़	क
ख़	ख
ग़	ग
ज़	ज
फ़	फ
श	स

ध्वनि परिवर्तन

क़ > क

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
अरक़	अ० पु० जल, दवाओं का खींचा हुआ पानी, मदिरा शराब , पसीना, आसवरस तु० कोट दुर्ग ।	भिखारी	1	50/350	
आशिक़	अ०वि०—प्रेमी अनुरागी, मुहिब, व्यसनी, लती	भिखारी	2	147/262	
		बोधा	1	1/22, 6/33, 15/89	
		नागरी	नाग्र	504/761, 509/11, 15, 17. 510/20.	
इश्क़	अ०पु०—प्रेम अनुराग, मुहब्बत, लत	बोधा	1, 2	1/2, 6/33, कई स्थान पर 133/14, 16.	
		नागरी	नाग्र	185/165, 166, 186/167, 189/177, 116/115, 183/160, 167/94.	
इश्क़ नजर	प्रेम दृष्टि	नागरी	नाग्र	502/756	
क़तार	स्त्री०शुद्ध कितार है परन्तु उर्दू में क्तार ही बोलते हैं —पंक्ति पंगत, पांति ।	भूषण	3	135/10, 512.	
क़ंद	अ० सफेद दाना दार शकर, शर्करा ।	पद्माकर	8 3	38 298	> कंद
कंद	फा०स्त्री०—कंद शकर शर्कर, खंड एक प्रकार की मिठाई ।				
क़दम	अ०पु०—पद पैर एक कदम की दूरी ।	ग्वाल	1	45/75	

मु०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
क़नात	अ० पु०—पटी हुई नाली, माला, रीढ़ की हड्डी । तु० पु०—मोटे कपड़े का पर्दा, जिसकी दिवार खड़ी की जाती है ।	वृ०	वृ० ग्रा०	181/412
क़बूल	अ० पु०—स्वीकृत, मंजूर, मंजुरी, सबेरे की ठंडी हवा ।	भिखारी	4	30/24
करार	पु०—स्थिरता, सुकून, प्रतिज्ञा, इक्रार, चैन, अराम, वादा।	मतिराम		397/342
		भिखारी	2, 1	93/23, 30/210
		वृन्द	5, 6	33/41, 63/61
		कृपाराम	1	5/355
		जसवंत	1, 2	57/28, 76/28.
क़सम	स्त्री०—शपथ, सौगंध	भूषण	2	116/14
		बोधा	2	93/22
क़ाज़ी	वि०—न्यायकर्ता, मुन्सिफ, निकाह पढ़नेवाला, देने वाला, अदा करने वाला,	,,	2	54/41
		रसलीन	3	/11
		गंग	1	/152
क़ाफ	फा० पु०—एक उर्दू अक्षर कोहे-काकशिया जहाँ का सौन्दर्य प्रसिद्ध है ।	पजनेस	प० प्र०	33/84
क़ाफी	वि०—पर्याप्त अत्यधिक बहुत जियादा	बोध	2	121/12
क़ाबिल	अ० वि०—विद्वान, योग्य, पात्र, उचित, कुशल । दक्ष	केशव	2	498/2
क़िरान +सानी— अ० पु०+ अ० वि०—कर्न का बहु० जमाने, युग, समीपता, योग सानी — दूसरा अन्य ।		वृन्द		156/227

मु०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
क़ुरान	अ० पु०—क़ुर्आन, मुसलमानों का धर्म-ग्रन्थ, जो उनके मतानुसार आस्मानी किताब है, शुद्ध उच्चारण क़ुर्आन ही है, परन्तु फ़ारसी वालों ने क़ुरान भी लिखा है । अतः यह भी शुद्ध है ।	भूषण	2	116/14, 118/21
क़ुली दीवान				
क़ुली	तु० पु०—सेवक, दास नौकर, स्टेशनों पर सामान ढोनेवाला व्यक्ति । दीवान – फ़ा० पु०—न्यायालय, कचहरी, मंत्री, वजीर, अर्थमंत्री, गजलों की किताब ।	वृन्द	6	49/81
क़ैंची[1]	तु० स्त्री० कतरनी कपड़ा आदि काटने का यंत्र ।	देवदत्त	3	243/63
क़ैद	अ० स्त्री०— गिरफ़्तारी जेल की सजा	भूषण	1	541, 49/61, 116/14
कैफ़	अ० पु०—मद, नशा, हाल, आनन्द सुरूर ।	बोधा	2	57/8
क़ौल	अ० पु०—बात, कथन, वचन, प्रतिज्ञा, इक़रार, वादा ।	भूषण	4	462, 150/41
ख़ालिक़	अ० वि०-सृष्टिकर्ता, ईश्वर	नागरी		510/20
गुलक़ंद	फ़ा० पु०—गुलाब के फूल और खांड के मिश्रण से बनी हुई एक औषध कवि— एक प्रकार का मीठा ।	पद्माकर	8	38

1. क़ैंची – शील लटो तब हौं लपटौं प्रगटो सु निरंतर अंतर कैंची
या मन मेरे अनेर दलाल ह्वै हौं नन्दलाल के हाथ लै बेची ।।

मु०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जौक़	अ० पु०— स्वाद मजा, लुत्फ लेना आनन्द, हज मजाक रुचि	आलम और शेख		115/272
तहक़ीक	अ०स्त्री०— जाँचपड़ताल, तलाश,	वेणीप्र०		54/382
	विदित, दरयाफ़्त, अनुसंधान ।	वृन्द	11	273/111
ताक़त	अ०स्त्री०— शक्ति, बल, जोर, सामर्थ्य, शक्ति, साहस, मजाल, उत्साह, उमंग, हौसला, सत्ता, राज हुकूमत, पात्र जर्फ़ ।	भूषण	1	37/112
नक़ी[1]	अ०वि०— पवित्र निर्मल, पु०- बारह इमामों में से दसवें ।	रसलीन	3	304/12
नक़ीब[2]	अ०पु०— वह व्यक्ति जो राजा की	पद्मा०	हि०ब०	81
	समय आगे आवाज लगाता है ।	बोधा	2	135/33
	चोबदार । अर्थ—चारण, भाट	केशव	1	275/509
	कवि—बंदीजन ।	भूषण		148/36
नाहक़[3]	फा०अ०वि०—अकारण, बेसबब, अन्याय, अनीति, नाइंसाफी	रसलीन	1	92/462
		देवदत्त	1	7/30
			4	282/23
		भूषण		121/31
		पद्माकर	3	63
		भिखारी	1,2	23/152, 129/183
		बोधा	1,2	7/33, 52/18

1. अली रजा तकी पुनि नकी ।
2. छैल छल छोभक छपाचर चुरैल आगे पीछे गैल-गैल रेल वारत नकीब से ।।—देव
3. होइ नहीं हूवै के मिटै नाहक हू जिहिमान ।
   कहै उत्तमा मध्यमा अधमा युक्त प्रमान ।।
   भूषन भनत बहि कुल में नयो गुनाह नाहक समुझि
   यह चित्त में धरत हौ ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
बक़ा	अ०स्त्री०— नित्यता, अनश्वरता, दवाम, अस्तित्व, बुजुद, जीवन, जिंदगी, रक्षा, सलामती ।	बोधा		
बेक़रारी[1]	फा०अ०स्त्री०—व्याकुलता, आतुरता	ग्वाल		64/124
रक़म	अ०स्त्री०—लिखना, अंक, रूपया, पैसा, धन, माल । प्रत्यय— लिखनेवाला जैसे ज़ूद रकम अर्थात् तेज लिखने वाला ।	बिहारी		282
लाइक़	योग्य विद्वान पात्र मुस्तहक	पद्माकर	3	163
हक़नाहक़	हक अ०+नाहक़ फा० , जबरदस्ती निष्प्रयोजनव्यर्थ ।	देवदत्त	4	296/16
हक़ (क्क)	अ०पु०—सत्य, सच, यथार्थ, वाकई यथाचित, स्वत्व, अधिकार, पारिश्रमिक, रिश्वत, ईश्वर ।	ग्वाल	1	45/75

ख़ > ख

अमीर +	अ०वि०—धनाढ्य	भूषण	1	149/36
ख़ान	तु०पु०— अध्यक्ष, बहुत बड़ा और प्रतिष्ठित व्यक्ति ।			
आख़िर	अ०वि०— अंत, आखिर, अंततः पिछला । पु० अन्तपरिणाम फल	बोधा	1	6/33

1. ए रे जदुवीर तू न जाने पर पीर पीर मौर दृग तीर
तानि भौहैन कमान की ।।
बैठी बेकरारी वृषभान की कुमारी हाय खारत न हास्सार
खेलत न सानदकी ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
आख़िरी	अ०वि०—अंतिम पिछला, निश्चित, कतइ ।	बोधा	2	59/23 आख़िरी
ख़ंजर	अ० पु०—छुरी, भुजाली, पेश, कब्ज ।	भिखारी	2	91/12, 128/178
		नागरी		499/749:509/18
ख़त (त्त)	अ० पु०—रेखा, पत्र, मूछ, दाढ़ी, लेख, परवाना, चिह्न, ललाट, के ऊपरी बाल ।	भिखारी	1	11/56
ख़ता[1]	अ०स्त्री०—दोष अपराध, पाप, गुनाह, भूल, त्रुटि ।	भूषण		315,96/337.
ख़बर	अ०स्त्री०— सूचना संवाद संदेश, पैगाम, समाचार, हाल, मुहम्मद साहब का प्रवचन ।	भूषण		436,102/355
		नागरी		85/20,316/239
		भिखारी	2	155/299
		बोधा	2	138/56
ख़बरदार	अ० फ०वि०— सचेत, सतर्क, सावधान, चेतावनी देने का शब्द	बोधा	2	45/23
ख़बीस[2]	अ०वि०—अन्तः कुटिल, दुष्ट व भयंकर व्यक्ति,	भूषण	493	106/361
ख़राब	अ०वि०— बिगड़ा हुआ, विकृत दूषित, अपवित्र, बुरा, नीच, बदमाश, बरबाद, विरान, मतवाला, बदचलन ।	आलम और शेख	आलमकेलि	115/272

---

1. खता — जाहु जानि आगे खता खाहु यारौ गढ नाह के
   डरत कहै खान यों बखान के ।। — भूषण
2. खबीस — खडगी खजाने खरगोश खिलवत खाने
   खीसैं खोले खसखाने खांसत खबीस हैं ।। — भूषण

ख़ > ख

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
ख़राद	फा०पु०—लकड़ी खरादने की क्रिया लकड़ी खरादने का यंत्र, शुद्ध शब्द खरात है, परन्तु उर्दू और फ़ारसी में खराद ही है ।	भिखारी	2	97/40	
ख़याल	अ०पु०—विचार ध्यान कल्पना मति राय स्मृति याद भ्रम अनुमान अन्दाज : एक कविता ।	आलम शेख	आ०के०	114/169	ख्याल आदि स्वर लोप
ख़वास[1]	अ०पु०—खास का बहुवचन, खास लोग खास्स का बहुवचन, गुण धर्म खासियते ।	गंग	1	/324	
	स्त्री०शाही महल की वह दासी जो बादशाह के पास एकान्त में आती-जाती है ।	नागरी		415/507	
		मतिराम	1	383/180	
	कवि-सेवक	भूषण	1	90/312	
ख़वासीन	केशव- दहेज में वधु के साथ आने वाली लौंडी । खवास में इन प्रत्यय जोड़ कर बहुवचन ।	केशव	1	199/371	
ख़स+ख़ास (खस)	फा०स्त्री०+अ०वि० ख़स—एक सुगन्धित जड़ (गाडर की जड़) । खास(स्स) विशेष मुख्य प्रधान । कवि—उत्तम खस का इत्र ।	पद्मा०	3	/198	

---

1. खवास – लोगन सो मनि भूषन यों कहै खान खवास कहा सिख देहों
   एसे जिय भास ते जु लाज के खवास ते .
   कहै न खवास ते कि उठि जाऊ पास ते – ग्वाल (दासी के अर्थ में प्रयुक्त)

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ख़सूर	अ०वि०—दिवालिया	बोधा	22	213/36
	कवि — अपराध			
क़ुसूर	अ०पु०—हवेली, दोष, त्रुटि,			
	कमी ।			
ख़्वार	फा०वि०— अपमानित जलील	वृन्द	वृ०ग्र०	
		नागरी		5/16
ख़्वारी	फा०स्त्री०अपमान			
	अनादर, दुर्दशा, बदहाली	बोधा	कामकंदला	215/54
		आलम और शेख़	आ०के०	115/271
ख़ाक	फा०स्त्री०धूलि, रज, गर्द,	भूषण	1	75/254, 105/360
	मिट्टी, भूमि, जमीन			122/33, 142/18
ख़ातिर	अ०स्त्री०—वह विचार जो मन में	ग्वाल	1	48/81
	उत्पन्न हो । हृदय, मन,			
	सम्मान, सत्कार , लिहाज,			
	आदर, लिये ।			
ख़ादिम	अ०वि०—दास, सेवक, नौकर	बोधा	2	56/56
ख़ादिम:	,, नौकरानी दासी			
ख़ारिज	अ०वि०—निकलने वाला, निकला	पद्माकर	3	599
	हुआ रद किया हुआ बहिष्कृत			
ख़ास	अ०वि० विशेष मुख्य प्रधान	बोधा	2	38/25 >खास्स
(ख़ास्स)				

1. ख़ारिज — पानी गये ख़ारिज परवाल ज्यों पुरानी है ।। —

पद्माकर ।

मु०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ख़िज़्र[1]	अ० पु०—एक अमर पैगम्बर, जिनके अधिकार में वन है, और जो भूले भटकों को राह बताते हैं। एक समुद्र कैस्पियन लम्बीआयु का फरिश्ता।	रसलीन	3	302/5
ख़िताब[2]	अ० स्त्री०—उपाधि संबोधन मुख़ातब सरकार की ओर से मिली उपाधि	"	"	306/15
ख़ुदा[3]	फा० पु०—परमात्मा	भूषण	2	116/14
	अल्लाह	बोधा	1	15/85
ख़ुदाई	फा० स्त्री०—संसार ईश्वरत्व, ख़ुदापन वि० दैवी, गैबी, आस्मानी	केशव	4	623/55
ख़ुमार[4]	अ० पु०—नशे में उतार की अवस्था, जिसमें हल्का सिर दर्द और हल्की ऐठन होती है। नशा, उन्माद, मद।	नागरी		506/764, 323/261.
ख़ुमारी	अ० फा० वि० नशे में मस्त	,,	ना० ग्र०	315/236
ख़ुश	फा० वि० प्रसन्न, मुबारक, सुन्दर, प्रियदर्शनि, पवित्र, नेक उत्तम	तोषा	सु० नि०	126/102
		नागरी		499/749
ख़ुशअदा	फा० वि० जिसकी अदाएं अच्छी हो, जिसका वर्णन शैली अच्छी हो।	,,		506/763

1. मूसा को न राख्यो छिन जान के अजान जिन
   सोइ ख़िज़्र आप तिन हैदर सिखायो है ।। — रसलीन
2. आली जिनके जनाब हिंद को दई है आब
   हिंदुलवली ख़िताब विधि बानी दीन है ।। — रसलीन
3. ख़ुदा की कसम खाइ है।
4. ख़ुमार —

मु०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ख़ुशदिल	फा०वि०जो हर समय प्रसन्न रहे, प्रसन्न चित्त, जो विनोद प्रिय हो । मनोरंजक ।	नागरी	ना०ग्र०	500/750
ख़ुशमिज़ाजी	फा०अ०स्त्री० जिन्दादिली, हास-प्रियता, सुशील, खुश । कवि-- प्रसन्नचित्त ।	,,	,,	500/757
ख़ुशरू	फा०वि० रूपवान अच्छी शकलवाला रूपवती, सुरूपा ।	केशव	4	623/55
ख़ुशामदी	फा०वि० ख़ुशामद करने वाला, चापलूस, उल्लापी ।	कृपाराम	1	4/183 श > स
ख़ुशी	फा०स्त्री० हर्ष आनन्द	बोधा	2	128/70
	संच बच्चे की पैदाइश बाल जन्म स्वीकृति, खुश ।	नागरी	ना०ग्र०	128/10
ख़ून	रक्त, वध	नागरी	,,	509/17,443/581
ख़ूनी	फा०वि० खून में सना हुआ	,,		500/755
	खुन का, खुन मिला हुआ	बिहारी		336/511
ख़ूब	फा०वि० सुन्दर हसीन उत्तम	बोधा	2	191/16,28/22, 13/43
	खुशनुमा, शुभ, मुबारक(अव्यय) वाह-वाह क्या ख़ूब बहुत कवि-- पूरी तरह से ।	नागरी	ना०ग्र०	449/748,443/581, 509/14,511/34.
ख़ूबी	फा०स्त्री० गुणसुन्दरता, हुस्न उत्तमता अजूबापन शराफत कला विशेषता नवीनता ।	बोधा	2	86/26
ख़ेश	फा०पु० स्वयं खुद स्वजन अजीज दामाद । कवि-- नाता रिश्ता	केशव	4	630/99.

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ख़ैबर[1]	अ०पु० अरब का एक दुर्ग जिसे हजरत अली ने जीता था । कवि- एक दरवाजा जिसे हैदर ने फतह किया था ।	रसलीन	1	201/108,6
ख़ैर	अ०स्त्री० कुशल मंगल,शुभ,उपकार, पुण्य, प्रदान, बख्शिश,अव्य-अस्तु ।	आलम और शेख़	आलम केलि	115/272
ख़ौफ	अ०पु० भय, त्रास, डर,शंका, शुबहा ।	बोधा	2	208/72
तख़्त	फा०पु० बड़ी चौकी राजा के बैठने की चौकी, राज्य ।	पद्माकर	8	19
नाखुश	फा०वि० अप्रसन्न नाराज रोगी बीमार, क्रुद्ध ।	नागरी	ना० ग्र०	501/754
बलख़	फा०पु० अफगानिस्तान का एक प्राचीन नगर जो इस समय एक छोटा-सा गाँव है ।	सोमनाथ	ग्र०	148 पृ०
बख़ील[2]	अ०वि० कंजूस, कृपण	बेनीप्र०	नायिकाभेद	4/6
बेखुद	फा०वि० अचेत बेसुध	आलम और शेख़	आ०केलि०	114/169
सख़्त	फा०वि० कठोर कड़ा अत्यधिक तीव्र प्रचंड तेज दुःशील निर्दय दुष्कर कठिन बहुत बड़ा	नागरी	ना०ग्र०	499/749

1. ख़ैबर – जेहि ख़ैबर ते जाइ कै आये सब मुख मोरि ।
   हैदर ने तिहि द्वार को बिहसत डार्यौ तोरि ।। – रसलीन ।
2. बख़ील – पति प्रेम नेम जैसे गहत बख़ील हेम
   गुरुजन सेवा में प्रवीन बेनी मेवा कंधु ।। बेनीप्रवीण
   (नायिकाभेद, नवरस तरंग)

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
सखुन	फा०पु० दोनों ही शुद्ध है परन्तु उर्दू में सुखन ही अधिक व्यवहृत है ।			
सुख़न	फा०पु० वार्ता, कथन, शब्द ध्वनि, बातचीत वादा कविता शेर शायरी । प्रवचन ।	नागरी	I	512/38

ग़ > ग

ग़नीम[1]	अ० प्रतिद्वन्द्वी, वह राजा जो किसी दूसरे राजा पर आक्रमण करे	मतिराम भूषण	I I	322/131 ग़ > ग 59/200
ग़म(म्म)	अ०पु० खेद, शोक, कष्ट, डाह ईर्ष्या, संताप, चिन्ता,	आलम और शेख	आलम केलि	115/272
ग़रज़	स्त्री० इच्छा, स्वार्थ, आशय, मकसद, सम्बन्ध, प्रयोजन, मतलब, जरूरत ।	भिखारी	I	70/480
ग़रीब[2]	अ० वि० विदेशी दरिद्र असहाय दुखी	मतिराम बोधा	3 2	374/58 118/39

1. ग़नीम— (1) महाराज सिवराज चढ़त तुरंग पर ग्रीवा जतिनें करि गनिम अति बल को ।
दिग विजय काज महूम की । अरि देख देसन धूम की ।
गूजर गलीम लगाइके सु बन्देलखंड हि आइके ।। पद्माकर ।

ग़रीब — (1) काम गरीबन को करै जे अकाज के मित्र
जो माँगिय सो पाइये ते धनि पुरुष विचित्र ।। — दास
(2) भूषन कोऊ गरीबन सो भिरि भीमहु ते बलवंत गनायो ।। — भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
		नागरी	ना०प्र०	505/761
ग़रीबन	न प्रत्यय लगाकर बहुवचन	केशव	2	501/52
		भूषण	1	58/195
ग़रीबी[1]	अ०स्त्री० घरबार से दूरी, दरिद्रता,	भिखारी	4	225/29
	दीनता, लाचारी।	भूषण	2	114/7
ग़रूर	वि० छली, धोखेबाज	,,		270
		देवदत्त	1	5/107
			2	179/59
ग़लत	पु० अशुद्ध, असत्य, त्रुटि, अनुचित।	नागरी	ना०प्र०	86/21
ग़लीज़[2]	वि० गाढा, निविड, विष्ठा, मल, प्रगाढ, सघन।	रसलीन	3	319/48
ग़ाज़ी[3]	मजहबी लड़ाई लड़ने वाला,	भूषण	1	58/198
	धर्मयोद्धा, धर्मवीर कवि० शिवाजी के नाम के साथ सम्मान में लगाया है (भूषण)	रसलीन	3	306/15
ग़ाफिल	वि संज्ञाहीन, बेहोश, असावधान बेखबर, आलसी।	बेनीप्र०		51/357
		पद्माकर	5	23
ग़ालिब[4]	जीतनेवाला, विजयी, श्रेष्ठ, शक्तिशालीजबरदस्त।	,,	1	196
			3	526
			8	7

1. ग़रीबी —आगरे अगारन ह्वै फांदती कगारन छ्वै बांधती न वारन मुखन कुम्हिलानियां। कीबी कहैं कहा औ गरीबी गहे भागी जाहिं बीबी गहे सूथनी सु नीबी गहे रानिया।। — भूषण।
2. गलीज— स्वेद सी पसीज रही काम जल भीज रही निपट गलीज ऐसी जैसी नादी धूप की।।
3. ग़ाजी — दीन के नगारे बाजे जब इसलाम गाजी आए अजमेर काजी ख्वाजा मोनदीन है।। — रसलीन।
4. ग़ालिब— गुल पर गालिब कमल है कमलन पै सुगुलाब।। — पद्माकर।

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गिज़ा	स्त्री० भोजन, खुराक, अन्न	नागरी	ना०ग्रा०	504/761
गुलाम[1]	पु० लड़का बालक दास	भिखारी	4	252/43
	आदिख, पराधीन,	रसलीन	3	301/3
	महकूम ।	केशव	2	502/63
गुलामी[2]	स्त्री० दासता, बँदगी, महकूमी पराधीनता	भिखारी	4	30/24
गुवार[3]	पु० (अ०-गुबार) धूल, गर्द, मन में दबाया हुआ क्रोध			
ग़ैरआब[4]	बेपानी	पद्माकर	8	78
ग़ोल	तु०सं०पु० मुख्य सेना, झुंड, समूह, सेना का मुख्य भाग, जिसमें सेनानायक रहता है ।	बिहारी	1	242/217
तेग़[5]	फा०स्त्री० तलवार खड्ग	रसलीन	2	261/49
		बोधा	2	22त/42
		भूषण	1	43/134

1. गुलाम – काम है मेरो तमाम यहै सब जाम गुलाम तिहारे कहाऊँ ।।–दास
2. तौ विनती करि औरत पास कहाइके आप गुलाम नबी को ।।
– रसलीन ।
2. गुलामी – जा मग सिधारे नँद नँद वृजस्वामी दास
जिनकी गुलामी मकरध्वज कबूलि गो ।। – दास 30/24.
3. गुवार – जैसे मँझधार नाव आँधी के गुवार आए
बार आय सकत न पार जाय सके हैं ।। ग्वाल
4. ग़ोल– हलकी फौज हरौल ज्यौं परै गोल पर भीर – बिहारी
5. तेग – तिरछी चितवन ते चलन, चितवन कितो होय
लागत – तिरछी तेग जब कटत वेग कछू नहि होय ।। 261/49

ग़ > ग

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दग़ा[1]	फा०स्त्री० छल, वँचना, ठगी,	भूषण	1	30/99
	मक्कारी	बोधा	2	50/11
दग़ादार	दगा देने वाला, धोखेबाज, छली			
दग़ा+दार	विश्वासघाती, प्रिय (बोधा)	,,	1,2	11/64,57/11
	प्रत्यय ।			
		पद्माकर	3	522
दग़ाबाजी	फा०स्त्री० विश्वासघात, कटकर्म,	भूषण	3	130/2
	फरेबकारी ।			
दाग़	फा०पु० चिह्न, धब्बा, निशान,	भूषण	4	150/41
	किसी की मृत्यु का गम, कलंक	देवदत्त	3	211/15
	दोष, अपराध, दुख, क्लेश,			
	रंज ।			
दिमाग़	अ०पु० मस्तिष्क, बुद्धि, अहंकार,	नागरी	8	449/603
	गर्व, बर्दाश्त, होश, खयाल,			
	ध्यान, गर्व लाना ।			
बाग़[2]	फा०पु० उद्यान, आराम, बाटिका,	भूषण	4	15/42,/23
	गुलिस्ताँ, कागज की फुलवारी,	देव		
	लगाम, वस्त्र ।			
बाग़ी	अ०वि० विद्रोही, बगावत करने	वृन्द	वृ०ग्र०	166/275
	वाला, अवज्ञाकारी, सरकश ।			

---

1. दगा —दानव आयो दगा करि जावली दीह भयारो
   महामद भूषण बाहु बली सजा तेहि मेटिबे
   को निरके पधारयो ।। 31/99.
2. बाग— देव दिखैयन दाग बने रहे बाग बने तें बरोठोइ लूटे ।। देव

ग़ > ग

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
बेग़म	तु०स्त्री० श्रीमती, महोदया, पत्नी बीबी । शुद्ध उच्चारण बेगिम है, परन्तु उर्दू में बेगम ही व्यवहृत है । ताश की एक पत्ती ।	भूषण	2	116/13
	फा० जिसे कोई चिन्ता न हो ।			
बेग़रज़ी	अ० फा० निस्वार्थता, ख़ुलूस कवि– किसी की परवाह न करने वाला ।	पद्माकर	4	44
सोग़ात	तु०स्त्री० उपहार, तोहफा	ग्वाल	1	95/202

ज़ > ज

ڈ ज़ाल > ح जीम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
अज़ान	अ०स्त्री० नमाज का बुलावा, नमाज कीसूचना के शब्द जो जोर से पुकारे जाते हैं ।	पद्माकर	जगद्वि०	23/83
		केशव	ज०न०च०	626/75
	हिन्दी – अनजान, अबोध ।			

ज़ाल > जीम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
इ़ज़्ज़त	अ०स्त्री० सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा, सतीत्व, मान, मर्यादा, आबरू पद ।	वृन्द	8	72/229
		रघुनाथ	दू०छ०	54/8
गज़	फा०पु० नापने की लकड़ी जो सोलह गिरह या छत्तीस इंच की होती है । झाऊ का पेड़	रघुनाथ		

ज़े > ज़ीम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गज़क[1]	फा०पु० शराब के साथ खाने की चीज़ एक मिठाई जो शकर और तिल से बनती है ।	भूषण		538
		पद्माकर		

---

1. गज़क–कहे पद्माकर त्यों गजक गिजा है सजी सेजै है
सुराही हैं सुरा है अरु प्याला है ।। – पद्माकर ।

ज़ > ज

मूल०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ज़ंजीर[1]	फा०स्त्री० शृंखला, साकर	भूषण	।	97/340
	क्रम, कड़ियों की लड़ी	रसलीन	।	78/393
ज़ंजीर ज़ेर	फा०स्त्री०+वि० बन्धन+परास्त, अधीन । कवि— बँधन से पराभूत	गंग	।	/16
ज़ख़्म	फा० पु० आघात घाव अनिष्ट हानि, ज़रर ।	नागरी	ना०ग्रं०	512/44 ख़ > ख
ज़बर	फा०पु०वि० ऊपर, शक्तिशाली, भारी । कवि— लंबे, बड़े ।	गंग	।	/226
ज़बरदस्त	फा०वि० शक्तिशाली, प्रचंड, बहुत तेज़ ।	वृन्द	वृ०ग्रं०	156/227 द्वित्व आगम
ज़बराना (ज़बर)	क्रि०स० जोर दिखाना बल प्रदर्शित करना(आना-प्रत्यय)	रघुनाथ		
ज़बाँ	फा०स्त्री० जीभ, देश की बोली, भाषा, करार, वचन ।	बोधा	2	141/22
ज़बान	फा०स्त्री० जबाँ	,,	2	69/24
ज़बानी	फा०वि० मौखिक, कंठ वर, जबाँ मुँह से ।	,,	2	142/31
ज़रदोज़ी	फा०स्त्री० कारचोबी, सल्मेसितारा, व ज़री का काम ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	3/17
ज़रबफ़्त	फा०पु० सोने चाँदी के तारों से बना हुआ कपड़ा ।	नागरी	ना०ग्रं०	159/106

1. जंजीर — झूलत झलमलात झूलै जरबाफन की जकरे जंजीर जोर करत किरिरि है ।
सोच बड़ो मन मैं उपज्यो तन मैं बड़ी विह्वलता जबरायो ।।
— रघुनाथ ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ज़रबाफ	फा०वि० जरबफ़्त बनाने वाला,	भूषण	1	83/283
	कवि– ज़रबफ़्त ।	केशव	2	553/25
ज़रकशा	फा०वि० सोने-चाँदी के तारों से कलाबत्तू बनाने वाला, सोने-चाँदी के तारों से बना हुआ	मतिराम	2	300/13 ज़े > ज 323/140 श़ > स 320/122
	कपड़ा ।	रसलीन	3	334/87
ज़रकशी	फा०स्त्री० कलाबतू का काम सोने-चाँदी के तारों का काम ।	बोधा	3	68/14
	बोधा– सोने के तारों से निर्मित	भिखारी	1	46/313
ज़रतार (जरतारी)	फा०वि० सोने के तारों से बना या गुथा हुआ । जरी । कृ०– सोने के तारों या बादलों वाली।			जरतार > जरतारी
ज़रा	तु०वि० तनिक अल्प थोड़ा	नागरी	ना०प्र०	510/24 ज़े व ज़ाल दोनों लिखने में प्रयोग होते हैं ।
ज़री[1]	फा०वि० सोने का बना हुआ	देवदत्त	1,3	79 176/46 334/10
ज़रीदार दार- प्रत्यय (वाला)	फा०वि० सोने का बना हुआ सोने-चाँदी के तार, जिन पर सुनहला मुलम्मा हो, गोटा-किनारी का कपड़ा ।	पजनेस	प०प्र०	35/88
ज़वाल[2]	अ०पु० गिराव पतन अवनति कमी ।	भूषण चन्द्रशेखर	1	23/73

1. ज़री – पीरो झगा पटुका बिन छोर छरी कर लाल जरी सिर फेंटा ।।–देव 176/46

2. जवाल – (1) साहिन को साल भयो ज्वाल को जवाल भयो ।
हर को कृपाल भयो हार के विहार को ।। – भूषण

(2) ज्वाल सो कला निधि जवाल सी जोन्हाइ
जोति सीसा के अवास यही दावा सो दगत है ।।–चन्द्रशेखर

ज़ > ज

मु०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जहाज़	अ० पु० समुद्र में चलने वाली बहुत बड़ी नाव, पोत	भूषण	1	47/154 18/61
		मतिराम	2	342/257 357/353 399/368 375/71
		देवदत्त	3	196/28
		केशव	2	605/30
	जिहाज	,,		211/398
जुबान	फा० स्त्री० जबान किसी देश की बोली, करार, वचन, कथन	भिखारी	4 1	252/43 7/33
		बोधा	2	208/70
जुल्फ़	फा० स्त्री० केशपाश, बालों की लट, कनपटी के पास वाले बाल केश । जुलुफ(आगम)	,,	1 2 1	9/51 48/51 14/79
		पद्माकर	3	495
ज़ेर	फा० वि० निम्न नीचे आधीन निसहाय, नाताकत, परास्त बेकस ।	भिखारी	1	39/261
ज़ेरदस्त	फा० वि० अधीन, वशीभूत, दीन दुखी, असहाय ।	वृन्द	वृ० ग्रा०	166/275
ज़ेवर	फा० पु० आभूषण, भूषण, गहना जेउर-रसखानि ।	देवदत्त	2, 3	109/79, 191/35
ज़ोम[1]	अ० पु० धारणा गुमान ख्याल अहंकार घमंड ।	पद्माकर	3	709/
		भूषण	2, 3	105/360, 132/5
		दूलह		

1. जोम - सखि नैनन के जनि जोम करौ इनके सँग सोहत कंज बनो दूलह ।

ज़ > ज

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ज़ोर[1]	फा०पु० बल, ताकत, बस काबू प्रत्यत्न, अत्याचार, जबरदस्ती, आश्रय, प्रबलता, तेजी धाक रोब	पद्माकर	3	709
		भूषण	2	127/47
		मतिराम	2	321/129 319/122
		रसलीन	3	334/87
		केशव	2	503/74
		कृपाराम	1	त०1/31
		भिखारी	1	55/338
ताज़ी	फा०वि० अरबी, अरब की भाषा अरब का घोड़ा, अरब का रहने वाला, शिकारी कुत्ता ।	पद्माकर	6	41/
तेज़	फा०वि० जिसमें धार हो, तीव्र प्रचण्ड, शीघ्र, कुपित, होशियार दक्ष, जोशीला, उत्साहपूर्ण, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान, तत्पर, दूरतक देखने वाला(नजर), महँगा ।	आलम और शेख	आ०केलि	114/169
नाज़	फा०पु० हाव-भाव, मान, गर्व	गंग	1	/237
नाज़नी	फा०वि० मृदुल, कोमल, नाजुक, सुकुमारी, सुन्दरी । कवि-नायिका ।	ग्वाल	1	48/81
बाज़	फा०पु० एक प्रसिद्ध पक्षी प्रत्यय- शब्दों के अन्त में लगने से शौकिन आदि का अर्थ देनेवाला जैसे - नशेबाज़	भूषण	4	143/19

1. जोर - जर कैस जोर तोरे कंचन घोरे देत जाकी जीन जटित नगन
बाज कहाँ मृगराज कहाँ अति साहस में शिवराज के आगे ?

ज़ > ज

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
बाज़ी	फा०स्त्री० कौतूहल, खेल, शर्तपरा, धोखा । हिन्दी—घोड़ा	देव	सु०	381 - खेल
			दे०म०प्र०	4/57-चालाकी
			,,	6/20 घोड़ा
बाज़ूबंद	फा० बिजायठ, भुजबंद, बाँह का एक आभूषण ।	पद्माकर	3	161
मालजादी	अ०फा०स्त्री० वेश्यापुत्री, व्यभि-चारिणी एक गाली ।	वृन्द	वृ०ग्र०15	350/146
मिज़ाज	अ०पु० स्वभावआदत प्रकृति तबियत नाज घमंड ।	भूषण	1	80/276 ज़े > ज
रोज़	फा०पु० दिवस, दिन, दिवा	मतिराम	3	411/521
रोज़गार	फा०पु० उद्योग, व्यवसाय, समय युग ।	भिखारी	1	65/455
वज़ीर	अ०पु० मंत्री	गंग	1	/295
हज़ार	फा०वि० दस सौ की संख्या	भूषण	2	116/16
	दस सौ का अंक	भिखारी	1	25/168
हज़ारी	फा०वि० एक हजार वाला एक हजार से सम्बन्धित	वृन्द	वृ०ग्र०	175/363
				ज़ोय > ज
अज़ीम	अ०वि० महान बहुत बड़ा विशाल, विस्तृत	नागरी	ना०ग्र०1	500/752
अज़ीमुश्शान	अ०वि० बहुत बड़ा महान, विशाल महामान्य, बड़े मर्तबेवाला ।	वृन्द	वृ०ग्र०	114/714 अजीमुश्शान >अजीमुस्सान श > स
काज़िम[1]	अ०वि० क्रोध की बात पर क्रोध न करने वाला धैर्यवान, इमाम मुसारिज की उपाधि ।	रसलीन	फु०कवित्त	304/1211

---

1. काज़िम - जाफर से हैं अमीन काजिम कलाम के ।।

मू0श0	अर्थ	कवि	रचना	पृ0/छ0
ज़ालिम	अ0वि0 अन्यायी, अत्याचारी,	भूषण	2	124/39
	निर्दय, कठोर, निष्ठुर	केशव	2	487/36
		भूषण	1	19/62
जाहिर	अ0वि0 व्यक्त, प्रकट, स्पष्ट,	पद्माकर	3	1,2,8,80
	प्रत्यक्ष, वाज़ेह ।	भूषण	1 2	4/10,42/130, 120/28.
		भिखारी	1-2	37/253,117/131
नज़रबाज़	अ0फा0 ताड़नेवाला, पारखी,	नागरी	ना0ग्रा0	185/166
	आँखें लड़ानेवाला, देखनेवाला।	वृन्द	वृन्दग्रा0	156/227
नज़र	अ0स्त्री0 दृष्टि, विचार और,	आलम और शेख	आलम केलि	115/271
	ध्यान, ख्याल, जाँच, परख			
	कुदृष्टि ।			
नाज़िरः	अ0स्त्री0 नाजिर की स्त्री, नाजिर-			
	अ0पु0-दर्शक, एक कर्मचारी			
	कवि—वह मुख्य परिचारिका जिसके			
	हाथ में अन्तःपुर का प्रबन्ध रहता			
	है ।			

ज़्वाद > ज

मू0श0	अर्थ	कवि	रचना	पृ0/छ0
गज़ब	अ0पु0 खुदाई, कहर, अन्याय,	पद्माकर	हि0ब0	99
	ज़ुल्म, आपत्ति ।		1	
	कवि— आफ़त, विपत्ति, बेढब		3	295 124
	बोधा— अनर्थकारी	बोधा	2	26/43
ज़िया	अ0स्त्री0 प्रकाश, ज्योति चमक,	नागरी	ना0ग्रा0।	500/751
	सूर्य का प्रकाश ।			
नब्ज़	अ0स्त्री0 नाड़ी शिरा रोग निदान	पद्माकर	हि0ब0	187/
	के लिए देखी जानेवाली नाड़ी ।			

---

1. पाय म्लेच्छ उमराय काय यह क्य अवनि अवतार
धरि जैहि जालिम जग दंडियत ।।

ज़ > ज

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
मौज़ा	अ० पु० स्थान, जगह, ग्राम, गाँव ।	वृ०	वृ०ग्रा०	119/36
राज़ी	अ०वि० प्रसन्न, खुश, संतुष्ट,	नागरी	6	71/10
	मुत्मइन, अंगीकृत रिजामंद	आलम शेख	आलम केलि	114/169
हौज़	अ० पु० पानी का पक्का कुंड, जो मस्जिदों या बागीचों में होता है ।	ग्वाल	1	24/23

फ़ > फ

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
कैफ़ी	अ० वि० मतवाला, मत्त,	नागरी	1	कैफ़ी > कैफी 167/94
	मदोन्मत्त, मख़मूर, प्रेमोन्मत, कवि- रंचन	बोधा	2	122/21
जाफ़र	पु० नहर, नदी, खरबूजा, चौदह इनामों में से एक ।			जा'फ़र > जाफर
फ़ौज[1] फौजनि (बहुव)	स्त्री० सेना, बल, वाहिनी, लश्कर	भूषण	1	47/154 फ़ौज > फौज
वफ़ा	स्त्री० प्रतिज्ञा, पालन, भक्ति-निर्वाह, निबाह, कवि-सहेज कर रखना ।	मतिराम	2	303/30, 323/140, 317/105.
फ़ंद	अ० पु० छल, कपट, फरेब, कवि- जाल ।	सोमनाथ	सो०ग्रा०प्र०ख०	/282
फ़कीर	अ०वि० भिक्षुक, मंगता, भिखमंगा, सन्यासी, दरवेश ।	भूषण	1	91/315

1. फ़ौज - बिना ही बुराई ओज बिना काज धनी
फ़ौज बिना अभिमान मौज राज सिवराज के ।। - भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
फ़रस	अ० पु० अश्व, घोड़ा	वृन्द	वृ० ग्र०	179/391
फ़सादी	अ० वि० फसाद करनेवाला, उपद्रवकर्ता । कवि – अन्तिम सीमा तक झगड़ा करनेवाला (असीम, बेहद्द)	रसखान	रत्ना०	172/9
फ़िदा	अ० वि० (1) (2) न्योछावर, निसार			
फ़िराक़	अ० पु० पृथक्ता, ध्यान, धुन	नागरी	ना० ग्र०	500/759
मुसाफ़िर	अ० पु० यात्री, राहगीर, गरीब, मुसाफिर ।	गंग	।	83
सूफ़	अ० पु० ऊन, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, ऊन गोटा बुनने का बाना	देव	दे० मा० ग्र०	4 : 60
सैफ़	अ० पु० तलवार	नागरी	ना० ग्र०	511/28
हरीफ़	अ० पु० जिससे मुकाबला हो, प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु, जिससे लाग-डाट हो, रक़ीब, प्रतिनायक, एक नायिका के दो प्रेमी, परस्पर ।	तोष	।	182/419
हातिफ़	अ० वि० पुकारनेवाला, कवि– स्वर्गीय संदेश देनेवाला ।	नागरी	ना० ग्र०	505/762

फ़ारसी

				आफ़त > आफत
आफ़त	फा० स्त्री० आपत्ति, विपदा, मुसीबत, दुःख, कष्ट, तकलीफ, शामत ।	पद्माकर	ज० वि०	23/83
		भूषण	·	493
		नागरी	ना० ग्र०	500/750, 502/757

फ़ारसी फ़० > फ

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
फ़रेब	पु० छल, कपट, धोखा, शुद्ध-उच्चारण, फ़िरेब है परन्तु उर्दू में फ़रेब है । प्रत्यय- छलने वाला जैसे - दिलफ़रेब ।	देवदत्त	1	7/130
तायफ़[1]	स्त्री० फा० वेश्याएँ और उनके साथ रहनेवाली मँडली, वेश्या ।	घनश्याम		
फ़ानूस	फा० पु० लैम्प की चिमनी, जिसमें से रोशनी छनती है, आलोचक, बड़ी क़िंदील ।	नागरी	ना० ग्रं०	351/7

श > स

आशिक़	अ० वि० प्रेमी अनुरागी मुहिब, व्यसनी, लती ।	भिखारी	2	147/262
इश्क	नशा	बोधा	2	1/2, 6/77, 15/89
इशारत (इशारः)	अ० स्त्री० संकेत ईमा तात्पर्य, मतलब, इशारा	नागरी	ना० ग्रं०	501/754, 504/761 509/11, 15, 17, 510/20
ऐश	अ० पु० भोग विलास, व्यभिचार, खाने-पीने का सुख, कॉक-आराम	नागरी	8	503/759
ताश[2]	अ० पु० एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा, जरबफ़्त ।	ग्वाल	1	102/48 उदा०

---

1. तनत तरंग तान तोमद कलश तैसी तायफा तड़ित गति भरत नई नई ।।-घनश्याम

2. ताश - तासन की गिलमैं गलीचा मखतूलन के ।
   उनकी खवासी तो न कीनो जोरि कर है ।। ग्वाल 102/48

   करि अग्ग साह नीसान भुल्लि, लखि भूप
   हसम हर कह्यो फुल्लि, जह तह हसम खसम बिन भये ।। केशव
   खसम सकल चहुवान मे लिनो तबै छिनाय ।। जोधाराम

मूoशo	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ताश	फाoपुo बड़ा, तश्त, परात, वह कटोरा जलघड़ी की नाद में पड़ता था सुनहरे तार का जड़ाऊ कपड़ा ।			
रौशन	अoविo दीप्त प्रकाशित उज्वल स्पष्ट, चमकदार ताबा ।	नागरी	नाoग्रo	506/763
शराब	अoपुo मदिरा, सुरा, कदंबिनी हलिप्रिया ।	,,	,,	500/751
शरीक	अoविo भागीदार, हिस्सेदार शामिल ।	देव	सुo प्रेoचo	68,393,503, 774. 3:4
शान	अoस्त्रीo वैभव, शान शौकत प्रताप, इकबाल, तेज जलाल, श्रेष्ठता, बुजुर्गी ।	चन्द्रशेखर	हoहo	16/100
शामिल	अoविo सम्मिलित, एकत्र, एक-जगह, अन्तर्गत, भीतरी, संयुक्त भागीदार, सहकारी, मददगार ।	वृन्द	वृoग्रo	164/262
शाइर	अoपुo कवि, शाइरी करनेवाला	नागरी	नाoग्रo	501/754
हब्शी	अoविo हब्श का निवासी	वृन्द	वृoग्रo	156/227
	हबसीन— बहुवचन	भूषण	[illegible]	122/33
		,,		53/173
हशाम[1]	अoपुo स्वामी के लिए लडनेवाला, नौकर, चाकर, सेना, वैभव, ऐश्वर्य	केशव जोधाराम	2	519/52

1. हशम- करि अग्ग साह नीसान भुल्लि लखि भूप
हसम डर कह्यो फुल्लि जह तह हसम
खसम बिन भये ।। — केशव
हसम सकल चहुवान ने लिनो तबै छिनाय ।। — जोधाराम

श > स

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
तलाश	तु०स्त्री० खोज, जुस्तजू	बोधा	2	145/61, 145/62
		भिखारी	1	6/28
			2	161/325
तलाशी	तु०स्त्री० खोज, ढूंढ कवि– उपमान ढूंढनेवाली	भिखारी	2	60/280, 292, 325, 103/61
आतश	फा०पु० अग्नि, आग	पद्माकर	4	/40
		नागरी	ना०ग्र०	500/753
		वृन्द	वृ०ग्र०	172/330 168/290
आतशबाजी	फा०स्त्री० बारुद के खिलौने बनाने का काम। अग्निक्रीडा– कवि– बारुद के खिलौने जलने का दृश्य।	बोधा वृन्द	2 9	224/2, 5 163/256
आशना	फा०स्त्री० प्रेमिका, नायिका			
आश्ना	फा०पु० मित्र, दोस्त, जार उपपति, यार, परिचित, जानकार।	सेनापति	1	
कश्मीर	फा०पु० भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश।	रघुनाथ	दु०उल्ला	50/9
खरगोश	फा०पु० शशक, खरहा उदा० खबीश में	भूषण	1	106/361
गश्त	फा०पु० चक्कर, गर्दिश, पर्यटन, दौरा, थानेवालों की रात में घूम फिर कर देख भाल।	वृन्द	वृ०ग्र०	162/256

1. आश्ना – मध्य रस सिंधु मानौ सिंहल तें आइ वह
तेरी आसनाऊ गुन गहो तीर आइ है ।।– सेनापति ।

श > स

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गश[1]	फा०वि० सुन्दर, हसीन, नाज से इठला कर चलने वाला(वाली) वि० मूर्च्छित, बेहोश (बेहोशी)	रसलीन	1	75/376
गोश[2]	फा० पु० कान, श्रवण	पद्माकर		
गोशः	फा० पु० घर का कोना, एकान्त, कोण ।	देव	सु०वि०सु०	2:47 770
गुलाबपाश	फा० पु० सभा आदि में गुलाब जल छिड़कने का यंत्र ।	ग्वाल	1	63/120
जश्न	फा० पु० उत्सव, समारोह, प्रकाश, ज्योति ।	भूषण भिखारी	1 2	58/198 जश्न > जस्न 314 मध्य स्वरागम
ज़ीनपोश	फा० पु० जीन के ऊपर डालनेवाला कपड़ा ।	वृन्द	वृ० ग्र०	136/256
जोशन[3]	फा० पु० कवच जिरिह, अँगदबाजू बँद ।	केशव	3	472/38
तरकश	फा० पु० तीर रखने का लम्बा खोल जो कमर में लटकाया जाता है, तूणीर, निषंग ।	केशव	2	504/95
(तरकशमय)		बोधा	2	104/40
तराश[4]	फा०स्त्री०कटाव, काट, छाँट	केशव		> तरसै

1. गश - सौति हार तकि नवल तिय मिस गस के ठहराइ
   पिय आवत गुन मुकुत को गूँदति माल बनाइ ।।
2. गोश- दै लिखि वाहन मे ब्रजराज, सुगोल कपोलन कुंज बिहारी
   त्यों पद्माकर या हिम में हरि गोसे गोविन्द गरे गिरधारी ।। -पद्माकर
3. चलत भइ चकचौंध बाँधि बखतर बर जोसन ।।
4. तराश — तिनही तिनही लखि लोभ डसै पट तंतुन ज्यों तरसै ।। केशव ।

श > स

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
तराश	कवि- तराशकर, खराद कर	भिखारी	2	46 > तरासि
तोशक	फा०स्त्री० पलंग पर बिछाने का रुईदार गद्दा । घर गृहस्थीका सामान, खाने पीने की सामग्री	ग्वाल	1	33/46
दरपेश[1]	क्रि०वि० आगे, सामने फा०अव्य० किसी समस्या या कार्य की उपस्थिति - जैसे मुआमला दरपेश है ।	पजनेस	प०प्र०	29/73 > दरपेस
निशस्तगाह	फा०स्त्री० बैठने का स्थान, दीवानखाना, कवि-बैठक, आसन ।	नागरी	8	501/754 निसस्तगाह
निशा[2]	का०स्त्री० इच्छा संतोष, प्रबोध मुहावरा निसाभर जीभर तृप्ति	ठाकुर		
निशान	फा०पु० अलामत धब्बा दाग खोज पता सुराग झंडा पताका । भूषण - डंका	पद्माकर भूषण केशव	6 2 2	68, 119 112/3, 118/20 509/49
पेश	फा०पु० समने प्रथम पहले	भूषण	1	42/134 > पेस
पेशकश	फा०स्त्री० पुरस्कार नजराना प्रस्ताव, प्रार्थना, कवि-अगुवाई ।	सोमनाथ	सो०ग्र०प्र०ख०	पृ० 4.
बेश	फा०वि० अधिक जियादा मीठा तेलिया, सिंधिया, कवि-अत्यंत	पद्माकर	6	/6

---

1. दरपेश - फरस दुरुस्त दरपेस खसखानन में, झालरन मुकुता मुकेस झरिबो करे ।। - 29/73

2. निशा- आज निसा भरि प्योर । निसाभरि कीजिए । कान्हर केलि खुसी मैं ।। - ठाकुर ।

श > स

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
मुश्क	फा०पु० कस्तूरी का			
मुश्की	फा०वि० मुश्क जैसा सियाह	पद्माकर	6	/97
	मुश्क जैसा सुगन्धित			
	कोक– कस्तुरीका, काला घोड़ा			
शबीह[1]	फा० चित्र, तस्वीर, फोटो, मिस्ल	पद्माकर	3	/513
सरशार[2]	फा०वि० निमग्न, ऊपर तक भरा	पद्माकर		
	हुआ, परिपूर्ण, लबरेज़, छलकता	नागरी	ना०ग्र०	500/75 । सरसार >
	हुआ, उन्मत्त, मस्त ।	सोमनाथ		सरसाल र > ल 48/120, 121
शहाब[3]	पु० लाल रंग रक्त वर्ण	पजनेस	1	44/112
		दास	4	25/54
शादी	फा०स्त्री० हर्ष, आनन्द, विवाह,	नागरी	ना०ग्र०	127/7
	ब्याह ।			

1. शबीह – हित गाढी अहो इत ठाढी कहा लिख काढी सबीह
सी सोहती हौ ।। – चन्द्रशेखर ।

2. (1) कहै पद्माकर सुगन्ध सरसार बेस विथुरि बिराजै बार
हीरन के हार पर ।। – पद्माकर ।

(2) जानतु मेरो कठोर हियो जु कियो सरसाल मनौज नै झांकी
नैननि मै घट मैं अटकी खटकै वह बाकी विलोकनि बाँकी ।। सोमनाथ

3. शहाब – कोमल गुलाब से सहाब से अधिक आब
गोल-गोल शोभित सुबेस स्वच्छ हैरे है ।। – पजनेस ।
मनि पजनेस जपा जायक सहाब आब
स्वच्छता अनूप लसै छाजत छटा की है ।
साहिब सहाब के गुलाब गुड़हर गुर ईंगुर प्रकास
दास लाली के लरम है ।। – दास

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
शाबाश	फा०स्त्री० शादबाश का लघु० प्रोत्साहन देने और हिम्मत बढ़ाने वाला, एक शब्द जो बड़े लोग छोटों के अच्छा काम करने पर कहते हैं ।	चन्द्रशेख	ह०ह०	28/181 38/272
शाल	फा०स्त्री एक ऊनी कामदार चादर	गंग	।	/64
शाह	फा०पु० बादशाह शासक राजा	सोमनाथ	सो०प्र०	212/
		चन्द्रशेखर	ह०ह०	
	कवि— अल्लाउद्दीन			23/148,162 30/202,203
	नि लगाकर बहु० बनाया	भूषण	।	4/10
शीर[1]	फा०पु० क्षीर, दूध, शीतल, जल ।	गंग नागरी व्रजनिधि		
शिकस्त	फा०स्त्री० पराजय, हार, टूट-फूट, शिकस्तगी । एक लिखावट घसीट ।	पद्माकर	7	/77
शिकार	फा०पु० जंगली जानवरों का वध अहेर, आखेट, फंसा हुआ ग्रस्त वह व्यक्ति जिसकी बातों में फस जाने से काफी लाभ और प्राप्ति हो ॥	भूषण	।	27/90

---

1. शीर — (1) कोऊ एक ऐसी होहु मेरो ज्यों लैतो मैं देहु
सीस्सी सिराई राति जाति है दई दई ।। — गंग
(2) बीर सीर कहत न बनै बीर कौन ठहराय जी
जानै जाकै लगै दृग बिसहारे हाय ।। — नागरी
(3) बाढ़ी प्रेम घटानि नैन सीर को झर लग्यो ।। — व्रजनिधि

श > स

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
शिताब[1]	फा०वि० शीघ्र, जल्द	देव	दे०ज०	6	शिताब
(शिताबी)	स्त्री० शीघ्रता, जल्दी	पद्माकर	3	/469	>सिताबी
शिशी	फा०स्त्री० शिशो का लम्बोतरा छोटा पात्र, जिसमें दवा आदि रखते हैं।	नागरी	ना०ग्र० I	221/3	
शिशः मूल है	फा०पु० काँच, बोतल, दर्पण, काँच की बारीक सुराही।				
शूम[2]	फा०वि० अशुभ, मनहूस, कृपण, मक्खीचूस, नामुबारक।	पद्माकर	8	/20	
शोख़	फा०वि० चंचल, चुलबुला, शरीर, गहरा (रंग), धृष्ट, ढीठ, उदण्ड, अवज्ञाकारी, असभ्य।	नागरी	ना०ग्र० I	502/757	ख़ > ख
शोर[3]	फा०वि० खारी नमकीन, कोलाहल, नामवरी, पागलपन, ख्यातिप्रसिद्ध मुहा०—सोर पारना, प्रसिद्ध फैलाना	चन्द्रशेखर	ह०ह०	25/166 24/160	
		भूषण	4	136/34	
		भिखारी	I	41/278 20/134	न लगाकर बहुवचन
		बिहारी		381/660	सोरन

1. शिताब - कूबरी के कूब काटि लाय दे सिताबी हमै
   टोपी कर ताकी तब गोपी जोगनी बनै ।। — ग्वाल 177/155
2. शूम — बाँके समसेर से सुमेर से उतंग सूम स्यारन पै सेर दुनहाइन के ।।
3. शोर — पार्यो सोर सुहाग को इन बिनही पिय नेह ।
   उनिदौही अखियाँ ककै कै अलसौही देह।—बिहारी

अल्पोच्चारित ह का लोप

अल्पोचारित ह का लोप

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	
अलाहदः	अ०वि० पृथक्, अलग, जुदा	वृन्द	।।	294/300	अल्पोचारित ह हिन्दी में आ हो गया-अलहदा ला > ल
अराबः	अ०पु० गाड़ी छकड़ा	देव			
	फा०पु० कवि-तोप लादने की	वृन्द	।।	272/98	
	गाड़ी ।	पद्माकर	हि०ब०	/73	>अराबा
		वृन्द	रूपसि की वार्ता	159/235	
अजूबः[1]	अ०वि० अनोखी चीज, शुद्ध शब्द उजूबः है पर उर्दूवाले दोनों बोलते हैं ।	भूषण	2	124/38	>अजूबा
	कवि-अजीब अद्भुत	बोधा	।	11/66	
आईनः	फा०पु० दर्पण, मुकुर,	नागरी	ना०ग्रं०	505/762	
	आदर्श, वि०- स्पष्ट	और			
आफ्ताबः[2]	फा०पु० हाथ मुँह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ, एक प्रकार का लोटा, जिसमें दस्ता हो ।	सूदन			>आफ्ताबा (मध्यआगम)
उम्दः	अ०वि० उत्तम श्रेष्ठ बढ़िया, सुंदर, मनोरम, विश्वासपात्र मातमद ।	ग्वाल	।	117/92	>उमदा

1. अजूबः — यों पहले उमराय लेरे रन जेर किये जसवंत अजूबा

2. आफ्ताबः — हुक्का हुक्की कली सुराही अरु आफताबा ।।

—सूदन ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० परिवर्तन
किस्सः	अ० पु० कथा कहानी घटना,	बोधा	2	/64	> किसा
	कलह, मसअला		1	200/12	मध्यलोप
				/38	
	केशव– हाल, समाचार	केशव	2	506/7	
कुर्रः	अ० पु० गधे या घोड़े का बच्चा कोड़ा, चाबुक, प्रतोद ।	बोधा	2	54/41	> कुर्रा
कुल्लः	अ० पु० पहाड़ की चोटी, मौन तलवार की मूठ, कब्जा कवि– घोड़े से सम्बन्धित लिंग, पहाड़ की तरह ऊँचा				> कुल्ला
ख़सख़ानः	फा० पु० खस का मकान झोपड़ा उशीर गृह ।	नागरी	ना०ग्र०	503/759	ख़ > ख
गँजिफः	फा० पु० ताश के प्रकार का एक खेल, जो ताश से पहले प्रचलित था ।				
गुस्सः	अ० पु० क्रोध कोपगजब	भूषण	2	117/17	>गुसा
		बोधा	2	74/67, 23/19	मध्य लोप गुस्सा
गोलः	फा० पु० गोल पिंड तोप आदि का गोला ।	केशव	2	504/91,92	
चश्मः[1]	फा० पु० सरिता, उपनेत्र	भिखारी	1	/43	
		बेनीप्रवीण		17/106	
चिलतः[2]	फा० पु० कवच, जिरिह	पद्माकर सूदन	डि० ब०	/189	चिलतह (मध्य व्यंजन आगम)

1. चपमति सुमुखी जरद कासनी है सुख,
   चीनी श्याम लीला माह काबिली जनाइ है ।। – बेनी प्रवीण 17/106.
2. काटत चिलता है इमि असि बाढ़े तिनहि सराहै वीर बड़े ।। – पद्माकर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्या०प०
चिल्लः	फा०पु० कोना, चालिस, दिन होने वाला काम 40 दिन का समय, 40 दिन तक लगातार पढ़ा जाने वाला मंत्र कवि– भाला का कोना ।	वृन्द	वृ०ग्र०	180/395	
चूजः	फा०पु० मुर्गी का बच्चा (व्यंग्य) नयी और सुंदर स्त्री ।	तोष	सुधानिधि	170/353	
जामः	फा०पु० वस्त्र	बोधा	1	8/143	
जीनः	फा०पु० सीढी	ग्वाल	1	67/131	> जीना
जुर्रः[1]	फा०पु० नरबाज, बाज का नर	बोधा	2	68/14	
	जुर्रः होता है और मादा बाज़	पद्माकर	8	18	> जुर्रन
तुर्रः[2]	अ०पु० जुल्फ कलँगी सुनहरे तारों का गुच्छा जो पगड़ी पर लगाते	,,	8	23	
	हैं पक्षियों के सर की चोटी, बात में बात अजूबापन सर्वश्रेष्ठ।	बोधा	2	48/51	
निशानः	फा०पु० वह स्थान जिस पर निशाना लगाया जाये, लक्ष्य, निशाना मारना ।	आलम शेख	आ०केलि	114/169	श > स
नेजः	फा०पु० शंकु, भाला,	मतिराम	1	201/108-7	
	बरछी, कलम का नरकट कवि– भाला ।	केशव	2	504/95	

1. जुर्रः – जुल्फ बावरिन को लखि जुर्रा ०० ।। – बोध

2. तुर्रः – सोहे पाग जरकसी तुर्रा ।। – बोधा

मान दैके तोरा तुर्रा सिर पै सपूती को ।। – पद्माकर

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्वनिपरिवर्तन
परवानः	फा० पु० पतंगा, आदेश-पत्र, फर्मान, राजादेश, भक्त, मुग्ध, वह कुत्ते बराबर जंतु जो सिंह के आगे आगे चलता है ।	आलम और शेख	आ०केलि	114/169	
पज़ावः	फा० पु० ईंट या चूना पकाने का भट्ठा, उर्दू में केवल ईंट के के लिये आता है ।	दास	2	158/314	ज़ > ज
बहानः[1]	फा० पु० छल धोखा, फ़रेब, टालमटोल, हीला हवाला, अवसर, मौका, व्याज ।	भूषण	1	42/134	
मक्कः[2]	अ० पु० हज़रत मुहम्मद साहिब का जन्म स्थान, अरब की राजधानी । यहीं मुसलमान हज के लिये एकत्र होते हैं । काबः इसी में है ।	भूषण	1	29/96	> मक्का
बोजःगर[3]	फा० पु० बोजः =शराब गर - प्रत्यय वाला चावल से बनी हुई शराब बेचने वाला ।	रहीम			> बोजागर

1. बहानः — राना रहयो अटल बहाना करि, चाकरी को बाना तजि
   भूषन भनत गुन भरि कै ।। — 42/134.
2. मक्कः — पक्का मतो करिकै मलिच्छ मनसब छोड़ि
   मक्का ही के मिसि उतरत दरियाब है ।।
3. बोजः — बोजीगरीन बजार में खेलत बाजी प्रेम देखत बाको रस रसन
   तजत नैन ब्रत नेम ।। — रहीम ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्वनिपरि०
महबूबः	अ०स्त्री० प्रेयसी, प्रेमिका, माशूकः	बोधा	1	6/34	महबूबाँ
मस्तानः	फा०वि० मस्तो की तरह, मत्त, मतवाला, परम आनन्दित, मद-पूर्ण, अभिमानी ।	,,	2	55/43	(अननुनासिकता)
मेवः	फा०पु० फल, प्रायः सूखे फल जैसे – बदाम-पिस्ता आदि ।	वृन्द	वृ०ग्र० 8	139/15 99/521, 139/151	
रेज़ः[1]	फा०पु० कण जर्रा, कतरन, बहुत छोटा टुकड़ा- रवा, मजदूर का लड़का, सुनार का एक औजार, कवि- कपड़ा ।	चन्द्रशेखर ठाकुर	ह०ह०	43/315	> रेजा ज़ > ज
सक्तः[2]	अ०पु० मूर्छा रोग, बेहोशी की बीमारी ।	बोधा			सक्ता
सुर्मः	फा०पु० एक पत्थर जो पीस कर आँखों में लगाया जाता है आँखों में लगाने की सूखी और बारिक पीसी हुई दवा ।	पजनेस	1	33/84	सुरमा (ॅ)>र
शोरः	फा०पु० मिट्टी से निकलनेवाला एक श्वेत क्षार ।	ग्वाल	1	29/35	> सोरा श > स
सूबः	अ०पु० प्रान्त प्रदेश, यहाँ सूबेदार स मतलब है ।	भूषण	4	143/19	

1. रेजः – बादर न होय बहु भांतिन के रेजा ये असाढ़ रँगरेजा रंग सूखिबे को डारे है ।। – ठाकुर

2. सक्तः – रे रे स्वातिक कूर अवध बाल जानत जगत । भावन हमरो दूर सूने मत सकता करे ।। – बोधा

अः > ए

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आइनः	फा०पु० दर्पण वि०- स्पष्ट, ससफ	नागरी	ना०ग्रा०	505/762	> आइने
अलाहदः	अ०वि० पृथक्, जुदा	वृन्द	वृ०ग्रा०	166/281	> अलाहदे
इशारः	अ०पु० संकेत इंगित ईमा तात्पर्य मतलब	भिखारी	2, 1	93/22, 43/295	> इशारे श > स
किबलः[1]	अ०पु० काबः प्रतिष्ठित और सम्मानित व्यक्तियों के लिए संबोधन का शब्द ।	भूषण	2	116/14	
खिज़ानः	अ०पु० निधि, कोष, भंडार, सरकारी खजाना, राजकोष,,	भूषण	1	338, 106/361	
	खिजाना है पर उर्दू में खजानः ही बोलते हैं ।	केशव	2	519/52	
खासः	अ०पु० राजाओं और बादशाहों का खाना, कवि- राजभोग	नागरीदास	ना०ग्रा०	21/22	> खासे
खानः	फा०पु० गृह, गेह, घर, सन्दूक आदि ।	पद्माकर	3	260	
खसखानः	फा०पु० खस का मकान,	भूषण		338	
	झोपड़ा ।	पद्माकर	3	260	
गोशः	फा०पु० घर का कोना एकान्त (दो) कोप ।	देव	सु०वि०सु०	2:47 770	> गोसे श > स
जनानः खास (स्स)	अ०वि० जनानखाना	चन्द्रशेखर	ह०ह०	2/11	> जनानेखास
जादः	फा०वि० जन्मा हुआ, बेटा	ठाकुर	ठा०श०	27/75	> मीरजादे
	फा०पु० पगडंडी, मार्ग				> पीरजादे

1. किबलः— किबले के ठौर बाप बादशाह साहजहाँ वाको कैद कियो
मानो मक्के आगि लाइ है ।। — भूषण

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
जमानः	अ० पु० समय, युग, विलंब, मुद्दत, अर्सा, दशा, हालत	बोधा भिखारी	2 1	100/26 76/519	
तहखानः	फा० पु० जमीनदोज, मकान तलगृह, अधोगृह, भूगर्भ, भूगेह ।	भूषण		105/361	> तोपधाने
तोपखानः	तु० फा० वह सेना जो बाये चलती है । तोप रखने का स्थान ।	वृन्द	वृ० ग्रा०	161/249	
दमामः	फा० पु० बड़ा नक्कारा, धौंसा	देव			> दमामे¹
दरवाजा	फा० पु० द्वार, दर,	बेनीप्रवीण	न० र० त०	24/154	> दरवाजे
दीवानः	फा० पु० पागल प्रेमी आशिक किसी काम में तन्मय ।	बोधा	2	54/31	
दुशालः	फा० पु० जिसमें दो शाल एक साथ जुड़े हों, ऊन का कामदार दोहरी चादर ।	ग्वाल	1	36/54	> दुसाले श > स
नुक्तः	अ० पु० बिन्दी, बुंदकी निशान	पजनेस	प० प्र०	33/84	
पेशखानः	फा० पु० घर, गिरस्ती का सामान ।	वृन्द	वृ० ग्रा०	166/287	
मजः दार	फा० वि० स्वादिष्ट, लजीज मनोरंजक, दिलचस्प, उल्लास-पूर्ण ।	बोधा	2	91/4	> मजेदार
शाहजादः	फा० पु० युवराज, शाहजादा,	वृन्द	वृ० ग्रा०	165/265, 143/19	
शामियानः	फा० पु० छाया के लिए ताना जाने वाला विशेष कपड़ा ।	ग्वाल	1	38/48	> समियाने ह्रस्वीकरण

1. दादुर दमामैं झाक झिल्ली गरजति धौंसा दमिनि मसालै देखि दुरै जग जीव से ।। — देव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सादः	फा०वि० कोरा बेदाग भोला भाला, निर्मल, साफ दिल मूर्ख, बे लिखा कागज या बिना छपा या कढ़ा कपड़ा।	ना०	ना०ग्र०	508/5	
शकरपारः	फा०पु० एक प्रकार की मिठाई सुन्दर अदाओं वाली प्रेमिका, एक नीबू जैसा बड़ा फल।	ना०	,,	21/22	> सक्करपारे द्वित व्यंजन आगम 2
सिलहखानः[1]	अ०पु०+फा० शस्त्रागार	भूषण		105/361	
शुतुरखानः[2]	फा०पु० उष्ट्रशाला	भूषण		105/361	श > स
सूबः दार	अ०फा०पु० सूबे का शासक, गवर्नर, राजपाल, सिपाहीका एक बड़ा ओहदः सूबः — प्रान्त प्रदेश।	,,		93/323	
हरमखानः	अ०फा०पु० अन्तः पुर, बड़े आदमियों का जनानखाना	,,		105/361	
हरामजादः	अ०फा० हराम का बच्चा, दोगला, धूर्त।	ठाकुर		27/74	
हवालः	सिपुर्दगी, हस्तान्तरण कवि — वश में	पद्माकर	3	149	
अलाहदः	अ०वि० पृथक् जुदा	ठाकुर		1028	अः > ई
खस्तः	फा०वि० क्षत, घायल, दुर्दशा ग्रस्त, बदहाल, थका हुआ, भुरभुरा, पु० (गुठली)।				
ताज़ः	फा०वि० नवीन, नया, हरा-भरा, तत्कालीन, हाल का बना हुआ, हाल का किया हुआ, हाल का पका हुआ, हाल का आया हुआ, शादाब तरोताजा।	नागरी	ना०ग्र०	502/757	> ताजी

1. सिलहखान— सूकर सिलहखाने फ़क्त करीस है ।। — भूषण
2. शुतुरखान— हिरन हरमखाने स्याही है सुतुरखाने ।

मु०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अंदेशः[1]	फा०पु० शंका, शुबहा, भय	वृन्द	वृ०ग्रं०	नी०श०8	> अंदेस
	खतरा, चिंता, फिक्र	भूषण	1	100/351	
		भिखारी	2	72/27, /298	
		जसवंतसिंह	1	77/204	
कमीनः	फा०वि० नीच, अधम, खल, गैरशरीफ ।	ग्वाल	1	103/50-51, 101/45.	कमीनौ औं की प्रवृत्ति
		चिन्तामणि	दृ०उ०	28/2	
ख़ाल	अ०पु० तिल, विन्दु, शरीर का काला दाग, भामू, श्रेष्ठता बुद्धि, अक्ल, अहंकार ।	भूषण		453	
	कवि – गंग– क्षुद्र, तुच्छ ।	गंग		56	
खालः	फा०पु० छाला	भूषण		453	
गुलदस्तः	फा०पु० फूलों का गुच्छा, रंग-बिरंगी फलों का मुट्ठा, पत्रिका ।	भिखारी	3	272/3	
गोलः	रिसाल, फा०पु० गोल पिंड	केशव	2		
गोलःअंदाज	फा०वि० तोपची, तोप का गोला, चलाने वाला ।	भूषण	1	72/242	> गोलंदाज
जामः	फा०पु० वस्त्र, कर्ता, बरात में दूल्हा के पहनने का कपड़ा ।	ग्वाल	ग्वा०र०	28/34	
		भिखारी	4	252/43	ज़ > ज
जिंदः	फा०वि० जीवित नवीन ताजा जिंद, खून ।	रसलीन	3	307/19	
तरीकः	अ०पु० प्रणाली, तर्ज, युक्ति, तरकीब, पंथ, नियम । कवि – ढंग तरीका	नागरी	ना०ग्रं०	501/753	

1. अंदेश – भूपन अंदेश देस देस के नरेशगन आपुस मैं कहत यों गरब गवाय है यैसा दोऊ जहान जिंद पीर सुर बान ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
दरीचः	फा० पु० खिड़की, झरोखा, गवाक्ष, जालार । न् प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाने की प्रवृत्ति । ~~कवि — ढंग, तरीका~~	ग्वाल	ग्वा०र०	37/55	दरीचन
दिवारे कहकह[1]	फा० चीन की एक दीवार जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि जो इसमें झाँकता है, वह अनायास खुब हँसता है ।	तोष	।	162/304	
दौरः[2]	अ० पु० चक्कर, बारी, गिर्द-गिर्द चारों ओर, आक्रमण, चढ़ाई ।	भिखारी भूषण	।	69/478	> दौर
नक्शः	अ० पु० आकृति, मुखाकृति, शैली, सजधज, हुलया, मानचित्र, हालत, साँचा, रेखाचित्र, नमूना, छवि ।	गंग	।	/243	
नसीबः	अ० पु० भाग्य किस्मत मुकद्दर प्राप्त, अंश, भाग ।	नागरी	ना० ग्रा०	500/753	
नाकँदः	फा० वि० अल्हड, अप्रशिक्षित, न निकाला गया, घोड़ा आदि पशु ।	पद्माकर		उदा०	
परँदः	फा० पु० पक्षी चिड़िया	पद्माकर	3	57	> परँद

1. दिवारे — बार-बार बरजौं बिलोकै जनि जाइ, कोई कारो दईमारो हाइ है देवाल कह कहू ।। — तोष
2. दौरः — जोबन जोर अनंग मरोर उठे कुच घेरि कै दौर तनि के ।।
3. नाकँद — बछेरै करै कूदि आछी कलोलैं लखे नीक नाकँद जे है अमोले ।।

— पद्माकर ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
परिंदः	फा०पु० पक्षी, चिड़िया	सोमनाथ	सो०ग्रा०	262/	> परिंद
बस्तः	फा०वि० बँधा हुआ, जमा हुआ, तह किया हुआ, गाँठ, अंचल, किताब, या कागज बाँधने का कपड़ा । प्रत्यय— बाँधे हुए जैसे कमर-बस्त — कमर कसे हुए, दस्त बस्तः — हाथ बाँधे हुए ।	वृन्द	वृ०ग्रा०	166/280	
मुक़र्रर	अ०वि० नियत निश्चित	पद्माकर	1	/102	क़ > क
सहरः	अ०पु० साहिर का बहु० जादूगर लोग । अ०पु० सहर — प्रातः काल जादू टोना ।	नागरी	ना०ग्रा०	506/763	
सहाबः	अ०पु० मित्रता करना, मित्र-गण ।	पजनेस	प०ग्रा०	43/108 से 101 के बीच	श > स
हमेशाः	फा०वि० सर्वदा नित्य हरवक्त	पद्माकर	3	215	
	प्रायः	भूषण	4	152/48	
ख़ानः जाद	फा०वि० घर में उत्पन्न घर का पैदा दासीपुत्र, इस शब्द का प्रयोग वक्ता अपने लिये भी करता है ।	भूषण	2	127/47	खानजादी ई लगाकर स्त्री लिंग बनाया है ।
रिसालः[1]	अ०पु० वह पत्रिका जो पुस्तक के रूप में किसी नियत समय पर प्रकाशित हो । किसी विषय पर छोटी सी पुस्तक, सैनिक की टुकड़ी, सवारों का दस्ता ।	भूषण	1	33/103	

1. मानो हय हाथी उमराव करि साथी उवरंग डारि सिवाजी पै भेजत रिसाल है ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
सब्ज:[1]	हरी घास, हरियाली, सब्ज रंग का घोड़ा।	पद्माकर	3 8	316 49	सबज
साय:बान[2]	फा० पु० मकान के आगे का छप्पर या छाजन जो छाया के निमित्त बनाई जाती है।	दूलह नागरी		214/239	> सायबान > सायेबान
			अल्पोचारित ह का इ होना		
अलाहद:	अ० वि० पृथक्, जुदा	ठाकुर		1028	अलाहदी
खस्त:	फा० वि० क्षत घायल, दुर्दशा ग्रस्त, बदहाल, थका हुआ भुरभुरा (पु) गुठली। कवि— जीर्ण-शीर्ण				खस्ती
ताज:	फा० वि० नवीन, नया, हरा-भरा, तत्कालीन, हाल का बना हुआ, हाल का किया हुआ, हाल का पका हुआ, हाल का आया हुआ, शादाब तरोताजा।	नागरी		502/757	ताजी

1. रंग रस भीनी झीनी कंचुकी सबज छोरि निकरि लसी है अनी जुगल उरोज की।
2. कढि गयो भान अब माँगती हौं सायवान सैन झुकावै ही जुलावहीं।। — नागरीदास।

मूशि०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
दरीचः	फा०पु० खिड़की, जलार	पजनेस	।	5/11	> दरीचिन
	न् लगाकर बहुवचन			6/11 से 15 के बीच	> दरीची
दीवानः	फा०पु० पागल किसी काम	बोधा	12	16/53	> दिवानी
	में तन्मय कवि-पगली			57/11	> स्वीकरण
शिकस्तः	फा०वि० टूटा हुआ, खंडित,	नागरी	ना०प्र०	502/757	> सिकस्ती
	जीर्ण-शीर्ण, एक लिखावट				श > स

अल्पोचारित ह का आ और मध्य में इ का आगम

मूशि०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
जुम्लः	अ०पु० समस्त, समग्र, सब,	भूषण	।	36/112	> जुमिला
	वाक्य, शब्द-समूह, पिंक्तः				
	कवि- सब कहीं के ।				
तक्यः	अ०पु० सिर के नीचे रखने का	भूषण	।	4/10	> तकिया
	नर्म और गुदगुदा वस्त्र,	केशव	8	57/3	
	उपधान, मस्नद, मुसलमानों	जसवंत	।	/40	
	के मुर्दे दफ्न होने का स्थान				
	कब्रिस्तान ।				
तकिया	फा०पु० मस्नद, टेक के लिए				
	या सहारे के लिए प्रयुक्त				
	होने वाली पत्थर की पटिया ।				
बख्यः	फा०पु० एक प्रकार की मजबूत गॅंग		।	/92	बखिया
	सिलाई ।				
बागचः	फा०पु० छोटा बाग, फुलवारी	नागरी	ना०प्र०	210/154	बगीचा

।. श्री नगर नयपाल जुमिला के छितिपाल भेजत रिसाल चौर गढ़ कुही बाज की ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्र० प०
			अल्पोचारित ह का ऐ होना		
मुकाबलः	अ० पु० आमना-सामना, उद्दण्डता				
	सम्बन्धी प्रतियोगिता, नक्ल का	वृन्द	9	135/138	
	अस्ल, पुस्तक या लेख से			159/233	
	मिलान ।				मुकाबलै भइ
			अल्पोचारित ह का ओ होना		
अराबः	अ० पु० गाड़ी छकड़ा शकट	पद्माकर	हि० बा०	61	अराबो
	फा० पु०	केशव	2	534/12	
	केशव-तोप लादने की गाड़ी				
	बोधा - रथ	बोधा	1	2/10	
	पद्माकर - तोपों का एक				
	साथ दगना ।				
इशारः	अ० पु० संकेत इंगित ईमा	भिखारी	1	43/290	इसारो
	तात्पर्य, मतलब ।		2	92/22	
दमामः	फा० पु० बड़ा नक्कारा धौंसा	बोधा	2	135/33	दमामो
अजूबः	अ० वि० अनोखी चीज	रसखान	प्रे० बा०	85/5 66/31	औ
	कवि- अद्भुत, दिव्य	नागरी	नाग्र	758	अजूबो

विशेष ध्वनि परिवर्तन

(1) आगम –

आदि स्वरागम
मध्य स्वरागम (स्वर भक्ति)
अन्त स्वरागम

आदि व्यंजन आगम
मध्य व्यंजन आगम
अन्त व्यंजन आगम

(2) लोप –

आदि स्वर लोप
मध्य स्वर लोप

आदि व्यंजन लोप
मध्य व्यंजन लोप
अन्त व्यंजन लोप

(3) विपर्यय –

आदि स्वरागम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ब०प०
चमन	फा०पु० उद्यान, आराम, बाग	नागरी	नाग्र	500/750	चिमन
जमअ[1]	अ०स्त्री० आय, आनद, उपार्जित संचित, जमाशुदः, निशाना।	रघुनाथ		उदा०	जुमिगो अंत ऽ का आ हो गया
नवाज़	फा०प्रत्यय जैसे नय नवाज-बासुरी बजाने वाला। कृपा अनुग्रह करनेवाला, जैसे -गरीब नवाज कवि- कृपा।	भूषण	।	118/22	नेवाज
पशेमान[2]	फा० लज्जित, शरमाए हुए, सेनापति।-	सेनापति	।	87/61	>पिसेमान
फरमाना[3]	फा० क्रि० आज्ञा देना, कहना	सुन्दर		उदा०	फुरमाइ
मसल	अ०स्त्री० लोकोक्ति, कहावत, समान, तुल्य, मिस्ल।	वृन्द	वृग्र	166/275	मिसल

मध्य स्वरागम(स्वर भक्ति)

अक़्ल	अ०पु० बुद्धि, सूझ-बूझ, विवेक तमीज।	भूषण		46/148	अकिल
		केशव	केग्र ज० ज० च०	638/168	अकल
		बोधा	।	15/85	आकिल (आदि- आ मध्य - इ)

1. काहू पाय आहट न पायो कहा कहौ भटू रघुनाथ की दोहाई चेटकसो जुमिगो ।। - रघुनाथ।

2. घिर्‌यो आसमान, पिसेजात पिसेमान सुर - - - - ।। सेनापति

3. आइ सखिन से फुरमाइ रही उजराइबे को ।। - सुन्दर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
					मध्य स्वरागम (स्वरभक्ति)
अक्बर	अ०वि० महान अजीम सबसे बड़ा पु० एक सुप्रसिद्ध मुगल सम्राट्	केशव	जजच	226/75	>अकबर
अत्लस	अ०स्त्री० एक बहुमूल्य रेशमी वस्त्र स्वच्छ, आकाश	देव	सु०सा०ह०	346	>अतलस
अद्न[1]	अ० निवास, कयास, स्वर्ग का उपवन, जहाँ ईश्वर ने आदम को बना कर रखा था।	ग्वाल	।	19/10	>अदम
अफ्शाँ	फा०स्त्री० स्त्रियों के बालों अथवा गालों पर छिड़कने वाला सुनहला या रुपहला चूर्ण प्रत्यय—झाड़ने वाला, छिड़कनेवाला जैसे — दस्त। अफ्शाँ — हाथ झाड़ने वाला।	नागरी	नाग्र	351/3	अफशाँ फ् > फ श > स
अफ्सर	अ०पु० पदाधिकारी, सरदार, अध्यक्ष, मुकुट, ताज, हिन्दी—अधिकारी, हाकिम, प्रधान, मुखिया।	भूषण	।	416	>अफसर
अफ्सोस	फा०पु० शोक रंज पश्चात्ताप	नागरी	नाग्र	499/749 502/757	>अफसोस
अल्मस्त	फा०वि० नशे में चूर, बहुत ही मस्त, हिन्दी—बेफिक्र, मतवाला	बोधा	।	13/74	>अलमस्त
अस्ल	अ०स्त्री० मूल जड़ आधार, बिनियाद सत्य, सच, वाकई, यथार्थ।	भिखारी	।	35/241	>असील

1. मंद मुसकात छिति छूतन मयूखन के आगम अनूप तामे अद्भुत अदन के।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
अस्लम (सीन) س	अ०वि० बहुत ही सुरक्षित, बिलकुल महफूज, बहुत ही सहिष्णु	केशव	वी०च०	599/61	अस्लम > असलेम
अस्लम	मुतहम्मिल				
ص (स्वाद)	अ०वि० जिसके कान कटे हों, कनकटा, कवि- शेरशाह				
अस्वाब	अ०पु० सौब का बहुवचन, वस्त्र समूह, कपड़े । कवि – साज-सामान ।	पद्माकर	8	3	> अस्वाब असबाब व > ब
अस्वार[1]	अ०पु० सवार, अश्वारोही	मतिराम	2	373/49	> असवार
(सीन)		भूषण	4 1	151/47, 56/189	
(शीन)	अ०पु० सौर का बहु० बहुत से बैल	नागरी	नाग्र	508/5	
		वृन्द	वृग्र 9	143/165	> असबार व > ब
अहदी	अ०वि० बहुत ही आलसी, बड़ा ही काहिल । कवि- मुगल काल के कर्मचारी जो बड़ा काम पड़ने पर कहीं भेजे जाते हैं ।	केशव	2	495/20	अहदी
आशनाई	फा०स्त्री० मैत्री, दोस्ती, नाजायज सम्बन्ध ।	वृन्द	12	321/43	
		आलम	2	114/169	
आस्मान	फा०पु० आकाश, गगन, फलक	भूषण	1 3	84/288, 85/291 130/1.	
इक्बाल	अ०पु० प्रताप, तेज, जलाल, सौभाग्य, खुशकिस्मती, समृद्धि क्रमागत, स्वीकृति, इकरार ।	वृन्द	वृग्र	268/60	> इकबाल

1. बारह हजार असवार जोर दल दार ऐसे अफजल खान आयो सुर साल है ।।

(स्वरभक्ति)

मूoशo	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्वoपo
इक्राम	अoपुo सम्मान, सत्कार, आव-भगत, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, बुजुर्गी	वृन्द	वचनिका	155/222	>इक्राँम अनुनासिकता
इखलास	अoपुo निष्कपटता, सच्चा और निष्कपट प्रेम ।	,,	वृग्र 9	161/249	>इखलास
(स्वाद)					
इमरोज़	फाoपुo आज, आज का दिन	नागरी	नाग्र	500/751	>इमरोज
इल्बास	अoपुo कपड़े पहनाना कवि— पोशाक, पहनावा	गंग	1	/377	> इलबेस
इल्म	अoपुo विद्या, विज्ञान, ज्ञान, जानकारी, शिल्प, दस्तकारी, कलाफन, बुद्धि, अक्ल, विवेक, शऊर, शिक्षा, तालीम । कवि— विद्या, कला, विधि-विधान ।	पद्माकर	6	86 56	> इलम > इलमैं
इस्लाम[1]	अoपुo शान्ति चाहना, ईश्वराज्ञा के आगे सर झुकाना, इस्लाम धर्म ।	रसलीन	3	306/15	>इसलाम
उज्र[2]	अoपुo आपत्ति, एतराज, विवशता, मजबूरी	भूषण	1	54/180	>उजुर
उम्र	अoस्त्रीo आयु, अवस्था, सिन	पद्माकर	3	6	> उमिरै

1. दीन के नगारे बाजे जब इसलाम गाजी
   आए अजमेर काजी ख्वाजा मोनदीन है ।।
2. चाकर है उजुर कियो न जाय नेक पै
   कछु दिन उबरते तौ घने काज करते ।। — भूषण

स्वर भक्ति

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
क़त्ल	अ०पु० वध, हनन, हत्या, हिंसा, जान से मार डालना । कती, हि० कैंची, चाकू, छोटी तलवार	भिखारी	1	38/264	कतलकाती
	बाज़ प्रत्यय- देनेवाला, करनेवाला	पद्माकर	3	/297	> कतलबाज
कस्बः	अ०पु० शहर से छोटी व गाँव से बड़ी बस्ती ।	गंग	1	/346	
कस्ब	अ०पु० कमाई, वेश्यावृत्ति, कवि – वेश्यावृत्ति की औरत				>कसब
कश्मीर	फा०पु० भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश ।	भिखारी	4	101/30	> कसमीर
			2	111/97	
कह्र[2]	अ०पु० क्रोध, कोप, गुस्सा,	पद्माकर	3	175,709	> कहर
	दैवी कोप, अजाब दैवी आपत्ति		5	12	
	बलाए आस्मानी ।		8	7	
	कवि- आफत, 709,42	पद्माकर	प०भ०	42	
	क्लेश (विरह जन्य) 175	भूषण	3	533,140/15	
		देवदत्त	3	188/21	
		बोधा	2	55/43	
		भिखारी	4	143/17	
		वृन्द	5	28/15	
		गंग	1	246	
किश्मिश	फा०स्त्री० मुनक्के की जाति का सुखा हुआ छोटा अंगूर, जिसमें बीज नहीं होता ।	भूषण	2	115/12	किसमिस श > स

1. कुम्भकर्न असुर औतारी अवरंग जेब , कीन्ही कत्ल मथुरा दोहाइ फेरी रब की ।।
2. देखत ही मुख विष लहरि सी आवै लगी, जहर सो नैन करै कहर कहार की ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
किशिमशी	फा०वि० किशिमश जैसे रंग का हल्का हरा, किशिमश का ।	वृन्द	वृ०ग्र	176/368	>किसमिनी
खुस्म	अ०पु० शत्रु, बैरी, दुश्मन, स्वामी, मालिक, पति	पद्माकर	3	588	>खसम
		केशव	2	519/52	ख़ > ख
खुल्क़[1]	अ०पु० सृष्टी करना, उत्पत्ति करना, उत्पत्ति, उत्पन्न, जनता अवाम ।	भूषण	1	483	
			2	50/162	>खलक
				56/190	
			3	112/2	
		केशव	2,4	505/102, 616/5	
खुशबख्ती	फा०स्त्री० सौभाग्य, तकदीर की अच्छाई, खुश किस्मति ।	नागरी	8	498/2,4, 503/75 508/2, 8	
		,,	ना०ग्र 7	128/31 खुशबखतियाँ या लगाकर बहु० बनाया।	
खुशहाल	फा०अ०वि० जिसकी आर्थिक दशा अच्छी हो, सम्पन्न कवि— सुखी खुशहाल	बोधा	1	17/103	>खुसिहाल श > सि
गंजबख्श	फा०वि० खजाना बाँटने या देने वाला । बहुत बड़ा दाता एक मुसलमान ऋषि की उपाधि कवि— खजाना लूटने वाला ।	सोमनाथ	सो०ग्र०	155/	>गंजबकस
जर्द	फा०वि० पीत पीले रंगवाला, पीला रंग ।	पद्माकर	8	4	>जरद
	अ०पु० निवाला निगलना, गला घोटना ।	बोधा	2	69/18	

1. --- अखिल खल भलै खल खलक मैं जा दिन गाजी नेक कखत है --- ने खलक माहि खल भल डारत है रीझे --- क माहि कीन्हें रंक राय है ।। — भूषण

स्वर भक्ति

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
ज़ह्र	फा० पु० विष गरल हलाहल	भिखारी	2	101/54	जहर
	अ० पु० जोर की आवाज, ऐसी	देवदत्त	3	188/21	
	आवाज जो पास वाला सुन	भिखारी	1	38/255	जहरु
	सके ।		2	101/54	
जिन्हार	फा० स्त्री० शरण, त्राण, पनाह (अव्य) कदापि हरगिज	नागरी	ना३	500/758	> जिनहार
ज़िक्र	अ० पु० चर्चा, एक प्रकार का जप	भिखारी	2	96/36	> जिकिर
		बोधा	2	23/19	
जुल्म	अ० पु० अन्याय, बेईमानी करना,	पद्माकर	3	/709	> जुलम
	नदी में पानी का बाढ, बलात्	रसलीन	3	305/12	> जुलूम
	कवि– अत्याचार ।				
तकरार	अ० स्त्री० वाद-विवाद, बहस, दुहराना, हुज्जत ।	भिखारी	1	76/519	> तक्रार
तक़्सीर	अ० स्त्री० दोष, अपराध, कमी, भूल ।				
तक्सीर	अ० स्त्री० तोड़ना, टुकड़े करना, किसी ताबीज या यंत्र में संख्या इस प्रकार भरना कि हर ओर से जोड़ बराबर आये ।	वृन्द	वृ०ग्र-1।	271/90, 156/227	तक्सीर
तक्सीर	अ० स्त्री० बढ़ाना, अधिकता, बहुतायत ।				
तख़्त	फा० पु० बड़ी चौकी, बादशाह	पद्माकर	6	34	> तखत
	या राजा के बैठने की चौकी,	भूषण	1	58/198	
	राज्य, राष्ट्र, हुकूमत, ज़ीन	केशव	2	521/17, 13	
	वि० बड़ा ज्येष्ठ, कर्ता				
	कवि– सिंहासन ।				

स्वर भक्ति

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	छा०प०
तद्बीर	अ०स्त्री० उपाय, प्रयत्न, उपचार	ग्वाल	1	56/102	>तदबीर
तब्ल[1]	फा०पु० दुन्दुभी, भेरी, नक्कारा	भूषण	3	121/30	>तबल
तस्लीम	अ०स्त्री० सौंपना, सिपुर्द करना,	वृन्द	11	275/129	तसलीम
	प्रणाम करना, कबूल करना,	केशव	2	501/46,52	
	आज्ञा का पालन करना ।				
तह्रीर	अ०स्त्री० लिखना, हस्तलिपि, लिखावट, दस्तावेज, लिखित प्रमाण, इबारत, हल्कीलकीर या खत, सुरमे की लकीर, प्रमाण पत्र ।	पजनेस	1	33/84	>तहरीर
दफ़्तर	फा०पु० कार्यालय, बड़ी किताब का एक भाग, जिल्द, ग्रंथ, खंड, लम्बी-चौड़ी बात, तूमार जैसे शिकायतों का दफ्तर।	केशव	2	552/7	>दफतर
दरख़्त	फा०पु० वृक्ष, पेड़	बोधा	2	140/8 139/2	>दरखत
		गंग	1	/329	
दह्शत	अ०स्त्री० डर, भय, खौफ	भूषण	1	121/31	>दहसति
दुन्या	अ०स्त्री० मर्त्यलोक, मृत्युलोक,	भूषण	5	296	>दुनियाँ
	जगत, संसार, आलम, संसार के निवासी ।	रसलीन	3	305/13	>दुनी
दुश्मन	फा०पु० शत्रु, बैरी, प्रतिद्वन्द्वी रकीब ।	वृन्द	वृ्ग्रा०	152/207, 163/258	>दुसमन

1. तब्ल — भूषन भनत तुरकानदल थम काटि
अफजल मारि डारै तलब बजाय कै ।।

स्वर भक्ति

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
पाज़ेब	फा०स्त्री० पांव का एक आभूषण नूपुर।	ग्वाल	1	78/148	>पाइजेब
पापोश[1]	फा०पु० जुता, पदत्राण	सेनापति	1	102/23	>पाइपोस
पामाल[2]	फा०वि० पा=पैर+माल=कुचलना, पददलित, पैरों से रौंदा हुआ।	भूषण	5	दोहा 484	>पाइमाल
		गंग	1	दोहा 196	>पाइमाली
पिश्वाज[3]	फा०स्त्री० नृत्य में पहना जाने वाला लहँगा।	ग्वाल	1		>पिसवाज
फ़ज्ल	अ०पु० कृपा, दया, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, विद्वत्ता।	वृन्द	वृ०ग्र०	150/201	>फजल, ल>र
फ़त्ह	अ०स्त्री० विजय, जीत, सफलता	पद्माकर	हि०ब०	210	>फतुह
फर्मान	फा०पु० राजादेश, शाही हुक्म, आज्ञा, आदेश।	वृन्द	8	15	>फरमान
फ़हम	अ०स्त्री० बुद्धि, विवेक, तमीज़	बेनीप्र०	1	63/459	>फहमे
बदख्शाँ	फा०पु० अफगानिस्तान का एक प्रदेश, जहाँ का लाल (पदमराग) बहुत बहुमूल्य होता है।	गंग	1	/307	>बदखशान
बर्कंदाज[4]	अ०फा०पु० सिपाही, हरकारा, बँदूकची, तोपची।	बोधा	2	उदा०	> बरकनदाज (व्यंजनागम)
		वृन्द	वृग्र	167/287	>बरकंदाज

1. पापोश — रमापति निराधार पाइपोस बर
   हौ तो राजा राम चन्द्र जू के दरबार को ।।

2. पामाल— भूषण जो होइ पात साही पाइमाल
   औ उजीर बेहवाल जैसे बाज त्रास चरजै ।। — भूषण
   छाती छाजै खलीक प्रकट कपोल पीक
   पाति साही पाइमाली आली क्यों झुकति है ।। गंग

3. पिशवाज— प्यार सो पहिर पिसवाज पान पुरवाई
   ओढ़नी [illegible] सुरंग सुर चाप चमकाई है ।। — ग्वाल

4. बर्कंदाज — दिशिचार को मुहरा लग्यो घने बर्कंदाज
   पुनि चार बगते अव को सजि बीच में महराज ।। बोधा ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
बख्त	फा० पु० भाग्य, अदृश्य, प्रारब्ध, किस्मत ।	वृं०	8	156/227	> बखत
		भू		39/119	
बहस[1]	अ० स्त्री० वाद-विवाद, लफ्ज़ीजंग, हाकिम के सामने तर्क वितर्क, कवि- दलील ।	भूषण	1	17/59	> बहस
		भिखारी	1	73/506	> बहसि
बुल्बुल	फा० अ० एक सुप्रसिद्ध गानेवाली चिड़िया, गोवत्सक ।	नागरी	नाग्र	507/762	> बुलबुल
मक़्बूल[2]	अ० वि० रुचिकर, सर्वप्रिय	तोष	1	174/372	> मकबूल
मख़्मल	फा० स्त्री० एक प्रकार का रंगीन और मुलायम दार कपड़ा	ग्वाल	1	38/57	> मखमल
मख़्मली	फा० वि० मख्मल का बना हुआ	वृन्द	8	76/229	> मखमली
	मख्मल मढ़ा हुआ । मखमल जैसा	ग्वाल	1	119/98	
मग़रूर	अ० वि० अहंकारी घमंडी	बोधा	1	5/27	> मगरूर
मग़्रिबी	अ० वि० पश्चिम का पाश्चात्य कवि- विशेष प्रकार की तलवार	पद्माकर	1	/192	> मगरबी
मज़्कूर[3]	गणना, गिनती, चर्चा	दूलह		उदा०	
		बोधा	2	उदा० 64/31	
		वृन्द	8	166/275	

1. बहस – ऐसो ऊंचो दुरग महाबली को जामैं नखतावली सो
   बहस दिपावली धरत है ।
2. दोऊ मकबूल मखतूल झूला झूलि झूलि देत सुख भूल कहि
   तोष भरि बरसात ।।
3. मजकूर – तेरो रूप जीत्यो रति रंभा मेनका को
   और नारिन विचारिन को मजकूर कहा है ।। – दूलह
   इसी मजकूर है उनमाद । जो कीजै सही न सम्वाद ।। बोधा ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मजुनूँ	अ०वि० वातुल, पागल, कवि-प्रेमी ।	आलम और शेख	आलम केलि	115/273	> मंजनू (अनुस्वार, विपर्यय)
मज्बूत	अ०वि० दृढ़ पक्का, निश्चित, ताकतवर, तगड़ा, अधिक जोर वाला, स्थायी ।	ग्वाल	1	36/52	
		वृन्द	9	126/90	
मज्लिस	अ०स्त्री० सभा, महफिल, करबला, के शहीदों की शोक सभा ।	मतिराम	2	362/378	> मजलिस
मत्लब	अ०वि० उद्देश्य मंशा अर्थ मा'नी प्रयोजन, इच्छा, स्वार्थ ।	नागरी	नाग्र	505/762	> मतलब
		वृन्द	8	62/180	
मद्होश	फा०वि० बेसुध गाफ़िल नशे में चूर ।	नागरी	नाग्र-1	499/74	> मदहोस
मस्नद[1]	अ०पु० बड़ा, तकिया ।	ग्वाल	1	26/28	> मसलँद, मध्य व्यंजन आगम
		भूषण	1	35/110	मसनद
महबूब	अ०पु० प्रेमपात्र, बहुत अधिक प्यारा ।	गंग	1	305	> महबूब
महबूबः	अ०स्त्री० प्रेयसी प्रेमिका				
मह्रम	अ०पु० महारिम राजदार मित्र परिचित वह व्यक्ति जिससे विवाह जाइज न हो ।	बोधा	1	15/89 19/112	> महिरम
			2	25/34, 204/42, 212/16, 46/35	
	कवि – घनिष्ट मित्र ।	आलम शेख	1	115/271	> महरम
मह्शर	अ०पु० महाप्रलय, कियामत, कियामत का दिन, कियामत का मैदान ।	नागरी	नाग्र	505/762	> महशर

---

1. मस्नद – जागे तेज वृंद सिवाजी नरिंद मसनंद भाल मकरंद
   कुल चंद साहिनन्द के ।

मध्य स्वरागम (स्वर भक्ति)

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृष्ठ	ध्व०प०
मिल्क	अ०स्त्री० जमिन्दारी, माल, अधिकार, भूमि अधिकार जागीर	नागरी	नाग्रा	25/39 93/50	> मिलक
मुंशी	अ०वि० गद्य लेखक, लिपिक, वकील का मुहरिर, जिसकी लिखावट अच्छी हो ।	वृन्द	9	156/227	> मुनसी
मुचल्का	तु०पु० वह प्रतिज्ञा पत्र जो अपराधी की ओर से इस बात के लिए हो कि वह फिर अपराध करेगा, तो इतने रुपये देगा ।	,,	9	94/467	> मुचलका
मुम्किन	अ०वि० हो सकने वाली बात सम्भव ताकत सामर्थ्य ।	नागरी	नाग्रा	507/764	> मुमकिन
मुस्तब त ث	अ०वि० क्रमबद्ध किया हुआ संगृहीत ।	वृन्द	वृग्रा	126/9	मुरातब मनसब
मुस्तब त= b	अ०वि० जिसको तर किया हो तरी पहुंचायी जाय ।				
+मंसब	अ०पु० पद, कर्तव्य				
मुरीद	अ०वि० शिष्य धर्म गुरु का अनुयायी ।	वृन्द	वृग्रा	18/417	> मुरीयाद (व्य०आ०)
मुल्क	अ०पु० देश प्रदेश संसार	,,	,,	116/17, 135/137, 148/192, 163/257	> मुलक
मुश्किल	अ०स्त्री० कठिनता, जटिलता, गूढता, बारीकी ।	बोधा	2	25/34	> मुसकिल
	वि० कठिन दुष्कर जटिल गूढ सूक्ष्म, बारीक ।	नागरी	नाग्रा	502/650 (पश्चगामी समी०)	> मुसक्ल
मुसल्मान	अ०पु० इस्लाम धर्म का अनुयायी मुस्लिम ।	वृन्द	9	189/473	> मुसलमाँन (अनुनासिकता)

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
मेह्रबान	फा० वि० दयालु, सकरुण, मित्र	बोधा	1	6/33	> महिरबान
		वृन्द	6	35/4	> महरबान
रस्मी	अ० वि० परम्परा, सम्बन्धी, मामूली साधारण ।	देवदत्त	3	247/93	> रसमी
रह्मत	अ० स्त्री० दया, करुणा	वृन्द	वृ०ग्र	200/559	> रहमत
रिज़्क	अ० पु० अन्न, जीविका, रोजी	वृन्द	यमक	222/201	> रिजक
रिश्वत	अ० स्त्री० घूस	नागरी	8	502/756	> रिसवत्
लश्कर	फा० पु० सेना फौज भीड़ समूह	गंग	1	313	> लसकर
शख़्स	अ० पु० व्यक्ति, फर्द, मनुष्य	नागरी	ना०ग्र	498/798	> सखस
शत्रंज	फा० स्त्री० एक प्रसिद्ध खेल, जो भारतवर्ष का प्राचीन आविष्कार है, जिससे अच्छा खेल आजतक संसार में नहीं हो सका न खेलने वाला यह दावा कर सकता है कि वह सबसे अच्छा खेलता है ।	ग्वाल	,,	129/129	> सतरंज
शम्शीर	फा० स्त्री० कृपाण तलवार असि	भूषण	3	418/132/5	> समसेर
		पद्माकर	1, 8	/129,	/3
शंगर्फ़	फा० पु० ईंगुर एक प्रसिद्ध पदार्थ	सोमनाथ	सो०ग्र	148/	> सिंगरफ
सफ़्फ़ाक	अ० पु० रक्तपात हिंसा खूँरेजी	पजनेस	प०प्र०	33/84	> सफ़ाक्
सब्जी	फा० स्त्री० हरापन, शाक, भाजी तरकारी, भाँग ।	पद्माकर	6	/98	> सबजी
सिर्फ़	अ० वि० शुद्ध, पवित्र, केवल, मात्र	तोष	1	उदा० 161/302	> सिरिफ
सुब्ह	अ० स्त्री० मेल, संधि, मैत्री, दो व्यक्ति में परस्पर विरोध । कवि- समझौता ।	चन्द्रशेखर	ह० ह०	22/140	> सुलह

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
सुल्तान	अ० पु० शासक, नरेश, बादशाह	चन्द्रशेखर	ह० ह०	10/59, 26/173, 30/198, 31/209, 210, 32/213, 215, 33/220.	> सुलतान
हज्रत	अ० पु० किसी बड़े व्यक्ति के नाम से पहले सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द कोई प्रतिष्ठित और पूज्य व्यक्ति व्यंग्य-धूर्त, चालाक पाखंडी, ऐयार, बदमाश ।	भूषण	1	54/180	> हजरत
हफ़्तहज़ारी	फा० पू० मुगल राजकाल की एक प्रतिष्ठित पदवी इस पदवी का अधिकारी ।	वृन्द	वृ्ग्र	153/216	> हफतहजारी
हल्क़	अ० पु० कंठ; मुंडन	गंग	1	23	
हिक्मत	अ० स्त्री० विज्ञान, आयुर्वेद, बुद्धिमता, युक्तितर्कीब । उपाय, प्रयत्न ।	नागरी	नाग्र	86/21	> हिकमत
हुक्म	अ० पु० आज्ञा आदेश राजादेश	वृन्द	वृग्र	171/327	> हुकम
अर्ज	अ० स्त्री० प्रार्थना, गुजारिश, विनय निवेदन ।	पद्माकर	ज० वि०	165	
		केशव	2	514/58	> अरज
		रसलीन	3 4	306/14 342/10	
		वृन्द	11, 9	267/59, 147/186	
		चन्द्र०	ह० ह०	8/47, 13/78, 15/94, 17/105, 34/234, 35/239, 36/252.	
		वृन्द	9	144/169, 170, 147/186, 170/322 182/419.	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
अर्ज़	अ०स्त्री० प्रार्थना, चौड़ाई, घरेलू सामान ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	2/13	
अर्ज़ी	अ०स्त्री० प्रार्थना पत्र, दरख्वास्त	भिखारी	1	70/480	>अरजी
अर्बा	अ० पु० खालिस अरब	गंग	1	/306	>अरेबान न लगाकर बहुवचन
अर्मनी	फा० वि० अर्मन का निवासी (काकेशियन)	वृन्द	वृग्र	156/227	>अरमनी
क़र्ज़	अ० पु० ऋण, उधार, कर्जा कवि- अंकुश के अर्थ में ।	वृन्द	8	135/135, 136/141	>करज
कुर्ब	अ० पु० समीपता नजदीक	वृन्द	वृग्र-9	161/249	कुरब
कुरूब	अ० पु० कर्ब का बहुवचन व्याकुलता, कष्ट ।				
क़ुर्बान	अ० पु० बलि सदक न्योछावर निसार	बोधा	1	6/31	> कुरबान
		भिखारी	2	119/138	
			4	119/22	
ख़र्च	फा० पु० व्यय, इस्तेमाल	बिहारी	1	134	>खरचै अन्त ऐ का आगम
ख़ुर्मा	फा० पु० छुहारा, सूखा खजूर, हरा छुहारा, पिंड खजूर ।	नागरी	नाग्र	21/22	> खुरमा
ग़र्क़	अ० वि० डूबा हुआ, निमग्न	पद्माकर	8	37	> गरक
गर्क	अ० पु० पानी में डूबना, निमग्न		6	78	> गरक्किमे अन्त व्यंजन आ गया ।
			ग्वाल		> गरकि अन्त में स्वरागम
गर्द	फा० स्त्री० रज, धूलि, खाक, नगर, शहर, खेद, रंज, लाभ, वक्ष, प्रत्यय फिरनेवाला, जैसे — जहाँ गर्द संसार में फिरने वाला ।	ग्वाल भूषण	1	34/47 472	> गरद

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
ग़रीबपर्वर[1]	अ० फा० वि० गरीबनवाज, दीन-वत्सल, दीनों पर दया करने-वाला ।	देवदत्त	रसविलास	170/7	> गरीबपरवर
गर्म	फा० वि० तप्त उष्ण गर्म तासीर वाला, तीव्र, शीघ्र, क्रुद्ध ।	ग्वाल	।	30/37	> गरम
गर्म गर्म	फा० वि० गर्मागर्म, ताजासेकी या भुनी हुई चीज़ । कवि– बहुत गरम ।	नागरी	नाग्र	84/16	गरमागरम
गर्मी	फा० स्त्री० उष्णता, हरारत, गर्मी रोग, बुखार, जोर, तीव्रता, क्रोध, गर्व घमंड ।	ग्वाल	ग्वार	28/34	> गरमी
गिर्द[2]	फा० पु० घेरा हल्का आसपास चारों ओर ।	भिखारी केशव ग्वाल	। 8	/528 460/17	> गिरद
गिर्दबाद	फा० पु० चक्रवात, बगूला, बवंडर(हवा)				
गिर्दाब	फा० पु० जलावर्त, भवर(जल)	आलम और शेख	आलम केली	114/169	> गिरदाब
गुर्ज़[3]	फा० पु० एक प्राचीन अस्त्र, गदा । कवि– एक प्रकार की गदा ।	रसलीन	।	145/763	> गुरज

1. मधु कैसो तरवर शरद को सरवर है गरीब परवर प्रीति गुनगाही की ।। – देव
2. विपरीति मंडित जघन खम्भ नीव किधौं लाह की ।
   गिरद गोदी मैन महिपाल की ।। केशव
3. गहगहे गिरद गुलाबन के बट्टाबने किंसुक अगार मुख माहि परचत है ।।–ग्वाल
3. चितवति बान चलाइ अरु हास क्रियान लगाइ
   उरज गुरज पिय हिय हनै भुज फाँसीगर ल्याइ ।। –(रस प्रबोध)–

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
चर्ख़	फा० पु० चक्कर, आकाश, पहिया, कुम्हार का चाक, कडा, धनुष, रहट, कुर्ते का गला,	ग्वाल	1	34/49	> चरख़
तर्ज़	अ० उभ० शैली, पद्धति, ढंग, स्वभाव, वेशभूषा ।	नागरी	नाग्र	445/858	> तरज
दर्ज़ी	फा० पु० कपड़ा सीने वाला, सूचिक ।	देवदत्त	5	183/17	> दरजी
दर्द	फा० पु० कष्ट, व्यथा, यातना, तकलीफ, करुणा, दया, तरस, रहम, दुखः, क्लेश, मुसीबत, पीड़ा, टीस ।	मतिराम	3	420/625	> दरद
		भिखारी	4	241/45	
		बोधा	2	36/21	
दर्या	फा० पु० नदी, सरिता(बड़ी नदियाँ) दर्याचि फा० पु० छोटी नदी ।	गंग	1	/329	> दरिया
नर्द	फा० स्त्री० चौसर का खेल, चौसर का गोट ।	गंग	1	/407	> नरद
नर्म	फा० वि० मृदुल, कोमल, नाजुक, हलका, जिसका कोप धीमा पड़ गया हो, शिथिल, आलसी ।	भूषण	2	115/11	> नरम
पर्वर	फा० प्रत्यय पालने वाला, जैसे – अदलपर्वर – न्याय का पालन करने वाला ।	मतिराम	2	346/276	> परवर
पर्हेज	फा० पु० अलग रहना, बचाव घृणा, रोगी के खान-पान का बचाव, निषेध ।	बेणीप्र०	1	52/369	> परहेज
फुर्कत	अ० स्त्री० वियोग विरह फिराक	पजनेस	1	33/84	> फुरकत

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
फर्श+बंद[1]	अ०पु०+फा०पु० ऊंची समतल-भूमि, बंद– प्रत्यय बंधा बाधने वाला, पाबंद, पांव बंधे हो, नालबंद–नाल बांधने वाला, ऊंची समतल भूमि ।	पद्माकर देव	उ ।	209 7/137	>फरस बंद
फ़र्क़	अ०पु० सिर, अंतर, दो-संख्या का शेष, दूरी पृथकता, जुदाई, मतभेद, कमी ।	जसवंतसिंह	भा०भू०	57/174	>फरक
फ़ुर्ज़ंद	फा०पु० आत्मज पुत्र	नागरी	ना०ग्र	127/2	>फरजंद (अनुनासिकता)
फर्जी[2]	फा०पु० संज्ञा शतरंज का खेल शतरंज का एक मोहरा, जिसे वजीर कहा जाता है ।	तोष	।	126/103	>फरजी
फ़ुर्ज़ंदी	फा०वि० बेटापन, पुत्रत्व, बाप-बेटे का नाता ।	वृन्द	वृ०ग्र	161/249	>फरजंदी
फर्द[3]	अ०वि० बेजोड़ अनुपम रजाई का ऊपरी पल्ला, एक व्यक्ति अकेला।	ग्वाल	ग्वार	34/47	>फरद

1. (क) दूध कैसो फेन फैल्यौ आंगन फरस बंद ।। – देव
   (ख) कहै पद्माकर फरागत फरसबंद फहर
       फहारन की फरस फबी है फाब ।। – पद्माकर
2. पहले हम जाइ दियो कर मै तिय खेलति
   ती घर में फरजी ।। तोष
3. मोरन के सोरन की नैको न मरोर रही
   घोरहू रही न घन घने या फरद की ।। – ग्वाल

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्या० प०
फ़र्द	फा० स्त्री० हिसाब का रजिस्टर, हुक्मनामा, निमंत्रण का सूची- पत्र चादर ।	पद्माकर	5	6	> फरद
फ़र्श[1]	अ० पु० बिछौना, बड़ी दरी,	पद्माकर	8	66	> फरस
	समतल, भूमि, हमवार जमीन,	पजनेस	1	29/73	
	सीमेंट की पक्की की हुई जमीन।	ग्वाल	1	33/46 34/47	
बर्ख	फा० पु० अंश भाग टुकड़ा हिस्सा	ग्वाल	1	35/49	> बरख
बर्फ़	फा० जमाया हुआ पानी हिम बहुत अधिक ठंडा ।	ग्वाल	1	28/33	> बरफ
बेदर्द	फा० वि० जिसमें दर्द न हो निर्दय, कवि- निर्दय (नायक)	पद्माकर	3	200	बेदर्द > बेदरद
बेपर्दः	फा० वि० बिना आड़ के खुल्लम-खुल्ला, स्पष्ट ।	,,	5	20	> बेपरद अल्पोचारित ह का लोप
बेशर्म	फा० अ० वि० निर्लज्ज, बेहया, स्वामी, मानरहित ।	ग्वाल	1	103/50	> बेसरम
मर्ज़ी[2]	अ० स्त्री० इच्छा स्वीकृति आदेश	पद्माकर	3	167	> मरजी
	कवि-चित्तवृत्ति- पद्माकर	भिखारी	1	70/480	
मर्दः	फा० वि० वीर साहसी उत्साही	ठाकुर	1	32/91	> मरदन
	फा० पु० मनुष्य नर पति शूर	वृन्द	8	74/202	
	साहसी हिम्मतवार न लगा कर	,,	9	143/166	> मरदो
	बहुवचन ।	,,		150/201	> मरदों (अनुनासिकता)
मर्दानगी	फा० स्त्री० मर्दानापन पुरुषत्व साहस, बहादुरी ।	ठाकुर	1	31/86	मरदानगी

1. फहर फहारन की फरस फबी है फाब ।। — पद्माकर
फरस गलीचन के बीच मसनंद तापे मखमली गोल-गोल गुलगुली गाला में ।।—ग्वाल

2. वा विधि सांवेरे रावरे की न मिलै मरजी न मजा मजाखे ।। — पद्माकर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
शर्म	फा०स्त्री० लज्जा हया पश्चाताप पछतावा ।	पद्माकर भूषण	। ।	121 47/150	> सरम
शर्मिंदः	फा०वि० लज्जित, शर्मसार	नागरीदास	ना०ग्र	508/3	> सरमिंदा
शिर्कत	अ०स्त्री० सम्मिलन सहयोग साझा, सम्मिलित होने का भाव किसी काम में योग ।	देव	सु०	523	सिरकत
सर्दःन[1]	फा०+न० मंद सुस्त	ठाकुर	।		> सरदन
सुर्ख	फा०वि० लाल रंग लाल रंगा हुआ ।	नागरी	ना०ग्र	508/5	> सुरख
सुर्खरु	फा०वि० सम्मानित इज्जत किया गया, सफल, कामयाब	वृन्द	वृ०ग्र	185/438	> सुरखरु

अ—

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अद्वन	अ०वि० अधमतर, धूर्त, पाजी, समीपतर, कमीन करीब तर डा०कि० गुप्त ने इसे अदा अ० शब्द कहा है ।	गंग			>अदाई (वन का लोप)
अदा	अ०पु० देना, चुकाना, फा०स्त्री० हावभाव, नाजअंदाज, प्रणाली ।				
अब्रू	फा०स्त्री० भृकुटि, भौं, भ्रू	नागरी	ना०ग्र	502/758	> अबरु
असील	अ०वि० कुलीन, शरीफ, खरा, उत्तम, अच्छे लोहे का अस्त्र	चन्द्रशेखर	ह०ह०	18/112	> असीले
उम्र	अ०स्त्री० आयु	ठाकुर	ठा०श०	13/35	> उमर

1. सर्दःन थिगरी न लागै उधो चित्त के चँदोवा फटे
बिगरी न सुधरै सनेह सरदन को ।। — ठाकुर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
उमरा	अ० पु० अमीर व बहु० धनवान लोग।	केशव	4	625/66 627/82	>उमराउ
उसूल	अ० पु० सिद्धान्त समूह नियम कायदे।	देवदत्त	1	/73	> उसुले
कसूत	फा० वि० कठोर कर्कश वह अंग जो सुन्न हो गया हो।	केशव	वी०च०	560/14	>कसखति
कलाम	अ० पु० शब्द, बोली, वार्तालाप, आपत्ति, रतिराज, इल्मे कलाम।	भिखारी	2	122/155 142/142	कलामैं
कहर[1]	दैवी प्रकोप, बलाए अर्थ- विपत्ति ढाने वाला	भुषण	1	22/72	>कहरी
कीमत	अ० स्त्री० मूल्य, दाम, कद्र, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, बड़ाई, उच्चता।	बोधा भिखारी	1 4	15/89 188/6	> कीमति
ख़बर	अ० स्त्री० सूचना, संवाद, संदेश, पैगाम, समाचार, हाल।	भूषण भिखारी बोधा	436, 102/355 2 2	 155/299 138/56	> खबरि >खबर
ग़द्र	अ० पु० विप्लव, क्रान्ति, इन्किलाब, सैन्य द्रोह, लूटमार, प्रबन्ध की बहुत बुरी व्यवस्था।	खखान	1	71/48	> गदर
जुराफ़	अ० पु० ऊँट के बराबर एक जंगली जानवर, जिसका मुँह हिरन की तरह होता है, और पीठ चित्तीदार होती है, यह अपने जोड़े से अलग होने पर मर जाता है।	ग्वाल 1	1	3/51	जुराफा

1. कहरी यदिल मौज लहरी कुतुब कहै
बहरी निजाम के जितैया कहै देव है ।। — भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
जेर[1]	वि० फा० परास्त, परेशान, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ, जेवर, रस्सी ।	सुन्दर			> जेरी
देव[2]	फा० पु० राक्षस, एक नरभक्षी, प्राणी, देवता ।	भुषण		उदा०	> देवा
नज्र	अ० स्त्री० भेंट, उपहार, तोहफा,	बोधा	2	59/28	> नजर
	चढ़ावा, नियाज, प्रदान,	पद्माकर	3	553	
बला	विपत्ति, दैवी आपत्ति, प्रेत बाधा, दुष्ट, धूर्त, भयानक, बहुत अधिक कुशल, चालाक ।	पद्माकर	3	512	> बलाइ
बह्र	फा० सं० पु० समुद्र, सागर, समूह	भुषण		उदा०	> बहरि
मगरूर	अ० वि० घमंडी, अभिमानी	भिखारी	1	19/119	> मगरूरि
मसल	अ० स्त्री० लोकोक्ति, कहावत, सामान, तुल्य, मिस्ल ।	वृन्द	9	161/249	> मसला
मेह्र	फा० सं० स्त्री० कृपा, दया	ग्वाल		उदा०	मेहर
		वृन्द	5, 9	28/15, 145/174	
	प्रेम, ममता, दया, रहम, करुणा, तरस । कवि–मेहरबानी ।	भूषण	2	116/14	> मेहर हूँ
मुराद	अ० स्त्री० इच्छा, कामना, आशय मक़सद, मन्नत, मानता ।	नागरी	नाग्र	121/11	> मुरादा
रजा	अ० स्त्री० इच्छा, अनुमति, छुट्टी हुक्म, आज्ञा ।	भिखारी	1	69/478	> रजाइ

1. जेर – चित्र में चितेरी है कि सुन्दर उकेरी है
   कि जीजिरन जेरी है ज्यौं घरी लौं मरतु हौं ।।
   — सुन्दर
2. देव – देस दहपट्टि आयो आगरे दिली के मेड़े बरगी बहरि
   मानौ दल जिमि देवा को ।। – भूषण

आदि व्यजन आगम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गुर्ज़	फा०पु० एक प्राचीन अस्त्र, गदा कवि– गदाओं की	पद्माकर	6	/119	गुर्ज़ > गगुरजनि
				(अन्त व्यजन)	
दीदनी	फा० अव्यय– देखने योग्य, देखने लायक। कवि– देखने से	गंग	1	/237	> जिदीदने
अक्बर	अ०वि० महान, सबसे बड़ा (पु) एक सुप्रसिद्ध मुगल सम्राट	केशव	2	495/18	> अकब्बर
अक्ल	अ०पु० खाना, भोजन	वृन्द	वृ०ग्रं	171/325	अक्कल
अक़्ल	अ०पु० बुद्धि, प्रज्ञा, सूझ-बूझ चतुरता, विवेक।				
अजूबः	अ०वि० शुद्ध उजूब है परन्तु उर्दू वाले दोनों बोलते हैं। विचित्र, अद्भुत, अनोखा।	पद्मा०	8	7	> अजब्ब
				मध्य व्यजन आगम	
अमारी	अ०स्त्री० हाथी का हौदा, अम्मारी	वृन्द	वृ०ग्रं	201/563	> अमारी > > अंबारी
		चन्द्रशेख	ह०ह०	19/114	> अम्मारी > अम्बारी
एराकी[1]	फा०पु० अरब देश का घोड़ा, ताजी।	तोष		उदा०	एराकी > यक्की
कलाबतून[2]	तु०पु० कलाबत्तू, सोने चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाता है।	आलम		,,	कलाबत्तन

1. घूँघट यक्की तन्नाइयो थिक्की पाइ रूप की तक्की सब सौतिन कक्की है।। – तोष

2. कवि आलम ये छवि ते न लहे जिन पुंज लये कलबत्तन के।। – आलम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
कमर	फा०स्त्री० कटि, लंक, मध्यदेश, न प्रत्यय लगाकर बहुवचन, बनाया है (77/259)	भूषण	1	191 77/259	>कम्मर
कीमत[1]	अ०स्त्री० मूल्य, दाम, कद, प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, बड़ाई उच्चता।	भूषण	415 2-119/24		>किम्मति
कुल	अ०वि० सर्व, सब, तमाम	बोधा	2	24/24	कुल्ल
गज़ब	अ०पु० क्रोध, गुस्सा, प्रकोप खुदाई।	पद्माकर	8	/7	> गजब्ब
गर्क़ :	अ०वि० डूबा हुआ निमग्न	,,	6	78	> गरक्कि मे
ग़र्क़	अ०पु० पानी में डूबना निमज्जन कवि- सिर से पैर तक डूब गये				
गिल:	फा०पु० उलाहना, शिकवा, बोध निन्दा।	बोधा	2	48/58	> गिल्ला
गुर्ज़	फा०पु० एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, डंडा।	पद्माकर	6	61	> गुर्ज्जै
जब्र	फा०पु० शक्तिशाली, ऊपर भारी	गंग	1	435	> जब्बर
दिलेर	फा०वि० उत्साही, हौसलामंद, शूर, वीर, अभय, निडर	पद्माकर	6	/95	> दिलवारे
पजामः	फा०पु० अधावस्त्र, इजार	बेनीप्रवीण	1	26/173	> पायजामा
पाअँदाज	फा०पु० वह टाट या चटाई जो कमरे आदि के दरवाजे पर पाँव पोछने के लिए पड़ी रहतीहै।	बिहारी	1	बि०259/265	> पार्यनदाज > [illegible]

1. भूषन भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं किम्मति इहाँ लगि है जाकी भटझोट मैं।
एतो गुन देख्यो राम साहिब सुजान मैं कि बारिज बिहान मैं कि कीमति कृपान मैं।

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
बदी	फा०स्त्री० पाप, गुनाह, दोष, अपराध, बुराई, अपकार, कतघ्नता	गंग	1	/411	बद्दी
बहाल[1]	फा०पु० आनन्द, प्रमोद, उदण्ड, अनुशासनहीन ।	रघुराज			बहल्ला
बेहद	फा०अ०वि० असीम, अपार, बेहिसाब अत्यधिक, बहुत, जियादा, अत्यंत ।	सोमनाथ ग्र०प्र०सं०	सोम	250/	बेहद्द
		भूषण	2	120/25	कि-हद्द
		पद्माकर	3	590/	
			4	15	
			8	10	
मुकाबा	पु०अ० शृंगारिक, सँदूक, वस्त्रों और अलंकारों आदि की मंजूषा				मुकब्बा
मुश्किल	अ०स्त्री० कठिनाता, जटिलता, गूढ़ता, सूक्ष्मता, बारीकी ।	बोधा	1	19/111	मुसकिल
	वि० कठिन, जटिल, गूढ़, सूक्ष्म बारीक ।		2	24/29	
मुरीद	अ०वि० शिष्य, धर्मगुरु का अनुयायी ।	वृन्द	वृग्र	181/417	मुरीयाद
रदी	अ०वि० विकृत, दूषित,	ग्वाल	ग्वार	37/55	रद्दी
रोजरोज	फा०नि० हररोज, नित्यप्रति,	तोष	1	182/418	रोजहीरोज
वजीर	~~अ०स्त्री०~~ मंत्री	नागरी	1	15/96	उज्जीर

1. बहाल – चला चला छायो रव ह्वै क्यों बहल्ला हमैं तल्ला देत ईस आज अवध भुवार को ।। – रघुराज

मानहु मुस्वर मनोज को मुकब्बा मंजु फैलि परयो ताकी तसबीरै उड़ी जात है ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
सलाह	अ०स्त्री० अच्छाई, भलाई, परामर्श, मशावरा, उद्देश्य, मंशा, राय, तजवीज ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	15/95	सल्लाह
हलब्बी	अ०वि० हलब का निवासी, हलब सम्बन्धी, हलब का बना हुआ, हलब एक प्रसिद्ध नगर का है, जहाँ दर्पण प्रसिद्ध है ।	पद्माकर	।	198	हलब्बी
	कवि—तलवार विशेष, एकप्रकार का शीशा ।	तोष			
हुनर[1]	फा०पु० शिल्प, दस्तकारी, कला, फल, गुण, हाथकी सफाई, चालाकी, विद्या, इल्म ।	भूषण		153/51	हुन्नर दे० पृ०

अन्त व्यंजन आगम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
अदानी	अ०पु० अदना का बहुवचन, बहुत पासवाले, बहुत कमीने,	ठाकुर	ठा०श०	26/73	अदानिया
अफूर्न	फा०वि० अत्यधिक प्रचुर, कवि — बढगई ।	गंग	।	71/237	अफर्जूद
अदा	फा०स्त्री० हावभाव, नाजअदाज, पद्धति, तर्ज । अ०पु० बेबाक करना, देना, चुकाना, बेबाक, परिशुद्ध ।	नागरी	नाग्र	499/749 500/759	अदाह

---

1. हुन्नर — जोर रुसियन को है तेग खुरासान की है
नीति इगलैंड चीन हुन्नर महावरी ।। भूषण

2. हलब्बी हेरी जु हलब्बी सुडनि यब्बी तीस हलब्बी सी चमके ।। —पद्माकर
मै ही वेस बाफ्ता की कँचुकी कसी है श्वेत नारंगी लसी है
मानो संपुट हललबी के ।। — तोष ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
अरबी	अ०पु० अरब का निवासी, अरब का व्यक्ति, अरबी भाषा। कवि-ताशा नामक बाजा, घोड़ा (55)	सोमनाथ सेनापति भिखारी	उदा० 1 3 4	 3/7 20/37	> अरबीन > अरब्बित
आनद[1]	फा०सं० आय, कमाई	सोमनाथ	8	उदा०	> आवदनी
उमरा[2]	अमीर का बहु० धनवान लोग, काव- बड़े पदाधिकारी उमराव- उमराव, उमरावा	पद्माकर भूषण 1, 2 वृन्द	8 91/315, 33/103 8	3 80/270, 116/13 122/45, 126/138, 143/166, 150/202, 225, 162/256.	> उमराव
		मनिराम	2	308/58, 322/131	
		भूषण	1	33/103, 70/239, 10/34.	> उमराय
कद(द्द)[3]	अ०पु० डील आकार कामत	भूषण	4	141/16	> कद्दन
कद्रदां	अ०फा० गुण की कद्र करनेवाला, पहचानने वाला, गुण ग्राहक, गुणज्ञ।	नागरी	ना०ग्र०	598/1,	> कदरदान

1. जानि के आवदनी बर की चित पाइति सो तित ही करिके रुख।
ठाढ़ी भई मिलि कै तिय गाउ की नाय बरात को देखन को सुख ।।

— सोमनाथ

आवदनी सुनि चंदमुखी बनि कै निजु को रति ते जितवैरी — वही।

2. मानो हय हाथी उमराव करि साथी
अवरंग डरि सिवाजी पै भेजत रिसाल है ।।
औरे ते गुसुलखाने बीच ऐसे उमराय लै चले
मनाय महराज सिवराज को ।।

3. हद्दन छद्दन माहि मद्द कर नद्द होत
कद्दन भनद्द से जलद्द हलछद्द है ।।

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
कलक[1]	वि०अ० दुखित बेचैन	बेनीप्रवीण	1	67/492	>कलकान
कलाम	अ०वि० बोलनेवाली भाषिणी	,,	1	33/218	>कलामिनी
खसम	अ०पु० पति, प्रियतम, शत्रु, स्वामी ।	गंग	1	उदा० 307	>खसमाना
ख़ास(स)	अ०वि० विशेष मुख्य, प्रधान	बोधा	2	38/25	>खासन
खुशअदा	फा०वि० जिनकी अदाएँ अच्छी हों, जिसकी वर्णन शैली अच्छीहो ।	नागरी	नाग्र	177/148	>खुशअदाह
खुशबू	सुगन्ध	पद्माकर	3	661	>खुशबोही
ज़कंद	फा०स्त्री० छलांग, फलाग, उछाल क्रि- कुदते हुए ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	40/292	>जकंदत
जलाल	अ०पु० प्रताप तेज	पद्माकर	6	92	>जलालत
तख़्तनशी	फा०वि० तख़्त पर बैठनेवाला बादशाह ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	14/91	>तखतनसीन
तख़्तनशीनी	फा०स्त्री० बादशाह बनना, अभिषेक, अपने शासक होने की घोषणा । तख़्तनशीन- फा०वि० सिंहासनारूढ़ ।				
तसद्दुक़	अ०पु० न्योछावर होना, सदके होना, कृपा अनुकम्पा, भेंट	पजनेस	प०प्र०	33/84	>तसद्दुकता
ताज़ी	फा०वि० अरब की भाषा, अरबी अरब का घोड़ा, शिकारी ।	गंग	1	/422	>ताजिया

1. निसि कैसी कोकी हौ कलपि कलकान भइ ।
अब अति विकस विलोकि अलबेली मैं ।। – बेनीप्रवीण 67/492
कीर की कलह कलमत्यो मनु कोकिलाहू
कुहकि कुहकि कान कलकात करी है ।। – आलम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
तुर्रः	अ०पु० जुल्फ, पेश, पाश, सुनहरे तारों का गुच्छा, जो पगड़ी पर लगाते हैं, फूलों की लड़ियों का गुच्छा, कलगी, शाख, बात में बात, अच्छाइ, अजूबापन, सर्व श्रेष्ठ ।	नागरी	नाग्र	185/165	>तुर्राना
तुर्क	तु०पु० तुर्किस्तान का निवासी, तुरकिनि--स्त्री०	गंग	1	/346	>तुरकिने (स्त्री० बहु० बनाने के लिए इन प्रत्यय जोड़ा है । ब्रजभाषा के अनुसार ।)
दफ[1]	फा०पु० डफली एक गोलाकार खाल, मढा बाजा ।	ग्वाल		30/37	>दफेर
दरिया	फा०पु० नदी, सरिता, आपगा समुद्र ।	पद्माकर	3	470	>दरियाव
		भूषण	13	13	
		मतिराम	2	310/69, 361/373	
		,,	1	305/41	>दरयाव
		बिहारी	3	220/38	>दरय्याव
दस्तः	फा०पु० चाकू, छुरी आदि की मूठ, कवि-- तलवार फेर कर	पद्माकर	हि०व०	191	>दस्ताने करि
नवाज़	फा०प्रत्यय जैसे नय नवाज बाँसुरी बजाने वाला, कृपा अनुग्रह करने वाला, जैसे गरीब नवाज ।	भूषण	1	44/139	> नेवाजत
				118/22	> नेवाज

1. कारी घटा काम रुप काम की दमादो बाज्यो गाज्यो कवि ग्वाल देखि दामिनि दफेर सी ।। -- ग्वाल 30/37

मू०शब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
नशीं	फा० प्रत्यय बैठनेवाला, जैसे — तख़्तनशीं, कवि— बैठू	गंग	1	/243	> नशीनम्
परवा	फा०पु० चिन्ता खटका आशंका भरोसा	भिखारी	1	49/338	>परवाह
पश्म[1]	फा०पु० बढ़िया मुलायम ऊन के द्वारा बने वस्त्र दुशाले	ग्वाल		36/53	>पश्मीनन
पोयः[2]	फा०पु० घोड़े की एक चाल, हटो, बचो ।				
पोयाँ	फा०पु० दौड़ता हुआ कवि— दौड़	पद्माकर	2	226	> पोइस य > इ
फ़ना[3]	फा०पु० नाश, मरण	चन्द्रशेखर			फना > फनाह
फ़राख़	फा०वि० चकला विस्तृत कवि— लम्बा चौड़ा	पद्माकर	3	/209	> फरागत
बख़्श	फा०पु० अंश, भाग्य, हिस्सा, प्रत्यय देने वाला, जैसे — जाँ बख़्श, प्राण प्रदान करने-वाला ।	सोमनाथ		24/	>बक्सत
बाजिंदः	फा०वि० चालाक, धूर्त, वंचक, बक्की ।	बकसी हंसराज			

1. फेर पसमीनन के चौहरे गलीचन पै
   सेज मखमली सोरि सेऊ सरदोसी जाय ।। ग्वाल 36/53
2. जाचक लाभ लह्यो यहै क्रूर कटक मे जाइ
   पोइस धक्का धूलि ते आयो प्रान बचाइ ।।
3. भयो थो दिली को पति देखत फनाह आज
   दाह मिटि गयो थो हमीर नर नाह को ।। — चन्द्रशेखर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
बू[1]	फा०स्त्री० सुगन्ध, प्रवाह	देव			>बोइन
बेपर्वा	फा०वि० निश्चित, निस्पृह, अभय, निडर । बेफिक्र	वृन्द	वृग्र	253/60	बेपरवाह >बेपरवाही
बेपर्वाइ	फा०स्त्री० निश्चितता, लापरवाही	नागरी	ना०ग्र०	244/54, 441/573 503/757 >बेपरवाइ 307/214 >बेपरवाही	
मज़नः	अ०पु० शुद्ध मजिन्न है जिस पर शक किया जा सके शंका का स्थान ।	वृन्द	वृग्र	175/362	> मजन्नस
मज्मूअः	अ०पु० कई चीजों का समूह लेखों या कविता का संग्रह ।	पजनेश	प०प्र०	33/84	> मजमूये
मुरस्स[2]	अ०वि० जड़ावदार जड़ाऊ	नागरी	नाग्र	214/239	> मुरस्सैकारी
मेह्रबानी	फा०स्त्री० कृपा, दया	वृन्द	वृग्र	173/334	> मेहरबानगी
रफ़ह या रफूअ	अ०पु० उठाना, ऊँचा करना,	नागरी	नाग्र	501/753	> रफायत
रिंद[3]	फा०स्त्री० उदण्डता, निरंकुशता, चपलता ।	बोधा	2	125/49	> रिंदगी
रुख[4]	फा०वि० रुख किये हुए लगाये हुए ।	केशव	३, 6		> रुखाये

1. भीतर मारे भँडार निजे भरि, भीज सुगन्ध की बोइन हीमें ।। — देव
2. बैठी है हिंडोरे बीच तखत मुरस्सैकारी जेब सरदारी की मजेज न भुलावही ।।

— नागरीदास

3. तब माधव उर शंकि कै भरि अंक लीन्हीं बाल
   शरमिदगी उर आन कीन्हीं रिंदगी ततकाल ।।
4. देवान्तक नारान्तक अंतक त्यों मुसुकात
   विभिषण बैन तन कानन रुखाये जू ।। — केशव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
रुजूज[1]	अ० पु० आकर्षण प्रवृत्त चाह करने वाला आकृष्ट होनेवाला	भूषण	3	138/8	> रुजुक
सबू[2]	फा० पु० शराब शराब का घड़ा	ग्वाल	1	117/92	> सबूर
शरीक[3]	अ० स्त्री० साथ देने वाली सहेली सखी ।	देव	5,6 सु०		> सरीकिनि
हक्कः	अ० स्त्री० घोर युद्ध घमासान लड़ाइ, महाप्रलय ।	पद्माकर		उदा०	> हकाहक

1. उठि गयो आलम सो रुजुक सिपाहिन को उठि गौ
   सिंगार सबै राजा राव रान को ।। — भूषण
2. ग्वाल कवि अंबर अतर मैं अगर मैं न उमदा सबूर हू
   मैं है न दीपमाला मैं ।। — ग्वाल
3. देखन दे हरि को भरि नैन घरी किन एक सरीकिनि मेरी ।।
   — देव ।

(२) <u>लोप</u>

आदि स्वर लोप

मध्य स्वर लोप

अन्त स्वर लोप

आदि व्यजन

मध्य व्यजन

अन्त व्यजन

आदि स्वर लोप

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अयाल[1]	फा०पु० घोड़ आदि के गरदन के बाल ।	चन्द्रशेखर			>याल
क़ियामत	अ०स्त्री० महाप्रलय, महाप्रलय-काल, बहुत ही सुन्दर और बढ़िया ।	पजनेस	1	33/84	>क्यामत
ख़्याल	अ०पु० विचार ध्यान कल्पना मति, राय, स्मृति, याद, भ्रम, अनुमान, अँदाज, एक कविता ।	भूषण	12./7	133/7 135/10	>ख्याल
		मतिराम	1	266/351	
		बोधा	2	57/9	
		भिखारी	4	34/38	
		नागरी	1	442/575	
जवान	फा०पु० तरुण युवा व्यवहार प्राप्त बालिग रूपवान ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	43/315	>ज्वान
जवाब	अ०पु० उत्तर प्रश्न का जवाब, अस्वीकृति, इन्कार, जोड़, मुकाबिल ।	केशव	3	465/5	>ज्वाब
		बोधा	2	76/5	
			1	16/91,93	
पयादः	फा०पु० पैदल चलनेवाला, चपरासी, सिपाही, हरकारा डाकिया, सेना का पैदल सिपाही, शतरंज का पैदल।	भूषण	1	89/307	>प्यादे >प्यादन
पियालः	फा०पु० चषक, कटोरा, शराब पीने का पियाला, सागग	चन्द्रशेखर	ह०ह०	25/166	>प्याले > प्याला
मियान	फा०वि० मध्य, तलवार की मियान, कमर ।	वृन्द	वृग	117/25	> म्यान

1. यालनि जटिल मंजु मुकता है ।। — चन्द्रशेखर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सवाल	अ०पु० शुद्ध उच्चारण, सुआल है, परन्तु उर्दू में सवाल ही बोलते हैं। प्रश्न पूछना, प्रार्थना, इच्छा, भीख की प्रार्थना, अर्जी।	गंग नागरी	1 ना०ग्रा०	/416 246/59	>स्वाल
सियाह	फा०वि० कृष्ण असित काला	वृन्द	वृग्रा	176/368, 370	>स्याह
सियाही	फा०स्त्री० कालिमा, अंधकार, काजल, दोष, कलंक, रोशनाई मसि।	बेणीप्रवीण	न०र०त०	65/47।	>स्याही

मध्य स्वर लोप

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अजब	अ०वि० विचित्र	नागरी	नाग्रा	498/4 498/748 500/751	>अज्ब
अज़ब	अ०पु० वह पुरुष जो स्त्री रखता हो।				
अख़ीर	अ०पु० अंत, छोर, मरणकाल				
आख़िर	अ०वि० अंत, अखीर, पिछल्ला, आखिरी, अन्ततः, आखिरकार	नागरी	नाग्रा	176/378	>आखर
उल्कः	तु०पु० देश, राष्ट्र कवि- एक जाति	केशव	4	624/59	>उलक
उलाक़	तु०पु० गधा				
ख़ल्क	अ०पु० सृष्टि करना, जनता उत्पन्न				
खलक़	अ०पु० कपड़ों का पुराना होना पुराना लिबास।	नागरी	8	499/749 509/10	>खल्क
खुशहाल	फा०अ०वि० जिसकी आर्थिक दशा अच्छी हो सम्पन्न समृद्ध। मालदार।	बिहारी	1	, 134	>खुस्याल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खुशहाली	फा०अ०स्त्री० सम्पन्नता, समृद्धि मालदारी ।	पद्माकर	3	721	> खुस्याली
जैयिद[1]	अ०वि० प्रचण्ड, धुरन्धर, बहुत-बड़ा ।	ग्वाल	1		> जैयद
तअज्जुब	अ०पु० आश्चर्य, विस्मय, हैरत	ग्वाल	ग्वार	18/8	> तज्जुब
तकीअ	पु० निन्दा करना, कलंक	बोधा	1		> नका
तीरअंदाज	फा०वि० तीर चलाने वाला, तीर से शिकार करने वाला ।	भूषण	1	65/217	> तीरंदाज
दरमियान	फा०पु० बीच, मध्य	भिखारी	1	21/138	> दरम्यान
			4	111/30	
फत्ह	अ०स्त्री० विजय, जय, जीत, सफलता ।	बिहारी	1	398/712	फते
मुआफ़िक़	अ०वि० योग्य, लायक, मेल, संघटन, मित्र, दोस्त ।	पद्माकर		उदा०	> माफक
		वृन्द	8	106/619	> माफिक
मुसव्विर	अ०पु० चित्रकार, तस्वीर बनाने वाला ।	ग्वाल	1		> मुसब्बर
रजज़	अ०स्त्री० युद्ध क्षेत्र में अपने कुल की शूरता व श्रेष्ठता का वर्णन ।	वृन्द	वृग्र	158/288	> रज्ज
रदाअ	अ०पु० कीचड़, मल, कल्क	,,	,,	176/378	> रद
रुक्अ	अ०पु० पर्चा कागज का टुकड़ा चिट्ठी, खत ।	,,	,,	164/264	> रुका (अन्त व्यंजन लोप)
रुक्का	अ०पु० रुक्अः परन्तु उर्दू में रुक्का ही बोलते हैं ।				(मध्य व्यंजन लोप)

1. जैयद – जम को जहर मानो जैयद कहर भयो
   हहर हहर चित्रगुप्त के करेजे होत ।। – ग्वाल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
लाजिम	अ०वि० आवश्यक, उचित, निश्चित, अनिवार्य, सटा हुआ, मिला हुआ, अकर्मक क्रिया के, ले, लाजिम।	वृन्द	11	276/140	> लाजम
सिफ़त	अ०स्त्री० प्रशंसा, तारीफ, गुण, उम्दगी, प्रभाव, समान जैसे सगसिफत, कुत्ते जैसा (व्या०) विशेषण, किसी चीज़ का गुण	नागरी	नाग्र	498/1	> सिफ्त
					अन्त स्वर लोप
सनम	अ०पु० प्रतिमा, प्रिया, कवि- प्रिय	गंग	1	/237	> सनम्
अफसोस[1]	फा०पु० सोच, चिंता	केशव आलम	2	511/4	> सोस
दगाबाजी	फा०स्त्री दगाबाजी धोखा	रघुनाथ			> बाजी
					मध्य व्यंजन लोप
अग्राज	अ०पु० गरज, का बहु० इच्छाएँ ख्वाहिशें स्वार्थ समूह मकसिद	ग्वाल			> अगाज
अमाकिन	अ०पु० मकान का बहुवचन	बोधा	2	95/10 (क का लोप)	> अमन
अल्लामा[2]	अ०वि० झूठा, असत्यवादी, प्रलापी, बात बनाने वाला।	नंदराम		उदा०	> अलाम

---

1. नेक निसि तासिहै तौ तारि न सकैगी सहि
   मनसिज सोस सक मैं संग नासु रे ।।

2. आपके कलाम को सलाम है अलाम राज
   एसे दगाबाज ते मिजाज मैं मिलावौं ना ।। — नंदराम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
इज्जत	अ०स्त्री० सम्मान, आदर, आव-भगत, प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा आबरू, इस्मत, पद, दर्जा।	वृन्द	9	261/249	>ईजत
उम्मीद[1]	फा०स्त्री० आशा, आस, उमीद, इच्छा, ख्वाहिश, भरोसा, उत्कंठा इश्तियाक, हारा, आसरा, आशान्वित।	देवदत्त	3	170/3	>उमीदे
		वृन्द	वृग्र	167/288	>उमेद
एहतमाम[2]	अ०पु० प्रबन्ध, इन्तजाम, व्यवस्था, देख रेख, निगरानी।	नागरी	नाग्र		>इतमाम
		वृन्द	9	156/227	ए > इ
		पंडित प्रवीन		(ह का लोप)	इतिमान म > न
कज़्ज़ाक़	तु०पु० लुटेरा डाकू	गंग	1	/39	>कजाकु
क़ज़्ज़ाकी[3]	तु०स्त्री० लूटमार, डकैती	बिहारी	1	240/209	>कजाकी
	ग्वलीन— दगाफरेब	ग्वलीन	फुटकल कवित्त	336/95	
क़द(द्द)[4]	अ०पु० डील आकार कामत	भूषण	1 4	539,49/159, 141/17	
	कवि— डीलडौल	भिखारी	2, 4	/30	
	भिखारी - शरीर			30/24	

1. उम्मीद- सुजस बजाज जाके सौदागर सुकवि
   चलेई आवै दसहू दिसान के उमीदे है ।। — देव

2. इतमाम— तिलक छरी गहि कनक की त्योरी तेज जसोल
   करत अनख इतमाम के पिय नहिं सकै सकोल ।। — नागरीदास

   इतिमान— भारी दरबार भर्यो भौरन की भीर बैठ्यो
   मदन दिवान इतिमान काम काज को ।। पंडित प्रवीन

3. कजाकी— ये कजरारे कौन पर करत कजाकी नैन ।। — बिहारी

4. कद — (अ) उलदत मद अनुमद ज्यौं जलधि जल बल
   हद भीम कद काहू केन आह के ।। — भुषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
कद्देआदम[1]	अ०वि० मानव शरीर के तुल्य, ऊँचा ।	पजनेस	1	17/43	> कदआदम
क्री	अ०वि० निर्दय, कठोर, बेरहम				
कस्साव[2]	अ०पु० गोस्त बेचनेवाला, मांस विक्रना, पशुवध करनेवाला ।	भूषण	4	144/22	> कसाइ व > इ
खुशहाल	फा०अ०वि० जिसकी आर्थिक दशा अच्छी हो, सम्पन्न, मालदार, कवि— आनन्दित होकर ।	बोधा	2	197/43	> खुसाला (ह का लोप)
जमानतदार	अ०फा०पु० प्रतिभू जामिन, जमानती, जमानत लेने वाला ।	,,	2	13त/3	> जमान्दार (त का लोप)
जिंदगीबख्श	फा०वि० जीवन देने वाला, जीवन बढ़ाने वाला ।	नागरीदास	नाग्रा	498/748	> जिंद बक्स (गी का लोप) ख़ > क
तर्रार[3]	वि० (अ०) मुखर चालाक छली	भूषण			> तरारे

(ब) भूषन जो करत न जाने बिनु घोर सोर भूलि
गयो आपनी ऊचाइ लखे कद की ।। — 49/159

(स) अँखियाँ मुख बुज में भौर ह्वै सभानी भइ बानी
गदगद कद कदम लो फूलिगो ।। — दास 30/24

1. कद आदम सीमा लखे पजनेस लगे नख छाती छिपवति ।। — पजनेस

2. कसाइ — भूषन मनै रे भुव भुषन द्विजेस है कला निधि
कहाय कै कसाइ कत होत है ।।

3. तर्रार —

धंसिकै धरा के गाढ़े कोल की कड़ाके डाढ़े
आवत तरारे दिग पालत तमारे से ।। — भूषन ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
ताजियान:	सं०पु० कोड़ा चाबुक प्रतोद कशा ।	चन्द्रशेखर	1	5/27	> ताजन
तोशक्खाना[1]	फा०पु० वस्त्रों तथा आभूषणों का भंडार ।	गंग	1	305 उदा०	> तोसेखाने (क का लोप)
दल्लाल	अ०पु० बिकवाल और लिवाल के बीच सौदा तै कराने वाला	ठाकुर	1	25/69	> दलाल
दावात[2]	अ०पु० मसिपात्र, स्याही, रखने का पात्र ।	पद्माकर		उदा०	> दोत (व का लोप)
नज्दीक	फा०वि० समीप निकट करीब (अव्य) राय में, खयाल में केशव- निकट के लोग ।	केशव	2	587/29	> नजीकहि
नश्शः	अ०पु० नशा, मस्ती, घमंड, मादकता, शुद्ध रूप नश्शा है । परन्तु उर्दू में नशा भी बोलते हैं ।	बोधा	2	51/8	> नसा
नायब[3]	फा०वि० स्थानापन्न, सहायक, पु० सहायक मुनीम । मुख्त्यार।	केशव	2	544/39	> नेव
फर्माबरदार[4]	फा०वि० आज्ञाकारी, आज्ञा-पालक, ताबेदार ।	द्विजदेव		उदा०	> फरमार

1. तोसेखाना — तोसे खाने फील खाने खजाने हुरम खाने खाने-खाने खबर
   नवाब खानखाना की ।। — गंग
2. दोत — कहै पद्माकर सुनौ हौ हाल हामी भरौ
   लिखौ कहौ लै कै कहूँ कलम दोत ।। — पद्माकर
3. नेव — जहाँगीर को पंजा लेव राजा को मिलवौ करि नेव ।।
4. फरमार — धीर धुनि बोलैं डोलैं दिगति दिगंतान लौं
   ओज भरे अमित मनोज फरमार ए ।। — द्विजदेव ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
फर्राश[1]	अ०पु० दीपक आदि जलाने वाला, सेवक, खिदमतगार	शिव			> फरास
बदख्वाह	फा०वि० अहित चिंतक बुराई चाहने वाला।	नागरी	नाग्र	128/10	> बदखाह
बलगार[2]	फा०स्त्री० घाटी गायों के बाँधे जाने का स्थान।	भूषण			> बगार
मज़्हब	अ०पु० धर्म, दीन, मत	नागरी	नाग्र	498/2	> मज्ब
मस्लहत	अ०स्त्री० परामर्श, सलाह, राज, भेद, हित।	वृन्द	वृग्र	161/249 152/207, 166/278,281 171/325	> मसलत > मसलति
मस्जिद	अ०स्त्री० नमाज पढ़ने की जगह	देव	वै०ह०	18	> मसीत
महल(ल्ल)	अ०पु० मकान, घर, प्रासाद, हवेली, अवसर, बीबी, पत्नी	भुषण	1	6/16, 56/189	~~मुहिम्म~~ > महलन
		पद्माकर	3	12	
		मतिराम	3, 2,	422/670, 300/9	
		देवदत्त	1	1/57	
			3	173/24	
			4	284/34, 290/12	
		भिखारी	1	56/384, 78/528	
		देवदत्त	4	240/176	> महलनि
मुआफ़	अ०वि० क्षमा प्राप्त, मुआफी,	चन्द्रशेखर	ह०ह०	8/47	> माफ

1. फर्राश — व्याज करि चाँदनी को मैन मजलिस काज चन्द है
फरास चारु चाँदनी बिछाई है ।। — शिव कवि

2. बैयर बगारनि की अरि के अगारनि की
नाघती पग रानि नगारन की धमकै ।। — भूषण

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मुक्केश[1]	फा०पु० चाँदी-सोने के चौड़े तारों का बना कपड़ा ।	पजनेश नागरी	1 7	3/7 159/107	>मुकेस
मुफ्रित[2]	क्रि०वि०अ० अत्यधिक बहुत ज्यादा ।	नन्दराम			>मुफित
मुहिम्म	अ०स्त्री० कोइ बड़ा काम कठिन काम युद्ध लड़ाई । कवि– चढ़ाई ।	भूषण	1	54/180	>मुहिम
मुरस्सा[3]	अ०पु० कर्ण का एक भूषण	बिहारी	1	260/267	>मुरासा
मुतसद्दी[4]	अ०पु० स्वामी राजा मुंशी लेखक शासनाधिकारी प्रबन्धकर्ता	गंग नागरी	1 8	/411 432/25	>मुसद्दी
मुशज्जर[5]	अ०पु० एक प्रकार का छपा हुआ कपड़ा ।	रुदन			>मुसजर
रंग ब रंग	फा०वि० चित्र विचित्र रंगारंग कवि– भांति भांति के	नागरी	"	471/1 474/675	> रंग रंग

1. मुकेस – पीतसित मिश्रित मुकेसन समस्त सारी जाहिर
   जलूस जाको जगत जगी परे ।। – पजनेस
   सजि मुकेस के बेस तिय, मनहु मैन की फौज ।। नागरीदास
2. मुफित – नन्दराम कामिनी अतर तर कीन्हे बास केस पास गुंफित मुफित
   झोप झलकी ।।
3. मुरासा – लसै मुरासा तिय श्रवन यौं मुकतनु दुति पाई ।। – बिहारी
4. कहा भयो दिन चार गद्दी के मुसद्दी भये
   बद्दी के करैया सब रद्दी होइ जायेंगे ।। – गंग
   आय खुदी तु करत री, भइ मुसद्दी मैन
   गुद्दी पर क्यों चढ़त है मुद्दी ह्वै करिबैन ।। – नागरी
5. मुसजर – ताफ्ता कलन्दर बाफत बन्दर मुसजर सुन्दर झिलमिल है ।। रुदन

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
रद्द[1]	अ० वि० खराब, बेकार, अनावश्यक	दास		1/2, 9	>रद
रद्दा[2]	फा० पु० ईंटों की एक पंक्ति जो दीवाल पर जोड़ी जाती है । समूह, राशि ।	कुमारमणि			>रदाने
रब(ब्ब)	अ० पु० स्वामी, पति, मालिक, बड़ा भाई, अभिभावक, सरपरस्त, ईश्वर, परमात्मा, खुदा ।	भूषण	1	118/20	>रब
लक्का[3]	अ० स्त्री० सं० कबूतर कवि– कबूतरी ।	दास			>लकी
सकिरलात[4]	तु० सं० पु० ऊनी बनात बढ़िया ऊनी वस्त्र ।	गंग	1	377	>सकिलात
शर्राफ	अ० वि० चाँदी सोना बेचने वाला	गंग	1	136	>सराफ
सक्का[5]	रा० पु० भिश्ती पानी भरने वाला	केशव	6	16/23	>सका

1. रद– नाभा लखे सुक तुंड नाभी पै सुरस कुंड
   रद है दुरद सुड देखत दुजान के ।। – दास
2. रदाने – गरदा से परे मुरदानि के रदाने तहाँ लीन्हें अंक बैठ्यौ सिरदार
   रंक प्रेतु है ।। – कुमारमणि
3. लकी–थकी थहरानी छवि छकी छहरानी थकथकी घहरानी जिमि लकी
   लहरानी है ।। – दास
4. सकिलात – (क) हरी-हरी दूब छोटी तापर बिराजै बूंद उपमा बनी है
   मिश्र निरख सिहात है ।
   (ख) सावन सनेही मन भावन रिझावत को मोतिन गुथाये है
   दुलीचा सकलात के ।। – शृंगार संग्रह
   (ग) रगमगे मखमल जगमगे जमीदोज और
   सब जे वे देस सूप सकलात है ।। – गंग
5. सका – सका मेघ माला सिखी पाक कारी ।। – केशव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सुन्नत	अ०स्त्री० नियम पद्धति तरीका मार्ग, रास्ता, स्वभाव, आदत, मुसलमानी ।	भूषण	2, 1	118/20, 21, 22	> सुनति
हक(क्क)	अ०पु० सत्य, वाकई, यथोचित स्वत्व, अधिकार, मेहनताना, रिश्वत, ईश्वर ।	वृन्द	वृ०	184/431	> हक
हम्माम[1]	अ०सं०पु० स्नानागार, स्नान करने की कोठरी जो गरम कर दी जाती है ।	बिहारी पद्माकर	1 3 4	168/12 379 33	> हमाम > हिमाम
हमायल[2]	अ०सं०पु० एक आभूषण जो हाथियों के गले में पहनाया जाता है । स्त्रियों के गले का वह आभूषण जिसमें माला की भाँति सिक्के गुहे रहते हैं ।	गंग देव	1 1	/326, 60 /6:6	हमेल

अन्त्य व्यंजन लोप

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आनक	आनक फा०अव्यय वह दूरवर्ती किं- उस	गंग	1	/243	> आ
अजां	फा० अव्यय उससे	,,	1	/243	> आं
आलीजाँह	अ०वि० बहुत बड़े रुतबे वाला महामान्य, बड़े आदमियों का संबोधन वाक्य, कवि-उच्चपदस्थ	चन्द्रशेखर पद्माकर	1 8	2/13 /27	> आलीजा > अलीजा

1. हमाम- मैं तपाइ त्रयताप सौं राख्यौ हियो हमामु ।। - बिहारी

2. हमेल - वारिद से गिरि से गरूवे, सुप्रसिद्ध भुसुड भयानक भारे हेम

हमेल विभूषित भूषन, गडनि और भ्रमैं मतवारे ।। - गंग

लूटती लोक लटै सकूल हमेल हिये भुज टाड न होतो ।।- देव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
कुहाम[1]	अ०पु० हाहाकार, शोरगुल, बवैला,	बोधा	2	64/36	> कूहर
कोताह	फा०वि० ह्रस्व छोटा थोड़ा अल्प	केशव			> कोते
	क्र- छोटे, पतले ।	पद्माकर	8	120	> कोता
जमूरक[2]	फा० सं० स्त्री० एक प्रकार की छोटी तोपे ।	चन्द्रशेखर		24/159	> जमूरे
जुल्कर्नैन	अ०पु० सम्राट् सिकन्दर की उपाधि जिसके दोनों कन्धों पर बालों की लटे पड़ी रहती थीं, जो बाद में अन्य बादशाहों के नाम के पीछे लगाई जाने लगी।	गंग	1	/348	> जुल्कर्न
तस्बीह	अ०स्त्री० सुब्हानल्लाह (ईश्वर अत्यन्त पवित्र है) कहना, जपमाला, माला ।	बोधा	2	18त/26 141/26	> तसबी, तसवी
ताब	फा० गरमी, ताप, क्रोध, आवेश, शक्ति, धैर्य ।	आलम		उदा०	> तौ
नवाजिस[3]	फा०स्त्री० कृपा, दया, मेहरबानी कवि'- कृपा की ।	रसलीन	3	306/15	> नवाजा
पैकानी[4]	फा०पु० सं० पद्मराग लाल	कृष्ण		93/16	> पैक

1. कोते – राग बिरागनि के परिमन हास विलासनि ते रति कोते ।। – केशव
2. जमूरे – लिए तुपक जरजार जमूरे ।। – चन्द्रशेखर
3. नवाजा – पाहन बुलाइ राजा एक छत्र मे नवाजा

   जोगी हार कर लाजा भयो तप लीन है ।।
4. पैक – लाल में गुलाल में गहर - - - - मैं

   लालो गुन पैक सो न - - - -

   सुछंद के ।। – कृष्ण 92/16.

मूश०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
फौरन[1]	फा०क्रि०वि० शीघ्र	नागरी			> फौरी
बेआबरू	फा०वि० अपमानित, तिरस्कृत बेइज्जत ।	भूषण		97/340	> बेआब
बोइदः	फा०वि० सूँघा हुआ	पद्माकर	3	/122	> बोइ
मखरगी	अ०फा०स्त्री० हँसी ठठठा,	वृन्द	वृग्र	217/144	> मनखरी
मिल्कीयत	अ० जागीर, भूमि या संपत्ति पर मालिक का अधिकार ।	नागरी	नाग्र	25/39	> मिलकिया
रंजिश	फा०स्त्री० मनोमालिन्य, मनमुटाव नाराजी, अप्रसन्नता ।	गंग	।	71/237	> रंज
रंज	फा०पु० कष्ट, दुख मुसीबत				
शहादत[2]	अ०स्त्री०सं० साक्षी गवाही	शिवनाथ			> सहादी
हलाकत[3]	अ०वि० मारा हुआ, हत, घायल ।	नागरी			> हलाक
हैवत	अ०सं०स्त्री० भय, दहशत	रघुनाथ		उदा०	> हेबा व > ब

1. फौरी – दुज फौरी लै अगुछा फेरत कृष्ण कृष्ण प्रेमातुर टेरत ।।
— नागरी दास ।

2. सहादी – हँसि कै हँसाय दीन्हौं मुख मोरि
सिवनाथ सखी सौं सहदी दै दै साँवरी हहा करी ।।
— शिवनाथ ।

3. हलाक – ऊँची नासा पर सजल चमकत मुकता चार करत बुलाक हलाक मन
रहिहैं नाहि सँभार ।। — नागरीदास ।

(5) <u>विपर्यय</u>

स्वर <

व्यजन <

स्वर विपर्यय

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अस्ली	अ० वि० सत्य, सच्चा, जो नकली न हो ।	भिखारी	1	35/241	> असील
अज़ीमत	अ० स्त्री० संकल्प, तंत्र-मंत्र, जादू-टोना । कवि– चमत्कार ।	बोधा	1	/89	> अजमति
कलाबत्तू	पु० तु० रेशम के धागे पर लपेटा हुआ सोने या चाँदी का तार ।	वृन्द	6	49/81	> कलाबूत (ऊ का अ)
कलाम	अ० पु० इस्लाम धर्म का मूल मंत्र शब्द वार्णी बोली ।	भूषण	2	118/22	> कलमा
काहिल	अ० वि० आलसी, सुस्त, मन्द	केशव	2,5 रच 731/15,16 18प्र/10	592/4	> काहली
गियार[1]	अ० स्त्री० संज्ञा, धर्मचिह्न, जो हर समय साथ रहे यथा जनेऊ आदि । सलीब या यहूदियों का पीला वस्त्र जिसे वे लोग कन्धे के पास कपड़ा में सिला रखते हैं ।	बे० प्र०		70/510	> गयारी
चादर	फा० सं० पु० नदी के बहाव का समतल जल ।	पद्माकर			> चदरा
जिरिह	फा० स्त्री० लोहे की जंजीरों का एक पहनावा जो लड़ाई में पहना जाता है । कवच	,,	हि० ब०	78	> जिरही
नवाज़िश	फा० स्त्री० कृपा दया अनुग्रह मेहरबानी ।	भूषण केशव	2 2	118/22 513/34	> नेवाजा > नवाजसि

1. गियार – न्यारी करौ सारी कै गयारी सी प्रवीन बेनी
   बचन दैहौं तन बसन में गोपरी ।। – बेनीप्रवीण 70/510

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
बहरियः	अ०पु० जल सेना, जंगी बेड़ा, कवि – सेना का सामान ।	घनानन्द	घ०र०	104/118	> बहीर
हाल[1]	अ०वि०पु० हाल, समाचार, खबर शोर, हल्ला, आक्रमण ।	आलम बेनीप्र०			> हला

व्यंजन विपर्यय

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
अब्खल	अ०वि० बहुत अधिक कंजूस, कृपणतम ।	वृन्द	वृग्र	176/368	> अबलख
आतशबाजी	फा०स्त्री० बारूद के खिलौने लगाने का काम, अग्नि, क्रीडा बनाने, बारूद ।	,,	9	167/287	> आसतबाजी
इश्केपेचाँ	फा०वि०पु० इश्कपेचा नामक पुष्प, एक बेल जो पेड़ों पर लिपट जाती है ।	मतिराम	री०	उदा०	> आक्सपेचा
कुफुल	अ०पु० ताला, द्वार, यंत्र	बोधा नागरी	1 नाग्र	14/79 507/766	> कुलुफ (फ व ल में) कुल्प
कुहूल	अ०पु० सुरमा				
कुहूली	अ०वि० सुरमें के रंग का सुरमई, एक काला वस्त्र, जो ईरानी स्त्रियाँ पहनती हैं ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०		> कुल्लह (ल का आगम)

1. हाल – लई छलु कै हरि हैत हला
मिलई नवला नव कुंजनि माही ।।

बेनी बड़े-बडे बूदन ते यक बारहि
वरदि कीन हला सी ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मस्नद	अ०पु० तकिया लगा कर बैठने की जगह वह फर्श जिस पर प्रतिष्ठित जन बैठते हैं ।	वृन्द	9	181/415	> समनंद

समास विपर्यय

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खाकेपा	फा०स्त्री० पाव की धूल, पदरज, पदार, बोलने वाला, बड़े आदमी से सम्बोधन करते हुए अपने को भी कहता है।	नागरी	ना०ग्र	499/749	> पायखाक

(अन्त व्यंजन आगम)

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खासेआम	अ०पु० छोटे-बड़े सब व्यक्ति सर्व-साधारण, अवाम ।	भूषण	4, 1	149/36, 46/150	आमखास
		केशव	4	623/53	
		वृन्द	9	147/185	
		चन्द्रशेखर	1	13/76	
		वृन्द	9	150/202, 151/204, 205 147/105.	
		वृन्द	वृ०ग्र	156/227	> आवखास
खूबसूरत	फा०अ०वि० रूपवान, सुन्दर, हसीन, प्रियतमा ।	नागरी	ना०ग्र	498/3	> सूरतखूब
पयादः पाई	फा०स्त्री० पाँव-पाँव बिना सवारी के चलना ।	बेनीप्र०	न०र०त०	70/515	> पाइपयादे
मस्तेशराब	फा०अ०वि० शराब के नशे में चूर मदिरा मत्त ।	नागरी	8	500/751	> सराबमस्त
रफ्तःहोश	फा०वि० जिसके होश जाते रहे हों, बेहोश ।	गंग	1	337	> होशमरफूत

(4) <u>मात्रा भेद</u>

हृस्वीकरण

मूल शब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
अर्वा	अ० वि० चार की संख्या अ० पु० खालिस अरब	पद्माकर	6	/64	> अर्व
आज़ार	फा० पु० रोग बीमारी, आपत्ति, मुसीबत, खेद, रंज, दुर्व्यसन, लत ।	,,	ज० वि०	549	> अजार
		बोधा	1	161/76	
		ठाकुर	1	18/33 16/43	> अजान
		कवीन्द्र			
आदाब	अ० पु० अदब का बहुवचन, प्रणाम, नमस्कार, तरीके, ढंग, शिष्टाचार, सुशीलता ।	चन्द्रशेखर	ह० ह०	7/39	आदाब
आबखोरा[1]	फा० पु० गि० गिलास, प्याला, कटोरा ।	ग्वाल	ग्री० वि०	108/65	आबखोर
आबशार	फा० पु० झरना, निर्झर, प्रपात	नागरी	नाग्र	504/759	अबसारे
आवाज़	फा० स्त्री० स्वरध्वनि शब्द बोली	भूषण	4	436, 151/46 123/33.	
		वृन्द	9	132/128, 133/128	
		नागरी	नाग्र ।	456/2	अवाज
आस्तीन	फा० स्त्री० कुर्ते कोट या अंगरखे का वह भाग जो बाँहों को छुपाता है ।	भिखारी	1	35/24।	असतीन
आशनाई	फा० स्त्री० मैत्री, दोस्ती, नजाइज, सम्बन्ध, जारत्व ।	नागर	नाग्र	86/21	असनाइ
आहू[2]	फा० पु० संज्ञा, मृग, हरिण, दोष ऐब ।	पद्माकर	6	/121	अहू

1. आबखोरा — आबखोरे छीर के जमाये बर्फ चीर के ।
सुबंगले उसीर के भिजे गुलाब नीर के ।। — ग्वाल ।

2. आहू — अहू हूरिनन में मिलत अदृषदृषसत सु अहूष ।। पद्माकर ।

मूलशब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
इलाहा[1]	अ०अव्य हे ईश्वर, हे खुदा	रसलीन	3	301/2	>इलाह
खुदाया	फा०अव्य हे ईश्वर ऐ खुदा	चन्द्रशेखर	ह०ह०	30/197	>खुदाय
चालाकी	फा०स्त्री० धूर्तता ठगी बेइमान चुस्ती, तेजी ।	कृपाराम	हितत०	356/95	>चलाकी
जब्त[2]	अ०सं०पु० कानून कायदा व्यवस्था नियम ।	लालकवि			>जबद
जेबा	फा०वि० सुन्दर, दिलकश, शोभनीय, श्रीमान्, ललित, लतीफ कवि– शोभा ।	देव बोधा	रसविलास 2	188/20 28/7	>जेब
जेबादार	जेबा+दार फा० प्रत्यय जेबा– सुन्दर, दार– वाला कवि– शोभावाला या सुन्दरवाला	पजनेस	प०प्र०	16/24	>जेबदार
तालीम[3]	अ०स्त्री० शिक्षा उपदेश	तोष	वही०		>तलीम
नाकारी[4]	फा०स्त्री० निकम्मी, खराब	ग्वाल	"		>नकारी
नापाक	फा०वि० अपवित्र	बोधा	2	85/41	>नपाक
नाशपाती	फा०स्त्री० एक प्रसिद्ध फल नासपाती ।	भूषण		115/10	>नासपाती
बाज़ार	फा०पु० हाट बजार	देवदत्त	2	170/3, 175/41, 180/3	>बजार

1. इलाह – नूर इलाह ते अव्वल नूर मुहम्मद को प्रगट्यो सुभ आई ।। – रसलीन
2. जवद – दारासाह बजत रत छाज्यौ, जबत पात साही को भाज्यौ ।। – लालकवि
3. तलीम – सब सुखदायक सुसील बड़े कीमति की भइ है तलीम
   तलबेलियो मनोज की ।। – तोष
4. नकारी – जूठन की खानहारी कुबिजा तकारी दारी करी घरवारी
   तऊ ब्रह्म तू कहत है ।। – ग्वाल

शब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
बारगी[1]	फा०सं०पु० घोड़ा, अश्व	मतिराम		389/255	> बरगी
बारगीर[2]	फा०वि० अश्वपाल, साईस, अश्व, घोड़ा, ऊँट, बैल । वे सिपाही जो सरकारी घोड़े पर राज्य कार्य करते थे ।	,, भूषण		उदा०	> बरगीन
महताब[3]	फा०पु० चन्द्रमा, ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, गंजीफे का वजीर, एक आतशबाजी, मशाल ।	पद्माकर चन्द्रशेखर	3 8 6 1	209 78 112 उदा०	> महताब > महिताबै
करामाती	अ०वि० चमत्कारी करामात–चमत्कार दिखानेवाला	गंग		56	> करामाति
कही	फा०पु० वह सैनिक जो सेना के आगे चलकर पड़ाव के लिए घोड़ों के दाना घास का प्रबन्ध करते है ।	वृन्द	वृग्र	176/370	>कहि
खलीकः	अ०पु० जनता, संसार में उत्पन्न हर वस्तु, स्वभाव ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	30/197	>खलिक
जुदाई	फा०स्त्री० पृथकता, अलगाव, वियोग, वैमनस्य ।	आलम और शेख	आ०केलि	115/271	>जुदाइ
दीवान[4]	फा०पु० न्यायालय, कचहरी, मंत्री। वजीर, अर्थमंत्री, वजीर गज़ल की किताब, वजीर माल ।	केशव बोधा मतिराम	2 ,,	527/39 221/25 310/69, 324/149, 327/165	>दिवान

1. बारगी – देस दहपट्टि आयो आगरे दिली के मेंडे बरगीबहरि मानौ दल जिमि देवा को ।
2. सत्रसाल नंद के प्रताप की लपट सब गरबी गनीम बरगीन को दहति है ।। – मतिराम ।
3. महताब चमकत रुचि रंजक उडत चपला सी तडपत पहरत करि तोर ।।–चन्द्रशेखर
4. केसव कैस दिवान पितान बराबर ही पहिरावनि पाइ ।। – केशव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्या०प०
नीलोफर	फा०पु० नीलोत्पल कुमुद कुई	नागरी	नाग्र	565/763	>निलोफर
मीरजा	फा०पु० शाही खानदान लोगों की उपाधि मुगल जाति का व्यक्ति, मीर या अमीर का लड़का राजकुमार वि० कोमल।	देव	वे०ज०	17	>मिरजा
मुद्दई	अ०पु० दावा करने वाला, वादी नालिशी, कवि- शत्रु	पद्माकर	3	179	>मुद्दइ
शाही[1]	फा०पु० एक प्रकार का बाज, शाहजहाँ बादशाह।	बिहारी	1	598/712	>शाहि
दूरबीन	फा०स्त्री०एक यंत्र जिससे दूर की चीजें देखी जाती हैं दूर दर्शक यंत्र।	पजनेस	प०प्र०	14/33	>दुरबीन
बारूद	फा०स्त्री० शोरा श्वेत क्षार गंधक और लोहे का मिश्रण अग्निचूर्ण।	ग्वाल	1	156	>बरुद
तुफ़ैल[2]	अ०पु० कारण द्वारा सबब। रस० - जरिया सम्बन्ध।	रसलीन	3	308/22	>तुफेल
तौर[3]	अ०पु०सं० व्यवहार, चाल, चलन	बोधा			>तोर
नजूमी[4]	अ०सं०पु० ज्योतिषी	तोष	सु०नि०	13/42	>नजूमि
रूमी	अ०वि० रूम का निवासी, रूम की भाषा।	वृन्द	वृग्र	156/227	>रुमी

1. साहि - समां सेन सयान की सबै साहि कै साथ ।। - बिहारी
2. तुफेल- गोमन मैल गहे सुभ केल तुफेल तुफेल मुहम्मद पाई ।।- 308/22.
3. तोर - संपति सो जो प्रवेश नहीं तो वृथा क्यों दरिद्र सो तोर नसावे ।।
   — बोधा । 112/65
4. नजूमि - नेकू सुना बतियाँ न छतिया चलैये हाथ
   आँधी रतियाँ मैं रति कहत नजूमि है ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	व्यु०प०
रौगन	अ०पु० तेल, स्नेह, घी	भिखारी	2	/134	>रोगन
रौशनी	फा०स्त्री० प्रकाश, आभा, चमक	नागरी	नाग्र	71/16	>रोशनी
रौशनाई	फा०स्त्री० उजाला प्रकाश आँख की तेजी, सियाही ।	आलम और शेख	आलम केलि	114/169	>रोशनाइ
नौसन	फा०स्त्री० एक नीला फूल, जिसकी पंखुड़ी जबान जैसी होती है । नौसनी— नीले रंग का	पद्माकर	3	211 252 [illegible]	>सोसनी
हामिल	अ०वि० बोझ उठानेवाला	गंग	1	354	
	रखनेवाला, मजदूर धारण करने वाला ।	भूषण	1	22/75	>हमाल
हौल	अ० सं०पु० भय, डर	ग्वाल			>होल
				दीर्घीकरण	
अरबी	अ०स्त्री० अरब का निवासी, अरब से सम्बन्ध रखनेवाला, अरबीभाषा ।	वृन्द	9	155/224	अरबी
कशिश [1]	फा०स्त्री० आकर्षण, खिचाव, रोचकता, प्रवृत्ति, रुझान, कृपा, दया, कष्ट, पीड़ा । कवि — (बाण) खींचना ।	भिखारी	2, 1	101/54, 43/295	कसीस
		चन्द्रशेखर	1	27/179	>कसीसैं (अनुनासिकता)
		घनानन्द	1	81/142	
		भूषण	1	37/114	
		वृन्द	वृग्र	23/42	>कसीस
		गंग	1	369	
कुब्ब	अ०स्त्री० कुव्वत बल शक्ति, जोर सामर्थ्य	बोधा	2	94/29	>कूब
कुंचा	अ०पु० सं० महुवे के गुच्छे	भूषण		उदा०	>कूंचे

1. कसीस —भूषन असीसि तोहि करत कसीसैं पुनि बानन
के साथ छुटै प्रान तुरकन के ।।
तुम्हें निसि द्यौस मन भावन असीसै सजीवन हौ करौ हम पैं कसीसैं ।।घनानंद
सेखर इहाँ लौ सहै काम की कसीसैं हाय देखे को हिये की कठिनाई मौन घर की।।चन्द्र०

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य० पद
चुनॉ	फा० अव्यय, वैसा, इतना, ऐसा काव – जैसे।	गंग	1	/243	> चूँ
जिहाज्	अ० पु० ब्याह का दहेज, मृतक का सामान, कफन आदि, यात्रा की समग्री । कवि-कटारी के प्रसंग में कहा है ।	वृन्द	वृ०	179/388	> जीहाज,सानी
ताकि	फा० अव्यय जिससे इसलिए कि	ग्वाल	1	44/112	> ताकी
दालान	फा० पु० बड़ा और लम्बा कमरा जिसमें मेहराब दार दरवाले होतेहै ।	पजनेस	1	42/107	
दाल(ल्ल)	अ० वि० राह दिखानेवाला कवि- राह दिखानेवाले को ने	ग्वाल	1	45/75	> दाला
निशानी[1]	फा० स्त्री० स्मृति चिह्न यादगार	भिखारी	2	127/177	> नीसानी
	शनाख्त, निशान, अलामत	रसलीन	1	84/424	
पेंच[2]	नं० पु० सिर पेच पगड़ी पर लगाया जानेवाला एक आभूषण	बेनीप्र०		26/173	पेंचा
बदफेल[3]	सं० पु० बुरे कार्य	सोमनाथ			बदफैले
मुकाते[4]	अ० पु० सं० ठीका लेने वाला घटने वाला ठीकेदार	केशव	2	482/48	मुकातै
मुहिम[5]	अ० स्त्री० कोई बड़ा काम कठिन	गंग	1	/236	> मुहीम
(म्म)	काम युद्ध संग्राम लड़ाइ	वृन्द	9	147/185	

1. निसानी – मनो निसानी वा दृगन दई गुंज की माल ।। 84/424.

2. पेंचा – केस कसि पगरी मैं बबरी बनाय बाल

मुगल बचे लौं एक पेंचा सजे जात है ।। बेनीप्रवीन 26/173

3. तृप्ति न लहै ध्यान मैं लै लै मन है थोइ विषय बद फैले ।। –सोमनाथ

4. खानि मुकातै लीजै गाउ । धन पावै मठपती सुभाऊ – केशव

5. →बादी सीत संका कांपै उर हूवै अतंका लघुसंका के–। – [illegible]

5. मुहिम – लगे ते होत लंका की मुहीम ।। – गंग

मु०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
रसकेल[1]	(सं०स्त्री० सं०रस + फा० फैल) काम-क्रीडा, काम कलोल रास-रंग	दास	2	120/145	> रसकैली
बर्राक[2]	अ० वि० उज्ज्वल शुभ्र धवल चमकीला जगमगाता हुआ ।	बलभद्रमिश्र			> बारलाक र > ल

पुरोगामी स्वीकरण

मु०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आमेज	फा० प्रत्यय मिलने वाला, मिलानेवाला, कवि- युक्त, सना हुआ ।	देव, पद्माकर	सु०सा०स० 439, ज०वि०	88/48	> आमेजे
आमेजन	फा०क्रि० सकर्मक मिलना, मिलावट होना ।		र०कु०क०		> आमेजना
एलची	तु०पु० पत्रवाहक, राजदूत, कवि- एलच साहि, एलच बहादुर	केशव	4	617/69, 7 625/69	> एलच
कद्द	अ० पु०सं० हठ, जिद्द	पद्माकर	6	/120	> क्कद
तबेल	अ० अस्तबल	सोमनाथ	सो०ग्रं० प्र०खं०	पृ० 148	> तबेले
नजील[3]	अ० स्त्री० सं० अतिथि, मेहमान संत्रस्त, भयभीत ।	देव			> नजीली
नैजः	फा० पु० शंकु, भाला, बरछी, कलम का नरकट, राजाओं का निशान ।	पद्मा०	3	/48	नेजे

1. रसकैली — सोवत अकेली है नवेली केलि मंदिर जगाइ कै सहेली रसकैली लखै टरिकै ।। — दास
2. बारलाक— ताग सो तपासो बारलाक सो लुकंजन सो छिद्र कैसो छन्द कहिबे को छलियतु है ।। — बलभद्र मिश्र ।
3. नजील — होति न नजीली आँखि सखिन लजीली करै ढीली उर आँगी ढीली ढीलै पलकनि सौं ।। — देव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
पेशखेम	फा०अ०पु० वह खेमा जो फौज में सबसे आगे लगाया जाता है ।	भिखारी	।	6/27	>पेशखेमा
फिक्र	अ०उभ० चिन्ता, सोच, विचार, ध्यान, शंका, शुबहा ।	भिखारी भूषण	।	71/489	>फिकिर
मुल्क	अ०पु० देश, राष्ट्र, सल्तनत, जन्मभूमि, वतन, क्षेत्र, इलाका	भूषण	।	71/242	>मुलुक
हलाक[1]	अ०वि० घातक मारने वाला	तोष	।	206/5	>हलाका
हजारहा	फा०वि० हजारों	वृन्द	वृग्र	180/405	हजारह
हुक्म		भिखारी	।	25/168	हुकुम
		भूषण	।	34/107 151/45 119/24	

पश्चगामी समीकरण

कद्द	अ०पु०नं० हठ, जिद्द	पद्माकर		उदा०	
कश्ती	फा०स्त्री० नाव नौका	नागरी	नाग्र	502/757	> किस्ती
किवाम	अ०पु०सं० शहद के तुल्य गाढा बनाया गया शरबत, खमीर ।	ग्वाल	।	103/52	> किमाम
गिरिहबाज	फा०पु० एक तरह का कबूतर जो उड़ते-उड़ते कलाबाजी खाता है ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	31/212 9/50	> गिरहबाज
गिरीबान[2]	फा०पु० कुर्ते की सिलाई का वह भाग, जो गले पर पड़ता है । गले की पट्टी ।	पद्माकर	हि०ब०	/149	> गिरबान

1. हलाक— मुथरी सुसीली सुजीसीली सुरसीली अति लंक लचकीली काम धनुध हलाका-सी ।। — तोष
2. गिरबान— तहँ इकन की गिरबान गहि पटके हयन ते समर में ।। — पद्माकर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
चिकिन	फा०स्त्री० एक प्रकार का कशीदा जो रेशम या सूत से कपड़े पर काढ़ा जाता है ।	वन्द	वृ्ग्र	180/398	>चिकन
जियादः	अ०वि० अधिक, प्रचुर, बहुत फकत् ।	पद्माकर	5	11	>जादा
जिरिह	फा०स्त्री० कवच, अँगरक्ष	गंग	1	/361	> जिरह
जुलूस[1]	अ०पु० बैठना, उत्सव, यात्रा, चल समारोह, राजा आदि का गद्दी पर बैठना, तड़क-भड़क, ज्योति ।	भूषण पद्माकर	2 3	58/198 /709	>जलूस >जलूसन (न लगाकर बहु०)
जुल्मत	अ०स्त्री० अंधकार				
जुलुमात	अ०पु० जुल्मत का बहु० अँधेरे, अंधकार समूह	नागरी	नाग्र ।	/758	> जुलमात
ज़ाहिर	अ०वि०प्रकट	गंग	1	/198	> जाहर
तक़ाबुल	अ०पु० एक दूसरे के आमने-सामने होना ।	नागरी	नाग्र	501/755	> तकाबल
तफावुत	अ०पु० अन्तर, दूरी, जुदाई, विलम्ब ।	बोधा	2	59/26	> तफावत
दामाद	फा०पु० लड़की का पति, जामाता	ठाकुर	1	26/73	> दमाद

1. जुलूस – (1) भूषन जवाहिर जुलूस जरबाफ जाल देखि देखि सरजा की सुकवि समाज के ।

(2) आपु ही सुनार घर जाइ के जड़ाउ दार जेवर जलूस के बनावने बतावती ।। – नन्दराम 0

(3) भूपति भगीरथ के जस की जलूस, कैधो प्रगटी तपस्या पूरी कैधो जन्हुजन की ।। – पद्माकर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
नादिर[1]	अ०वि० श्रेष्ठ, उत्तम, अद्‌भुत, अजीव ।	नन्दराम			> नादर
नाजुक	फा०वि० मृदुल, मुलाइम, कोमल, नर्म, सूक्ष्म, हल्का-फुलका, कमजोर, गूढ़, पेचदार, दुबला, पतला, तीव्र, तेज ।	नागरी	नाग्र	440/568	>नाजक
पेशानी[2]	फा०पु० माथा, मस्तक	भूषण			> पिसानी
बुशारत	अ०स्त्री० शुभसमाचार, खुशखबरी, कांच- सीशा ।	नागरी	नाग्र	762	> बसारत
मरातिब	अ०पु० मर्तबः का बहुवचन, पद, वर्ग, श्रेणी जमाअत, वार, दफा, प्रतिष्ठा, इज्जति	वृन्द	वृग्र	159/233	>मरातब
मशरू[3]	एक तरह का धारीदार कपड़ा	तोष	।	158/286	>मुसरु
		तोष	पु०नि०	119/67	>मसुरु
सादिक	अ०वि० सत्यवादी, सच्चा, न्यायनिष्ठ, स्वामिभक्त, चरितार्थ	आलम और शेख	आलम केलि	115/271	>सादक
कत्लेआम[4]	अ०पु० सर्वसाधारण का वध, अपराधी अनअपराधी छोटे बड़े की सिर से हत्या ।	भूषण	।	67/226 95/331 123/36	>कतलाम (संधीकरण)

1. नादर — आदर के राखौ प्रान कैसे हुक्म नादर ते
जम के विरादर ये बादर उनै रहै ।। — नन्दराम ।

2. पिसानी — भूषन कहत सब हिन्दुन को भाग फिरै
चढ़े ते कुमति चकताहू की पिसानी मैं ।। — भूषण

3. मसरु — घांघरो सिरिफ मुसरु को सोहरित रंग
अंगियां उरोज डारे हीरन के हार को ।। — तोष

4. कतलाम— गाढ़े गढ़ लीन्हें अरु बैरी कतलाम कीन्हे
बैर-बैर हासिल उगाहत है साल को ।। — भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
मेहमान	फा०पु० मेहमाँ, अतिथि, आगन्तुक ।	ग्वाल	।	76/153	महमान (अनुनासिक)
मेहराब	अ०स्त्री० द्वार आदि के ऊपर का अर्ध-गोलाकार कटा हुआ द्वार) कवि- घेरा ।	नागरी	नाग्र	/758	महराव
रिहल[1]	अ०स्त्री० पुस्तक रखने की छोटी चौकी ।	रघुनाथ			रहल
सरकश	फा०वि० कठिन, उद्दण्ड, विरोधी, विद्रोही ।	दास		उदा०	सरकस
सरदारी	फा०स्त्री० अध्यक्षता, स्वामित्व, सरदार का पद या भाव । कवि- मलकाना, प्रतिष्ठा।	देव	मु०	329	सिरदारी
शुमार[2]	फा०पु० गिनती, अदद, हिसाब जोड़ ।	भिखारी	।	20/134	सुमार (पुरोगामी)
हुक्म[3]	अ०पु० आज्ञा, इजाजत, आदेश	भिखारी	।	25/168	
	फरमान, हुक्म, नामा, राजादेश।	भूषण		34/107, 151/4 119/24	हुकुम (पुरोगामी)

1. रहल — रघुनाथ भावते को पान दान भरी धरी धरी ।
   पोथी आय त्याय कोक की रहल में ।।
2. सुमार — भरन समेत दस करत सुमार है ।
3. सिवाजी हुकुम तेरो पाय पैदलन सलहेरि परवालो ते वै जीते जनु खेत हैं ।

विभक्तीकरण : पुरोगामी विभक्ती०:

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
गिरिफ्त	फा०स्त्री० पकड़, हिसाब में त्रुटि की पकड़, अपराध की पकड़, आपत्ति, अधिकार, पंजा, दस्ता ।	नागरी	नाग्र	502/755	>गिरफ्तै
गुलूला	फा०पं०पु० मिट्टी का छोटा-सा गोला, जो गुलेल में फेंका जाता है ।	सेनापति			>गुलेला
चुगुल	तु०वि० चुगली खाने वाला, पीठ पीछे शिकायत ।	नागरी		199/139	चुगल
दमामा[1]	फा०पु०० नगाडा, डंका,	रघुनाथ			>दमल
दुरूस्त	फा०वि० ठीक शुद्ध सम्पूर्ण उचित सच मौजूं ।	पद्माकर	6	/77	>दुरस्त
दुरुश्त	कठोर सख्त खुरदरा ।				
बकवाद	हि०स्त्री० व्यर्थ की बात । डा० बाहरी ने इसे अ०फा० का शब्द कहा है ।	बिहारी	1	212/126	>बकवादु
बख्तेबलंद	फा०पु० ऊंचा, नसीबा, सौभाग्य	भूषण	1	35/110	बखतबुलंद
लक्लक[2]	अ०वि० सुकुमार, कोमल, लचकीली (हि०लचलची), दुर्बल अंगवाला ।	देव		3/6 उदा०	

1. दमामा – रघुनाथ मन में मनोरथ की सिद्धि
तानि नूपुर बजन लागे पाइ में दमल सो ।। – रघुनाथ ।
2. लक्लक – अखियाँ अधर चूमि हा हा छाडो
कहे चूमि छतियाँ सो लागी, लगलगी सी xxxxxदेवxx लहकि कै ।।– देव
उरज उचाहै भुज भार ज्यों नचौहै
चोड़ जघन सघन लंकलीक सी लगलगी ।। – देव

पश्चगामी विपर्यीकरण :

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आहन[1]	फा०पु० लोहा	देव		उदा०	>आहिन
आशिकी	अ०स्त्री० प्रेम अनुराग स्नेह चाहत, इश्क । कवि – प्रेम करने की वृत्ति, प्रीति	बोधा	1	2/11, 15/86	>आसकी
कुसूर	दोष, अपराध, कुस्र का बहु० कस्र-पु०-महत्व भवन स्त्री० दोष, जुर्म गलती, न्यूनता ।	भिखारी	1	60/417	> कसूर
गुरूर	अ०पु० अभिमान, अहंकार, गर्व, घमंड, शेखी ।	,,	1	70/480	> गरूर
		बोधा	2	171/18	
नुजूम[2]	अ०सं०पु० ज्योतिष विद्या, उडुगण ।	नन्दराम		उदा०	
नुजूमी	अ०वि० ज्योतिषी इल्मे नुजूम जानने वाला ।	वृन्द	वृग्र	156/227	>निजूमी
		नन्दराम		उदा०	
फुतूर[3]	अ०सं०पु० विकार, खराबी, गड़ा, बखेड़ा ।	पद्माकर		उदा०	>फितूर
मरातिब	अ०पु० मर्तबः का बहु०पद, वर्ग, श्रेणी, जमाअत, वार, दफा, प्रतिष्ठा, इज्जत ।	वृन्द	9	165/265	> मुरातब

1. अहिन – अहिन जाति अहीर अहो तुम्हैं कान्ह कहा कहौ
   काहू की पीर न ।। – देव
2. बैदक पढे हौ की नजूम को निसारत हौ
   कविता करत हौ कि समुद्रिक संचारी जु ।। – नन्दराम ।
3. नैन मुदे पै न फेर फितूर को ।
   टंच न टोम कछू छियना है ।। – पद्माकर ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्या०प०
हुजूर[1]	अ०पु० उपस्थिति, मौजूदगी, साक्षात, आमना-सामना, संबोधन के लिए एक आदर-सूचक शब्द श्रीमान् ।	चन्द्रशेखर दास	ह०ह० 4, 41/15	17/103 53/225 57/264 उदा०	>हजूर > हजूरि

अघोषीकरण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्या०प०
चराग	फा०पु० दीप, दीपक, ~~चरग~~	आलम और शेख	आलम केलि	114/169	>चिराक
चिराग	फा०पु० दीपक				
दिमाग	अ०पु० मस्तिष्क, बुद्धि, अहंकार, गर्व, बरदाश्त, होश, खयाल, ध्यान ।	नागरी	ना०ग्र	449/603	> दिमाक
शिगाफ	फा०पु० दराज, दरार, दर्ज (प्रत्यय), दरार, डालनेवाला, खारा, शिगाफ, पत्थर में दरार डालनेवाला ।	पजनेस	प०प्र०	33/84	> काफ (ग > क)
काफ	काफ फा०पु० एक उर्दू अक्षर शिगाफ का लघु ~~कोहेका के~~- -शिया जहाँ का सौंदर्य प्रसिद्ध है ।				
दिमाग-दार	अ०फा० बुद्धिवर्धक, मस्तिष्क को शीतल रखनेवाला, दिमाग बढ़ानेवाला अभिमान ।	ग्वाल	\	53/95	> दिमाकदार द > त

1. आपनी बिपति कौं हजूर हौं करत, लखि रावरे की विपति विदारत की बानि है ।।-दास

2. दारिद्र दुख्ख नासंत दुरि ह्वै रिद्ध सिद्ध संपति हजूरि ।।

2. आइ मैं अकेली या कलिंदजा के कूलन पै न्हाई लाय केसन दिमाकदार सोंधे ये ।। ग्वाल- 53/95.

अघोषीकरण :

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
					द > त
अबदाली [1]	फा०सं०पु० अदल-बदल कर देने वाला अधिकार ।	आलम			> अबताली
		केशव	क०प्रि०	5/14	> अविताली द > त
कस्द	अ०पु० संकल्प, निश्चय, इरादा	पद्माकर	हि०व०	95	> कस्त
काइदः	का बहु० कवाइद — सेना की परेड, नियमावली, रस्मोरिवाज	,,	6	92	> कवाइत
पादशाह	फा०पु० राजा बादशाह	मतिराम	1	302/28 308/58	> पातसाह
पादशाही	फा०स्त्री० राज्य सल्तनत	देवदत्त	2	170/7	> पातसाही
	शासन, बादशाह सम्बन्धी	भूषण	2	117/17	
फस्द [2]	अ०सं०स्त्री० नस को छेद कर शरीर का गंदा खून निकालना।	माधव			> फस्त
मदद	अ०स्त्री० सहायता पक्षपात हिमायत, आश्रय, राज का काम ।	वृन्द	वृ०ग्र	167/265	> मदति
					ब > प
आफ्ताब	फा०पु० सूर्य रवि दिनकर सूरज, तेज ।	भूषण	2	134/10	> आफताप
कीमख्वाब [3]	फा०पु०सं० एक प्रकार का कपड़ा जिसमें जरी आदि का काम बना रहता है ।	ग्वाल	1	58/107	> कीमखापी
			1	37/55	> कीमखाप

1. अबताली — आइ गये अबताली दोऊ कुच छाप लये सिर स्याय सुहाई ।। —आलम
   वाके अयान निकारन कौं उर आए हैं जीवन के अबिताली ।। — केशव ।
2. फस्त — मूड घुटाय और मूछ मुड़ाय त्यों फस्त खुलाय तुला पर बैठ्यो।।-माधवकवि
3. कीमखाप — घेरदार पाइचो इजार कीमखापी तापै पैन्हि पीत कुरती ।
   रती को रूप लीपै है ।। — ग्वाल 58/107.
   विविध बनातैं कीमखाप की कनाते तामे
   दीरघ दुचोवे हैं सिचोबे हक्क हद्दी मैं ।। — 37/55.

अघोषीकरण :

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
ज़ाब्ता[1]	अ०सं०पु० राजदरबार का कायदा नियम ।	भूषण	1	13/58	> जापता
चोबदार	फा०पु० लकड़ी लेकर आगे चलने वाला व्यक्ति प्रतिहारी द्वारपाल कवि– आसा बरदार, छड़ीबरदार	पद्माकर	6	21	>चोपदारौ (बहुवचन)
तरकीब	अ०स्त्री० ढंग रचना बनावट	बेनीप्र०	1	24/155	> तरकीप
बदपरहेज	फा०वि० वह बीमार जो परहेज न करता हो, असंयमी ।	नागरी	नाग	564/761	> पदपरहेज

महाप्राणीकरण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अस्प+ई	फा०पु० घोड़ा, कवि– घुड़सवार	पद्माकर	6	13	> अस्फी (प > फ)
कौम	अ०सं०पु० समूह झुंड	भूषण	1	105/360	> खौम (क > ख)
चाबुक	फा०पु० कोड़ा कशा तेज तीव्र निपुड़ होशियार ।	केशव	2	554/30	> चाभुक (ब > भ)
फ़जीहत	अ०स्त्री० निंदा, अपयश, अपमान, जिल्लत, कवि–परेशानी दुर्गति।	पद्माकर	3	358	> फझियत (ज > झ)
बक्तर	फा०पु० कवच, जिरिह	भूषण	2	131/4	बखतर (क > ख)
बक्तर+दार(प्रत्यय)	फा०पु० कवचधारी, कवचवाले ।	भूषण	1	89/307	> बखतरवारे
मज़ाक	अ०पु० परिहास, दिल्लगी, मनोविनोद, रसिकता, सुरुचि ।	पद्माकर	3	167	> मजाखैं

1. जापता – आये दरबार बिललाने छरीदार देखि जापता
करत हारे नेक हू न मनके ।।

महाप्राणीकरण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मुबारक	अ०वि० कल्याणकारी, भाग्यशील, शुभ-सूचना, खुशखबरी। कवि– कल्याण हो।	ग्वाल	1	94/198	>मुबारख (क > ख)
वरक	अ०पु० पृष्ठ, पेज, दलपत्र, पत्ता, जैसे चाँदी का पतला पत्र।	ग्वाल	1	35/49	>वरख
सबलत	अ०स्त्री० मूँछ	वृन्द	वृग्र	176/588	>सबलथ
शशदर[1]	फा०वि० भयभीत संत्रस्त	बिहारी	1	196/83	>ससहरे (द > ह)
संदूक[2]	सं०स्त्री०अ० अंबारी हाथी के पीठ पर रखने का हौदा, जिसके ऊपर एक छज्जे दार मंडप होता है।	केशव	2	504/94	>सिंदुख (क > ख)
हर्बः	अ०पु० अस्त्र-शस्त्र हथियार आक्रमण शक्ति कवि– तलवार की धार।	नागरी	नाग्र	512/45	> हर्फ बः > फ
रसद[3]	फा०सं०स्त्री० सेना की खाद्य-सामग्री, खाद्य।	केशव	2	503/75	>रसधि (द>ध)

अल्पप्राणीकरण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
दोज़ख़	फा०पु० नरक जहन्नम	बोधा	2	191/18	> दोजक (ख > क)
बख़्श	फा०पु० भाग्य, हिस्सा,(प्रत्यय) के रूप में, देनेवाला, जैसे – जाँ बख़्श – प्राण प्रदान करनेवाला, खताबख़्श–अपराध क्षमा करनेवाला।	भूषण पद्माकर	1 6	125 7	> बकसे > बकसै (बहु वचन)

---

1. होत उदय सीस के भयो मानो ससहरि सेत – बिहारी।
2. सोने की सिंदुख साजि सोने की जलाजले जु सोने की ही घाट घन मानहु विभात के केशव
3. आगे दीनी रसधि चलाइ। पीछे आपन चले बजाइ।। – केशव

मूलश०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
बख़्शिश	फा० स्त्री० दान, इनआम, पुरस्कार, अनुदान, प्रदान करना	पद्माकर भिखारी	5 ।	37 48/76	> बकसीस
बलख	फा० पु० अफगानिस्तान का एक प्राचीन नगर जो इस समय एक छोटा-सा गाँव है ।	गंग	।	/307	> बलक
सीख[1]	फा० सं० स्त्री० लोहे की पतली लंबी छड़ ।	केशव			> सीकै
फौलाद	अ० पु० असली लोहा, लोहसार	देव	सु० सा० त०	278	> पोलाद (फ > प) (औ > ओ ह्रस्वीकरण)
अफ़सोस	फा० पु० शोक, खेद	वृन्द	वृ० ग्र	90/412	> अपसोस (फ़ > प)
फ़लीद[2]	फा० पु० सं० भूतप्रेत, दुष्ट, नीच गँदा, अपवित्र ।	[illegible]	।	16/94	> पलीत (फ > प) (द > त) (अघोषीकरण)
फ़ानूस[3]	फा० सं० पु० एक प्रकार का कँडील, जिसमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं ।	घनानन्द			> पानरा

1. बीच-बीच सुबरन की बनी सीकै गज दंतन की घनी ।। — केशव
2. चाम के दाम गुनीन के आम ये विलसे प्रीति पलीत को मेवा ।। — [illegible]
3. घेरयो घट आय, अन्तराय पटनि-पट पै
   तामधि उजोर प्योर पानस के दीप है ।। — घनानन्द

दीर्घीकरण :

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
ज़ोरआवर	फा०वि० शक्तिशाली, बलवान	भिखारी	1	74/519	>जोरावर
मशहूर	अ०वि० ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध विख्यात ।	वृन्द	9	161/249	>मसूर
मुद्दई	अ०पु० दावा करने वाला कवि – शत्रु	नागरी	8	432/25	>मुद्दी
रईयत	अ०स्त्री० प्रजा जनता आवाम रिआया ।	पद्माकर	8	/15	> रैयत
		भूषण	1	42/134	> रैयति (अंत इकारान्त)

अनुनासिकता

					आँन
आन	फा०अं०स्त्री० छवि छटा, शोभा, टेक, बात, हाव-भाव ।				
आराम	फा०पु० सुख, चैन, आनन्द, हर्ष, सुगमता, आसानी ।	वृन्द	वृग्र	186/448	>अरॉम (ह्रस्वीकरण)
				156/227	>आरॉम
आस्मान	फा०पु० आकाश, गगन, फलक, चर्ख ।	वृन्द	9	159/235	>आसमाँन
कूच	फा०पु० प्रस्थान, रवानगी, मरण, मौन, सेना का प्रस्थान ।	केशव	5	693/3,4,5.	>कूँच
दाना	फा०वि० बुद्धिमान, मेधावी, चतुर, कुशल । कवि–पुरुष	वृन्द	वृग्र०	159/233	>दाँने
दुनयादार	अ०फा०वि० संसार के मोह में लिप्त, घर गृहस्थीवाला, अवसरवादी ।	नागरी	नाग्र	508/4	>दुनियाँदार
मेहरबान	फा०वि० दया करनेवाला, सकरुण, मित्र, वृन्द– दयावान ।	वृन्द	9	150/201	>महरबाँन

---

1 आन – जिरम आनरस रैम विन तजि कुडोल छंद भंग
लीजै कविता रतंन है चैन दैन अरु रैन ।। – नागरी ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सरहद	फा०स्त्री० सीमा हद सीमान्त आखिरी हद ।	वृन्द	वृ०ग्र	160/245	>सरहद्दा
कशिश[1]	फा०स्त्री० आकर्षण, खिचाव, रोकना, प्रवृत्ति, रुझान, कृपा, दया, कष्ट, पीड़ा । कवि – बाण की रचना ।	भूषण	1	37/114	>कसीसैं (दीर्घीकरण)
अफ़सोस	फा०पु० शोक, खेद	वृन्द	वृ०ग्र	14/7	>अपसोसैं (फ > प)
क़त्लेआम	अ०पु० नर्वसंहार	तोष	सु०नि०	141/185	>कतलाम
		वृन्द	8	116/5	
		वृन्द	8	136/139	>कतलनि
लौज़[2]	अ०पु०सं० बदाम एक प्रसिद्ध मेवा ।	ग्वाल	1	117/92	>लौज
सलामत	अ०स्त्री० सुरक्षित, महफूज़, जीवित, पूर्ण, पूरा, तनदुरुस्त स्वस्थ ।	वृन्द	वृ०ग्र०	152/207	>सलाँमत
हैरान	अ०वि० चकित, निस्तब्ध, हक्का-बक्का ।	वृन्द	वृ०ग्र	150/200	>हैराँन

1. कसीसैं – भूषन असीसैं तोहि करत कसीसैं पुनि
   बानन के साथ छूट प्रान तुरकन के ।। – भूषन
2. लौज– मेबन की लौज मैं न हौज मैं हिमामहू के
   मृग मद मौज मैं न जाफरान जाला मैं ।। – ग्वाल

अनुनासिकता

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्व०प०
काक्रेजा	फा० लाल और काले के मिश्रण से बनने वाला रंग– बैगनी रंग को ।	देव	श०र०	76	> कक्रेजी
ख़ासोआम	अ०पु० सर्वसाधारण, अवाम	वृन्द	9	150/262	ख़ासआम
				151/264, 265	(ख > ष)
	वृन्द (दरबार) आमखास)			147/165	
				156/227	>आँमखास
गोशपेच	फा०पु० पेच– फा०पु० चक्कर मशीन, घुमावदार, बल, चाल, बाधा, कुंडली । गोश– कान, कवि–कान का एक गहना ।	पद्माकर	3	169	>गोसपेंच
पेच	फा०पु० घुमाव, चक्कर, बल लपेट, कुंडली, हलक, जटिलता, छल, चाल, धोखा, मशीन । कवि–पगड़ीकी लपेट	देवदत्त	2	211/15	> पेंच
		मतिराम	1	228/125	
				222/98	
		भिखारी	1	13/75	
फ़लक़	अ०स्त्री० सबेरे का उजाला, उषा				
फ़लक	अ०पु० आकाश, गगन, अंबर	पद्माकर	3	/690	>फलका (दीर्घीकरण)
फ़र्ज़ंद	फा०पु० आत्मज, पुत्र	नागरी	ना०ग्रं	127/2	>फरजंद
				499/748	>फरज्यंद (मध्य व्यंजन आगम)
मुक़ाम	अ०पु० देर तक ठहराव, कियाम	वृन्द	वृ०ग्रं-11	265/29	>मुकाँम
मेहरबान	फा०वि० दया करनेवाला, दयालु सकरुण, मित्र, वृ०-दयावान ।	,,	6	35/4	> महरबान (समीकरण)
			9	150/201	> महरबाँन
रबाब	फा०पु० सितार के तरहका एक बाजा । कवि–एक तरहकी सारंगी	पद्माकर	6	/19	> रबाबैं

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्वनि का परिवर्तन ध्व०प०
	ا अलिफ के बाद (ع) ऐन आने पर हमेशा आ होना है				
आ'राब	अ० पु० वे अरब लोग जो जंगल में इधर-उधर घूम फिर कर जीवन व्यतीत करते हैं। बद्दू लोग यह शब्द बहु० है परन्तु इसका एक वचन नहीं है।	वृन्द	वृ० ग्र०	156/227	>आरब्ब (मध्य व्यंजन आगम)
आ'लिम मरद	अ० वि०+मर्द फा० पु० बहुत अधिक जानने वाला+मनुष्य मर्द: फा० वि० शूरवीर उत्साही	वृन्द	,,	265/67	>आलम मरद (मध्य स्वरागम)
आ'ला	अ० वि० सबसे अच्छा सर्वश्रेष्ठ, बढ़िया, उत्तम	ग्वाल	ग्वा० र०	36/54	>आले
	कवि बाढ़िया मजबूत	पद्माकर	हि० ब०	188	मध्य में ऐन का आ ع > आ
मश्अल	अ० स्त्री० एक लम्बी लकड़ी में कपड़ा लपेट कर और उसे तेल में तर करके जलाते हैं यही मश्अल है।	देवदत्त	3 4	170/7 190/29 210/10, 293/26	> मशाल श > स
		भिखारी	1	37/253	
शमअ़दान	अ० फा० पु० जिसमें मोमबत्ती रख कर जलाते हैं।	ग्वाल	1	119/98	> समादान
हक़तआला	अ० पु० ईश्वर परमात्मा	ग्वाल	1	45/75	> हक्क ताला (द्वित व्यंजन की प्रवृत्ति) अंत में ع का आ होना
जमअ़	अ० स्त्री० आय, संचित, निशाना	ग्वाल	1	48/81	> जमा
तमा'	अ० स्त्री० लोभ हिर्स, इच्छा, ख्वाहिश।	,,		48/81	> तमा
नफ़अ़	अ० पु० लाभ प्राप्ति फल परिणाम ब्याज।	बोधा	2	35/3	> नफा

(ऽ)ऐन का प्रयोग आ की मात्रा के तरह हुआ है

मूल०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्व०प०
					ऽ>आ
जाफ़र ऽ>	अ०पु० नहर नदी खरबूजा चौदह इमामों मे से एक ।	खलीन	3	364/11	>जाफर
जा'फ़रान	अ० पु० कुंकुम, केसर,	ग्वाल	1	117/92	
जाफ़रानी	अ० वि० केशर के रंग का केसरी, केशर से बना ।	नागरी	8	504/766	
तारीफ़ ऽJ	अ० स्त्री० प्रशंसा, परिचय, गुण, व्याख्या ।	ग्वाल	1	87/180	>तरीफ ऐन का लोप
ता'लीम ऽJ	अ० स्त्री० शिक्षा देना उपदेश, नसीहत गुरुमंत्र ।	बोधा	2	264/42	>तालीम
ता'बीज़	अ० पु० कवच मंत्र चक्र गले का एक आभूषण, कब्र, पर बना हुआ पत्थर या ईंट का निशान	तोष	सुधा०	141/184	>तबीज ऐन (ऽ) का लोप
दा'वत	अ० स्त्री० बुलावा, खाने का बुलावा, निमंत्रण, भोज ।	वृन्द	वृग्र	163/258	>दाबत व > ब
दा'वा	अ० पु० वाद, नालिश, अभ्यर्थ, क्लेम, हक, गर्व, घमंड, डींग, शेखी	भूषण	2	119/24 123/35	>दावा
		भिखारी	1	21/141	
मा'लूम	अ० वि० ज्ञात स्पष्ट प्रकट असंभव	नागरी	नाग्र	505/762	>मालम (समीकरण)
		वृन्द	वृग्र	145/175	>मालिम (मात्रा परिवर्तन)
वा'द :	अ० पु० प्रतिज्ञा, संविदा, इक़रार	गंग	1	134/440	>उआदो (आदि स्वरागम) : > ओ

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प० ऽन > ऽे
इस्तेमाल	अ०पु० प्रयोग करना, औषध आदि खाना सेवन करना ।	नागरी		506/2	> इस्तैमाल
फे'ल[1]	अ०पु० कार्य, काम, क्रिया, कर्म, अमल, बुराकर्म ।	पद्माकर सोमनाथ	3	/573 उदा०	> फैल
					ऽन(ऽ) का लोप
इन्आम	अ०पु० पुरस्कार बख्शिश किसी काम के लिए उजरत के अलावा रुपया ।	भूषण वृन्द	9	294 155/222	> इनाम
जमाअत	अ०स्त्री० पंक्ति, वर्ग, कक्षा, कवि, मंडली ।	पद्माकर	4	35	> जमाति (अंतइकारान्त)
		केशव	2	504/85	> जमातिहि (अंत व्यजन आगम)

1. फेल — तृप्ति न लहै ध्यान मैं लै लै
मन तैं चोर विषय बद फैलै ।। — सोमनाथ

बहुवचन में न् प्रत्यय का प्रयोग

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	व्यु०प०
अलगारो	फा०वि० बहुत अधिक, अतिशय, तेजी के साथ, शीघ्रगति से ।	लालकवि		उदा०	> अलगारन
जमा[1]	अ०स्त्री०मा पूंजी, मूलधन, धन, रुपया, पैसा ।	मतिराम	ल०ल०	343/262	> जमान
जफर[2]	अ०स्त्री० विजय प्राप्त करने-वाली ।	बेनी प्रवीण	1	7/28	> जफरी (ई लगाकर स्त्री०)
जार	तु०पु० समुदाय, जनसमूह, जमाअत, मुनादी ।	भूषण	2	117/17	> जारन
तोहफा	अ०सं०पु० सौगात, भेंट, उपहार	ग्वाल	1	55/101 उदा०	> तोफन (ह का लोप)
मर्दः	फा०वि० वीर, साहसी, उत्साही				
मर्द	फा०पु० मनुष्य, नर, पति, शूर, ठाकुर		1	32/91	> मरदन
	साहसी, हिम्मतवार	वृन्द	8	74/202	

इन प्रत्यय

अहदी	अ०	केशव	2	494/9	> अहदिनि
ख़वास	अ०पु० खास का बहुवचन, स्त्री० शाही महल की वह दासी जो बादशाह के पास एकान्त में आती जाती है ।	भिखारी	2	94/30	> खवासिन
	केशव — दहेज में वधु के साथ आने वाली लौंड़ी ।	केशव	1	199/371	

1. जमान — महाबीर सत्रुसाल नंदराव भावसिंह
   हाथ ने तिहारे खग्ग जीति का जमान है ।। — मतिराम

2. जफरी — नैनति निहारि जानी रंभा रति मनजानी ।
   उर जानी आई अति आनन्द की जफरी ।। — 7/28

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खिलवत	अ०स्त्री० कवि– अभिन्न मित्र	पद्माकर	हि० ब०	/13	> खिलवतिन
जुल्फ़	फा०स्त्री० केशपाश, बालों की लट, कनपटी के पास वाले बाल, केश । बोधा – लम्बे केश (जुलुफ)	देवदत्त	4	238/29	> जुल्फनि
महल		चिन्तामणि		27/2	> महलनि
		मतिराम		240/176	
			बहुवचन बनाने के लिए "ए"		
किला	अ०पु० दुर्ग कोट कवि (कुच का उपमान)	गंग	1	104	> किले
बंदा	फा० दास, सेवक	भिखारी	1	69/477	> बंदे
मुरब्बा	अ०वि० वह मेवा जो विशेष रूप से गला कर शक्कर के किवाम में रखा गया हो ।	ग्वाल	ग्व०र०	28/53	> मुरब्बे
					"ऐं"
चादर	फा०स्त्री० ओढ़ने का वस्त्र, खेमा रावटी, तख्ता, शीट, प्रच्छाद	भूषण	4	138/7	> चादरै
चद्दर	हिन्दी– स्त्री० धातु का पत्तर चादर, तेज बहाव में नदी के ऊपरी तल की समतल अवस्था।	भूषण			
पेशकश	फा० स्त्री० पुरस्कार भेंट नज़रान प्रर्थना, इल्तिजा, खिराज (लगान)	भूषण	1	71/242	> पेसकसै
					ओं
महबूब	अ०पु० प्रेमपात्र, माशूक़	बोधा		6/32	> महबूबों

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मर्द	फा०पु० मनुष्य, नरपति, शूर, साहसी, हिम्मतवार	वृन्द	9	143/166	>मरदौं
				औ	
		वृन्द		150/201	>मरदौं
यार	फा०पु० मित्र, दोस्त, सहायक प्रेमपात्र । शब्द के अन्त में वाला का अर्थ देता है । जैसे होशियार (काव- मित्रौं)	भूषण		96/330	>यारौ
				अंत इकारान्त	
अज़्मत	अ०स्त्री० महात्म्य, महिमा, बुजुर्गी, महत्व, आदर, कवि- चमत्कार ।	बोधा	1	/89	>अजमति
अदूल	अ०पु० सत्यनिष्ठ व्यक्ति सच्चा पुरुष, सच्चा गवाह ।	भूषण	1	73/247	>अदली
आलमगीर	अ०फा०वि० विश्वव्यापी संसार में फैला हुआ विश्व विजयी ।	वृन्द	वृग्र 9 11	271/91	>आलमगीरी
आलम+गीर	अ०पु० संसार दशा हालत का प्रत्यय पकड़ने वाला जैसे माहीगीर — मछली पकड़नेवाला गुलगीर — चिराग का गुल करने वाला ।				
करामात	अ०स्त्री० करामत का बहु० करामतें, चमत्कार, मो जिजें ।	भिखारी	2	130/190	>करामति
कसब	अ०सं०स्त्री० वेश्यावृत्ति वेश्या रंडी कुलटा ।	पद्माकर		उदा०	>कसबी
		बोधा	2	107/21	>कस[illegible]

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृः छ	ध्व०प०
काकरेजा	फा० लाल और काले के मिश्रण से बनने वाला रंग-बैंगनी रंग की	देव	सु०जात	555	> ककरेजी
			रसविला	226/52	
खिलाफ़	अ०पु० बैत का पेड़ वि०- विरुद्ध मुखालिफ प्रतिकूल बरअक्स, शत्रु ।	पजनेस	प०प्र०	32/81	> खिलाफी
खुदादाद	फा०वि० खुदा का दिया हुआ, ईश्वरदत्त कवि- स्वयंभू ईश्वर	रसलीन	1	6/18	> खुदादादि
गरजमंद	अ०फा०वि० इच्छुक, ख्वाहिश, मंद, जिसका कोई मतलब अटका हो ।	भिखारी	1	70/480	गरजी
		बोधा	2	97/3	
गुनाह	फा०पु० पाप, पातक, दोष अपराध, अन्त में इ लगाकर वि० बनाया है ।	ग्वाल	3	39/61	> गुनाही
ज़रबफ़्त	फा०पु० सोने-चांदी के तार से बुना हुआ कपड़ा ।	नागरी	ना०ग्रं	159/106	> जरबफती
दाद	फा०स्त्री० न्याय इंसाफ दान बखशिश, प्रशंसा, तहसीन, वाह-वाह।	वृन्द	वृ०ग्रं	152/207	> दादि
	दाद प्रत्यय दिया हुआ जैसे खुदादाद खुदा का दिया हुआ ।	केशव		उदा०	
दार	फा०स्त्री० सूली, फांसी, प्रत्यय- वाला जैसे हिस्सेदार ।	भूषण	1	65/217	> दारि
नज़र	अ०स्त्री० दृष्टि विचार गौर ध्यान जांच कुदृष्टि बुरीनजर जिससे विशेष कर बच्चों को हानि पहुंचती है ।	भिखारी	1 3 4	15/88 271/15 41/15 117/18 29/196 93/36	
	बोधा - उपहार भेंट ।	भूषण	1,3	138/11	
नाख़	फा०पु० नासपाती की एक जाति	रसलीन	3	309/24	> नाखी

(ख़ > ख)

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
बरकत	अ०स्त्री० बढ़ती बढोत्तरी जियादती प्रचुरता इफ्रात सौभाग्य खुशकिस्मती ।	भूषण	1	106/364	>बरकति
बिसात	अ०सं०स्त्री० पूंजी धन वित्त आधार, वह वस्त्र जिस पर शतरंज खेला जाता है ।	सोमनाथ		उदा०	>बिसाती
		देव		उदा०	> बिसाति
		सेनापति		उदा०	
महबूब	अ०सं०स्त्री० माशूकपन, प्रियता, वल्लभता ।	देव		उदा०	> महबूबी
मुद्दत	अ०सं०स्त्री० अवधि बहुत दिन अरसा ।	गंग		उदा०	> मुद्दति
सूरत	अ०स्त्री० रूप आकृति शक्ल चेहरा	भूषण		96/334	> सूरति
हक़ीक़त	अ०स्त्री० यथार्थता, सत्यता, मर्यादा, हैसियत ।	तोष		125/10	> हकीकति क़ > क
हिर्स	अ०स्त्री० लोभ, लालच, हवस, लिप्सा ।	ठाकुर		उदा० 27/74	>हिरसी

ए का अ होना

एहसान	अ०पु० उपकार, नेकी	बिहारी	वि०स०		>अहसान
इश्केमजाज़ी	अ०पु० मानव प्रेम, सांसारिक प्रेम, मजाज़ी – भौतिक जो हकीकी न हो ।	बोधा	2	54/40 56/56	>इस्क मजाजी
इश्के हक़ीक़ी	अ०पु० ईश्वर प्रेम, ईश्वर-भक्ति, इश्के इलाही । अलौकिक प्रेम ।	बोधा	2	54/40 56/57	>इस्कहकीकी श > स क़ > क

अ का ए

ख़ास(स)	अ०वि० विशेष मुख्य प्रधान कवि– अत्यधिक	भूषण		494	खासे
		पद्माकर	3	/205	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
ज़रूर	अ०पु० क्रि०वि० अवश्य यकीनी, निश्चित रूप से कवि — आवश्यक ।	पद्माकर	4	1	>जरूरै
हैकल	अ०स्त्री० प्रसाद भवन हार, गले की माला, आकृति, वेश-भूषा, मंदिर, कवच ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	3/18	>हैकलै
				अ > ऐ	
ज़ाहिर	अ०वि० व्यक्त प्रकट स्पष्ट प्रत्यक्ष,	पद्मा०	3	13,301	>जाहिरै
मरज़	अ०पु० रोग व्याधि व्यसन, बुरी आदत कवि—बिहारी ।	पद्माकर	3	248	>मरजै
हरज	अ०पु० हानि उपद्रव	,,	3	215	>हरजै
				आ > ए	
किताब	अ०स्त्री० पुस्तक ग्रंथ कापी मियाज ।	केशव	वी०चि०	507/19	>कितेब
जुदा	फा०वि० पृथक अलग विरह ग्रस्त अन्य ।	भिखारी	1	62/431	>जुदे
तमाशा	अ०पु० सैर तफ्रीह दर्शन दीदार आनन्द खेल । बाजीगरों या मदारियों का खेल, नाटक आदि का खेल, अजूबापन, हँसीमजाक, स्वांग । बोधा— वैभव का प्रदर्शन	भिखारी देवदत्त भूषण	1 3 4	46/313 221/18 147/32	>तमासे
				आ > ऐ	
सालूस	फा०वि० छलिया नक्काल	दीनदयालगिरि	-	उदा०	सैलूस
				इ > अ	
इख्तियार	अ०पु० हक अधिकार सत्ता हुकूमत स्वामित्व मालिकीयत	केशव भिखारी बोधा	2 1 1	513/44 69/447 8/46 .	>अखत्यार

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
इख्तियारी	अ०वि० जो अनिवार्य न हो जो लाजिमी न हो ।	केशव	2	513/43	> अख्त्यारी
इलाह	अ०पु० ईश्वर अल्लाह खुदा हि०इलाही- दैवी अलह — अलक्ष्य ।	खलीन	1	3/1, 4/4	> अलह
इलाहअली	अ०पु०+ अ०वि० इलाह—ईश्वर अली—उच्च, ईश्वर का एक नाम हजरत मुहम्मद के दामाद और चौथे खलीफा ।	खलीन	1	302/5	> अलहअली
इत्र	सुगन्ध, पुष्पसार	पद्माकर	जग-8	/122 /45	> अतर
		भूषण	2	115/11	
		खलीन	2	268/82	
		कृपाराम	1	5/284, 3/130	
		वृन्द	6	44/56, 10—226/257	
			8	186/453	
महताबी	फा०वि० एक प्रकार की आतशबाजी, जिसे छुड़ाने से चाँदनी-सी छिटक जाती है । जरबफ्त बादला जरी । वह अड्डा जिसे कोठे की सीढ़ियों पर बनाते हैं । कवि- तोप दागने के लिए गन्धक इत्यादि की बनी हुई बत्तियाँ जो जलती रहती हैं ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	24/164	> महताब
महताब	फा०पु० एक प्रकार की आतशबाजी				

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
					(य > इ)
खुस्यः	अ०पु० अंडकोश, मुष्क, पोता	पद्माकर	6	/51	> खुनी
तगय्युर	अ०पु० सं० परिवर्तन	बिहारी	1		> तगीर
पाँयचो	फा०पु० सं० पायजामे की मोहरी ।	ग्वाल	1	58/107	> पाइचे
यूसुफ़	अ०पु० पैगम्बर जो अत्यन्त सुन्दर थे । कवि –	गंग	1	/360	> ईसफजयन
यूसुफजबी	अ०वि० यूसुफ जैसा माथा रखने वाला (वाली) अर्थात् बहुत सुन्दर ।				(जबी > जयन)
यूसुफजमाल	यूसुफ जैसा सौन्दर्य रखने वाला (वाली)	गंग			
विलायती	अ०वि० विलायत का विलायत वाला, विलायत से आया हुआ।	पद्माकर	1	/119	> विलाइती
					इ > य
अजाइबखानः	अ० फा० पु० विचित्रालय, अजायबघर ।	नागरी	नाग्र-1	178/149	> अजायब (खानः का लोप)
लाइक	अ०वि० योग्य, विज्ञान, पात्र	घनानन्द	घ०र०	108/195, 109/198	> लायक

व्यंजन परिवर्तन

					ल > र
उक्लः[1]	अ०पु० बांध बंद, मर्यादा, प्रतिष्ठा, बड़ाइ ।	ग्वाल समाधान		102/48	> उक्र

1. ग्वाल कवि कहै एक घाटौ तो जरूर मोमे ।
गोबर न थाप्यो औ न खोयौ मैं उक्र है ।। – ग्वाल 102/48
भनै समाधान एसो पौन को कुमार गिरि द्रोन को
लियायो ताकी कौन सी उक्र को ।। – समाधान ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
कुलंग[1]	फा०सं०पु० मुर्गी	भूषण	।	105/361	>करंज ग > ज कु > क समी०
गुल[2]	फा०पु०सं० गुल, फूल, प्रसून	केशव		उदा०	> गुर
जवाल	सं०पु० निकट धाय आफत जौ के हरे अंकुर ।	गंग	।	102/333	>जवारे
बलदार[3]	फा०वि० बढ़ी हुई, ऐंठनवाली, वाहक, ढोले वाला ।	सेनापति	।	102/23 6/17	>बरदार
फ़ज़्ल	अ०पु० कृपा, मेहरबानी, प्रतिष्ठा, बुजुर्गी, विद्वत्ता, फजीलत ।	नागरी	नाग्रा	128/31	>फजर
तबर[4]	फा०पु० सैंजा कुल्हाड़, कुल्हाड़ी की भांति एक हाथियार, नगाड़ा, बड़ा ढोल ।	सूदन कवीन्द्र		उदा० उदा०	>तबल
खरीतः[5]	अ०पु० जेब, थैली, बड़ा लिफाफा कांच – थैली ।	सेनापति चन्द्रशेखर पद्माकर	1 1 3	83/38 9/48 /599	खलीत खलीता खलीती

1. पाढे पील खाने आ करंज खाने कीस है ।। – भूषण
2. केशव सरिता सरनि कूल फूल सुगन्ध गुर ।। – केशव
3. पूरी गज गति बरदार है सरस अति उपमा
   सेनापति बनि आइ है ।। – सेनापति ।
   सेनापति निरधार पाइयोस बरदार हौं तौ
   राजाराम जू के दरबार को ।। – सेनापति ।
4. तोमर तबल तुफंग दाव लुट्टियो तिहीछिन ।। – सूदन
   तौफन सौं तोपन सौं तबल रु उनन सौं
   दक्खिनी दुरानिन के माचे झक्झोर है ।। – कवीन्द्र ।
5. सीता को संताप कि खलीता उतपात को
   कि काल को पलीता प्रलै काल के अनल कौ ।। – सेनापति

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
जंगार	फा०पु० नंडूर, ठंड व तरी से धातुओं में लगने वाला मैल, कसाव, मैल, जंग से बनी औषध । कवि – हाथी के रंग के लिए ये शब्द प्रयोग किया है । (मैटमैला या नीला रंग)	वृन्द	वृग्र	179/394	> जंगाल
जंगारी	फा०वि० जंगार के रंग का, जिसमें जंगार पड़ा हो । जंगार डाल कर बनायी हुई औषधि । कवि – हाथी के रंग के लिए प्रयोग किया है ।			176/375	> जंगाली
जेर[1]	फा०सं०पु० जंजाल, परेशानी, का काम, बंधन हैरानी ।	दास			> जेलनि
		मतिराम	1	286/379	> जेल
		तोष			> जेलि
दीवार	फा०स्त्री० भीत दिवाल	भूषण	2	121/31	> दीवाल
		बोधा	2	54/40	
		भिखारी	1	25/165	> देवाल
सरशार[2]	फा०वि० उन्मत्त, मस्त नशे में चूर, छलकता हुआ परिपूर्ण ।	सोमनाथ		उदा०	

1. जेलनि – जिय गल डारि जेलनि । अजहुं समुझि जजि मुख पेलनि ।। – दास
 रुप सांवरो सांचु है सुधा सिंधु में खेल लखिन
 सकैं अखियां सखी परी लाज की जेल ।। – मतिराम
 लोक वेद दुहुनि की जेलि सो पेलिकै प्रेमहि में मिलिजै है ।। – तोष
2. जानहु मेरो कठोर हियो जु कियौ सरसाल मनोज नै झाँकी ।
 नैनति मैं घट मैं अटकी खटकै वह बाकी विलोकति बाँकी ।। – सोमनाथ ।

मूलशब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्वनि परिवर्तन
कागज़[1]	अ० पु० लिखने का कागज पत्र,	रसलीन	1	173/922	> कागद
	दस्तावेज आदि ।		3	333/85	
कागद[2]	फा० पु० कागज	दास	4	252/43	> कागर
हौज़[2]	अ० पु० हौजः—छोटा हौज,	पद्माकर	3	/8	> हौद
	हौज़— पानी का पक्का कुंड, जो मस्जिदों या बागीचों में होता है ।		8	/8	
गलीज[3]	अ० वि० दुर्दशाग्रस्त, मैला-कुचैला ।	बिहारी	1	215/134	ज > त > गलीतु
रूयत	अ० स्त्री० दर्शन कवि— चेहरा	गंग	1	73/243	त > य > रूयये
ताबीदः	फा० वि० ज्योतिर्मय, प्रकाशित बोधा — दीप्त, उद्दीप्त	बोधा	2	123/32	द > य ताबिया
गुमान[4]	फा० सं० पु० घमण्ड, गर्व, कानाफूसी ।	हरिजन			न > र > गुमर
कागद	फा० पु० कागज	केशव	र० प्रि०	9/7	द > र कागर
		गंग	1	/348	

1. अरी बाल छवि स्याम की यौं परयंक लखाइ ।
   मानौ कागद पै लिखी मसि की लीक बनाइ ।। — रसलीन
   क्यों लिखौं राम को नाम तुम्हैं कहां कागद रुरो पुनीत मैं पाऊं ।। — दास
   कागद प्रमान आन सुक्र भयो जीह जान
   सनि तो निदान मसि बात अवरोहइ ।।
2. कहर को क्रोध किधो कालिका को कोलाहल
   हलाहल हौद लहरात लबालब को ।। — पद्माकर
3. मीतु न नीति गलीतु है जो धरिये धनु जोरि ।
   खाये खरचै जो जुरै तो जौरिये करोरि ।। — बिहारी
4. मेरे नैन अंजन तिहारे अधरन पर शोभा देखि
   गुमर बढ़ायो सब सखियां ।। — हरिजन ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
तनाव[1]	फा०सं०पु० रस्सी, डोरी	भूषण			ब > य > तनाय
दुचोबः[2]	फा०सं०पु० दो बांसों वाला खेमा ।	ग्वाल	1	37/55	बः > व > दुचोबै
करनाय[3]	अ०सं०पु० नरसिंह, भोपू, एक प्रकार का बड़ा ढोल ।	केशव	रा०च०	69/126	य > ल > कर्नाल
खुशहाल[4]	फा०अ०वि० जिसकी आर्थिक दशा अच्छी हो, सम्पन्न समृद्ध, मालदार ।	बिहारी	वि०स०	336/511	ह > य > खुस्याल
खुशहाली	फा०अ०स्त्री० सम्पन्नता, समृद्धि, मालदारी । कवि- प्रसन्नता ।	पद्माकर	3	/621	> खुस्याली
जीरिह	फा०स्त्री० लोहे की जंजीर का एक पहनावा जो लड़ाई में पहना जाता है । कवच बख्तर ।	भूषण	1	94/328	> जीरन
नसीहत	अ०स्त्री० सदुपदेश, सीख, अच्छी सलाह, इब्रत ।	नागरी	ना०प्र०	500/750	> नसियत (ह्रस्वीकरण)

1. जहँ तहाँ ऊध उठे हीरा किरन घन समुदाय हैं ।
भानो गगन तँबू तान्यो ताकि सपेट तनाय है ।। — भूषण

2. विविध बनातें कीम खाप की क्नातें तामें दीरघ दुचोबे है
सिचोवें हक्क हद्दी में ।। — ग्वाल 37/55.

3. कहुं सोभना दुंदुभी दीह बाजै, कहुं भीम झंकार कर्नाल साजै ।। — केशव

4. छुटत न पैयतु छिनकु बीसि, नेह-नगर यह चाल
मार्यौ फिर-फिर मारियें, खूनी फिरै खुस्याल ।। — बिहारी 336/511.

मूलश०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
					व > उ
वज़ीर	अ०पु० अमात्य, मंत्री, सचिव,	भूषण	।	/484	> उजीर
				21/69	
				70/239	
		नागरी	।	14/84, 85, 86, 87, 92.	
		भूषण	।	484/ 28/94 62/209	> वजीरन न् प्रत्यय
		नागरी		15/96	> उज्जीर (मध्य व्यंजन आगम)
वसीलः	अ०पु० साधन, जरिया, माध्यम, बिचौलिया।				
वसूली	अ०स्त्री० उगाही वि० वसूल करनेवाली (दासी) वसीला करने वाली दासी	नागरी	।	30/67	> उसीली
जेवर	फा०पु० आभूषण, भूषण	रसखान		उदा०	> जेउर
					व > औ
वसीलः	अ०पु० साधन उपकरण जरिया माध्यम बिचौलिया। केशव – मरने का बहाना।	केशव	2	506/8	> औसिलो
ख्वाजः सरा	तु० फा०पु० महल का रखवाला जनाना, हिजड़ा, शिखंडी।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	8/48	> खोजा
खोजा	हि० वह नपुंसक जो मुसलमानी अन्तःपुर में रक्षक का कार्य करता है। सेवक, सरदार, एक तिजारत पेशा मुसलमान जाति।				

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
ज्वानूचा	फा० सं० पु० बड़ी परात या थाल	ग्वाल	1	38/58	> चौन
	कौन सर्वनाम ।	पद्माकर		[illegible]	
रविश	फा० सं० स्त्री० बाग की क्यारियों	प्रतापसिंह		उदा०	रविश > रौंस
	के मध्य का मार्ग चाल व्यवहार	ठाकुर		उदा०	
	रंगढंग ।				
हवस	अ० स्त्री० उत्कंठा, लालसा, बढ़ा	पद्माकर	1	/64	> हौस
	हुआ, शौक, लोभ, लालच,				
	कवि– उत्कट इच्छा ।				
					व > ब
आवाज़	फा० स्त्री० स्वर शब्द नाद ध्वनि	वृन्द	वृग्र-9	148/190 166/280 171/327	> आवाज
	बोली ।				
			वृग्र	168/293	> आबाजै
				(अन्त मात्रा आगम)	
कुव्वत	अ० स्त्री० शक्ति, बल	गंग	1	/372	> कूबति
	कवि– बुरी बात, बदनामी	पद्माकर	प० भ०	/339	> कुबत
		जसवंतसिंह	छुटकदोहा	19	
खुदावंद	फा० पु० ईश्वर खुदा स्वामी	नागरी		499/749	> खुदाबंद
	मालिक ।				
तजवीज	अ० स्त्री० सम्मति, निर्णय, प्रबंध	ठाकुर	1	17/48	> तजबीज
तस्वीर	अ० स्त्री० मूर्ति बनाना चित्र	बेनीप्र०	1	35/239	> तसबीर
	छायाचित्र, प्रतिमा, बुत ।				
नव्वाब	अ० वि० बादशाह का नाइब	पजनेस	प० प्र०	42/106 46/116 (व् लोप, म० व्य०)	> नबाब
	किसी रियासत का मुसलमान शासक ।	केशव	2	492/52	
	वृन्द – सम्बोधन (व्यंग्य)			493/55, 56, 61, 62, 503/77, 544/39, 40	
		भूषण	1	23/77	

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
					व > ब
वफा	अ०स्त्री० प्रतिज्ञा पालन, भक्ति, निर्वाह, निबाह ।				
	कवि— सहेज कर रखना	पद्माकर	6	/44	> बफा
सवाब	अ०पु० भलाई, पुण्य	नागरी	नाग्र	446/589	> सबाब
हरावल	तु०पु० सेना का अग्र भाग	केशव	रतनबा०	465/6	> हरबल
हवेली	फा०स्त्री० पक्का और बड़ा मकान भवन । कवि— महल, महल में रहनेवाली । इमालः—अ०पु०अरबी अथवा फारसी में किसी शब्द के अलिफ को ये बना देना । जैसे — किताब > कितेब, हवाली > हवेली कर देना ।	गंग	1	/365	> हबेली
					ब > व
कहरुबा	फा०पु० तृण, भाप, एक हल्का पत्थर जो तृण को अपनी ओर खींचता है ।	पजनेस	1	52/81	> काहरवा
काबुक	फा०सं०स्त्री० कबूतरों के रहनेका दरबा, चक्रवाक ।	देव		उदा०	> कावक
		पद्माकर		उदा०	
कुरबानी	अ०सं०स्त्री० बलिदान	भौनकवि		उदा०	> कुरवा
कीसः बुर	अ०फा०वि० जेब काटने वाला पाकेटमार, कीसावर भी प्रचलित	केशव	वी०च०	555/50	> किसवार
गर्क-आब	फा०वि० पानी में डूबा हुआ	भूषण	3	उदा०	> गड़कआव
चाबुक	फा०सं०पु० चाबुक, कोड़ा, सोटा, कसा, प्रतोद, तीव्र, तेज, निपुण, होशियार ।	देव		उदा०	> चावक
		बोधा		उदा०	
जेब	फा०सं०पु० सौन्दर्यराशि, शोभाराशि	ग्वाल		उदा०	> जेवन

(अन्त व्यंजन आगम)

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्व०प०
दिलबर	फा०पु० दिलउड़ा ले जाने वाला, प्रेमपात्र, माशूक, नायिका, बोधा — प्रिय।	बोधा	1 2	15/90 85/39	> डिलवर
बागबान	फा०पु० उद्यान पाल, माली,	दास	1	/85	> बागवान
बिल्लौर	अ०पु० एक कीमती शीशा स्फटिक मणि।	वृन्द	वृ०ग्र	176/376	> बिल्लौर
गालिब[1]	अ०वि० बलवान विजयी	रघुराज		उदा०	ब > म > गालिम
गिरीबान	फा०पु० गले की पट्टी ग्रीवा, गला। बोधा—गर्दन	बोधा	1	110/39	> गिरमान
गुंबद	फा०पु० इमारतों के ऊपर का गोल मंडप जो बड़ा हो, गुंबज	भिखारी	2	108/39	> गुंमज
तोशखानः	फा०पु० वह स्थान जहाँ खाने पीने का सामान रहता है। अपभ्रंश — तोशः खानः	वृन्द	वृ०ग्र	166/280	>
नाबूद	फा०वि० नष्ट, बरबाद, लुप्त, गाइब।	गंग	1	/237	> नमूद
पासबान	फा०वि० निरीक्षक, द्वारपाल, कवि— निकटवर्ती, पास में।	गंग	1	/372	> पासमान
मुबारक[2]	फा०सं०स्त्री० बधाई	चन्द्रशेखर	1	7/उदा०	> ममारखी क > खी
दामन[3]	फा०पु० कुरते या अंगरखे का वह भाग जो लटकता रहता है, अंचल मैदान, समतल भूमि।	तोष भिखारी	1	21/241	म > ब > दावन

---

1. गालिम — गैरिक ग्रास्यो है गजराज गोड़ गोट्यो। ग्राह गालिम गंभीर नीर चाँइयो सो गिरायो है ।। — रघुराज।
2. ममारखी— देत ममारखी बारहिंबार करैं सिगरी सब ओर सलाहैं ।। चन्द्रशेखर
3. दावन — दावन खैंचि भावन सो कहती तिय मो मन यौं प्रनकै पर्‌यौ ।। तोष

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
दामनगीर[1]	फा०वि० दामन पकड़नेवाला,	बोधा	1	उदा०	> दावनगीर
मंबा[2]	अ०सं०स्त्री० सोता, स्रोत	जसवंतसिंह		"	> बंबी

भिन्न वर्तनी

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
औरंग	फा०पु० राज सिंहासन तख्तेशाही बुद्धिमत्ता । कवि—औरंगजेब (एक मुगल सम्राट् का नाम)	भूषण	1	24/79, 27/90	> अवरंग
औरंगज़ेब	फा०वि० राजसिंहासन की शोभा शासक हुक्मरा एक मुगल सम्राट् की उपाधि ।	भूषण		उदा०	
इंसानियत	अ०स्त्री० मानवता सभ्यता	ग्वाल	1	44/74	> इन्सानियत
जर्रः	अ०पु० कण, बहुत बारीक रेजा, अति तुच्छ, छोटा, चीटा ।	नागरी		505/762	> जर्रह
जिंस	अ०स्त्री० वस्तु चीज अन्न जाति	बोधा	2	221/26	> जिन्स
नुस्रत	अ०स्त्री० सहायता, समर्थन हिमायत ।	वृन्द	वृ०ग्र	276/37	> नुसरत ~~लग~~
पेशबंद	फा०पु० घोड़े का जेरबंद जेरबंद— घोड़े के पेट पर कसा जाने वाला तस्मा ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	3/18	> पेसबन्द
पैगंबर	फा०पु० ईशदुत, अवतार, पयंबर नबी ।	भूषण	2 1	118/20 106/364	> पयगम्बर

1. दावनगीर — सदा सुखदायक जे लखे बीर भये इहि श्रावन दावनगीर ।। — बोधा

2. बंबी — आगे चलि नृप बंबी देखी परबत गुफा तहाँ इक पेसी ।। — जसवंत सिंह

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खुगीर[1]	फा०पु०सं० वह ऊनी वस्त्र जो घोड़ों के चारजामे के नीचे लगाया जाता है ।	अज्ञात		उदा०	उ > औ > खोगरी
गुलुलखानः[2]	गुलुल अ०पु०+खानः फा०स्नान-घर, स्नानागार ।	भूषण		191	गोजलखाना
		,,	। शि०भू०	10/34	गुसलखाने (अः > ए)
मुसिन[3]	फा०पु०सं० चतुर, अनुभवी	केशव		उदा०	> मोसन
सुहबत	अ०स्त्री० संगत, मित्रता, छोटी महफिल, सहवास, हम-बिस्तरी, गोष्ठी ।	गंग	।	243	> सोहबते
		नागरी	सु।	443/58।	> सोहबत
					ऊ > ओ
पूच[4]	फा०वि० अशक्त क्षीण हीन, निकृष्ट, क्षुद्र, तुच्छ ।	बेनीप्र०	।	7/3।	> पोच
सूफी	अ०पु० ब्रह्मज्ञानी, अध्यात्मवादी, सारे धर्मों से प्रेम करने वाला ।	नागरी	8	253/79	> सोफी
					उ > औ
तुर्रा	अ०पु०सं० शिखा, चोटी, प्रतिष्ठा	लालकवि		उदा०	तौरा

1. काली औ पीरी कछुक है भूरी
   बुरी सो खोगीर सी दाढ़ी हलावे ।। – अज्ञात ।
2. अरे ते गुसुल खाने बीच ऐसे उमराय लै चले ।
   मनाय महराज सिवराज को ।। – भूषण
3. ता पीछे असवार सूर केशव सब मोसन ।। – केशव
4. बदि के सकोच, त्योही मदनै दबाये वैन ।
   परत मदन के सहाय सब पोच हौ ।। – बेनीप्रवीन 7/3।.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
					ओ > उ
होशयार	फा० वि० बुद्धिमान, अक्लमंद चतुर, चालाक, हवास में छली, ठग, दक्ष, कुशल, माहिर, सचेत ।	भूषण	2	116/16	हुस्यार
रोजगार[1]	फा० पु० सं० धंधा, पेशा, व्यापार	रघुराज		उदा०	> रुजिगार
चोब[2]	फा० सं० स्त्री० शामियाना खड़ा करने का डंडा ।	बोधा		उदा०	> चूब
					ए > इ
एतबार	अ० पु० विश्वास	बोधा	2	71/43	> इतबार
		केशव	4	/90	
		वृन्द	16	255/638	
			9	182/423 163/256	
एतबारी	अ० पु० एतबार में इ लगाकर वि० बनाया है — वि० विश्वासी विश्वास-पात्र ।	वृन्द	9	163/256	> इतबारी
एतिराज	अ० आपत्ति	बोधा	2	22/14 111/48	> इतराजी
	कवि — अप्रसन्नता ।	नागरी	1	342/2 370/2	
एराक़ (इराक़)	अ० पु० पूर्वी अरब का एक देश (जिसकी राजधानी बगदाद है, जहाँ के घोड़े अच्छे होते हैं)	मतिराम	1	425/697	> ऐराक

1. रावरी रीति पै रीझि कै हौ रुजिगार रच्यो शरागत पावन ।। — रघुराज
2. दिशा बारहों द्वारिया चूब खोले हरी लाल पीरी उरी झर्पै डोले ।। — बोधा

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
एराकी	अ० वि० एराक सम्बन्धी पु० एराक देश का घोड़ा ।	वृन्द	वृ०३9	155/224	> ऐराकी
ए'लान[1]	अ० पु० घोषणा अभिज्ञापन, मुनादी, हुक्म, आज्ञा, इश्तिहार	भूषण		58/198	> इलाम (न > म)
					अः > आ
इज़ाफ़ः[2]	अ० सं० पु० वृद्धि बढ़ती, उन्नति, तरक्की	ग्वाल		35/51	> इजाफा
		वृन्द	9	156/225	
		वृन्द		156/226	> इजाफै
हज़ारः	फा० पु० एक फूल, पौधे में पानी देने का एक पात्र	वृन्द		178/384	> हजारा
					अः > इ
मंसूबः[3]	अ० सं० स्त्री० इरादा, इच्छा, ख्वाहिश, ताज्ञिशा ।	देव		उदा०	> मनसूबी
माद्रः[4]	फा० वि० थकी हुई रोगी	ग्वाल		उदा०	> माँदी
					अः > ए
तपंचः	तपांचः का लघु रुप ए लगाकर बहु० वचन बनाया, थप्पड, पिस्तौल तमंचा, कवि-छोटी बंदूक ।	पद्माकर	हि० ब०	/69	> तमंचे प > म

1. ठान्यो न सलाम मान्यो साहि को इलाम ।
धूमधाम कै न मान्यो राम सिंह हू को बरजा ।। – भूषण

2. ग्वाल कवि कहै प्याला बाला ये दूहून ही ये
सबही ने जान्यौ ठीक आनन्द इजाफ सौ ।। – ग्वाल 35/51

3. डूबी बन वीथिन चकोर चतुराइ मनसूबी तुरगन की तमाम करियत है ।।– देव

4. ~~[illegible]~~ ऐसे जो विचार कर ननद सो रार कर,
मौंदी हौं अपार कर सासु सो उचार कर ।। – ग्वाल ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सुबुह	अ०स्त्री० प्रातः काल, प्रभात, भोर	नागरी	नाप्र	567/766	> सुबै
फ़त्ह	अ०स्त्री० फतहबाज, एक प्रकार का बाज, विजय (कामयाबी) काव्य— विजय।	पद्माकर	हि० व०	269	> फते
			प० श०	263	
		बिहारी		398/712	> फते
		भूषण		59/262	> फतह (मध्य स्वर आगम) त > द
अज़्मात	अ०पु० अज़्म का बहु० इरादे निश्चय।	बेनीप्रवीण	न०र०त०	63/459	> अजमूदें
अज़्म	अ०पु० संकल्प, दृढ़ निश्चय इच्छा ख्वाहिश।				
कालबुद[2] (काल्बुद)	फा०सं०पु० वह ढाँचा जिस पर कोई वस्तु आकार शुद्ध करने के लिए चढ़ाई जाती है। मिट्टी अथवा ईंट का वह ढाँचा जो छत या द्वार का कड़ा जोड़ते समय सहारे के लिए दिया जाता है।	बिहारी		353/569 (दीर्घीकरण)	> कालबूत ल् > ल (आगम बु > बू द > त
काल्बुद	फा०पु० शरीर देह जिस्म अस्थि-पंजर, ढाँचा।				
चीदः	फा०वि० चुना हुआ कवि—चुनूँ	गंग		/243	चीनमू द > न अः का लोप, मू का आगम मू लगाकर कर्ता स्वयं बने।

1. बाहु बली जय साहिजू फते तिहारै हाथ ।। — बिहारी, 398/712.

2. कालबूत दूती बिना जुरै न और उपाइ ।
फिरि ताकै टारै बनै प्रेम लढाईं ।। — बिहारी

मू०शब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्व०परि०
कार	अ०पु० घर, मकान, जगह, लोक	पदूमाकर	5	267	खरीखानन
+ खानः	फा०पु० गृह, संदूक आदि का खाना				ह > न
	रजिस्टर का खाना, जन्म कुण्डली का				
	खाना, छेद, विवर ।				
	कवि— बारहदरिया ।				
बादशाह	फा०पु० शासक नरेश राजा	वृन्द	वृ०ग्र	171/527	पातिसाह
					ब > प
					द > ति
मेजवान	आतिथेय, मेहमानी, करनेवाला	बोधा	वि०प्र०	156/27	> मिजयानी
					व > य
					ए > इ
				अन्त इकारान्त	
खवासी[1]	अ०स्त्री०सं० खिदमतगारी, उच्च-				
	सेवा-कार्य, राज-सेवा ।				
खवास	अ०पु० खास का बहु०खासलोग,	गंग		/275	> खवासि
	मुख्यलोग, खास्सः का बहु०गुण	नागरी		104/107	> खवासी
	धर्म, खासियतें (स्त्री०), शाहीमहल,	ग्वाल		102/48	
	की वह दासी जो बादशाह के				
	पास एकान्त में आती-जाती हो ।				
	गंग— सेविका ।				
दिलगीर[2]	फा०वि० दुःखित, रंजीदा,	बोधा	2	142/29	> दिलगीरी
	बोधा — उदासी, दुख ।	भिखारी		उदा०	> दिलगीर
					(मू०रूप)

1. दासी सो कहत दासी, यामे कौन ताहिनौ है । उनकी खवासी तौ न कीनी जोरि कर है ।। —ग्वाल 102/48

2. यह दिल में दिलगीरी लखतुन आन । कै दिल जानै आपनो कै दिल जान ।।— बोधा ।
क्यों है दिलगीर रहि गए कहूँ फीरे फीरे एतेमान भान यह जानै बागवान ।।— दास

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
रब(ब्ब)[1]	अ०सं०पु० स्वामी, पति, बड़ा-भाई, अभिभावक, ईश्वर, खुदा ।	ग्वाल	1	उदा०	> रवि
रुखसत	अ०स्त्री० विदा, विदाई, आज्ञा, फुर्सत, विश्रामावकाश, तातील, दुल्हन का दुल्हे के घर जाना ।	वृन्द	9	173/334	> रुक्सत ए > क त > ट
अजब	अ०वि० विचित्र, अद्भुत, आश्चर्य, अचंभा ।	नागरी	ना०ग्रं०	758/	> अजबो
अजूबः	अ०वि० शुद्ध उजूबः है परंतु उर्दू वाले दोनों तरह से बोलते हैं । विचित्र अद्भुत, अनोखा, विलक्षण ।	पद्माकर	8	/7	> अजब्ब
		बोधा	1	6/34	> अजब
		नागरीदास	1	128/31 177/148 183/160 440/568 445/587 499/748	> अजब
अरपी[2]	अ०वि० अरब का निवासी अरब का व्यक्ति, अरबी भाषा ।	पद्माकर	1	/41	> अरब्बी
			6	/83, 14	
	पद्मा—ताशा नामक बाजा, घोड़ा			/35	
	भिखारी—हे कृष्ण	भिखारी	का०नि०	191/16	> अरब्बीवारे > अरबीन
अलगारो[3]	फा०वि० बहुत अधिक (डा० कि०गु०)	ग्वाल	ग्वा० गा०	140/162	> अलगार

1. ग्वाल कवि भाख्यो रविजाने जो लयो मैं माल
   हाल भयो और इमि कहत तितैं तितैं ।। — ग्वाल ।
2. नैकु थिर धाउ अभिराम गुन सुन्दर हौ
   नाहि घनस्याम यह काम अरबीन कौ ।।
3. ग्वाल कवि मैसा बिहार की अपार पार ।
   ह्वै रही सवार भौर भीर अलगार पै ।। ग्वाल 140/162.

मू०शब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आशिक	अ०पु० आसक्त, प्रेमी	आलम शेख	आलम केलि	115/272	> आसक
		वृन्द	12	321/43	> आसिक
आबदीदः	फा०वि० सजल नयन, रूआंसा	रसलीन	फु०क०	265/11	> आबदीन
आमिल[1]	अ०वि० शासक, हाकिम, हुक्मजा, जो भूत-प्रेत या जिन और परी उतारता हो ।	भूषण	1	23/73, 153/54 22/73, 53/103	> अमाल
इश्क् + रम्ज	अ०पु० प्रेम+संकेत, इशारा, (प्रेम)रहस्य, राज कवि- प्रेमपूर्ण कटाक्ष ।	बोधा	2	122/21	> इस्क रमूज
ओहदः	अ०पु० पद दर्जा, मर्तबा पदाधिकारी ।	वृन्द	वृग्रा	156/227	ओहेद
उमीदवार	फा०वि० आशान्वित, नौकरी आदि का उम्मीदवार ।	,,	15	351/147	उमेदवार व > ब
उलूम	अ०पु० इल्म का बहुविधाएं शास्त्र, समूह ।	रसलीन	3	305/12 304/12	
ए	फा० अव्यय ऐ अयि बुलाने का संबोधन । बी – हि० स्त्री० बीबी, प्रतिष्ठित महिला । बि– हि० दो(संख्या)	भिखारी	2	/61, 120/143	> एबी, एबी
कस्साब	अ०पु० गोश्त बेचनेवाला, मांस विक्रेता, कसाई, बधिक, बूचड़ इन प्रत्य० लगाकर स्त्री० बनाया गया है ।	पजनेस	प०प्र०	35/86, 87	> कसाइनि

1. लूट्यो खान दौरा जोरावर सफजंग अरु लट्यो करतल कहाँ मनहु अमाल है ।
पैज प्रतिपाल भूमिभार को हमाल चहुं चक्क को अमाल भयो दड़क जहान को ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्व०प०
काबुल	फा० पु० अफगानिस्तान की राजधानी ।	गंग	1	/346	> काबिल
कुश्त[1]	फा० पु० मारधाड़ इस शब्द का प्रयोग खून के साथ होता है कुश्तोखून बोलते हैं । बिहारी — मारो-मारो	बिहारी	1	195/80	> कुहौं-कुहौं
कोरानिश[2]	फा० स्त्री० प्रार्थना विनती कुन्नस ।				> कैनि
खास(स)	अ० वि० विशेष मुख्य प्रधान कवि — भली-भाँति ।	पद्माकर	3	51/89	> खासी
खोगीर	फा० पु० घोड़े का पालान, चार-जामा, जीन काठी ।	वृन्द	वृग्र	196/525	> खँगार
खुशअदा	फा० वि० जिसकी अदाएँ अच्छी हों । जिसकी वर्णन शैली अच्छी हो ।	नागरी	नाग्र	177/148	खुशअदाह (अन्त्य व्यंजन आगम)
		,,	,,	506/763	> खुसअदा
गुनूरा[3]	तु० पु० मजदूर (ना० प्र० गु०) कवि — स्त्री० मजदूरनी, नौकरानी ।	गंग	1	/429	> गिनौरी

1. बन बाटनु पिक बटपरा लखि विरहिनु मत मैन ।
   कुहौं-कुहौं कहि-कहि उठै करि-करि राते नैन ।। — बिहारी 195/80.
2. विधि विधि कैनि करै टरै नहीं परेहु पानु
   चितै कितै ते लै धरो इतो इतै तनु भानु ।।
3. सजि गाजै बजाज अवाज मृदंग लौ
   बाकियै तान गिनौरी लरै ।। — गंग

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गौर[1]	अ०पु० चिन्तन, मनन, सोच-विचार, ध्यान, तन्मयता, तसब्बुर, ध्यान ।	भूषण	1	82/279	> गैर
चर्बः[2]	फा०पु० वह महीन और चिकना कागज जो दूसरे कागज पर रख कर उसके बेल-बूटे उतारने के काम आता है — अपनी कागज इस प्रकार उतारा हुआ कागज खाका रेखाचित्र नक्ल प्रतिलिपि प्रतिमूर्ति, खाका ।	बख्शी हंसराज		उदा०	> चरुवा
चर्बी	फा०स्त्री० चर्बी मेदा । कवि— मति ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	45/325	> चरबी
चारखाना[3]	फा०पु०स० एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंगीन धारियों से चौखूंटे घर बने रहते है ।	सूदन		उदा०	> चौखाने
जंबूरः	फा०पु० छोटी तोप बाप का फल, एक औजार शहद की मक्खी । वृन्द—तोप लादनेवाली गाड़ी 190/482.	वृन्द	9	163/256 190/482	> जंबूर

1. गैर कहे गैर करू सिवाजी सों बैर करि
   गैर करि नैर निज नाहक उजारे तै ।। — भूषण 279.
2. बसतो सदा तासु के हिरदै
   हिलमिलि चरुवा चारु ।। बख्शी हंसराज ।
3. श्री सकर बिलंदी दूरि घरन्दी मानिक चंदी चौखाने ।।
   — सूदन ।

मूलश०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्व०प०
जुचः पा । जुच्चः	फा० पं० स्त्री० प्रसूता स्त्री, वह स्त्री जिसे हाल में बच्चा पैदा हुआ हो ।	देव		उ०ग०	> यचा
जल्लाद	अ० पु० वह व्यक्ति जो अपराधियों को कोड़े मारता है । जो अपराधियों की गर्दन मारता है । जो अपराधीयों को फांसी पर चढ़ाता है । अत्यन्त निर्दय और अत्याचारी ।	पद्माकर	3	/709	> जिल्लाहै
जिज़्यः	अ० पु० एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य के समय दूसरे धर्म वालों पर लगता था । जो एक टैक्स जो हिन्दुस्तान में मुसलमान शासकों ने हिन्दुओं से लिया था और जो 3 से 12 रुपये प्रतिवर्ष लगता था । धर्म-कर ।	वृन्द	वृ०ग्र	349/144	> जजिया
ज़ाहिरः	अ० वि० व्यक्त प्रकट, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, बाजेह ।	पद्माकर	3	60-13, 301	> जाहिरै
ज़िहार	अ० पु० कटिदेश, कवि--करधनी हि० जेहर=पाजेब, जेहार-- आंचल खेड़ी ।	सोमनाथ	सो० ग्र० प्र०खं०	पृ० 176	> जेहरि
जुदा	फा० वि० पृथक्, अलग,	पद्माकर	हि० ब०	/78	> जुदो
	विरहग्रस्त, अन्य ।	भिखारी	1	62/431	> जुदे
जुलभिनन	अ० वि० बहुत अधिक नेमत देनेवाला, ईश्वर । कवि--जुल्म करनेवाली जुल्म+ इन प्रत्यय ।	पद्माकर	3	/548	> जुलमिनि

1. बँचति न काइ लचि रँच तिरछाइ डीठि सँचति

सुजसु यचा सँचति के सोहरे ।। -- देव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्व० प०
तबीब	अ०पु० दवा करने वाला चिकित्सक वैद्य, कवि- चिकित्सा, दवा ।	ठाकुर	ठा०श०	16/43	>तबीब
ता	फा० अव्यय तक, तलक	नागरी	8	506/764	>ता दर---
तासीर	अ० प्रभाव, असर, क्रिया, वस्तु की गुण सूचक प्रकृति ।	वृन्द	वृ०ग्र	176/368	>तासिर
तौहीन	अ० स्त्री० अपमान, बेइज्जत	ग्वाल	1	102/48	> ताहिनो
पेशकब्ज[1]	फा० पु० भुजाली, छोटी कटार कवि- कटारियाँ	पद्माकर	हि० बा०	/177	>पिपकब्जैं
पेशा	फा० पु० धन्धा जीविका	भिखारी	1	/408	> पेसो
फरमाना	क्रि० फा० कहना, भूतकाल, फरमाया, कहा	चन्द्रशेखर	ह० ह०	22/140	> फरमाय
फतहयाब	अ० फा० वि० जिसने विजय प्राप्त की हो विजेता ।	नागरी	8	505/762	> फतेयाब
फरियाद फर्याद	फा० स्त्री० शिकायत सहायता के लिए पुकार ।	पद्माकर	5	/38	> फिराद
बगैर[2]	फा० अव्य० बिना, बे (अव्य०)	पद्माकर	8	/2	> बिगिर
		भूषण	1	19/63	
				20/65	
बलंद	फा० वि० उच्च लंबा, प्रतिष्ठित महान दराज, बहुत बुलंद भी बोला जाता है पर बलंद अधिक शुद्ध है । कवि- बुलंद, विशाल	पद्माकर	8	/17	> बिलंद

1. गहि-गहि पिसकब्जैं मरमनि गब्जै तकि तकि नब्जैं काटत हैं ।। — पद्माकर ।
2. ता बिगिर ह्वै करि निकाम निज धाम कहै आकुत
महाउत सुआकुंस लै सटक्यौ ।। 20/63.
---- बिगिर कलंक चंद उर आनियतु है ।। — 20/65.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
बडस्याअः	अ० स्त्री० वह दवा जो एक क्षण के अन्दर रोग से मुक्त कर दे, बारानसी काशी ।[1]	बोधा	2	उदा० 97/3	>बरारसी
बाहसब	बा० फा० उप शब्द शुरुआत में आकर साथ वाला पूर्ण आदि का अर्थ देता है जैसे बा आबोताब चमक दमक के साथ हसब- अ० पु० गणना अनुमान(तीन) अंदाज श्रेष्ठता बड़ाई कवि— समादृत	नागरी	नाग्र	499/748	मूलरूप
बे+राह	फा० वि० पथभ्रष्ट, कुमार्गी, गुमराह, (बेढंगी, अंडबंड) बे—बिना । राह— फा० स्त्री० मार्ग, रास्ता, ढंग युक्ति, यत्न, प्रतीक्षा, आस, उम्मीद । राह — अ० स्त्री० हर्ष, मदिरा, कवि— बेफायदा ।[2]	भूषण	2	1818/36 उदा०	>बिराह
बिसात+नहीं					
बिसात	अ० स्त्री० फर्श, सतह, साहस, सामर्थ्य, शतरंज का तखता, पूंजी, हैसियत, पहुंच । नहीं— अ० स्त्री० निषेध रोक नहइ शुद्धहै।	गंग	1	/89	> बिसात न

1. चोर को सनेही को है राड को संघाती कहूं निर्गुणी को दायक सरोगी को बरारसी ।। — बोधा

2. तेग बरदार स्याह पंख बरदार स्याह
कैनखिल नकीब स्याह बोलत बिराह को ।। — भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	व्या०प०
बे+काज[1]	फा०+हि० बिना काम व्यर्थ	वृन्द	वृ०स०	264/5	
		बिहारी		301/399	
				303/405	
				311/433	
बे+हुक्म	अ०पु० आज्ञा, इजाजत आदेश फरमान, राजादेश, हुक्मनामा; न लगा कर बहु० कांव — आज्ञा न मानने वाला ।	नागरी	8	502/757	>बेहुक्मीन
बैजः	अ०पु० अंडा, अंड, अंडकोश, सिपाहियों का खोद, लोहे की टोपी, पूरे नर का एक दर्द	वृन्द	9	176/368	>बोज
बैज	अ०पु० बैजः का बहु०				
मंजिल[2]	अ०सं०स्त्री०पड़ाव यात्रा करते समय ठहरने का स्थान । न् लगाकर बहु०	दयानिधि		उदा०	>मजलन
		बेनीप्रवीण	1	11/60 उदा०	>मैजलि
मशरूअ[3]	अ०सं०पु० एक प्रकार का धारीदार वस्त्र ।	सोमनाथ		उदा०	>मसक
मलूक[4]	अ०सं०पु० मानसिक कष्ट व्यथा दुख, रंज ।	ग्वाल			>ममोला

1. कत बेकाज चलायइति चतुराई की चाल
कहे देत यह रावरे सब गुन निरगुन माल ।। — 399.

2. होर बटमारे जे बिचारे मजलन मारे दुखित महा रे
तिनहूँ को सुख ना दियौ ।। — दयानिधि
आस उर धरे परे घायन पसारि धरै । मैजलि समाइ सोइ गये कैसे मन के ।। बेनीप्र०

3. सिर मसक पग्गहि काढ़ि खग्गहिं उच्चर्यो ललकारि कै ।। — सोमनाथ

4. ओला से फफोला परे पाइन मैं तोला तोला मारत ममोला ।।
हाय मन की मनै रही ।। — ग्वाल

मूलशब्द	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्वनि प०
मिज़ाज	अ०पु० गर्व, अभिमान, भाग्य-भाग, स्वभाव, आदत, गुण खासियत, प्रकृति, तबिअत, नाजनखरा, जी, मन ।	पद्माकर देव	3 181, 87, 11	183 186, 634 2:8 5:27 3:13, 6.27 2:36	>मजेजे >मजेज
मिस्र	अ०पु० एक प्रसिद्ध राष्ट्र जो अफ्रीका में है ।				
मिस्री	अ०पु० मिस्र देश का निवासी मिस्र देश की भाषा कूजे या थाल में जमी हुई शक्कर । कवि- तलवार के प्रसंग में लिखा है । मिस्रदेश की ।	वृन्द	वृग्र	178/384	>मिसरी
मुरत्तब मनसब	मुरत्तब- अ०वि० क्रम बद्ध किया हुआ, संगृहीत(त ट अ०वि० जिसको तर किया हो तरी पहुंचायी जाय(त= b मंसब-अ०पु० पद, कर्तव्य	,,	,,	126/90	>मुरातबमनसब
मुहिब(ब्ब)[1]	अ०वि० मित्र, सखा, प्रेमी, आशिक ।	पद्माकर	3	385	>महूम
मुहिम(म्म)	अ०स्त्री० कोई बड़ा काम, कठिन काम, युद्ध संग्राम लड़ाई ।	वृन्द	वृग्र	146/186	>मुहम
मोरचाल[2]	फा०पु० वह गढा जिसमें बैठ कर शत्रु पर गोली चलाते है। मोर्चा ।	भूषण	2	119/24	>मुरचान

1. मल्लिकन मंजुल मलिंद मतवारे मिले
मंद मंद मारुत महूम मनसा की है ।। — पद्माकर

2. - - - मुसकिल होत मुरचान हू की ओट मैं ।। — भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व० प०
यादगार	फा०स्त्री० निशानी, स्मृति, चिह्न, स्मारक, यादगारी की कोई विशेष चिह्न जैसे मिनार आदि, पुत्र, बेटा ।	केशव	केग्र	545/42	> आदिगार
रहवार[1]	फा०पु० तेजा घोड़ा, अश्व	बिहारी	।	284/342	> रौहाल
		पद्माकर		उदा०	> रोहाल
रु[2]	फा०पु० मुखाकृति, मुख, कारण, सबब ।	पजनेस	प०प्र०	33/84	> रुए सम
सम	सम (सम्म) अ०पु० विष, सुई, का नोक ।				
वक्त	अ०पु० समय जमाना काम अवसर ऋतु भाग्य मौका विलंब	पद्माकर	।	/79	> बखत
		भूषण		39/119	
बख्त	फा०पु० भाग्य किस्मत				
हरावल	तु० सेना में सबसे आगे चलने वाला सिपाहियों का दल । कवि— सेना का अग्रभाग ।	पद्माकर	।	/122	> हरौल
हवस[3]	अ०क्रि० उल्लसित होना, उमंगित होना ।	रघुनाथ		उदा०	> होसों
हिंदवी	फा० हिन्द या हिन्दुस्तान की भाषा । कवि—हिन्दी का	वृन्द	वृग्र	161/249	> हिंदबी (व > ब)

1. जदपि तेज रौहाल बल पलकौ लगी न बार
   तउ ग्वैड़ो घर को भयो पैड़ो कोस हजार ।। — बिहारी 284/342
   सु रोहाल की चाल उत्ताल ऐसे, चलै चारु चौगान में चित्त जैसे ।। —पद्माकर
2. मजमूये न काफ़ सक़ाफ़ रुए सम क्यामत ।। — पजनेस
3. रावने के लीन्हें तयो गली बन बाम फिरी बावरी ह्वै
   बुद्धि सो कहो धौ कैसे होसोंगी ।। — रघुनाथ

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
शबोरोज़	फा०पु० रात दिन	नागरी	नाग्र	503/758	> शबोरोज
शर्म	फा०स्त्री० लज्जा, हया, पछतावा, कवि– सुख आनन्द रहित ।	केशव	केग्र	16/25	> अशर्म
सिरताज	फा०वि० शिरोमणि पति शौहर मालिक सरदार सबसे अच्छा कवि– श्रेष्ठ ।	पद्माकर भूषण	8 1	3 15/50 37/112	> सिरताज
सुर्ख़दार[1]	फा०वि० लाल रंग वाले सुर्खदार रक्तिम ।	ग्वाल	1	49/85	> सरोकदार
सरोपा	फा०पु० सर-पैर मुगल काल में दिया जाने वाला सम्मान ।	वृन्द	वृग्र	152/207	> सिरपाव
साअत	अ०स्त्री० ढाई घड़ी का समय मुहूर्त, क्षण, लमहा, समय, वक्त, कियामत का दिन । कवि– पल ।	पद्माकर	1 6	/20 /92	> साइत
सादी	फा०स्त्री० लाल की जाति की एक छोटी चिड़िया, बिना पिट्ठी की पूरी ।				
	फा०पु० शिकारी, घोड़ा ।	वृन्द		178/385	मूल रूप

---

1. चंचल चलाक चारु चौपन चटक भरे ।
चौंकत चमके चले सजल सरोकदार ।। — ग्वाल

(2) शब्द

फूल

मू0श0	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	ध्व0 प0
इश्कपेचा	फा0 पु0 इश्कपेचा नामक पुष्प, एक बेल जो पेड़ों पर लिपट जाती है ।	मतिराम			> आकपेचा
गुल	फा0 पु0 गुल, फूल	केशव		उदा0	> गुर
		पद्माकर	3	526	> गुल
			8	38	
गुल+चाँदनी	फा0 पु0+हि0 स्त्री0 फूल+ ज्योत्स्ना) एक सफेद फूल जो प्रायः रात में खिलता है ।	देव	दे0 मा0 प्र0	5:61	
गुलाब	फा0 पु0 एक प्रसिद्ध फूल गुलाबजल, गुलाब का अरक।	भूषण	1	/22	
		देवदत्त	2	6/21	
			3	292/22	
		मतिराम	1	316/103, 416/611, 261/265	
			3	334/88	
		भिखारी	1	14/80	
			4	25/54	
		रसलीन	1	145/761	
		केशव	2	579/16	
गुलाब+जल	फा0 पु0 हिन्दी	भिखारी	1	154/296	
गुलाबकली	फा0 पु0 हिन्दी	भिखारी	2	119/140	
गुलेगुलाब		पद्माकर	3	/209	
गुले शब बो	फा0 पु0 एक प्रसिद्ध फूल सुगन्धरा (गुले=फूल, शब=रात +बो=बू) रजनीगंधा की एक जाति । कवि-रात का फूल अर्थात् रात की खुशी ।	गंग	1	/243	> गुलेशाब

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गुल+दाउदी	फा०सं०स्त्री०—गुलदाउदी नामक सुन्दर गुच्छेदार पुष्प	रसलीन	3	326/68	>दाउदी
नीलोफ़र	फा०पु० नीलोत्पल कुमुद कुई	नागरी	नाग्र	505/763	

फल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अँगूर	फा०पु० एक सुप्रसिद्ध फल द्राक्षा, भरते हुए जख़्म के लाल दाने ।	बिहारी		293/373	
अंजीर	अ०पु० शुद्ध उच्चारण इंजीर है । इंजीर — अ०पु० एक प्रसिद्ध फल ।	नागरी	नाग्र	24/35	
अनार	फा०पु० एक प्रसिद्ध फल दाड़िम ।	तोष	1	206/6	
		नागरी	नाग्र	24/35	
		रसखान	1	155/230	
		वृन्द	1	22/39	
		जसवन्त	2	60/181	
तूत	फा०पु० एक प्रसिद्ध पेड़ और उसका फल शहतूत	भूषण	1	21	
नाख़	फा०पु० नास्पाती की एक जाति ।	रसलीन	3	309/24	
नाशपाती	फा०स्त्री० एक प्रसिद्ध फल नासपाती ।	भूषण	2	115/10	

मेवा

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मेवः	फा०पु० फल, प्रायः सूखे फल जैसे बादाम, पिस्ता आदि।	वृन्द	वृन्र-8	139/151	
			9	99/521	

मेवा :

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मुरब्बा	अ०वि० वह मेवा जो विशेष रूप से गला कर शक्कर के किवाम में रखा गया हो ।	ग्वाल	ग्वार०	28/33	>मुरब्बे
अरब[1]	अ०पु० अरब देश, अरब का निवासी, अरब का व्यक्ति	"देश" भूषण	2	125/40	
			4	153/51	>अरबान
		केशव	ज०ज०च०	629/99	
अर्बी	अ०पु० खालिस अरब	गंग	1	/306	>अरेबान
इरान		भूषण		153/51	
इंग्लैण्ड					
उलाक					
कश्मीर[2]	फा०पु० भारत का एक प्रसिद्ध देश ।	भिखारी	4	101/30	>कस्मीर
			2	111/97	
		रघुनाथ	दु०उ०	50/9	
		बिहारी			
काबुल	फा०पु० अफगानिस्तान की राजधानी ।	गंग	1	/346	>काबिल

1. सिवराज तेरे त्रास दिल्ली भयो भुवकंप । थरथर कंपति विलायति अरब की ।। भूषण
2. जोर रूसियन को है तेग खुरासान की है । निति इंगलैंड चीन हुन्नर महादरी ।
   हिम्मत अमान मरदान हिंदुवानहू की । रुम अभिमान हबसान हद मादरी ।।
   नेकी अरबान सान अदब इरान । त्योंही क्रोध है तुरान त्यों फ्रास कंद आदरी
   भूषन भनत इमि देखिये महीतल पै
   बीर सिरताज सिवराज की बहादरी ।। — 153/51.
3. अब तो बिहारी के वे बानक रुप री तेरी
   तन दुति केसरि को नैन कसमीर भौ ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खुरासान		भूषण	1	153/51	
चीन					
तुरान					
बदखशाँ	फा०पु०अफगानिस्तान का एक प्रदेश जहाँ का लाल (पदमराग) बहुत बहुमूल्य होता है ।	गंग	1	/307	> बदखसान
बलख	फा०पु० अफगानिस्तान का एक प्राचीन नगर जो इस	सोमनाथ	सो०ग्र	148पृ०	> बलख
	समय एक छोटा-सा गाँव है ।	गंग	1	/307	> बलक
रूसियन					
रूम	अ० पु० एक देश				
हिन्दू					

जाति

अरबी	अ०वि० अरब का निवासी, अरब का व्यक्ति, अरबी भाषा अरब से सम्बन्ध रखने वाला । स्त्री० अरबी भाषा ।	वृन्द	वृ०ग्र-9 10	155/224 233/347	> आरबी
अर्मनी	फा०वि० अर्मन का निवासी (काकेशियन)	,,	9	156/227	> अरमनी
आराब	अ०पु० वे अरब लोग जो जंगल में इधर-उधर घूम-फिर कर जीवन व्यतीत करते हैं बद्दू लोग, यह शब्द बहु० है परन्तु इसका एक वचन नहीं है ।	वृन्द	,,	156/227	> आरब्ब

जाति

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
इराक	अ०पु० पूर्वी अरब का एक देश जिसकी राजधानी बगदाद है, जहाँ के घोड़े अच्छे होते है ।	मतिराम	1	425/697	> ऐराक
उजबक	तु० तातरियों की एक जाति	गंग	1	/344	
	वि० उजड्ड, मूर्ख	केशव	4	621/32 624/59 630/106	
		वृन्द	वृग्र	156/227	
उलाक्	तु०पु० गधा उल्का, तु०पु० देश, राष्ट्र क्रिक-एक जाति	केशव	4	624/59	>उलक
एराकी[1]	वि० एराक सम्बन्धी	तोष	1		> यरक्की
	पु० एराक देश का घोड़ा ताजी ।	वृन्द	9	155/224	
चकैस	तु०पु० एक तुर्क जाति चिग्ता तु०पु० तुर्कों की एक कौम ।	भूषण	1	24/79	> चकता
ताज़ी	फा०वि० अरब की भाषा अरबी अरब का घोड़ा, शिकारी कुत्ता अरब का रहनेवाला ।	गंग	1	/422	> ताजिया
तुर्क	तु०पु० तुर्क देश का, मुगल	भूषण	1	13/38	> तुरकन > तुरकान

1. घूंघट यरक्की तल्लाइयो थिरक्की पाइ रूप की तरक्की सब सौतिन करक्की है ।। ➔ तोष

2. भूषन भनत वह चहुँ चक्क चाहि कियो पात साहि चकता की छाती माहिं छेवा है ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
तुर्क[1]	तु०पु० तुर्किस्तान का निवासी सैनिक योद्धा प्रेमपात्र,	भूषण	1	24	> तुरकान
	माशूक । कवि–मुगल ।	मतिराम	1	304/35	
तुर्की[2]	तु०पु० तुर्क, तुर्किस्तान का निवासी, तुर्कों का देश, तुर्कों की भाषा – रस०– तुर्क देश की ।	रसलीन	1	81/406	> तुरकी
मुसल्मान	अ०पु० इस्लाम धर्म का अनुयायी मुस्लिम ।	वृन्द	9	189/473	> मुसलमाँन
मुग़ल	तु०पु० तुर्किस्तान का निवासी तुर्क, शुद्ध उच्चारण मुग़ुल है परन्तु उर्दू में यही है ।	भूषण	2	124/37	> मुगल
		वृन्द	9	156/227	
रूमी	अ०वि० रूम का निवासी रूम की भाषा ।	वृन्द	वृग्र	156/227	> रूमी
विलायत	अ०वि० विलायत का विलायत वाला, विलायत से आया हुआ । कवि – विदेशी ।	पद्माकर	1	/119	
हब्शी	अ०वि० हब्श का निवासी हबसीन=हब्शीयों(बहु०)	भूषण	1	53/173	> हबसीन
				122/33	
		वृन्द	9	156/227	> हबसी

1. तुरकान मलिन कुमुदिनी करी है
हिंदुवान नलिनी खिलायो विविध विधान सो ।।

2. कछू खुलति कछु नहिं खुलति तू तुरकी सी बात ।। 81/406

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०

बादशाह

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आलमगीर	अ०फा०वि० विश्वव्यापी संसार में फैला हुआ विश्व-विजयी, संसार पर अधिकार करनेवाला ।	भूषण	1	27/90 82/278,279 76/258	
		वृन्द	9	265/37	
आलमनवाज़	अ०फा० संसार पर कृपा करने वाला, कवि-जगत्पालक ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	13/78	> आलमनिवाज
आलमनाथ	अ०हि० संसार के स्वामी	केशव	2 ज०ज०च०	506/10	
आलमपति	अ०हि० संसार के स्वामी	केशव	2	512/26	
			4	637/157	
				641/196	
आलमबादशाह	संसार का राजा	वृन्द	9	271/89	> आलमपतिसाह
आलमपनाह	अ०पु०+फा०स्त्री०संसार की रक्षा करने वाला । केशव-संसार को शरण देने वाला ।	केशव	जजच	622/38	> आलमपनाहजू
		वृन्द	वृग्र	135/138 156/227	
		भूषण	3	150/40	
आलमपनाह+ सलामत		वृन्द	9	162/256	> आलमपनाँ सलाँमत
सलामत	अ०स्त्री०सुरक्षित, जीवित, पूरा, तन्दुरुस्त ।				
आलमशाह	अ०+फा०पु० संसार का बादशाह ।	केशव	4	624/63 640/181	> आलमसाहि
आलीजाह	अ०वि०बहुत बड़े रुतबेवाला महामान्य बड़े आदमियों का संबोधनवाक्य ।	केशव			

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आली	अ०वि० उच्च वलद श्रेष्ठ उत्तम बढ़िया ।	रसलीन	1	302/5	
जाह	फा०स्त्री० प्रतिष्ठा, इज्जत,	पद्माकर	8	276	> आलीजा
	पद, रुतबा, सत्कार, कद्र	चन्द्रशेखर	1	2/13	> ,,
आलमसुमान					
आलम+बादशाह संसार के राजा					
तख्तनशीं	फा०वि० तख्त पर बैठनेवाला बादशाह ।				
तख़्तनशीनी	फा० सम्राट्, बादशाह बनना अभिषेक अपने शासक होने की घोषणा ।				
तख़्तनशीन	फा०वि० सिंहासनारूढ़	चन्द्रशेखर	ह०ह०	14/91	> तखतनसीन
नव्वाब	अ०वि० बादशाह का नाइब, किसी रियासत का मुसल्मान शासक ।	पजनेश भूषण केशव	प०प्र० 1 2	42/106 46/116 23/77 492/52	> नबाब
पादशाह	फा०पु० राजा, नरेश,	मतिराम	1	302/28 308/58	> पातसाह
पादशाही	फा०स्त्री० राज्य सल्तनत	देवदत्त	2	170/7	
	शासन बादशाह सम्बन्धी	भूषण	,,	117/17	
बादशाह	फा०पु० शासक राजा	भूषण			
		वृन्द	वृ०ग्र	171/327	> पातिसाह
मीर					
शाह	फा०पु० बादशाह, शासक, राजा ।	सोमनाथ	सो०ग्र०	/212	साह

1. नव्वाब- कौन बचे है नवाब तुम्है भनि भूषन भौसिला भूप के रोषे ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
शाह	फा०पु० बादशाह, शासक, राजा ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	23/148, 162 30/202, 203	> अल्लाउद्दीन
	राजाओं	भूषण	1	4/10	> साहनि (वृजभाषा की प्रव० बहुवचन)
शाही[1]	फा०पु० एक प्रकार का बाज, शाहजहाँ बादशाह ।	बिहारी	1	398/712	> साहन
सलातीन	अ०पु० सुल्तान का बहु० सुल्तान लोग शासकगण	वृन्द	वृ्ग्र	161/249	
सुल्तान	अ०पु० शासक नरेश बादशाह	चन्द्रशेखर	ह०ह०	10/59 26/173 30/198 31/209, 210 32/213, 215 33/220.	> सुलतान
अक्बर	अ०वि० अजीम, सबसे बड़ा एक सुप्रसिद्ध मुगलसम्राट्	केशव	जजच 2	626/75 495/18	> अकबरसाहि > अक्बर
अब्बास[2]	अ०पु० रूखे स्वभाववाला, शेर, हजरत मुहम्मद साहब के चचा अब्बासी खलीफा पारस का एक बादशाह ।	भूषण	1	18/62	> अब्बाससाहि

---

1. साहि — समाँ सेन सयान की सबै साहि के साथ ।। बिहारी

2. अब्बास — साहिन मन समरत्थ जासु नवरंग साहिसिर
   हृदय जासु अब्बास साहि बहुबल बिलास थिर ।। 18/62.

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अस्लम	अ०वि० बहुत ही सुरक्षित बिलकुल महफूज़ बहुत ही सहिष्णु मुतहम्मिल । अस्लम-वि-कनकटा, बूचा शेरशाह बादशाह ।	केशव	वीरच०	599/61	> असलेम
असद-खाँ	असद-अ०पु० सिंह, व्याघ्र, शेर । खाँ – खान अमीर अध्यक्ष ।	वृन्द	वृ०ग्र ।।	265/31	
आलम+खान		केशव	2	507/22	
इलाह+अली	अ०पु० ईश्वर+अ०वि० उच्च, ईश्वर का एक नाम, हजरत मुहम्मद के दामाद और चौथे खलीफा ।	रसलीन	।	302/5	
औरंग[1]	फा०पु० राजसिंहासन, तख्ते-शाही, बुद्धिमत्ता । कवि-एक मुगल सम्राट् का नाम औरंगजेब ।	भूषण	।	24/79 27/90 151/42	> अवरंग > औरंग
औरंगज़ेब	फा०वि०राज सिंहासन की शोभा, हुक्मराँ एक मुगल सम्राट् की उपाधि ।	भूषण वृन्द	2 वृ०ग्र	118/22 181/417	> औरंगजेब > अवरंगजेब ज़ > ज > रंगजेब

1. कुम्भकर्न असुर औतारी अवरंग जेब
कीन्ही कत्ल मथुरा दोहाई फेरी रब की ।। – भूषण 118/22
रहट की घरी जैसे औरंग के उमराव पानिप
दिलीते लाय भरि ढोरि जात है ।।
आवत मुगुल खाने ऐसे कछु त्योर ठाने जाने
अवरंग जू के प्रानन को लेवा है ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
कादिर	अ० वि० शक्तिशाली, समर्थ, काबूदार, ईश्वर का एक नाम ।				> कादरी
कुतुब	अ० स्त्री० किताबें				
कुल्ब	अ० पु० पृथ्वी का धुरा, ध्रुवतारा, एक प्रकार के मुसलमान ऋषि जिनके सिपुर्द कोइ बड़ा इलाका होता है ।	केशव	वी०च०	507/29	> कुतुबदीखान
ख़ान	फा० पु० पठान काबुली तु० पु० अमीर सरदार कवि—				
दी	अ० पु० दीन का लघु धर्म मजहब, विश्वास । दी — फा० पु० बीता हुआ कल ।				
जलाल+दी	अ० पु० प्रताप तेज, हैबत किसी महात्मा या ऋषिमुनि का रोब ।	गंग	\	289	> जलालदी
	दी— अ० पु० दीन का लघु०	केशव			
	कवि— अकबर की उपाधि जलालुद्दीन	केशव			> जलालसाहि
जुल्कर्नैन	अ० पु० सम्राट सिकन्दर की उपाधि, जिसके दोनों कन्धों पर बालों की लटें पड़ी रहती थी ।— गंग : सिकन्दर ।	गंग	।	34	
			।	/348	> जुलकर्नै
लकब की	सिकन्दर के नाम के साथ यह प्रथम बार लगाई गई थी तथा वृन्द बाद में बादशाहों के नाम के पीछे लगाइ जाती है ।				

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
न्यामतखां		केशव			
फ़ातिमः	अ०स्त्री० वह स्त्री जो दो बरस के बच्चे का दूध छुड़ा दे, हज़रत साहिब की सुपुत्री और हज़रत इमाम हुसेन की माता जी ।	रसलीन	अं०द०	302/5	
मुहम्मद	अ०वि० प्रशंसित, सराहा हुआ, हज़रत पैगम्बरसाहब का शुभ नाम ।	आलम रसलीन		303/7	
मिर्ज़ा	फा०पु० मीर्जा का लघु				मिरजाकादरी
मीरज़ा	फा०पु०शाही खानदान के लोगों की उपाधि, मुगल जाति का व्यक्ति, मीर या अमीर का लड़का, राजकुमार, वि०कोमल	देव	वे०ज०	17	
मुदफ्फर खां		केशव		507/22	
मुरादबख्श	मुराद- अ०स्त्री०इच्छा कामना, आर्ज़ू, मन्नत, उद्देश्य ।	वृन्द			
सऊद	अ०पु० ऊँचाई, यातना, ऊपर चढ़ने वाला ।				
शाह	फा०पु० बादशाह, नृप	केशव			
हसन	अ०वि० रूपवान, सुन्दर, खूबसूरत, प्रियदर्शन, उत्तम हज़रतअली के बड़े लड़के इमाम हुसैन के बड़ेभाई।	रसलीन		303/9	
हसनबेग					
हुसैन	अ०पु० हज़रतअली के छोटे सुपुत्र का नाम, जिन्होंने यज़ीद का शासन स्वीकार नहीं किया था और इसके कारण उनको शहीद किया गया ।				

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
हुसेनबासती		रसलीन		5/12	
यूसुफ़जबीं	अ०वि० युसुफ जैसा माथा रखने वाला(वाली)अर्थात् बहुत सुन्दर ।	गंग	1	/360	> ईसफजयन यू > ई
यूसुफ़जमाल	युसूफ जैसा सौन्दर्य रखने वाला यूसुफ़-अ०पु०-एक पैग़म्बर जो बहुत सुन्दर थे । कवि-यूसुफ जई ।				जबीं > जयन

अंगों के नाम

अब्रू	फा०स्त्री० भृकुटी भौं	नागरी	नाग्र	499/749 502/758	> अबरू
कमर	फा०स्त्री० कटि, लंक, मध्य-देश ।	नागरी	नाग्र	244/54	
ख़ुस्यः[1]	अ०पु० अंडकोश, मुश्क, फोता ।	पद्माकर	6	51	> खुसी
गोश[2]	फा०सं०पु० कान, श्रवण	पद्माकर		उदा०	> गोसे
गर्दन	फा०स्त्री०ग्रीवा, गला, कंठ, हल्क ।				
गिरीबान	फा०पु० ग्रीवा, गला, कुर्ते, कमीज आदि का गला ।	पद्मा	1	149	>गिरबान

1. कनौती खुसी सींखड़ी खूब छोटी । नुकीली मचैन्ती कला के जु कोटी ।।—पद्माकर -5।
2. दै लिखि बाहन में ब्रजराज सुगोल कपोलन कुंजबिहारी
त्यों पद्माकर या हिय में हरि गोसे गोविन्द गरे गिरधारी ।। — पद्माकर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
चश्म	फा०पु० नेत्र, आँख, आशा	पजनेस	प०प्र०		
चश्मः	फा०पु० सरिता, उपनेत्र, कुंड ।	भिखारी	1	43	>चसमा
चश्मा	फा०पु० ऐनक, सोता	बिहारी	1	204/104 345/541	
चषमना[1]	फा० नेत्र का क्रिया रूप दृष्टिगत होना, दिखाई पड़ना ।	बेनीप्रवीण		17/106	>चषमति
जिगर	फा०वि० शरीर का एक विशेष अवयव, यकृत साहस, हिम्मत, कवि-चित्त ।	पद्माकर	हि०ब०	120 छं०	
ज़बाँ	फा०स्त्री० जीभ, देश की बोली, भाषा, करार, वचन ।	बोधा	2	141/22	
ज़बान	फा०स्त्री० जबा	बोधा	2	69/24	
जुबान	फा०स्त्री० जबाँ, जबान, किसी देश की बोली, करार, वचन, कथन ।	बोधा	2	208/70	
			1	9/51	
		भिखारी	4	252/43	
			1	7/33.	
जुल्फ	फा०स्त्री० केशपाश, बालों की लट, कनपटी के पास वाले बाल, केश, बाल । बोधा — लंबे केश, कुल्ले ।	बोधा	2	48/51	
			1	14/79	> जुलुफ
		~~बोधा~~ देवदत्त	4	238/29	>जुल्फनि

1. चषमति सुमुखी जरद कासनी है सुर्ख ।
चीनी श्याम लीला माह कावित्ती जनाइ है ।। — बेनी प्रवीण 17/106.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
दस्त	फा०पु० कर, हाथ, पतला शौच, विरेचन ।	वृन्द	वृ०ग्र	166/275	
दिमाग़	अ०पु० मस्तिष्क, बुद्धि, अहंकार, गर्व, बरदाश्त, होश, खयाल, ध्यान । कवि-- गर्व लाना ।	नागरी	ना०ग्र	449/603	> दिमाक
दिल	फा०पु० मानस, हृदय,	बोधा	2	14/23	
	उत्साह, उमंग, हौसला,		1	35/3	
	साहस, हिम्मत, वीरता, शौर्य, बहादुरी ।	भूषण	1	49/161	
नब्ज़	अ०स्त्री० नाड़ी शिरा, रोग, निदान, के लिए देखीजाने वाली नाड़ी । कवि--नस ।	पद्माकर	हि०च०	187	> नब्ज
पेशानी[1]	फा०पु० माथा, मस्तक	भूषण			> पिशानी
बदन[2]	अ०पु० शरीर देह जिस्म	भूषण	1	20/65	> बदन
बाज़ू	फा०पु० भुजा, चिड़ियों के डैने जिनमें पंख लगते हैं । सहायता बल, गवैए के साथ स्वर मिलाने वाला ।	वृन्द	वृ०ग्र	167/287	
बैज़ः	अ०पु० अंग अंड अंडकोश सिपाहियों का खोद, लोहे की टोपी पूरे सर का एक दर्द । कवि-- फोता ।				

1. भूषन कहत सब हिन्दुन को भाग फिरै ।
   चढ़े ते कुमति चकताहू की पिसानी में ।। -- भूषण
2. पंचानन एक ही बदन गनि तोहि गजानन गज बदन
   बिना बखानियतु है ।। -- भूषण 20/65.

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मिजगाँ	कवि–बरौनी	पजनेस	।	33/84	
रान[1]	फा०सं०स्त्री० जंघा	पद्माकर		उदा०	
रु	फा०पु० मुखाकृति, मुख, कारण, सबब ।	पजनेस	प०प्र०	33/84	
रुयत	अ०स्त्री० दर्शन कवि– चेहरा	गंग	73/243		रुयये >रुयये
लब	फा०पुं० अधर, होठ, कूल, किनारा	नागरी	नाग्र	503/759	
सूरत	अ०स्त्री० रूप आकृति शकल, चेहरा ।	भूषण	।	96/334	>सुरति
	धर्म				
अज़ान	अ०स्त्री० नमाज का बुलावा,	पद्माकर	ज०वि०	83/23	
	नमाज की सूचना के शब्द जो जोर से पुकार जाते हैं ।	केशव	जजच	626/75	
अदन[2]	अ०सं०पु० निवास स्वर्ग का उपवन, जहाँ ईश्वर ने आदम को बनाकर रखा था ।	पजनेस			
अदम	यमलोक, हीन, अभाव	ग्वाल	।	19/10	

1. गोला से गयदन के गोल खोलिबे में
   खिले रान के इसारे लेत बान के उचट्टा से ।। – पद्माकर
2. मंद मुसकात छिति छूतन मयूखन के आगम अनूप
   तामें अद्भुत अदन के ।।

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्या०प०
आयत	अ०स्त्री० चिह्न, निशान, कुरान का एक वाक्य, उस वाक्य के अंत पर बना गोल चिह्न ।	रसलीन	3	307/17	
इमाम[1]	अ०पु० नेता अग्रसर नमाज पढ़ाने वाला ।	रसलीन	3	303/9	
इमामे आदिल					
इलाहअली	अ०पु०+अ०वि० इलाह—ईश्वर अली— उच्च, ईश्वर का एक नाम, हजरतमुहम्मद के दामाद और चौथे खलीफा	रसलीन	1	302/5	
इस्लाम[2]	अ०पु० शान्ति चाहना, ईश्वराज्ञा के आगे सर झुकना, इस्लाम धर्म ।	रसलीन	3	306/15	>इसलाम
ईसा[3]	अ०पु० हजरत ईसा, ईसा मसीह, ईसाई धर्म के संस्थापक ।	रसलीन	3	302/5	
		बोधा	2	54/35	
ईमान[4]	अ०पु० धर्म पर दृढ़ विश्वास	रसलीन	3	307/19	
	धर्म मजहब विश्वास यकीन पथ, पंथ, अकीद ।	वृन्द	9	156/227	>ईमॉन

1. तीजे हैं बहूल चौथे हसन इमाम गन
   पांचवे हुसैन पुन हूजे जिन ताक ते ।। — रसलीन
2. दीन के नगारे बाजे जब इसलाम गाजी आये अजमेर काजी ख्वाजा मोन दीन है ।
3. ईसा जनमायो निज मौन ते निकार कर तिन प्रभु हैदर आप घर लै जनायो है ।।
4. ईमान दीन को जो तू चाहै मन लो चल देख ।
   साह अदृषा जू के चरन ।। — रसलीन ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
कलाम [1]	अ०पु० शब्द वाणी बोली इल्मे कलाम, एतराज, कथन बोधा – कुरान की आयते भिखारी – वादे, बातचीत	बोधा	2	39/35	
		भिखारी	2	/242, 122/155	
			4	123/43, 142/142 8/36	
		रसलीन	3	304/11	
कलाम+नमाज [2]	अ०पु० इस्लाम धर्म का मूलमंत्र, शब्द, वाणी, बोली, नमाज – अ०स्त्री० मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना ।	भूषण	2	118/22	> कलमानेवाज
काज़ी	अ०वि० न्यायकर्ता, मुंसिफ निकाह पढ़ानेवाला, देनेवाला, अदा करने वाला ।	बोधा	2	54/41	
		रसलीन	3	304/11	
		गंग	1	152	
काज़िम					
करीम	अ०वि० कृपालु, मेहरबान, दानशील, सखी, ईश्वर का एक नाम ।				
किताब	अ०स्त्री० पुस्तक ग्रंथ वाणी मियाज ।	बोधा	2	56/58	
कुरान	अ०पु० कुर्आन– मुसलमानों का धर्मग्रंथ जो उनके मतानुसार आस्मानी किताब है । शुद्ध उच्चारण कुर्आन् ही है परन्तु फारसी वालों ने कुरान् भी लिखा है, अतः यह भी शुद्ध है ।				

1. पुनजैन आबदीन बाकर महाप्रवीन, जाफर से है अमीन काजिम कलाम के ।।–रसलीन
आज चन्द्रभागा चपलतिका विसाखा को पठाईं हरि बामतें कलामैं करि कोटि-कोटि।।दास
2. चारों बर्न धर्म छोड़ि कलमा नेवाजपढ़ि सिवाजी न हो तो तौ सुनति होति सबकी ।।
– भूषण ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
ख्वाजः	तु०पु० स्वामी, पति, मालिक पीर → फा०वि० वृद्ध, बूढ़ा धर्मगुरू, सोमवार ।				
ग़ाज़ी	अ०वि० मजहबी लड़ाई लड़ने वाला, धर्मयोद्धा, धर्मवीर । कवि—शिवाजी के नाम के साथ सम्मान में लगाया है ।	रसलीन भूषण	3 1	306/15 58/198	
गियार	अ०स्त्री० धर्म चिह्न जो हर समय पास रहे जैसे जनेऊ आदि, सलीब या यहूदियों का पीला कपड़ा जिसे वे लोग कन्धे के पास वस्त्र में सिला रखते हैं ।	बेनीप्रवीण		70/510	गयारी
ग़ौस	अ०पु० वह मुसल्मान महात्मा जो वली से बड़ा पद रखता है । वि० दुहाइ सुननेवाला न्याय के लिए पुकारना न्याय-कर्ता दुहाई देना ।				
जिल्ला					
जन्नत	अ०स्त्री० स्वर्ग, नाक, देव-लोक, बाग ।	रसलीन	3	305/10,12	
जुहूर	अ०पु० प्रकट, जाहिर होना, उत्पत्ति, अवतार ।	,,	3	306/16	

1. न्यारी करौ सारी कै गयारी सी प्रवीन बेनी ।
बचन दैहौं तन बसन में मोप री ।। → बेनीप्रवीण 70/510.

मूoशo	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	खoपo
तस्वीह	अoस्त्रीo सुब्हानअल्लाह(ईश्वर अत्यन्त पवित्र है) कहना, जयमाला ।	बोधा	2	18 /26 141/26	तसवी तसबी
तुर्रा	अoपुo शिखा, चोटी, प्रतिष्ठा,	लालकवि		उदाo	तौरा
दरगाह	फाoपुo चौखट, देहलीज, आस्तान, राजसभा, दरबार, किसी बली का मजार, रौजा रसलीन = मकबरा ।	भूषण रसलीन वृन्द	1 3 9	60/204 308/20 161/247	
दरमादे	कवि— फकीर	रसलीन	3	308/13	
दीन	अoपुo धर्म, पंथ, विश्वास	रसलीन बोधा	3 4 2	307/19 306/15 6/23, 22/41	
दुलदुल	अoपुo एक मादा खच्चर जो इस्कंदरीया के शासक ने जरत मुहम्मद साहब को भेंट किया था और आपने उसे हजरत अली को दे दिया था। घोड़े के आकार का एक ताजिया वह घोड़ा जिस पर सामान मातम लाद कर अजाखाने ले जाते हैं ।	रसलीन	3	303/7	
दोज़ख़	फाoपुo नरक जहन्नम	बोधा	2	191/18	
नक़ी	अoविo पवित्र निर्मल पुo बारह इमामों में से दसवें इमाम का नाम ।	रसलीन	3	304/12	

मूoशo	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्वoपo
नबी	अoपुo ईशदूत अवतार पैग़म्बर ।	रसलीन	1	4/6, 4/8, 5/10	
			3	301/3, 305/12	
		भिखारी	1		
नुजूमी	अoविo ज्योतिषी इल्मे नुजूम जाननेवाला ।	वृन्द	वृ॰ग्र	156/227	
पीर	फाoविo वृद्ध, वयोवृद्ध,	चन्द्रशेखर	हoहo	30/202	
	धर्मगुरु, सोमवार ।	भूषण	1	40/123	>पीरन
फ़क़ीर	अoविo भिक्षुक, मँगता, भिखमँगा, सन्यासी, दरवेश	भूषण	1	91/315	
बंदगी	फाoस्त्रीo प्रणाम, सलाम, पूजा, इबादत, आज्ञापालन	भूषण	2	116/15	
मक्कः	अoपुo हज़रत मुहम्मदसाहिब का जन्म स्थान, अरब की राजधानी, यहीं मुसलमान हज के लिए एकत्र होते हैं । काबः इसीमें है ।	भूषण	1	29/96	
मज़हब	अoपुo धर्म दीन, मत	नागरी	नाग्र	498/2	>मज्ब
मज्लिस	अoस्त्रीo सभा महफिल, करबला के शहीदों की शोक-सभा ।	मतिराम		362/378	>मजलिस
मलंग	फाoसंoपुo फकीर योगी	बिहारी	1	346/547	>मलिंग
मस्जिद	अoस्त्रीo नमाज पढ़ने की जगह ।	देव	वैoतo	18	>मसीत

मुहम्मद

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मियाँ	फा०पु० मालिक पति महाशय, पहाडी राजपूतों की एक उपाधि । कवि- मुसलमानी धर्मावलम्बी ।	रसखान	र०र०	71/50	>मियाँ
मुरीद	अ०वि० शिष्य धर्मगुरु का अनुयायी ।	वृन्द	वृग्र	181/417	>मुरीयाद
मौलवी	अ०पु० इस्लाम धर्म का विद्वान्, बच्चों को पढ़ानेवाला, विद्वान्, आलिम ।	रसखान	र०र०	61/13	
सदा	अ०स्त्री० आवाज़ ध्वनि फकीर की आवाज़ ।	नागरी	8	502/757	
सुन्नत	अ०स्त्री० नियम पद्धति तरीक़ मार्ग रास्ता स्वभाव आदत खत्नः मुसलमानी ।	भूषण	2	118/20-21-22	>सुनति
सूफ़ी	अ०पु० ब्रह्मज्ञानी, अध्यात्मवादी, सारे धर्मों से प्रेमकरने वाला ।	नागरी	8	253/79	>सोफी
हातिफ़	अ०वि०पुकारने वाला । कवि- स्वर्गीय संदेश देने वाला ।	"	"	505/762	>हातिफ

ईश्वर

इलाह[1]	अ०पु० ईश्वर अल्लाह खुदा	रसलीन	1	3/1 4/4	>अलह

1. अलह नाम छवि देत यों ग्रंथन के सिर आइ
   ज्यों राजन के मुकुट ते अतिशोभा सरसाइ ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
इलाहा[1]	अ०अव्यय हे ईश्वर हे खुदा	रसलीन	3	301/2	> इलाह
इलाही	अ०अव्यय मेरा ईश्वर, मेरा खुदा ।	,,	3	301/2	
करीम्					
खालिक्	अ०वि० स्रष्टा सृष्टि कर्ता ईश्वर ।	नागरी	8	510/20	
खुदा	फा०पु० परमात्मा अल्लाह	भूषण	2	116/14	
		बोधा	1	15/85	
खुदाया	फा०अव्यय हे ईश्वर ऐखुदा	चन्द्रशेखर	ह०ह०	30/197	> खुदाय
खुदावंद	फा०पु० ईश्वर, स्वामी, मालिक ।	नागरी	8	449/749	>खुदाबंद
खुदाई[2]					
ग़रीबपर्वर	अ०फा०वि० गरीबनवाज, दीन वत्सल- दीनों पर दया करने वाला ।	देवदत्त	3	170/7	> गरीबपरवर
पैग़ंबर	फा०पु० ईशदूत, अवतार, पयंबर, नबी ।	भूषण	2 1	118/20 106/364	
रब(ब्ब)	अ०पु० स्वामी, पति, मालिक, बड़ाभाइ, अभिभावक, सरपरस्त ईश्वर, परमात्मा खुदा ।	भूषण ग्वाल	2	118/20 उदा०	
हक़तआला	अ०पु० ईश्वर, परमात्मा	ग्वाल	1	45/75	
रसूल	कवि- पैगम्बर	रसलीन	3	303/9	

1. तौ लौ न पावै इलाही को कैसेहु जौ लौ मुहम्मद में न समाई
   नूर इलाह ते अव्वल नूर मुहम्मद को प्रगट्यो सुभ आई ।। → रसलीन ।
2. मधु कैसो तरवर शरद कोसखर है गरीब परवर प्रीत गुन गाही की ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ख०प०
सुबहानी	सुबह ईश्वर का एक नाम, इसमें आनी प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाया । कवि → ईश्वरीय ।	रसलीन	3	308/21	
अदानी	अ०पु० अदना का बहु० बहुत पास वाले, बहुत कमीने ।	ठाकुर	ठा०श०	26/73 27/74	> अदानिया
कमीन :	फा०वि० नीच अधम खल गैर शरीफ । गुंग-क्षुद्र तुच्छ	ग्वाल	1	103/50,51 101/45.	>कमीन
		चिन्तामणि	दू०उ०	28/2	
		गंग		56	>कमीनौ
कसबाती[1]	अ०वि० कसबे की रहने वाली । शासक से मिल जाने वाले ।	बिहारी द्विजनन्द			
कस्बः	शहर से छोटी व गाँव से बड़ी बस्ती तुर्क-तुर्की०— तु०पु० तुर्किस्तान का निवासी (तुरकिन-स्त्री०) कस्ब- अ०पु० कमाई, वेश्या-वृत्ति। कवि—वेश्यावृत्ति की औरत ।	गंग	1	/346	कसब की तुरकिन

1. कसबाती — सिसुता अमल तगीर सुनि भए औ मिलि मैन ।
   कहौ होत है कौन के ए कसवाती नैन ।। — बिहारी
   एसी कसवाती तू तो नेक न डराती
   काहू छाती न दिखाउ कोऊ छाती मारि मरि है ।। द्विजनन्द

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ग्र०प०
कसबी[1]	सं०स्त्री० वेश्या, रंडी, कुलटा	पद्माकर		उदा०	
कीसः बुर	अ०फा०वि०जेब काटने वाला, पाकेटमार, कीसावर भी प्रचलित ।	केशव	वी०च०	555/50	>किसवार
खानगी					
चुगुल	तु०वि० चुगली खाने वाला, पीठ पीछे शिकायत ।	नागरी	7	199/139	>चुगुल
चूतिया	मूर्ख नासमझ	गंग	\	/421	
नकारः					
नकारी[2]	फा०स्त्री० निकम्मी खराब	ग्वाल		.	
निगोड़ी		बोधा	\	12/70	
बदजाती[3]	फा०अ०स्त्री० नीचता, छल धूर्तता, खबीस ।	ग्वाल	\	47/80	
बेवकूफ[4]	फा०वि० मूर्ख, न लगाकर बहु० बनाया ।	ठाकुर	\	26/73	

1. आप चढो सीस यह कसबी सी दीन्ह औ हजार
   सीस वारे की लगाइ अटहर ।। – पद्माकर
2. जूठन की खानहारी कुविजा नकारी दारी करी घरवारी
   तऊ ब्रह्म तू कहत है । – ग्वाल
3. जाकी बदजाती बदजाती इहाँ चारन मै
   ताकी बदजाती बदजाती ह्वाँ उराहना ।। – ग्वाल 47/80
4. ठाकुर कहत हम बैरी बेवकूफन के
   जालिम दमाद है अदानिया ससुर के ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मुंहजोर[1]	मुंह = हिन्दी - मुख, चेहरा, छिद्र, सामना, साहस । ज़ोर = फा०पु० बल, शक्ति, वश, प्रयत्न, अनीति, अत्याचार, प्रबलता, तेजी, धाक, रोब । कवि—तेजजबान, अधिक बोलने वाला या बोलने में तेज ।	बिहारी मतिराम रसलीन	\ ल०ल०	362/598 333/201 399/373	
सूरतहराम[2]	अ०वि० जो बिल्कुल निकम्मा हो ।	ठाकुर	\	27/74	
हराम					
हरामी	अ०वि० दोगला, जारज, संकर ।	मतिराम	3	372/40	
हरामजादः[3]	अ०फा०वि० हराम का बच्चा दोगला, धूर्त ।	ठाकुर	\	27/74	> हरामजादे
हैवान	अ०पु० पशु वन पशु हर वह चीज़ जो प्राण रखती है।	गंग	\	/386	

1. लाज लगाम न मानही नैना मो बस नाहि
   ए मुंह जोर तुरंग ज्यों ऐंचत हू चलि जाहिं
   मानत लाज लगाम नहीं नेकु न गहत मरोर होत तोहि लहख बाल के दृग तुरंग मुंहजोर ।। —मतिरात
2. निपट निकाम काम काहू के न आवे एसे सूरतहराम राम काहे को बनाये हैं ।
3. भकुआ भर अरु हिलसो हरामजादे
   लाबर दगैल स्यार आखिन दिखाये हैं ।
   ठाकुर कहत ये अदानिया अबूझ भोटू
   भाजन अजस के वृक्षा ही उपजाये हैं ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
	जेवर				
गोश+पेच	फा०पु० कान का एक गहना गोश—फा०पु० कान पेच—फा०पु० चक्कर मशीन घुमावदार, चक्कर, बल, जटिलता, चाल, कठिनता, बाधा, कुंडली ।	पद्माकर	3	169	> गोसपेंच
ज़ेवर	फा०पु० आभूषण, भूषण, गहना ।	रसखानि देवदत्त	— 2 3	— 108/79 191/35	> जेउर
ज़िहार	अ०पु० कटिदेश कवि– करधनी ।	सोमनाथ	सो०ग्र० प्र०खं०	176/	
जोशान[1]	फा०पु० कवच, जिरिह, अँगद बाजूबंद ।	केशव	3	472/38	> जोसन
पाज़ेब	फा०स्त्री० पाँव का एक आभूषण, नूपुर ।	ग्वाल	1	74/148	> पाइजेब
पेंच[2]	फा०सं०पु० सिरपेंच, पगड़ी पर लगाया जाने वाला एक आभूषण ।	बेनीप्रवीण	1	26/173	> पैंचा
बाज़ूबंद	फा०पु० अँगद केयूर विजायठ भुजबंद ।	पद्माकर	3	161	

1. चलत भई चक्चौंध बाँधि बखतर बर जोसन ।। — केशव

2. केस कसि पगरी मैं बवरी बनाय बाल
मुगल बचे जौ एक पैंचा सजे जात है ।। — बेनीप्रवीण 26/173.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ग्र०प०
बाला[1]	फा०वि० जो ऊपर की ओर ही ऊंचा, एक वर्ण वृत्त, भार्या पत्नी, हाथ में पहनने का कड़ा, देवी, स्त्री ।	दास			
मुक्बा[2]	अ०सं०पु० शृंगारिक संदूक वस्त्रों अलंकारों आदि की मंजूषा ।	ग्वाल			
मुरसा[3]	अ०सं०पु० कर्ण का एक आभूषण ।	बिहारी	1	260/267	
हमायल[4]	अ०सं०पु० एक आभूषण जो हाथीयों के (घोड़ों के) गले में पहलाया जाता है । स्त्रियों के गले का वह आभूषण जिसमें माला की भांति सिक्के गुहे रहते हैं ।	गंग देव	1 1	60, 326 6:6	
हैकल	अ०स्त्री० प्रसाद भवन, हार गले की माला, आकृति, वेशभूषा, मंदिर, कवच ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	3/18	

1. संग सखी परबीन अति प्रेम सो लीन
   मनि आभरन जोति छवि होति बलाहि ।। - दास
2. मानहु मुसव्वर मनोज को मुक्बा मंजु फैलि पर्यो ताकी ।
   तसबीरें उडी जात है ।। - ग्वाल
3. लसै मुरासा तिय श्रावन यौं मुकुतन दुति पाइ ।। - बिहारी 260/267.
4. बारिद से, गिरि से गव्वे, सुप्रसिद्ध भुसुंड भयानक भारे ।
   हेम हमेल विभूषित भूषन,. गंडनि भौर भ्रम मतवारे ।। - गंग
   लूटती लोक लटै सकूल हमेल हिये भुज टांड न होती ।। - देव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
इल्म	अ०पु० विद्या, विज्ञान,	ग्वाल	1	48/81	
	ज्ञान, जानकारी, दस्तकारी,	नागरी	1	508/6	
	कला, बुद्धि, विवेक,				
	शिक्षा, तालीम ।				
	पद्मा०- विद्या, कला	पद्माकर	6	/86	
	विधि, विधान ।			/56	
कागज़[1]	अ०पु० लिखने का कागज	गंग	1	/348	> कागर
	पत्र आदि, दस्तावेज ।	केशव	र०प्रि०	9/7	,,
		रसलीन	1	173/9[illegible]2	> कागद
			3	333/85	
		दास	4	252/43	
किताब	अ०स्त्री० पुस्तक ग्रन्थ,	केशव	वी०च०	507/19	>कितेब
	कापी, मियाज ।				
ता'लीम[2]	अ०स्त्री० शिक्षा देना, उपदेश	बोधा	2	204/42	> तालीम
	नसीहत, गुरुमंत्र ।	तोष			> तलीम
नुजूमी	अ०सं०पु० ज्योतिषी इल्मे	तोष	सु०नि०	13/42	> नजूमि
	नुजुम जानने वाला ।				

1. अरी बाल छवि स्याम की यौं परयंक लखाइ ।
   मानौ कागद पै लिखी मसि की लीक बनाइ ।। -- रसलीन
   क्यों लिखौं राम के नाम तुम्हें कहाँ कागद एसो
   पुनीत मैं पाऊ ।। -- दास
   कागद प्रमान आन सुक्र भयो जीह जान
   सनि तो निदान मसि बान अवरोहइ ।।
2. सब सुखदायक सुसील बड़े कीमति की भइहै तलीम
   तलबेलियो मनोज की ।। -- तोष

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ख०प०
नुजूम[1]	अ०पु० नज्म का बहु० उडुगण, तारे ज्योतिष, इल्म नुजूम ।	नन्दराम			
रिहल[2]	अ०सं०स्त्री० पुस्तक रखने की काष्ठ की छोटी चौकी ।	रघुनाथ			

<u>वाद्य</u>

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ख०प०
अलगोजा[3]	अ०सं०स्त्री० एक प्रकार की बंशी ।	पद्माकर	6	84	> अलगोजे
करनाय[4]	अ०सं०पु० नरसिंह, भोंपू, एक प्रकार का बड़ा ढोल	केशव	6	6प्र०/12	> कर्नाल
कर्ना	अ०पु० तुरही एक प्राचीन बाजा, जो फूंक कर बनाया जाता है ।				
करनाल	हि०पु० एक प्रकार की तोप, बड़ा ढोल, नरसिंघा ।				
गजा[5]	फा०सं०पु० नगाड़ा बजाने का डंडा ।	केशव	6	19/53	

1. बैदक पढ़े हो की नजूम को निसारत हो ।
   कविता करत हो कि समुद्रिक संचारी जू ।। – नन्दराम
2. रघुनाथ भावते को <u>पानदान</u> भरी घरी घरी पोथी आय ।
   ल्याय कोक की रहल मैं ।। – रघुनाथ
3. अलगोजे बज्जत छिति पर छज्जत सुनि धुनि लज्जत कोइ रहै ।। – पद्माकर
4. कहूं सोभना दुंदुभी दीह बाजै, कहूं भीम झंकार <u>कर्नाल</u> साजै ।। – केशव
5. सुर दुंदुभि सीस गजा सर राम को रावन के
   सिर साथ ही लाग्यो ।। – केशव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
चंग	फा०पु० एक टेढ़े आकार का बाजा, मुट्ठी, पंजा, हर टेढ़ी वस्तु ।	नागरी	नाग्र	262/7	>मुंहचंग
तंबूरः[1]	फा०सं०पु० एक तार वाला बाजा, जिसमें नीचे की ओर तुंबी होती है ।	पजनेस	1	49/123	
तब्ल	फा०पु० दुन्दुभि भेरी नक्कारा कवि– डंके की चोट पर ।				
दफ	फा०सं०पु० बड़ी डफली एक गोलाकार खाल मढ़ा बाजा ।	ग्वाल	1	30/37	>दफेर
दमामः[2]	फा०पु० बड़ा नक्कारा, धौसा नगाड़ा ।	देव			
		ग्वाल	\	,,	30/37
		बोधा	2	135/33	दमामो
		रघुनाथ			>दमल
रबाब	फा०पु० सितार की तरह का एक बाज। कवि– एक तरह की सारंगी ।	पद्माकर	6	19	
		नागरी	नाग्र	190/180	

1. काम के कंगूरे छविदार है तंबूरे ऐसे
   कैधौं मन भावती नितंब ये तिहारे हैं ।। पजनेस 49/123
   भूषन भनत तुरकान दल थंभ कोटि अफजल मारि डारे तबल बजाय कै ।।
2. कारी घटा काम रूप काम के दमामो बाज्यो
   गाज्यो कवि ग्वाल देखि दामिनिन्दफेर सी ।। ग्वाल 30/37
   दादुर दमामे झांकि झिल्ली गरजनि धौसा
   दामिनि मसालै देखि दुरे जग जीव से ।। देव
   रघुनाथ मन में मनोरथ की सिद्धि तानि
   नूपुर बजन लागे पाइ में दमल सो ।। – रघुनाथ

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०

युद्ध

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
जंग[1]	फा०स्त्री० रण, युद्ध, समर,	पद्माकर	6	20	
	लड़ाई, फसाद, वैर, शत्रुता	मतिराम	2	41, 71, 122, 272,	
	रकाबत ।			330, 129.	
		केशव	2	489/11	
		भूषण	2	121/31	
			1	40/125.	
मुहिम्म[2]	अ०स्त्री० कोई बड़ा काम	गंग	1	/236	> मुहीम
	कठिन काम युद्ध संग्राम	वृन्द	9	147/185	
	लड़ाई । कवि-शत्रुता,	वृन्द	9	146/186	> मुहम
	चढ़ाई ।	पद्माकर	1	15	> महूम
		भूषण	1	54/180	> मुहिम
मोरचः	फा०पु० जंग, मैल, मल				
मोरचाल[3]	फा० पु० वह गढ़ा जिसमें बैठ कर शत्रु पर गोली चलाते हैं ।	भूषण	2	119/24	> मुरचान
सफ[4] अ०+जंग फा०+ई प्रत्यय	आमने-सामने पंक्ति बाँधकर लडनेवाला (सेना) सफ=कतार, जंग=लड़ाई, कवि-युद्ध क्षेत्र ।	पद्माकर	8	63	

1. तासो न जंग जुरो न भुजग महा विध के मुख में कर नावो ।।
2. बाढ़ी सीत संका काँपै उर ह्वै अतंका लघुलंका के लगे ते होत लंका की मुहीम।।-गंग
3. ---- मुसकिल होत मुरचान हू की ओट में ।। — भूषण ।
4. मान मद भंगी सफजंगी सैन संगीलिये
   रंगी रितु पावस फिरंगी स्वांग लायो है ।। — पद्माकर ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
हक (क्क)[1]					
हक्क्	अ०सं०पु० खुरचना, छीलना, काटना, कलमजद करना ।				
हाक्कः	अ०स्त्री० महाप्रलय, क़ियामत	पद्माकर			> हकाहक
	कवि—घोर युद्ध घमासान लड़ाई ।	पद्माकर			,,

ढाल-कवच

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
चिलतः[2]	फा०सं०पु० एक प्रकार का कवच ।	सूदन			> चिलतह
		पद्माकर	हि०बा०	189	> चिलता
ज़िरिह	फा०स्त्री० लोहे की जंजीर का एक पहनावा जो लड़ाई में पहना जाता है । कवच बख्तर, अँगरक्ष ।	भूषण	1	94/328	> जीरन
		गंग	1	/301	> जिरह
बख्तर	फा०पु० कवच, जिरिह	भूषण	2	131/4	
				89/307	> बखतरवारे
सिपर[3]	फा०स्त्री० ढाल, चर्म, कवच वह अस्त्र, जिससे तलवार की चोट या प्रहार रोका जाता है।	गंग		उदा०	

1. तँह मची हकाहक भइ जकाजक छिनक धकाधक होइ रही ।। — पद्माकर
   हरषित हथ्यारन सो जु मिलि करि रन हकाहक कीजिये ।। — पद्माकर
2. आयुध और अनेक और चिलतह बहु अँगा ।। सूदन
   काटत चिलता है इमि असि बाढ़ै तिनहिं सराहैं वीर बड़े ।।
3. सार के प्रहार साँग सिपर ललार पेलि र्‍से ।
   ठौर सिरदार सोर हूय हर के ।। — गंग ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०

सेना

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गोल	तु०सं०पु० मुख्य सेना, झुंड समूह, सेना का मुख्य भाग जिसमें सेना नायक रहताहै।	बिहारी	1	242/217	
जूनूद	अ०पु० जुंद का बहु०सेनाएँ, फौजें । कवि—तलवारविशेष	पद्माकर	1	78/	>जुनेदखानी
पयादः	फा०पु० पैदल चलनेवाला, चपरासी, सिपाही, हरकारा डाकिया, सेना का पैदल सिपाही, शतरंज का पैदल।	भूषण	1	89/307	> प्यादे > प्यादन
फ़ौज[2]	अ०स्त्री० सेना बलवाहिनी अनीक, लश्कर ।	भूषण	भू०ग्र०	47/154	> फौज
		मतिराम	2	303/30	
			"	323/140	> फौजनि
			"	317/105	
रिसालः[3]	अ०पु० वह पत्रिका जो पुस्तक के रूप में किसी नियत समय पर प्रकाशित हो किसी विषय पर छोटी-सी पुस्तक ।सैनिक की टुकड़ी, सवारों का दस्ता।	भूषण	1	33/103	>रिसाल

1. हलकी फौज हरौल ज्यौं परै गोल पर भीर ।। → बिहारी
2. बिना ही बुराई ओज बिना काज घनी फौज बिना अभिमान मौज राज सिवराज के ।।
3. मानो हय हाथी उमराव करि साथी अवरंग डारि सिवाजी पै भेजत रिसाल है ।। → भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
लश्कर	फा०पु० सेना फौज भीड़ समूह ।	गंग	।	313	> लसकर
सिपाह	फा०स्त्री० सेना बल फौज	भूषण	।	95/331	
हरावल	तु०पु०सं० सेना का अग्र	केशव	xxx	xx	> हरबल
	भाग, सेना में सबसे आगे चलने वाला सिपाहियों का दल ।	पद्माकर	।	122/	> हरौल

<u>शस्त्र के अनुसार नाम</u>

गोलःअंदाज	फा०वि० तोपची, तोप का गोला चलाने वाला,	भूषण	।	72/242	> गोलंदाज
तीरंदाज	फा०वि० तीर चलाने वाला, तीर से शिकार करनेवाला ।	भूषण	।	65/217	> तीरंदाज
नावक[2]	फा०सं०पु० शिकारी, एक प्रकार का छोटा बाण ।	अज्ञात बिहारी			
बंदूकची	अ०फा०पु० बंदूक चलानेवाला निशानची निशानःबाज लक्ष्य-भेदी ।				
बर्कंदाज	अ०वि० चपरासी, सिपाही, हरकारा, बंदूकची, तोपची ।	बोधा			

1. साजि चमू मधु साहजु । हरबल दल करि अग्र ।। — केशव
2. सतसैया के दोहरे ज्यो नावक के तीर - - - - ।। — अज्ञात
3. दिशिवार को मुहरा लग्यो घने बर्कंदाज ।
   पुनि चार पँगत अश्व को सजि बीच में महाराज ।।
   — बोधा ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	प्र०प०

शस्त्र

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	प्र०प०
अराबः	अ०पु०, फा०पु० गाड़ी,	केशव	2	534/12	>अराबो
	छकड़ा, कवि– तोप लादने	बोधा	1	2/10	
	की गाड़ी । बोधा–रथ,	पद्मा	हि०ब०	61	
	पद्मा– तापों का एक साथ	,,	,,	73	
	दगना ।	वृन्द	11	272/98	>अराबा
		,,	रूपसि की वार्ता	159/235 162/256	>अरावाँ
		गंग		337	>अराबौ
कत्ल+काती	अ०पु० वध, हनन हि० कैंची, चाकू, छोटी तलवार ।	भिखारी	1	38/264	> कतलकाती
कराबीन[1]	तु०सं०स्त्री० छोटी बन्दूक, एक प्रकार का तोड़ेदार बन्दूक जो सौ वर्ष पूर्व प्रचलित थी । कवि– छोटी बन्दूक ।	पद्माकर	1	/71	>कराबीन
कमान[2]	फा०स्त्री०धनुष, तीरचलानेका यंत्र	भूषण	2	415छ०, 119/24	

1. कराबीन छुट्टै करै वीर चुट्टैकरी कंघट्ट्टै इतै उत्त बुट्टै ।। – पद्मा
2. छूटत कमान और तीर गोली बानन के मुसकिल होत मुरचान हू की ओट मैं।। भूषण
   भृकुटि कमान दोऊ दुहुन को उपमान नैन से कमल नासा कीर मद घालही ।। दास 23/47
   हेरि हेरि मुख फेरि कत तानत भौह निदान बानन बधि कोऊ नहीं राखी चढ़ी कमान।।
   – 103/528

मारग सेन अरन्य तियान कमान
ज्यों भ्रू दृग बान कसी से ।
काननि लौ दृग बानन तान रहे
जिहि भौह कमान तनिय ।। – देव

सुमिल विनोद 281/9.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
कमान		मतिराम	1	306/45 325/151	
		देवदत्त	2	119/28	
			3	192/37	
			4	281/9 303/18 294/42	
	तोप	बोधा	2	105/44 118/39	
		केशव	1	82/80	
			2	504/91	
		भिखारी	2	130/188 23/47	
		रसलीन	1	103/528	
			4	346/43	
		वृन्द	4	17/17, 23/42	
		वृन्द	8	77/250 135/138 124/61	कमान
		चिंतामणि	दु०उ०	30/13	
		जसवंतसिंह	1	29/84	
	तोप	गंग	1	333,	
	धनुष	,,		333/28, 37, 82	
	तोप	केशव	रा०च०	13प्र/38छ	
			शि०न०	458/6	
करतूस	पु०पुर्तं० बारुद भरी वह नाली जिसे बन्दूक में भर कर चलाते हैं।	बेनीप्रवीण	1	42/283	
कोतह					

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खंग					
खंजर	अ०पु० छुरी, भुजाली, पेश, कब्ज़ ।	भिखारी	2	91/12 128/178	>खंजर
		नागरी	1	499/749 509/18	
खजुआ					
गैजगवारे					
गुलूला[1]	फा०सं०पु० मिट्टी का छोटा सा गोला जो गुलेल में फेंका जाता है ।	सेनापति	1	114/64	>गुलेला
गुर्ज़	फा०पु० एक प्राचीन अस्त्र, गदा ।कवि० आदाओं	पद्माकर	6	119	>गुरजनि
			6	61	>गुर्ज्जै
		रसलीन[2]	1	145/763	>गुरज
गुरदा	फा०पु० रीढवाले प्राणियों के भीतर का अंग जो कलेजे के पास होता है । यह मूत्र को बाहर निकालता है। साहस, एक प्रकार की छोटी तोप ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	24/158	>गुरदा
गोलः	फा०पु० गोल पिंड, तोप आदि का गोला ।	केशव	2	504/91-92	>गोला
गोली	बन्दूक की गोली				
गोले	गोला बारुद				

1. सोहत गुलेला से बलूला सुरसरिजू के
   लोल है कलोल ते मिलोल से लखत हैं ।। – सेनापति 114/64
2. चितवन बान चलाइ अरु हास क्रियान लजाइ
   उरज गुरज पिय हिय हनै भुज फाँसी धर त्याइ ।। रसप्रबोध 14प/763 रस०

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
चद्दर					
चिलता	एक प्रकार का कवच				
चिल्लः	फा०पु० कोना, चालीस दिन में होने वाला काम, चालीस दिन का समय, 40 दिन तक लगातार पढ़ा जाने वाला मंत्र । कवि – भाला का कोना, प्रत्यंचा।	वृन्द	वृ्प्र	180/395	> चिल्ला
जंबूरः[1]	फा०पु० छोटी तोप, बाण का फल एक औजार, शहद की मक्खी ।	वृन्द	9	169/256 190/482	> जंबूर (तोप लादने की गाड़ी)
जमूरक	फा०स्त्री० सं० एक प्रकार की छोटी तोप (जो ऊँट पर से चलाइ जाती है) ।	चन्द्र०	1	24/159	> जमूरे
जरजाल	लोहे के तारों में बहुत सी छुरी फल आदि बंधे हुए जो तोप में भरकर चलाये जातेहैं । तोप का पलीता ।	"	"	"	> जरजार
जिरह					
जिहाज़	अ०पु०ब्याह का दहेज, मृतक का सामान कफन आदि, यात्रा की सामग्री । कवि–कटारी के प्रसंग में (जिहाज खानेवाली)	वृन्द	1	179/388	> जीहाज भानी
जुनेदखानी	तलवार विशेष ।				
जोसन					

1. लिए तुपक जर जार जमूरे ।। – चन्द्रशेखर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
तपंचः	तपाचः का लघु रूप, थप्पड़ पिस्तौल तमंचा कि० छोटी बन्दूक ।	पद्माकर	हि०ब०	69	> तमंचे
तमाचः[1]	उ०पु० तपंचः				
तबर	फा०सं०पु० कुल्हाड, कुल्हाडी,	सुदन			> तबल
	की भांति एक हथियार,	कवीन्द्र			,,
	नगाड़ा, बड़ा ढोल ।				
तरकश	फा०पु० तीर रखने का लम्बा	केशव	2	504/95	
	खोल जो कमर में लटकाया जाता है, तूणीर, निषंग ।	बोधा	2	104/40	> तरकसमय
तीर	फा०पु० बाण शर इरानी	भिखारी	4	205/67	
	महीना जो हिन्दी हिसाब से सावन होता है। बुध ग्रह शक्ति बल ।	केशव	2	504/95	
तुका[2]	फा०सं०पु० बिना फल का	दास		उदा०	> तुकानि
	तीर, वह तीर जिसमें गांसी की जगह घुंडी होती है ।	कवीन्द्र		उदा०	
तुपक	तु०पु० तोप का अल्प रूप	चन्द्रशेखर		उदा० 24/159	
	छोटी तोप बंदूक ।	केशव	2	517/29	> तुपक
तुफंग[3]	सं०स्त्री० हवाई बन्दूक	सूदन			

1. सैफन सों तोपन सें तबल रु उनन सों
   दखिननी दुरानिन के माथे झकझोर है ।। — कवीन्द्र
2. काम के तुका से फूल डोलि डोलि डारै
   मन और किये औरै ये कदंबन की डारै री ।। कवीन्द्र
3. तोमर तबल तुफंग दाव लुट्टियो तिही छन ।। — सूदन

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
तेग[1]	फा०स्त्री० खड्ग, तलवार	रसलीन	2	261/49	
		बोधा	2	22त/42	
		भूषण	1	43/124	
तोप	तु०स्त्री० गोला फेंकनेवाला यंत्र ।	भिखारी	4	102/37	
दारु[2]	फा०सं०स्त्री० बारूद, इलाज, उपचार चिकित्सा (अग्निक्रीड़ा) मदिरा, शराब ।	चन्द्रशेखर	1	33/229 34/230 50/364	>दारु
नाल[3]	अ०सं०पु० तलवार आदि के म्यान की साम जो नोक पर मढ़ी रहती है, पास निकट	गंग			>नालन
		तोष			
नेजः	फा०पु० शंकु भाला बरछी कलम का नरकट ।	पद्माकर	3	48	>नेजे
		मतिराम	1	201/108	>नेजा
	कवि-- भाला, राजाओं का निशान ।	केशव	2	504/95	
		भूषण		153/54	
नियाज	फा०पु० प्रार्थना, गुजारिस, इच्छा, आर्जू, परिचय, जान-पहजान, मुलाकात, चढ़ावा, चढ़ावे की मिठाई, फातहा, मुर्दे या किसी बुजुर्ग का खाना आदि । कवि--तलवारविशेष ।	पद्माकर	2	194/	>निवाज़खानी

1. तिरछी चितवन ते चखन, चितवन किनो दोय लागत- - - तिरछी तेग जब कटत वेग नहि होय 261/49
अटल सिवाजी रहयो दिल्ली को निदरि धीर धरि ऐड़ धरि तेग धरि गढ़ धरिकै |43/134

2. गढ़ मैं सोधि सुरंग लगाइ । सत सहस्र मन दारु पाई ।। - चन्द्रशेखर

3. दसहूं दिसि जोति जगामगु होति, अनुपम जीगन जालन की ।
मनोकाम चूम के चढ़े किरचे उचटै कलधौत के नालन की ।। -गंग
मानै क्यों कनौडी बाल कीन्हौं तुम रसो ख्याल मोड़िन के नाल लाल भटकि - भटकि जू ।। तोष

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
पेशकब्ज़	फा० पु० भुजाली छोटी कटार, कवि– कटारियाँ।	पद्माकर	हि० ब०	187	>पिसकब्जे
बंदूक	अ०स्त्री० गोली चलाने का प्रसिद्ध यंत्र, शतघ्नी।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	25/166	
बहरियः	अ०पु० जलसेना, जंगीबेड़ा, कवि–सेना का सामान।	घनानन्द	घ०र०	104/108	>बहीर
बर्की					
बारूद	फा०स्त्री० शोरा श्वेतक्षार गंधकऔर शोरे का मिश्रण, अग्निचूर्ण।	ग्वाल	।	/156	>बरूद
मग़्रिबी	अ०वि० पश्चिम का पाश्चात्य (कवि–विशेष प्रकार की तलवार)।	पद्माकर	।	/192	>मगरबी
मियान	फा०वि० मध्य (स्त्री) तलवार की मियान, कोष, कमर कटि।	नागरी वृन्द	ना०ग्र०	502/755 117/25	>मियान >म्यान
मिस्र	अ०पु० एक प्रसिद्ध राष्ट्र, जो अफ्रीका में है।	वृन्द	वृ०ग्र	178/384	> मिसरी
मिस्री	अ०पु० मिस्र देश का निवासी देश की भाषा, थाल में जमी हुई शकर, कवि ने तलवार के प्रसंग में कहा है अर्थात् मिस्र देश की तलवार।				

1. गड़ि-गड़ि पिसकब्जे मरमनि गब्जे तकि तकि नब्जे काटत है।।

– पद्माकर।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सिपर	फा०स्त्री० (एक प्रकार की छोटी तोप) निशाना)	पद्माकर			> सिप्पे
सिलाह[1]	अ०पु० शस्त्र आयुध हथियार	,,	1	37	> सिलाहै
सिलाही[2]	अ०वि० सैनिक सिपाही फौज शस्त्रधारी । कवि—कवचधारी	,,	1	78	> सिलाही
सुलेमान	फा०पु० सुलेमाँ यहुदियों का बादशाह जो पैगंबर माना जाता है । एक पहाड़ । कवि— विशेष प्रकार की तलवार ।	,,	1	197/	> सुअलेमानी
सैफ़	अ०पु० तलवार	नागरी	नाग्र	511/28	
शमशीर	फा०स्त्री० कृपाण तलवार	भूषण	3	132/5	
	असि ।	पद्माकर	1	129	>समसेर
			8	3	
हर्बः	अ०पु० अस्त्र-शस्त्र, हथियार आक्रमण शक्ति । कवि— तलवार की धार ।	नागरी	नाग्र	512/45	>हरफ
हलब्बी					

पताका

अलम[3]	अ०पु० ध्वजा पताका झंडा ख्यातिप्राप्त पहाड़ ।	केशव	2	503/79-80	>आलमतोग

---

1. सिरमौर गौर गराजिकै सोभित सिलाहै साजिकै ।। — पद्माकर
2. झमकत आवे झुंड झलनि झलात ।
   झप्यो तमकत आवै तेग बाही और सिलाही ।।
3. आति लियो उन आलम तोग भाजे लाज मरैगो लोग ।। — केशव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
निशान	फा०पु० अलामत, धब्बा,	पद्माकर	6	छं 68, 119	
	दाग, खोज, पता, सुराग,	भूषण	1	112/3	>निसान
	झंडा, पताका(भूषण-डंका)		2	118/20	
		केशव	2	509/49	
मरातिब[1]	अ०सं०पु० झंडा, पताका	केशव		उदा०	

रंग

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अबीर	अ०पु० एक प्रकार का	देवदत्त	2	111/100	
	सुगन्धित गुलाबी बुकनी जो		3	224/40, 63	
	कपड़ों पर छिड़की जाती है।	मतिराम	2	316/103	
	देव- रंगीन चूर्ण	भिखारी	1	37/252	
	भिखारी - लाल रंग ।		4	49/27	
		नागरी	7	172/133	
			"	182/157	
		वृन्द	8	227/268	
			"	229/229	
			14	330/73, 74	
			"	342/118	
		रसखान	प्रे०वा०	139/191	
		सोमनाथ	सो०ग्रं०	152/	
ककरेजा	फा० लाल और काले रंग	देवदत्त	सु०सा०त०	555/	
	के मिश्रण से बनने वाला		र०वि०	226/52	
	रंग बैंगनी रंग ।		रा०र०	76	>कैकरेजी
कासनी[2]	फा०स्त्री० एक प्रकार का	बेनीप्रवीन	1	17/106	
	नीला रंग जो कासनी के				
	पुष्प जैसा होता है ।				

1. सकल मरातिब ठाढे किये हर सिध देव छरी करलिए ।। - केशव
2. चखमति सुमुखी जरद कासनी है सुख चीनी
   श्याम लीला माह कविली.जनाई है ।। - बेनीप्रवीण 17/106.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
किश्मिशी	फा०वि० किश्मिश जैसे रंग का हल्का हरा, किश्मिश का ?	वृन्द	8	176/368	>किसमिसी
खूं	फा०पु० खून का लघु रूप। रक्त, रुधिर, वध, हत्या, यहाँ लाल से मतलब है।	पजनेस	1	33/84	>खूं
गुलाल[1]	फा०पु० लाल चूर्ण जिसे होली के दिनों में हिन्दू लोग उत्साहपूर्वक परस्पर मुख पर लगाते हैं।	देवदत्त	2	93/75	
		मतिराम	2	316/103	
			3	406/448	
			,,	409/449	
		रसलीन	1	194/1045	
		भिखारी	4	10/30	
			1	48/328	
		बोधा	2	213/34	
जंगार	फा०पु० मंडूर ठंड व तरी से धातुओं में लगने वाला मैल कसाव, मैल, जंग से बनी औषध। कवि-हाथी के रंग के लिए ये शब्द प्रयोग किया है (मटमैला या धूसुर या नीला रंग) तूतिया (नीला)।	वृन्द	9	179/394	
जंगारी	फा०वि० जंगार के रंग का, जिसमें जंगार पड़ा हो, जंगार डालकर बनाई हुई औषधि। कवि ने हाथी के रंग के लिए प्रयोग।	वृन्द	वृग्र	176/375	>जंगाली

1. खेलत वृज होरी सजैं बाजे बजैं रसाल पिचकारी।
चलती घनी, जहँ तहँ उड़त गुलाल ।। - 10/30
पीरो रंग अँगन छयो असुवन झरत गुलाल ।। - रसलीन ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
ज़र्द	फा०वि० पीत पीले रंगवाला, पीला रंग ।	पद्माकर बोधा	8 2	4 69/18	>जरद
जा़फ़रान	अ०पु० कुंकुम, केसर	ग्वाल	1	117/92	>जाफरान
जा़फ़रानी	अ०वि० केसर के रंग का केसरी, केसर से बना ।	नागरी	ना०ग्र	504/760	
नील	फा०वि० नील का रंग, नील का पौधा । कवि-नीलारंग	वृन्द	8	176/368	
नुकरा[1]	अ०वि० सफेद रंग का सं०पु० घोड़ों का सफेद रंग, चाँदी ।	सोमनाथ			
पैकानी[2]	फा०सं०पु० पद्मराग, लाल	कृष्णकवि		92/16	>पैक
बदरंग	फा०वि० बुरेरंग का जिसका रंग फीका हो गया हो, ताश में रंग के विरुद्ध पत्ता ।	भूषण	1	40/125	
शहाब[3]	फा०सं०पु० लाल रंग, रक्त वर्ण ।	पजनेस दास	1 25/54	उदा० 44/112 48/120 उदा०	>सहाब

1. हरे नीले नुकरा सुरंग फुलवारी बीज रंगे रंग ।
   जंग जितवैया विस्त बेस के ।। — सोमनाथ
2. लाल में गुलाल में गहर - - - में लालो गुन
   पैक सो न - - - - सुछंद के ।। 92/16.
3. कोमल गुलाब से सहाब से अधिक आब
   गोल-गोल सोभित सुबेस स्वच्छ हैरे हैं ।। पजनेस 48/121
   भनि पजनेस जवा जायक सहाब आब
   स्वच्छता अनूप लसै छाजत छटा की है ।। — वही 48/120
   साहिब सहाब के गुलाब गुडहर गुर
   ईंगुर प्रकास दास लाली के लरन है ।। — दास ।।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
सब्ज[1]	फा० हरी घास हरियाली- सब्ज़रंग का घोड़ा ।	पद्माकर	3	316	> सबज
			8	49	
	कवि- कुछ-कुछ काले रंग का हरे रंग का - 49	ना०	"	512/42	> सब्ज
सब्जी	फा०स्त्री०हरापन, शाक-भाजी तरकारी, भंग, भांग ।	पद्माकर	6	98	>सबजी
सियाह	फा०वि० कृष्ण असित काला	वृन्द	वृग्र	176/368 370	>स्याह
सियाही	फा०स्त्री० कालिमा, अंधकार, काजल, दोष, कलंक, रोशनाइ, मसि ।	बेनीप्रवीण	नरत	65/471	>स्याही
सुर्ख	फा०वि० लाल रंग, लाल रंगा हुआ ।	ना०	8	508/5	> सुरख
सुर्खदार	फा० लाल रंग वाले, सुर्खदार रक्तिम ।	ग्वाल	1	49/85	>
सौसन[2]	स्त्री० फा० एक नीला फूल जिसकी पुखुड़ी जबान जैसी होती है । कवि-ललाई सहित नीला ।	पद्माकर ग्वाल	3	211,232	

रोग व दवा

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
अजार					
अरक	अ०पु० जल दवाओं का खींचा हुआ पानी मदिरा शराब, पसीना, आसव, रस अ०वि० बहुत अधिक पतला बहुत रकीक बारीकतर । अ०स्त्री०अनिद्रा, बेख्वाबी ।	भिखारी	1	50/350	

1. रंग रस भीनी झीनी कुचकी सबज छोरि निकसि लसी है अनी जुगल उरोज को ।। - पद्माकर ।
2. सारी बनी सोसिनी सँभारि के करार पै । - ग्वाल

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अरक	तु०पु० कोट दुर्ग किला				
इलाज	अ०पु० उपचार, चिकित्सा, दवा दारु उपाय प्रयत्न तदबीर ।	भूषण	1	37/112 80/270 81/276	
		मतिराम	2	320/126	
		भिखारी	2	131/193	
			4	48/21	
		बोधा	2	125/47	
		वृन्द	10	248/542	
			9	133/128, 188/470	
			8	65/89, 102/563 89/513	
जर्राह	अ०पु शल्य चिकित्सक	देवदत्त नागरी	4	296/16, 283/24 242/3, 510/24	> जरराह
तबीब	अ०पु० दवा करनेवाला	नागरी	नाग्र	174/138	> तबीबै
	उपचारक, वैद्य(नागरी) कवि-चिकित्सा, दवा-ठाकुर	ठाकुर	ठाकुरश०	16/43	> तबौब
दारु	फा०स्त्री० इलाज, बारूद, अग्निक्रीड़ा, शराब ।	केशव नागरी	2	550/14 500/752	
फस्द	अ०सं०स्त्री० नस को छेद कर शरीर का गंदा खून निकालना मुहावरा--फस्द खुलवाना--शरीर का दूषित रक्त निकलवाना	माधवकवि			फस्त
बउँस्साअः	अ०सं०स्त्री० वह दवा जो एक क्षण के अन्दर रोग से मुक्त कर दे, वाराणसी, काशी	बोधा	2	उदा० 97/3	> बनारसी
सक्तः	अ०सं०पु० मुर्छा रोग बेहोशी की बिमारी ।	बोधा		उदा०	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सुर्मः	फा०पु० एक पत्थर जो पीस कर आँखों में लगाया जाता है । आँखों में लगाने की सूखी और बारीक पिसी हुई दवा ।	पजनेस	1	33/84	> सुरमा
हकीम	अ०वि० वैद्य, तबीब, चिकित्सक, वैज्ञानिक ।	नागरी	8	500/752	

<u>सम्बन्ध</u>

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
फ़र्ज़ंदी	फा०वि० बेटापन, पुत्रत्व, बाप बेटे का नाता ।	वृन्द	वृ०ग्र	161/249	> फरजंदी
दामाद	फा०पु० लड़की का पति, जामाता ।	ठाकुर	ठा०श०	26/73	> दमाद

<u>व्यवसाय</u>

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
क़ज़्ज़ाक	तु०पु० लुटेरा, डाकू	गंग	1	/39	> कजाकू
क़ज़्ज़ाकी	तु०स्त्री० जकू पना, डकैती	रसलीन	3	336/95	> कजाकी
		बिहारी	1	209	
क़स्साब[1]	अ०पु० गोश्त बेचनेवाला मांस विक्रेता, कसाई, बधिक बूचड़ । (क़सी अ०वि०निर्दय कठोर, बेरहम) ।	भूषण	4	144/22	> कसाइ
		पजनेस	प०प्र०	35/86, 87	> कसाइनि
कारीगर	फा०वि० शिल्पकार, गुणवान कुशल, छली ।	ग्वाल	1	64/123	

---

1. भूषन मनै रे भुव भूषन द्विजेस ते कलानिधि कलय के कसाइ कत होत है ।।–भूषण

मूश०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
चंगी	फा० वि० चंग बजाने वाला	वृन्द	9	183/425	
जल्लाद	अ०पु० वह व्यक्ति जो अपराधियों को कोड़े मारता है, अपराधियों कीगर्दन मारता है, व्यक्ति जो फाँसी पर चढ़ाता है । अत्यन्त निर्दय और अत्याचारी ।	पद्माकर	3	709	> जिलाहे
जौहरी[1]	अ०वि० रत्न बेचने वाला, मणिकार ।	~~रसविलास~~ देवदत्त	3	175/41 180/5	> जौहरिन
		रसलीन	2	265/71	
		बोधा	1	16/91	
		भिखारी	1	80/543	
तंबूरची	फा० तु० वि० तंबूरा बजानेवाला	पद्माकर	8	/63	
दर्ज़ी	फा०पु० कपड़ा सीनेवाला, सूचिका । इन प्रत्यय- लगाकर स्त्री० बनाया है ।	देवदत्त	3 6	183/17 273	> दरजिन
दल्लाल	अ०पु० बीच में पड़कर सौदा तै कराने वाला, आढ़ती । (बिकवाल और लिवाल के बीच सौदा तै कराने वाला)	ठाकुर	1	25/69	दलाल
दुकान	फा०स्त्री० सौदा बेचने की जगह ।	तोष	1	152/253	
दुकानदार	फा०पु० दुकान में सौदा बेचनेवाला पेशाकर ।	बोधा ।		6/34	

1. जोवन बजार बैठ्यो जौहरी मदन सब लोगनि को हीरा वाके हाथ ह्वै बिकात है । — रसविलास, देवदत्त 175/4।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
बदराह[1]	फा०पु० डाकू बदमाश, कुमार्गगामी ।	बिहारी	1	उदा०343/536	
बागवान	फा०पु० उद्यानपाल, माली	दास	1	/85	> बागवान
बाजार	फा०पु० हाट बजार	वृन्द	वृ्ा	129/103	
मोची		बोधा		221/-25	
मुकाते[2]	अ०पु० ठीका लेने वाला, काटनेवाला ।	केशव	2	उदा० 482/48	> मुकाते
मुसव्बिर[3]	अ०स०पु० चित्रकार, तस्वीर बनानेवाला ।	ग्वाल		उदा०	> मुसब्बर
रँगरेज	फा०पु० कपड़ा रँगने वाला (घोड़ों के धूल से रँगे जाने से अर्थात् धावे के लिए चलने ही से)	भूषण	1	37/144	
रिज़्क	अ०पु० अन्न ग़िज़ा, जीविका, रोजी ।	वृन्द	वृ्ा	222/201	> रिजक
रोजगार[4]	फा०सं०पु० धंधा, पेशा, व्यापार ।	रघुराज दास		उदा० 65/455	> रुजिगार
सक्का[5]	फा०सं०पु० भिश्ती, पानी भरेने वाला ।	केशव	6	16/23 उदा०	> सका

1. बदा बदी ज्यौं लेत है ए बदरा बदराह ।। — बिहारी
2. खानि मुकाते लीजै गाऊँ धन पावै मठपती सुभाऊँ ।। — केशव
3. मानहु मुसब्बर मनोज को मुकब्बा मंजु फैलि पर्यो
   ताकी तसबीर उडी जात है ।। — ग्वाल
4. रावरो रीति पै रीझि कै लै रुजिगार रच्यो शरागत पावन ।। — रघुराज
5. सका मेघ माला सिखी पाक कारी ।। — केशव । 16/23

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सर्राफ़	अ०वि० चाँदी सोना बेचने वाला ।	गंग	1	126	> सराफ
सौदागर	फा०पु० सौदा बेचनेवाला वणिक ।	देवदत्त	3	170/3	

खेल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गंजिफः	फा०पु० ताश के प्रकार का एक खेल जो ताश से पहले प्रचलित था ।	भिखारी	2	105/69	> गंजिफा
गोय	फा०सं०स्त्री० गेंद कंदुक, गोपन छिपाना (क्रिया)	बिहारी		322/469 उदा०	
चारखाना	फा०पु०सं० एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंगीन धारियों से चौखूटे घर बने रहते हैं ।	सूदन		उदा०	
चौगान	फा०पु० घोड़े पर चढ़ कर खेले जाने वाला गेंद का खेल।	बिहारी पद्माकर		469 उदा०	
दरगज					
नर्द	फा०स्त्री० चौसर का खेल चौसर की गोट ।	गंग	1	/407	> नरद
फर्ज़ी[1]	फा०सं०पु० शतरंज का खेल शतरंज का एक मोहरा, जिसे वजीर कहा जाता है ।	तोष	1	उदा० 126/103	
बाज़ी	फा०स्त्री० कौतुहल खेल शर्तपरा, धोखा ।	देव	सु० म०प्र० म०प्र०	381 4:57 6:20	× (खेल) × (चालकी) × (घोड़ा)

1. पहले इम आइ दियो कर मैं तिय खेलती ती घर में फरजी ।। → तोष

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
बिसात	अ०सं०स्त्री० पूंजी, धन, वित्त आधार, वह वस्त्र जिस पर शतरंज खेला जाता है ।	सोमनाथ देव सेनापति	1	उदा० 8/23	
शतरंज	फा०स्त्री० एक प्रसिद्ध खेल जो भारतवर्ष का प्राचीन आविष्कार है, जिससे अच्छा खेल आज तक संसार में नहीं हो सका । न खेलने वाला यह दावा कर सकता है कि वह सबसे अच्छा खेलता है।	ग्वाल	1	129/129	

खाद्य पदार्थ

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
क़ंद	अ०स्त्री० सफेद दानादार शकर, शर्करा । फवि – बर्फी	पद्माकर	8 3	38 297	
कंद	फा०स्त्री० कंद, शकर, शर्करा, खंड ।				
कंद मूल	– फा० + हिन्दी कवि - रूसा व्यंजन जिसमें कंद पड़ा हो	भूषण	2	114/8, 13	
कमरखाचार	कमरख हि०स्त्री०+अचार फा०पु० एक वृक्ष या उसके खट्टे फल । अचार=प्रसिद्ध खटास, खटाई मसालों के साथ कुछ दिन रखे गये पदार्थ । कवि=कमरख और अचार ।	रसलीन	फु०क०	325/66	
कलाकंद	फा०पु० एक प्रकार की खोये की मिठाई ।				

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
किवाम[1]	अ०पु० शहद के तुल्य गाढा बनाया गया शरबत, खमीर ।	ग्वाल	I	103/52	>किमाम
खासा	अ०पु० राजाओं और बादशाहों का खाना । कवि-राजभोग।	नागरी	नाग्र	21/22	>खास
खुर्मा	फा०पु० छुहारा, सूखा खजूर हरा छुहारा, पिंड खजूर, अ०-एक प्रकार की मिठाई।	,,	,,	21/22	>खुरमा
गज़क[2]	फा०पु० शराब के साथ खाने की चीज, एक मिठाई जो शकर व तिल से बनती है।	पद्माकर भूषण		538	>गजक
गिज़ा	अ०स्त्री० भोजन खुराक अन्न	नागरी		504/761	
गुलक़ंद	फा०पु० गुलाब के फूल और खांड के मिश्रण से बनी हुई एक औषध । कवि- एक प्रकार का मीठा ।	पद्माकर	8	38	
पान	फा०पु० एक प्रसिद्ध पत्ता जो कत्था-चूना लगाकर खाया जाता है । ब्रजभाषा में पान का पाननि बहु० ।	नागरी	8	273/124 282/431	397/467
मेज[3]	फा०सं०पु० भोज सामग्री भोज्य पदार्थ ।	ग्वाल			

1. करि सकै कैसे गोपिकान की बराबरी मैं
   हौ न धारी सीस डाली दही के किमाम के ।। ग्वाल 103/52.
2. कहे पद्माकर त्यों गजक गिजा है सजी सेजैं है
   सुराही है सुरा है अरु प्याला है ।। - पद्माकर
3. सखिन सुधारी सेज, मेज मंजु मौजकारी
   लखत लगारी होत ओट मैं किवारी की ।। - ग्वाल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
शकरपारः	फा०पु० एक प्रकार की मिठाई सुन्दर अदाओं वाली एक प्रेमिका, एक नीबू जैसा बड़ा फल ।	नागरी	नाग्र	21/22	>सक्करपारे (ऐ लगाकर बहु०)

जानवर, पक्षी तथा जलीय जीव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आहू	फा०पु०सं० मृग, हरिण, छिद्र, दोष, ऐब ।	पद्माकर	6	121	>अहू
कबूतर	फा०पु० एक प्रसिद्ध चिड़िया, कपोत,	बेनीप्र०		44/302	
कबूतरी		,,		44/302	
	कृपाराम → कपोती, सुन्दरी	कृपाराम		103छ०	
काबुक[1]	फा०सं०स्त्री० कबूतरों के रहने का दरबा, चक्रवाक ।	देव पद्माकर			>कावक
कुलंग[2]	फा०सं०पु० मुर्गा, एक प्रसिद्ध पक्षी जिसका सिर लाल और शेष शरीर मटमैले रंग का होता है ।	भूषण केशव	3	143/19 8/34	>करंज

1. संग ही बोलि उठे तजि कावक लाव कपोत कपोत के सावक[1]। → देव
   चौकहि की चुनरी पहिरै सुनरी आमन उन्नरी उझमानौ ।
   पावन में जावक जनु छवि कावक परगट पावक सजु घनी ।। — पद्माकर
2. - - - - पाढे पील खाने व करंज खाने कीस है । भूषण
   सारस से सूबा करवानक से साहिजादे
   मोर से मुगल मीर धीर में धचै नही
   बगुला से बंगस बलूचियौ बतक ऐसे
   काबिली कुलंग याते रन में रचै नहीं ।। भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खरगोश	फा०पु० शशक, खरहा	भूषण	1	106/361	
गिरिहबाज	फा०पु० एक तरह का कबूतर जो उड़ते-उड़ते कलाबाजी खाता है ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	31/212या 9/50	
चूजः	फा०पु० मुर्गी का बच्चा (व्यंग्य) नयी और सुंदर स्त्री ।	तोष	सु०नि०	170/353	
जानवर	फा०पु० पशु और पक्षी आदि प्राणी, मनुष्य के अतिरिक्त और सब प्राणी । किo- पशुओं ।	भूषण		105/360	> जानवरन्
जुर्रः[1]	फा०पु० नरबाज, बाज का नर जुर्रः होता है आक्र मादः बाज ।	बोधा	2	68/14	
		पद्माकर	8	18	> जुर्रन
		केशव	9	8/32	> जुररा
जुरस					
तुरमता[2]	तु०सं०स्त्री० बाज की भांति का एक शिकारी चिड़िया ।	भूषण		105/661	> तुरमती
तुती[3]	फा०सं०स्त्री० छोटी जाति का एक तोता, मटमैले रंग की एक छोटी सुन्दर चिड़िया ।	देव दास			

1. जुल्फ बावरिन को लखि जुर्रा ।। - बोधा ।
2. तुरमती तह खाने तीतर गुसुलखाने
   सूकर सिलहखाने कूकत करीस है ।। भूषण 105/361
3. काम की दूती पढ़ावत तूती चली पग जूती बनात लपेटा ।। - देव
   भारथ अकर कर तूतिन निहारि लही
   याते घनस्याम लाल लोते बाज आए री ।। - दास

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
दरबा	फा०पु० कबूतर आदि के रहने के लिए काठ आदि का खाने	बोधा	2	139/2	> दरबा
	दार सन्दूक । वृक्ष का कोटर	केशव	2	551/19	> दरबनि
परंदः	फा०पु० पक्षी, चिड़िया	पद्माकर	3	/57	> परंद
परिंदः	फा०पु० पक्षी, चिड़िया	सोमनाथ		262पृ०	
परिंद	फा०पु० पक्षी, चिड़िया				
बाज़[1]	फा०पु० एक प्रसिद्ध पक्षी प्रत्यय → शब्दों के अन्त में लगने से शौकीन आदि का अर्थ देने वाला जैसे → नशेबाज ।	भूषण	4	143/19	> बाज
बुलबुल	फा०अ० एक प्रसिद्ध गाने वाली चिड़िया, गोवत्सक।	नागरी	8	507/762	> बुलबुल
माही[2]	फा०सं० मछली, मुसलमान	ब्रजनिधि			
	राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे जिनपर अलग-अलग मछली सात ग्रहों की आकृतियाँ, कार चोबी की की बनी होती थी ।	केशव	वी०च०	519/52	
लक्का[3]	अ०सं०स्त्री० कबूतर, कबूतरी	दास			

1. बाज कहाँ मृग राज कहा अति साहस मै सिवराज के आगे ?
2. माही जल मृग के सु तृन, सज्जन हित कर जीव ।
लुब्धक धीवर दुष्ट नर बिन कारन दुःख कीन ।। → ब्रजनिधि
3. थकी थहरानी छवि छकी छहरानी
धकधकी घहरानी जिमि लकी लहरानी है ।। — दास

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
शुतुर +	फा०पु० उष्ट्र, ऊँट	वृन्द	8	167/287 > सुतरसाज	
साज	फा०पु० उपकरण, सामान, प्रबन्ध, इतिजाम, बाजा, मेलजोल, अनुकूलता, घोड़े का सामान जैसे — जीन लगाम काठी आदि । (प्रत्यय)				

अधिकारी

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अदूल	अ०पु० न्याय, इंसाफ, न्यायकर्ता, मुंसिफ ।	भूषण	4	153/53	
		दूलह			
		वृन्द	वृ्ग्र-9	156/227	
अबदाली	फा०सं०पु० अदल-बदल कर देने वाला अधिकारी ।	आलम			
		केशव	क०प्रि०	5/14	
अफसर	अ०पु० पदाधिकारी, सरदार, अध्यक्ष, मुकुट, ताल । हिन्दी-अधिकारी, हाकिम, प्रधान, मुखिया ।	भूषण		416	
आमिल	अ०वि० शासक हुक्मरां पदाधिकारी, हाकिम सयाना, ओझा ।	भूषण	4	139/11	
अमीन	अ०पु० न्यायालय का वह कर्मचारी जो बाहर का काम करता है । वि०-न्यायाधीश, अमानतदार, ईमानदार ।	चिन्तामणि	दू०उ०	28/2	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
उमरा	अ०पु० अमीर का बहु० धनवान लोग ।	पद्माकर	8	3	> उमराव
		भूषण		487	> उमराय
				182	> उमरा
			•	473	उमरावो
		,,		33/103	
			1	10/34	> उमराय
				70/239	
				91/315	
				80/270	> उमराव
				116/13	
				33/103	
		मतिराम	2	308/58	> उमरावन
		वृन्द	8	122/45	> उमराव
				126/90	
				135/138	
				143/166	
				150/202	
				225	
				162/256	
				163/256	> उमराब
				166/281	> उमरावाँ
				181/418	
				183/424	
				186/449	
				303/361	
				186/448	> उमरावौ
		केशव	4	625/66	
				627/82	
ओहदः	अ०पु० दर्जा, पद मर्तबा पदाधिकारी ।	वृन्द	वृ०ग्र	156/227	> औहेद
कारकुन[1]	फा०सं०पु० प्रबन्धकर्ता, करिंदा	आलम		उदा०	

1. करि कारकुन पिक बानी चीठी आइ जमा बिरह बढाइ छवि रैयति मरोरी है ।। —आलम

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
जासूस	अ०पु० गुप्तचर चारचक्षु मुखबिर ।	वृन्द	वृ०	163/256	
दीवान	फा०पु० न्यायालय कचहरी	केशव	2	527/39	
	मंत्री वजीर अर्थ मंत्री ग़ज़लों	बोधा	2	221/25	
	की किताब, वजीरमाल ।	मतिराम	,,	310/69 324/149 327/165	
		भूषण		/86	
नायब	फा०वि० स्थानापन्न, सहायक मुनीम, मुख्तयार ।	केशव	2	544/39	
मुत्सद्दी[1]	अ०पु० स्वामी, राजा, मुंशी	गंग	1	411	> मुसद्दी
	लेखक, शासनाधिकारी, प्रबन्ध-कर्ता ।	नागरीदास	8	432/25	
मुसाहिब	अ०पु० किसी बड़े आदमी के	चन्द्रशेखर	ह०ह०	11/64	> मुसाहिबनि
	पास उठने-बैठने वाला, पार्षद कवि-दरबारी (नागरी) ।	नागरी	ना०	214/239	
वज़ीर	अ०पु० मंत्री, आमात्य, सचिव	गंग	1	/295	
		भूषण	1	/484 21/69 70/239	> उजीर
				28/94 62/209	> उजीरन
		नागरी	1	15/96	> उज्जीर
सरदारी	फा०स्त्री० अध्यक्षता, स्वामित्व सरदार का पद या भाव ।	देव	सु०	329	> सिरदारी

1. कहा भयो दिन चार गद्दी के मुसद्दी भए
बद्दी के करैया सब रद्दी होइ जायेंगे ।। — गंग
आय खुदी तु करत री भइ मुसद्दी मैन
गुद्दी पर क्यों चढ़त है मुद्दी ह्वै करि बैन ।। — नागरी

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
सरदार	फा०पु० अगुआ, नायक, किसी प्रदेश का शासक, धनी, सिखों की पदवी । कवि—मलकाना, प्रतिष्ठा ।	वृन्द	8	167/286	
सूबः	अ०पु० प्रान्त प्रदेश, यहाँ सूबेदार से मतलब है ।	भूषण	4	143/19	>सूबा
हाकिम	अ०वि० पदाधिकारी, मालिक शासक, राजा, सरदार, अध्यक्ष ।	ग्वाल	ग्वा०र०	18/7	>हाकिम
अदालत	अ०स्त्री० न्यायालय, कचहरी, न्याय, इंसाफ ।	वृन्द	8	156/227	
		नागरी	ना०ग्र०	509/14	
दफ़्तर	फा०पु० कार्यालय, बड़ी किताब का एक भाग जिल्द ग्रंथ, खंड, लम्बी-चौड़ी बात तूमार जैसे —शिकायतों का दफ्तर ।	केशव	2	552/7	
दरबार	फा०पु० राजसभा, बादशाही, कचहरी, किसी वली का आश्रम, या खानाकाह ।	भूषण	2	118/23	>दरबारे
		मतिराम	1	302/26	>दरबार
		रसलीन	3	306/16-17	
		भिखारी	1	69/478	
			4	115/9	

वस्त्र

आस्तीन	फा०स्त्री० कुर्ते कोट या अंगरखे का वह भाग जो बाहों को छुपाता है ।	भिखारी	1	35/241	>असतीन

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
इज़ार	फा०स्त्री० पाजामा, सूथना	मतिराम	1	289/253	> इजार
		ग्वाल	1	58/107	
खरीता[1]	अ०पु० जेब, थैली, बड़ा	पद्माकर	3	599	> खलीती
	लिफाफा।	चन्द्रशेखर	1	8/48	> खलीता
		सेनापति	1	43/38	
गिरिबान[2]	फा०पु० गले की पट्टी,	बोधा	1	110/39	> गिरमान
	ग्रीवा, गला। बोधा-				
	गर्दन। कुर्ते की सिलाई	पद्माकर	हि०ब०	149	> गिरबान
	का वह भाग जो गले पर				
	पड़ता है। कवि-गला।				
जामः	फा०पु० वस्त्र, कुर्ता, बरात	भिखारी	4	252/43	> जाम
	में दुल्हा के पहनने का कपड़ा	ग्वाल	ग्वार	28/34	
	ग्वाल-जाम-वस्त्र	बोधा	1	8/45	> जामा
जेब[3]	अ०स्त्री० वह थैली जो कुर्ता	देव	3	191/35	
	या अचकन आदि में रुपया			338/29	
	आदि रखने की होती है,				
	पाकेट, खलीता।				
तुर्रः[4]	अ०पु० जुल्फ कलंगी सुनहरे	पद्माकर	8	23	> तुर्रा
	तारों का गुच्छा जो पगड़ी पर				
	लगाते हैं पक्षियों के सर की	बोधा	2	48/51	
	चोटी, बात में बात, अजूबा-				
	पर, सर्वश्रेष्ठ।				

1. खोल खलीतो लिख्यो यह बाचत भाजियो राति न बीतन पावै ।। -> चन्द्रशेखर
2. तहै इकन की गिरबान गहि पटके हयत ते समर में ।।
3. मोर पखा घुघुचीन के जेवर जेब जो जेवरी बेचति डोलै ।। -> देव 191/35
4. सोहै पाग जरकसी तुर्रा - - - - ।। बोधा

   मान दैके तोरा तुर्रा सिर पै सपूती को ।। -> पद्माकर

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
दामन[1]	फा०पु० कुरते या अंगरखे का वह भाग जो लटकता रहता है । अँचल, मैदान, समतल-भूमि ।	तोष भिखारी	\ ।	139/179 180 21/24।	>दावन
दुशालः	फा०पु० जिसमें दो शाल एक साथ जुड़े हों, उन का काम-दार दोहरी चादर ।	ग्वाल	।	36/54	>दुसाले
नख[2]	फा०सं०स्त्री० रेशम की डोर	बेनीप्रवीण	\	17/106	
नीमा[3]	फा०सं०पु० नीचे पहनने की कुर्ती, एक पहनावा जो जामा के नीचे पहना जाता है ।	घनानन्द गंग	\	301	
पायँचो[4]	फा०पु०सं० पायजामे की मोहरी	ग्वाल	\	58/107	>पाइचे
पजामः	फा०पु० अधोवस्त्र, इजार	बेनीप्रवीण			>
पिशवाज़[5]	फा०स्त्री० पेशवाज का लघु-रूप ।	ग्वाल	ग्वा०र०		>पिसवाज

1. दावन खैंचि भावन सो कहती तिय मो मन यो प्रनकै परयो ।। — तोष
2. लोटन लोटत गुलीबंद तीरा रेखता की
   नख तंग घाघरा न सुतरी बनाइ है ।। — बेनीप्रवीण 17/106
3. दारिम-कुसुम के बरन झीने नीमा मधि
   दीपति दिपति सु ललित लोने अंग की ।। घनानन्द
4. घेरदार पाइचे इजार कीम खापी तापै
   पैन्हि पीत कुरती रती को रूप लीपे है ।। ,,58/107.
5. प्यार सो पहिर पिसवाज पौन पुरवाई
   ओढ़नी सुरंग सुर चाप चमकाई है ।। — ग्वाल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
पिशवाज	फा०पु० नृत्य में पहना जानेवाला लहँगा ।				
फर्द	अ०वि० बेजोड़, अनुपम, रजाई का ऊपरी पल्ला ।	ग्वाल	1	34/47	
रूमाल	फा०पु० हाथ-मुंह पोछने का कपड़ा, करपट, रूमाल ।	नागरी	7	169/119	
शाल	फा०स्त्री० एक ऊनी कामदार चादर ।	गंग	1	/64	
दुशालः	फा०पु० ऊन की कामदार दोहरी चादर ।	ग्वाल	1	36/54	
(हेम)फर्द	(सं०:)+अ०पु० एक व्यक्ति एकाकी, अकेला, अद्वितीय दुलाई, रजाई, चादर ।	पद्माकर	8	37	>
फर्द[1]	फा०स्त्री० हिसाब का रजिस्टर, हुक्मनामा, निमंत्रण का सूची-पत्र ।				

कपड़ों के प्रकार

अत्लस	अ०स्त्री० एक बहुमूल्य रेशमी वस्त्र, पु० – स्वच्छ आकाश।	देव	सु०सा०त०	346	>अतलस
इल्बास[2]	अ०पु० कपड़े, पहनावा, वेश कवि– पोशाक, पहनावा ।	गंग	1	/377	

1. मोरन के सोरन की नैकों न मोर रही
   घोर हू रही न घन घने या फरद की ।। 34/47
2. रेशमी खत इलबेस सी सुदेस किये ।
   देखि देस देस के नरेस ललचात है ।। → गंग

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
कलंदर[1]	अ०सं०पु० मदारी बंदर भालू रचानेवाला, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र ।	बिहारी सूदन			
कलाबत्तू	तु०पु० रेशम के धागे पर लपेटा हुआ सोने या चाँदी का तार ।	वृन्द	6	49/81	> कलाबूत
कलाबतून[2]	तु०पु०सं० कलाबत्तू	आलम			> कलाबत्तन
कारचोबी[3]	फा०सं०पु० जरदोजी, कसीदाकारी ।	ग्वाल	1	/119/98	
कीमख्वाब[4]	फा०सं०पु० एक प्रकार का जरी कपड़ा ।	,,	1 ,,	58/107 37/55	> कीमखाप
कुहूल	अ०पु० सुरमा, रसांजन				
कुहूली	अ०वि० सुरमे के रंग का, सुरमई एक काला वस्त्र जो ईरानी स्त्रियाँ पहनती हैं ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	2/16	> कुल्लह
खासा	अ०सं०पु० एक प्रकार का महीन श्वेत सूती वस्त्र, राजभोज, राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी ।	ग्वाल		26/28	

1. तदपि नचावत रु हठी नीच कलंदर लोभ ।। - बिहारी
   ताफता कलंदर बाफत बंदर मुसजर सुदर गिलमिल है ।। - सूदन
2. कबि आलम ये छवि ते न लहे जिन पुंज लये कल बत्तन के ।। - आलम
3. कारचोबी कीमत के परदा बनाती चारु चमक
   चहुंधा समादान जोत जाला में ।। - ग्वाल 119/98.
4. घेरदार पाइचो इजार कीमखापी तापै पैन्हिपील कुर्ती
   रती के रुप लीपै है ।। - ग्वाल 58/107.
   बिबिध बनाते कीमखाप की कनाते तामे,
   दीरघ दुचोबे है सिचोबे इक्क हद्दही मैं ।। - ग्वाल 37/55

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खिलअत[1]	अ०स्त्री० वह सम्मानसूचक वस्त्र जो किसी राजा या बड़े द्वारा भेट किया जाय। कवि– पोशाक।	पद्माकर	5	16	> खिलत
खलक	अ०पु० कपड़ा का पुराना होना, पुराना लिवास।	नागरी	8	499/749	
			"	509/10	
चिकिन	फा०स्त्री० एक प्रकार का कशीदा, जो रेशम या सूत से कपड़े पर काढ़ा जाता है।	वृन्द	वृ०ग्र	180/398	>चिकन
जरकश[2]	फा०वि० सोने चाँदी के तारों से कलाबत्तू बनानेवाला, सोने-चाँदी के तारों से बना हुआ कपड़ा।	रसलीन	3	334/87	
		मतिराम	2	300/13 323/140 320/122	
		भिखारी	2	119/138	>जरकसवारी
जरकशी	फा०स्त्री० कलाबत्तू का काम सोने-चाँदी के तार का काम बोधा– सोने के तार से निर्मित	बोधा	2	68त/14	
		भिखारी	1	46/313	
जरतार	फा०वि० सोने के तारों से बना या गुथा हुआ जरी। कृ० – सोने के तार या बादलोंवाली।	देव	1	6/125	
		कृपा	1	/341	
जरदोजी	फा०स्त्री० कारचोबी, सल्मे-सितारा और ज़री का काम।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	3/17	

1. मुंडन के माल की भुजंगन के जाल की सुगंगा गंज खाल की खिलत पहिरावैगी ।। – पद्माकर

2. जरकसे जोर तौर कंचन घोरे देत जाके जीन जटिल नगन ।। रसलीन 334/87.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
ज़रबफ़्त	फा०वि० सोने-चाँदी के तार से बना हुआ कपड़ा ।	नागरी	नाग्र०।	159/106	>जरबफ़्ती
जरबाफ़	फा०वि० जरबफ़्त बनानेवाला	भूषण	1	83/283	
	कवि- जरबफ़्त ।	केशव	2	553/25	
ज़री[1]	फा०वि० सोने का बना हुआ	देव	3	176/46 334/10	
			1	/79	
तनजेब	फा०स्त्री० महीन चिकनी मलमल ।	ग्वाल	1	26/28	
तमामी[2]	फा०सं०स्त्री० एक प्रकार का देशी रेशमी वस्त्र ।	बेनीप्रवीन		24/155	
~~बाफ़्तः~~	~~फा०वि० बुना हुआ~~				
~~बाफ़्त~~	~~फा०स्त्री० बुनाई, बुनाई का कार्य बिनावट~~ ।				
ताफ़्तः	फा०वि० बटा हुआ बल दिया हुआ, चमका हुआ, चमकदार, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।	बिहारी	1	264/281	
तास[3]	फा०पु० बड़ा तश्त परात वह कटोरा जो जलघड़ी की नाँद में पड़ता था, एक सुनहरे तारों का जड़ाऊ कपड़ा ।	देव	सु०स०त०	146,249, 325	

1. पीरो झगा पटुका बिन छोर छरी कर लाल ज़री सिर फेंटा ।। - देव 176/46
2. सोने के पलँग मखमल के बिछावने है ।
   तकिया तमामी के तमाम तरकीप के ।। - बेनीप्रवीण 24/155.
3. तासन की गिलमै गलीचा मखतूलन के
   उनकी खवासी तौ न कीनी जोरि कर है ।। - ग्वाल 102/48.

मूल्श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यप०
ताश	अ०पु० एक प्रकार का जरदोजी का कपड़ा।	ग्वाल		102/48	
पश्म[1]	फा०सं०पु० बढ़िया मुलायम ऊन के द्वारा बने वस्त्र दुशाले	ग्वाल		36/53	
बाफ्तः	फा०वि० बुना हुआ।	बिहारी			
बाफ्त	फा०स्त्री० बुनाई, बुनाई का कार्य, बिनावट।				
मखमल	फा०स्त्री० एक प्रकार का रंगीन और मुलायम रूंदार कपड़ा।	ग्वाल	1	38/57	
		वृन्द	8	76/229	
मखमली	फा०वि० मखमल का बना हुआ। मखमल मढ़ा हुआ मखमल जैसा।	ग्वाल	1	119/98	
मखतूल[2]	फा०सं०पु० कालारेशम	देव	1	1/62	
		केशव	1	59/20	
मशरू[3]	अ०पु० एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।	तोष	सु०नि०	119/67	> मशुरू
		सोमनाथ			> मसक
मुकैश[4]	फा०सं०पु० चाँदी सोने के चौड़े तार, सोने-चाँदी के तारों का बना कपड़ा।	पजनेश	1	3/7	> मुकेसन
		नागरी	7	159/107	> मुकेस

1. पेर पसमीनन के चौहरे गलीचन पै।
सेज मखमली सोरि सोऊ सरदीसी जाय।। – ग्वाल 36/53

2. लै मखतूल गुहे गहने रस मूरति वंत सिगार कै चाख्यौ।। – देव
मखतूल के झूल झुलावत केशव भानु मनो ससि अंक लिये।। – केशव

3. सिर मसक पग्गहि काढि खग्गहि उच्चर्‌यो ललकारि कै।। – सोमनाथ
घांघरो सिरिफ मुसरू को सो हरित रंग अँगिया उरोज डारे हीरन के हार को।। – तोष

4. पीत सित मिश्रित मुकेसन समस्त सारी जाहिर
जलूस जाको जगत जगी परै।। – पजनेस
सजि मुकेस के बेस तिय मनहु मैन को फौज।। – नागरीदास

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मुशज्जर	अ०सं०पु० एकप्रकार का छपा हुआ कपड़ा ।	सूदन	दे० कलन्दर में		
रेज़ा[1]	फा०सं०पु० कपड़े का टुकड़ा, ठाकुर कपड़े का थान, कण, कतरन, बहुत छोटा टुकड़ा, रवा, मजदूर का लड़का, सुनार का एक औजार । कवि-कपड़ा ।				
रेजः	फा०पु० कण, जर्रा, कतरन बहुत	चन्द्रशेखर	ह०ह०	43/315	>रेजा
सूफ़	अ०पु० ऊन, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा । ऊन गोटा बुनने का बाना ।	देव	देमप्र	4:60	
सकिरलात[2]	तु०सं०पु० ऊनी बनात, सिकलात बढ़िया ऊनी वस्त्र	गंग मिश्र	। शृ०स० से	377	

बर्तन

आफ़्ताबः[3]	फा०पु०सं० हाथ मुंह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ, एक प्रकारका लोटा जिसमें दस्ता होता है ।	सूदन			

1. बादर न होय बहु भातिन के रेजा ये असाढ़ रंगरेजा रंग सूखिबे को डारे हैं ।।-ठाकुर
2. हरी-हरी दूब छोटी तापर बिराजे बूंद उपमा बनी है मिश्र निरख सिहात है ।
सावन सने ही मनभावन रिझावन को मोतिन गुथाये हैं दुलीचा सकलात के ।।-शृ०सं० से
रगमगे मखमल जगमगे जमीदोज और सब जे वे देस सूप सकलात है ।। - गंग
3. हुक्का-हुक्की कली सुराही अरु आफताबा ।। - सूदन

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आबखोरा[1]	फा०पु०सं० गिलास प्याला कटोरा ।	ग्वाल		108/65	> आबखोरे
इत्र+गुलाब+दान	फा०पु० इत्र और गुलाब रखने का पात्र ।	वृन्द	6	49/82	> अतरगुलाब-दानी ।
कूजा[2]	फा०सं०पु० जलपात्र, कुल्हड़ मिट्टी का एक छोटा पात्र।	नरोत्तमदास			
खास+दान[3]	अ० पान रखने का पात्रविशेष	गुमान मिश्र			
ख्वानूचा[4]	फा०सं०पु० बड़ी परात या थाल, खौन (सर्व०) ।	ग्वाल पद्माकर		38/58 260	> खौने
मुरक्कब					
जाम	फा०पु० पियाला, कंस, शराब पीने का पियाला, पान पात्र	बोधा	2	4/71	
जामेजाम[5]	फा०सं०पु० एक विशेष प्याला जिसे ईरान के शासक जमशेद ने संसार का हाल जानने के लिए बनाया था । ऐसा अनुमान है कि उस प्याले में कोई मादक वस्तु पिलायी जाती रही, जिसे पीकर पीनेवाला वास्तविक बातें बता देता था ।	पजनेस		14/33	

1. आबर खोरे छीर के जमाये बर्फ चीर के सु बंगले उसीर के भिजे गुलाब नीर के ।।—ग्वाल
2. कूजा कंचन रतन युत सुचि सुगन्ध जल पूरि ।। — नरोत्तमदास
3. खासदान सौं लै दई बीरी खवासिन चारु ।। — गुमान मिश्र
4. पौन को ना गौन होय, भख्यौं सु मौन होय ।
   मेवन को खौन होय, डिब्बयाँ मसाला की ।। — ग्वाल 38/58
   खासे खस बीजन सु खौन खौन खाने खुले खस के खजाने खसखाने खूब खास ।। पद्माकर 260
5. या जमे जाम या सीसा सिकन्दरी या दुर्बीन लै
   देखिबो की जै ।। — पजनेस 14/33.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
तुंग	फा०गु० मिट्टी का वह बर्तन जिसका पेट चौड़ा गर्दन छोटा और मुंह तंग हो ।	वृन्द	वृग्र	189/473	तुफंग >तुंग
प्रकीर्ण					
पानदान	फा०पु० पान रखने की पिटारी	नागरीदास	8	221/3	
पियालः	फा०पु० चषक कटोरा शराब पानपात्र सागर ।	चन्द्रशेखर	" ह०ह०	500/750 25/166	
मीना	फा०पु० शराब का जग, वह रंगीन शशिा जिससे चाँदी-सोने पर नक्काशी होती है ।	वृन्द		179/390	
सुराही	अ०स्त्री०पानी रखने का एक विशेष प्रकार का मिट्टीका पात्र ।	ग्वाल	1	29/35	
हजारः	फा०पु० एक फूल, पौधे में पानी देने का एकपात्र ।	वृन्द	वृग्र	178/384	

शामियाना

क़नात[1]	तु०स्त्री० मोटे कपड़े का पर्दा जिसकी दीवार खड़ी की जाती है । कवि– तंबू ।	चन्द्रशेखर वृन्द	ह०ह०	12/129 5/27 2/15 181/412	
चोब[2]	फा०सं०स्त्री० शामियाना खड़ा करने का डंडा, सोने या चाँदी का मढ़ा हुआ डंडा ।	बोधा देव	6	22	> चूब > चोब

1. विविध बनाते कीम खाप की कनातैं तामे दीरघ दुचोवै है सिचोवै हक्क हदूदी मैं ।। ग्वाल 37/55.

2. चैत को रुचिर चंद चाँदनी सी चाँदनी में चाँदी सो चँदोबा चामीकर चोब चारि को ।। — देव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
चोब	फा०स्त्री०काठ लकड़ी, लाठी	ग्वाल	।	37/55	>चौवन
जमींदोज[1]	फा०सं०पु० एक प्रकार का खेमा, धराशायी होना, गिरना ।	गंग		377	
तनाब[2]	फा०सं०पु० रस्सी डोरी	भूषण		6।17	>तनाय
दु चोबः[3]	फा०सं०पु० दो बांसों वाला खेमा ।	ग्वाल		37/55	
बारगाह[4]	फा०सं०स्त्री० डेरा, खेमा, तंबू ड्योढ़ी ।	उदयनाथ			
सीख[5]	फा०स्त्री० लोहे की पतली लंबी छड़ ।	केशव			>सींक
शामियाना[6]	फा०पु०वितान छाया के लिए ताना जाने वाला विशेष कपड़ा ।	ग्वाल	।	38/48	
पेशखेमः	फा०अ०पु० वह खेमा जो फौज में सबसे आगे लगाया जाता है।	भिखारी	।	6/27	

चोब- चांदनी है चौवन पै परदे दरीचन पै दुहेर दुलीचे है गलीचे है गोल गद्दी में ।।-37/55

दिशा बारहों छारिया चूब खोले हरी लाल पीरी उरी झर्प डोले ।। - बोधा

1. रगमगे मखमल जगमगे जीमीदोज और सब जे वे देस सूप सक्लात है ।।- गंग 377

2. जहं तहां ऊध उठे हीरा किरन घन समुदाय है
   मानो गगन तंबू तन्यो ताके सपेत तनाय है ।। - भूषण

3. विविध बनाते कीमखाप की कनातें तामे दीरध दुचोबे है
   सिचोवे हक्क हद्दी में ।। - ग्वाल 37/55.

4. किंकिनी की धुनि तैसी नूपुर निनाद सुनि
   सौतिन के बाढ़त विषाद बरगाह की ।। - उदयनाथ

5. बीच-बीच सुबरन की बनी सीकें गजदंतन की घनी ।। - केशव

6.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
	दास				
अब्द	अ०पु० दास, सेवक, भक्त	भिखारी	छंदार्णव	228/42	
अग्रगकारी कही	फा०पु० वह सैनिक जो सेना के आगे चलकर पड़ाव के लिये घोड़ों के दाना घास का प्रबन्ध करते हैं।	वृन्द	वृग्र	176/370	>कहि
कुली + दीवान	तु०पु० सेवक, दास, स्टेशनों पर सामान ढोने वाला व्यक्ति	वृन्द	6	49/81	>कुलीदिवान
	फा०पु० न्यायालय मंत्री अर्थ मंत्री, गजल की किताबा।	,,	,,	,,	
खवास	अ०स्त्री० नौकरी चाकरी खिदमत गारी।	ग्वाल		102/48	
खवास	अ०पु० खास का बहु० स्त्री० शाही महल की वह दासी जो	भिखारी	2	94/30	>खवासिन
	बादशाह के पास एकान्त में आती-जाती हो। केशव —	केशव	1	199/37।	
	दहेज में वधु के साथ आने-वाली लौंड़ी।	गंग	1	/275	
	अ०पु०—नौकरी चाकरी, खिदमतगारी,	ग्वाल	1	102/48	
	गंग—सेविका।	नागरी	1	104/107	
ख्वाजः सरा	तु०फा०पु० महल का रखवाला जनाना, हिजड़ा, शिखंडी।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	8/48	> ख्वोजा
खोजा	हि०वह नपुंसक जो मुसलमानी अन्तःपुर में रक्षक का कार्य करता है, सेवक सरदार एक तिजारत पेशा मुसलमान जाति				

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
ख़ादिम	अ०वि० दास, सेवक, नौकर	बोधा	2	56/56	
ख़ादिमः	नौकरानी, दासी				
गुनूरा[1]	फा०सं०पु० मजदूर कवि– मजदूरनी, नौकरानी ।	गंग			
गुलाम	अ०पु० लड़का, बालक, दास	भिखारी	4	252/43	
	ख़ादिम पराधीन महकूम	रसलीन	3	301/3	
		केशव	2	502/63	
चाकर	फा०पु० सेवक दास नौकर	भूषण	1	49/161	
तँबूरची	फा०तु०वि० तँबूर बजानेवाला (फा० तँबूल–ची प्रत्य०)	पद्माकर	8	63	
दरबान	फा०पु० द्वारपाल ड्योढ़ीदार	चन्द्रशेखर	ह०ह०	9/53	
नक़ीब[2]	अ०पु० वह व्यक्ति जो राजा	देव	6	21	
	की सवारी के समय आगे	पद्माकर	हि०ब०	81	
	आवाज लगाता है, चोबदार	बोधा	2	135/33	
	कवि–चारण भाट, बंदीजन	केशव	1	275/509	
		भूषण	५	148/36	
नाज़िर	अ०सं०पु० देखभाल करनेवाला सरदार, अन्तःपुर का प्रबन्ध करनेवाली मुख्य परिचारिका ।	चन्द्रशेखर	ह०	8/44	
नाज़िरः	अ०स्त्री० नाज़िर की स्त्री कवि– वह मुख्य परिचारिका जिसके हाथ अन्तःपुर के प्रबन्ध में रहते हैं ।				

1. सजि गाजै बजाज अवाज मृदंग लौ बाँकियै तान गिनौरी लैरे ।। – गंग
2. छैल–छल छोमक छपाचर चुरैल आगे पीछे
जैल–गैल रेल पारत नकीब से ।। – देव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ख०प०
पायक	फा०पु० हरकारा, पियादा कवि – पैदल	चन्द्र	हम्मीरह०	20/118	
पासबान	फा०वि० निरीक्षक, द्वारपाल कवि – पास में	गंग	।	372	
फर्रास[1]	अ०पु०सं० दीपक आदि जलाने वाला नौकर, सेवक, खिदमतगार ।	शिवकवि			
बंदा	फा० दास, सेवक	भिखारी	।	69/477	
हशम	अ०संज्ञा पु० स्वामी के लिए लड़नेवाला । नौकर चाकर सेना वैभव ऐश्वर्य ।	केशव जोधराय	2	519/52,54	
हामिल[2]	अ०वि० बोझ उठाने वाला, रखनेवाला मजदूर धारण करने वाला ।	गंग भूषण	– ।	उदा० 354 22/73	

1. ब्याज करि चांदनी को मैन मजलिस
   काज चन्द हैव फर्रास चारु चांदनी बिछाइ है ।। – शिवकवि
2. पैज प्रतिपाल भूमि भार को हमाल
   चहुं चक्को अमाल भयो दकुक जहान को ।।
   दीबे की बड़ाई देखौ उदावत रामदास,
   तेरे दिये माल को हमाल हेरियत है ।। – गंग

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
कहरुबा[1]	फा०पु०सं० तृप, मणि, एक हल्का पत्थर जो तृण को अपनी ओर खींचता है ।	पजनेस	प०प्र०	32/81	>कहरवा
जमुर्रद[2]	फा०पु०सं० एक कीमती रत्न, पन्ना ।	,,	1	14/34 /35	
जवाहिर	अ०पु० जौहर का बहु० रत्न का समूह ।	भूषण	1	83/283	
		मतिराम	2	356/344	
		देवदत्त	2	108/79	
			1	9/56,53	
			3	181/7	
		बोधा	2	196/31	
		भिखारी	1	80/543	
			2	91/12	
दुर[3]	फा०सं०पु० मोती, मुक्ता	पजनेस	पप्र०	उदा०	
नग	फा०पु० नगीनः का लघु रूप	भूषण	4	147/29	
नगीनः	नग, रत्न, अंगूठी पर जड़ा जाने वाला पत्थर ।				
बिल्लौर	अ०पु० एक कीमती शीशा स्फटिक मणि ।	वृन्द	वृग्र	176/370	>बिल्लौर

1. कहरवा को खाहित बालकों खेचे लगे तन दूब लौ बीछे ।। — पजनेस 32/81
2. बिलौर की बारादरी जगे जोति जमुर्रद को कुरसी बजे बीन ।।— वही, 14/34.
   जमुर्रद के तम जाम लिया चढ़ि सन्दली ओढे सखी सब पेस ।। वही, 14/35.
3. दीन्हों दुर लुत्फ में गुलाब को प्रसून गौस
   झूलत झुकत झुलि झांकति परी सी है ।। — वही ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
रवा	फा०सं०पु० सम्बन्धी, संबंध रखने वाले, रत्न का छोटा	पद्माकर		उदा०	
	टुकड़ा, कण ।	देव		उदा०	

हाथी

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अंकुस	फा०पु०सं० आकुश, अंकुश । कवि- हाथी को बस में करना	वृन्द	वृ०ग्र	83/320	
अमारी	अ०स्त्री०सं० हाथी के ऊपर	गंग	।	उदा०	
	रहनेवाला हौदा जिस पर एक	चन्द्रशेखर	ह०ह०	19/114	
	छतरी रहती है ।	वृन्द	वृ०ग्र०	201/563	
कलावा	फा०पु०सं० हाथी के गले में	पद्माकर	हि०ब०	177	> किलाए
	पड़ा हुआ रस्सा जिसमें पैर फँसा कर महावत हाथी को चलाता है । कवि – हाथी के गर्दन की वह रस्सी जिसमें महावत पैर फँसा कर बैठता है । जिसमें पैर फँसाकर चलने का संकेत करता है । (30)		6	30	> किलारे
चरखी	एक प्रकार की आतिशबाजी जो मस्त हाथियों को भयभीत करने के लिए छुड़ाई जाती है ।	सेनापति सोमनाथ	।	71/60	

1. रन रोस के रवा है कै लवा है श्री सवाई के ।। – पद्माकर
क्यों छुवै अंग पै देखत है जु जराऊ तरौना में रूप रवा हो ।। – देव

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
जँगार					
जँगारी					
पील	फा०पु० हस्ती, गज, हाथी, शतरंज का एक मोहरा ।	भूषण	1	48/157	
पीलबान	फा०वि० हाथीवान अंकुश ग्राह उर्दू उच्चारण फ़ीलबान है । हाथी चलाने वाला-निषादी	चन्द्रशेखर	ह०ह०	19/113	
सँदूक	अ०स्त्री०सं० हाथी के पीठ पर रखने का हौदा, जिसके ऊपर एक छज्जेदार मँडप होता है ।	केशव	2 4	उदा० 504/94 632/124	
हलका	अ०सं०पु० हाथियों का झुंड	गंग मतिराम		23,304,343 उदा०	

घोड़ा

अयाल	फा०सं०पु० घोड़े सिंह आदि के गरदन पर के बाल ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	उदा०	>याल
अस्वार	अ०पु० सवार, अश्वारोही	मतिराम	2	373/49	>असवार
		भूषण		151/47 56/189	
		नागरी	ना०ग्रं०	508/5	
		वृन्द	9	143/165	>असबार
एराकी	वि० एराक सम्बन्धी पु०एराक देश का घोड़ा ।	,,	9	155/225	
कुमैत	अ०पु० कालिम लिये हुए लाल घोड़ा, जिसकी पूँछ और अयाल के बाल काले होते हैं ।	केशव	2	553/26	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
कुर्रः	अ०पु० गधे या घोड़े का बच्चा, चाबुक प्रतोद ।	बोधा	2	54/41	
कुल्लः	अ०पु० पहाड़ की चोटी, मौन, तलवार की मूठ, कब्जा । कवि- ऊंचा घोड़ा	वृन्द	वृग्र	176/368	>कुल्ला
खासा	अ०सं०पु० एक प्रकार का सूती वस्त्र, राजभोग, राजा की सवारी का हाथी या घोड़ा ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	उदा०	
खिंग	फा०सं०पु० सफेद रंग का घोड़ा जिसके मुंह पर का पट्टा तथा टाप गुलाबी लिये श्वेत रंग का होता है।	पद्माकर		उदा०	
खुगीर	फा०सं०पु० ऊनी वस्त्र जो घोड़ों के चारजामे के नीचे लगाया जाता है ।	अज्ञात		उदा०	
		वृन्द	वृग्र	/525	
चाबुक	फा०सं०पु० कोड़ा, सोटा, कशा, प्रतोद, तीव्र, तेज निपुण, योशियार ।	बोधा		उदा०	
		देव		उदा०	
		केशव	2	554/30	
ज़ीन	फा०पु० घोड़े की पीठ पर कसी जानेवाली काठी पल्ययन	,,	2	568/23	
ज़ीनपोश	फा०पु० ज़ीन के ऊपर डालने वाला कपड़ा ।	वृन्द		136/256	
तंग	फा०वि० संकीर्ण, कोताह, अल्प दरिद्र, परेशान, दुखी, मुश्किल, अपर्याप्त, पु० जीन कसने का तसमा ।कवि- घोड़े पर सवारी करने के लिए ज़ीनकी पेटीसे कसना ।	गंग	।	/298	>तंग कस्यो

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
तबेल	अ० अस्तबल, घुड़साल, अश्वशाला ।	सोम	सो०ग्रा० प्र०र्छ०	पृ/148	तबेले
ताजियानः	फा०सं०पु० कोड़ा, चाबुक, प्रतोद, कशा ।	चन्द्रशेखर गंग	।	194	> ताजनो
ताज़ी	फा०वि० अरब की भाषा अरबी अरब का घोड़ा, शिकारी कुत्ता,	गंग	।	/422 18/122	> ताजिया
	अरब का रहनेवाला ।	पद्माकर	6	छं/41	> ताजी
नाकँदः	(फा० ना+कँदः) वि०अल्हड़ अप्रशिक्षित न निकाला गया घोड़ा ।	,,		उदा०	
पेशबन्द	फा०पु० घोड़े का जेरबन्द फा०पु० घोड़े के पेट पर कसा जानेवाला तस्मा ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	3/18	
पोयः	फा०पु० घोड़े की एक चाल हटो बचो, पोया – फा०वि० दौड़ता हुआ कवि– दौड़ पोइस – सरपट चाल ।	पद्माकर	2	226	> पोइस
फरस	अ०पु० अश्व घोड़ा	वृन्द	वृ०ग्र	179/391	
बारकसी	फा०सं०स्त्री० घोड़े का एक साज, भारवाहन बोझ ढोना	पद्माकर		उदा०	
बारगी	फा०सं०पु० घोड़ा	भूषण		उदा०	
बारगीर	फा०वि० साईस अश्वपाल, अश्व घोड़ा, ऊँट, बैल ।	मतिराम		उदा०	
मुश्क	फा०पु० कस्तुरीका, कस्तुरिका	पद्माकर	6	/97	> मुश्की
मुश्की	फा०वि० मुश्क जैसा सियाह मुश्क जैसा सुगन्धित ।				

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
लगाम	फा०स्त्री० रास बाग घोड़े के मुंह में लगाया जाने वाला ढाँचा जिसके दोनों ओर रस्से या चमड़े बँधे होते हैं । रास ।	मतिराम ३—333/201		399/373	
		नागरी	नाग्र	328/3	
समंद	फा०पु० अश्व, घोड़ा	वृन्द	वृग्र	176/368	
साइस	अ०पु० सईस घोड़े का रखवाला ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	14/48	
सादी	फा०स्त्री० लाल की जाति की एक छोटी चिड़िया, बिना पिट्‌टी की एक पूरी । पु० शिकारी घोड़ा कवि— शिकारी घोड़ा ।	वृन्द	वृग्र	178/385	
सुम	फा०पु० चौपाए का खुर घोड़े का टाप ।	पद्माकर	7	122	
रहवार	फा०सं०पु० घोड़ा, अश्व	बिहारी		उदा० 284/342	
		पद्माकर		उदा०	> रहवाल

भवन या मकान

अजाइबखानः	अ०फा०पु० विचित्रालय, अजायबघर ।	नागरी	नाग्र०	178/149	> अजायब
किला	अ०पु० दुर्ग, कोट कवि— उपमान के रूप में	गंग	1	/104	> किले
खिलवत	अ०स्त्री० एकान्त का कमरा, एकान्त स्थान ।	भूषण	1	106/361	> खिलवतखाने

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खैबर	अ०पु० अरब का एक दुर्ग जिसे हजरत अली नेजीता था । कवि– एक दरवाजा जिसे हैदर ने फतह किया था ।	रसलीन	1	201/1086	
गोशः	फा०पु० घर का कोना, एकान्त कोष,	देव	सु०वि०सु०	2:47 770	> गोसे
गुंबदः	फा०पु० इमारतों के ऊपर का गोल मंडप जो बड़ा हो गुंबज।	भिखारी	2	108/39	> गुंमज
चांदनी+महल	हवेली का नाम				
चांदनी +	हि०स्त्री० ज्योत्स्ना				
महल्ल	अ०पु० मकान स्थान अवसर हवेली, बीबी ।				
जनानः +	फा०पु० स्त्रियों जैसे स्वभाव वाला पुरुष, हिजड़ा, स्त्रियों के योग ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	2/11	> जनानेखास
खास(स)	अ०वि० विशेष, प्रधान कवि– मुख्य अन्तः पुर				
जीनः	फा०पु० सीढ़ी	ग्वाल		67/131	> जीना
दरवाजः	फा०पु० द्वार, दर	बेनीप्रवीन	न०र०त०	24/154	> दरवाजे
दरीचः	फा०पु० खिड़की झरोखा,	पजनेस		5/11	> दरीचिन
	गवाक्ष, जालार ।	ग्वाल	ग्वार	37/55	
दहलीज	फा०सं०पु० बैठक	नरोत्तमदास			
दुमंजिलः	फा०अ०पु० वह मकान जिसमें दो मालाएं हों, दो मालवाला घर, दो मंजिल ।	ग्वाल	1	117/92	> दुमाला

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
देवाल कहकह :	फा०सं०स्त्री० चीन की एक दीवार जिसके लिए प्रसिद्ध है, जो उसमें झांकता है वह अनायास बहुत हँसता है ।	तोष		1 ~~82/~~804	
निशस्तगाह	फा०स्त्री० बैठने का स्थान, दीवान खाना । कवि-बैठक आसन ।	नागरी	नाग्र	501/754	>निसस्तगाह
फर्शबन्द	अ०पु०+फा०पु० ऊँची समतल भूमि या सिमेन्ट से पक्की की हुई जमीन ।	पद्माकर	3	209	>
मकान	अ०पु० गृह, गेह, भवन, स्थान जगह ।	ग्वाल	1	57/105	
महल	अ०पु० मकान घर, स्थान, जगह	पद्माकर	3	12	
महल(ल्ल)	अवसर मौका, प्रसाद हवेली बीबी, पत्नी ।	भूषण		56/189	>महलन
		भिखारी	1	56/384	
				78/528	
		देवदत्त	1	1/57	
			3	173/24	
			4	284/34	
				290/12	
				240/176	>महलनि
		चिन्तामणि		27/2	
मेहराब	अ०स्त्री० द्वार आदि के ऊपर को अर्ध गोलाकार कटा हुआ (द्वार) कवि-घेरा ।	नागरी	नाग्र	/758	>महराब

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
रंगमहल	फा०अ०पु० बड़े लोगों के भोग-विलास का स्थान, ऐशगाह।	नागरीदास	नाग्र	437/560	
सहन	अ०सं०पु० आँगन मकान के बीच में या सामने खुला हुआ भाग ।	बेनीप्रवीण		उदा०	
सायःबान	फा०सं०पु० मकान के आगे का छप्पर या छाजन जो छाया के निमित्त बनाई जाती है ।	दूलह नागरी		उदा० उदा०/239	
हवेली	फा०स्त्री० हवाली का इमालः पक्का और बड़ा मकान भवन इमाल : अ०पु०फा० अथवा अ० में किसी शब्द के अलिफ को ए बना देना जैसे किताब कितेब, हवाली हवेली कर देना । कवि– महल, महल में रहने वाली ।	गंग	1	305	हवेली
हम्माम	अ०सं०पु० स्नानागार स्नान करने की कोठरी जो गरम कर दी जाती है । कवि–गरम पानी का स्नानागार ।	बिहारी पद्माकर	1 3 4	168/12 379 33	>हमामु >हिमाम
हरम	अ०पु० का बा खुदा का घर अन्तःपुर जनानखाना श्रेष्ठ जनों के घर की स्त्रियाँ, वह बाँदी जिसे पत्नी बना लिया गया हो ।	भूषण		46/150 53/173 112/5	>हरम >हरमै

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
हौज़	अ०पु० पानी का पक्का कुंड	ग्वाल	1	24/23	
	जो मस्जिदों या बगीचों में	पद्माकर	3	/8	>हौद
	होता है।		8	/8	

उपाधि

आज़ीमुश्शान	अ०वि० बहुत बड़ा महान विशाल, महामान्य, बड़े मर्तबेवाला।	वृन्द	वृ०ग्र०-8	114/714	
अमीरखान	अमीर अ०वि०+खान तु०पु० अमीर-धनाढ्य अध्यक्ष सरदार नेता हाकिम। खानः अध्यक्ष सरदार नेता हाकिम बहुत बड़ा और प्रतिष्ठित व्यक्ति। खान : फा०पु० खान : का लघु जो यौगिक शब्दों में व्यवहृत हो। जैसे — खानमाँ — पठान काबुली।	भूषण		149/36	
आलीजाह	अ०वि० बहुत बड़े रुतबेवाला	पद्माकर	8	27	
	महामान्य बड़े आदमी का	रसलीन	1	302/5	
	संबोधन वाक्य। कि—उच्च पदस्थ।	चन्द्रशेखर	1	2/13	
उमरा	अ०पु० अमीर का बहु० धनवान लोग।	वृन्द	9	122/45	>उमराव
				126/90	
				135/138	
				143/166	
				150/202, 225	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
उमरा				162/256	
				156/2-7	
				163/256	> उमराव
				181/418	
				186/449	
				166/281	>उमरावां
				183/424	
				303/361	
				186/448	>उमरावों
औलिया	वली का बहुवचन उत्तराधिकारी वारिस, सहायक मददगार, मित्र, दोस्त महात्मा ऋषि । केशव–पहुंचे हुए फकीर ।	भूषण		462	
		केशव	4	638/168	
		रसलीन	फु० कवि०	304/11-12	
काज़िम	अ०वि० क्रोध की बात पर क्रोध न करने वाला धैर्यवान इमाम मुसारिज उपाधि ।				
ख़िताब	अ०स्त्री० उपाधि	रसलीन	3	306/15	
जासूस	अ०पु० गुप्तचर, चारचक्षु	वृन्द	वृ्ग्र	163/256	
जुलकर्नैन	अ०पु० सम्राट् सिकन्दर की उपाधि, जिसके दोनों कंधों पर बालों की लटें पड़ी रहती थीं । जो बाद में अन्य बादशाहों के नामों के पीछे लगाइ जाने लगी ।	गंग	1	/348	>जुलकर्नै
तख्त	फा०पु०+ राज फा०पु० बड़ी चौकी राजा के बैठने की चौकी राज्य ।	पद्माकर	8	19	> तख्ततराज

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मंसब	अ०पु० पद, उहदा, बड़ी पदवी, अधिकार, कर्तव्य, फर्ज ।	देव	वै०ज०6		
मियाँ	फा०पु० मालिक पति महाशय, पहाड़ी राजपूतों की उपाधि । कवि-मुसल्मानी धर्मावलम्बी ।	रसखान	र०र०	71/50	>मियाँ
मीर	अ०पु० अमीर का लघु, अग्र-गण्य, सरआमद, नायक सरदार, आगे बढ़ जानेवाला, सैय्यदों की उपाधि । कवि-मीरमुहम्मद । वृन्द-एक पदवी।	चन्द्रशेखर वृन्द	ह०ह० 9	9/51 150/202	
मीरजा	फा०पु० शाही खानदान के लोगों की उपाधि, मुगल जाति का व्यक्ति, मीर या अमीर का लड़का, राजकुमार । वि० - कोमल ।	देव	वेज	17	
मुंशी	अ०वि० गद्य लेखक, लिपिक, वकील का मुहर्रिर, जिसकी लिखावट अच्छी हो ।	वृन्द	9	156/227	>मुनसी
साहब या साहिब	अ०पु० एक सम्मानसूचक शब्द, जो नाम के अन्तमें लगाया जाता है । स्वामी-मालिक, मित्र, दोस्त । अ०वि० अंग्रेज या बड़े अफसर के अर्थमें साहब कहते हैं ।	भिखारी	1	20/134	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
साहिबी	अ०वि० सरदारी अध्यक्षता मालिकीयत । कवि → बड़प्पन ।	भिखारी	।	20/134	
हज्रत	अ०पु० किसी बड़े व्यक्ति के नाम से पहले सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द, कोइ प्रतिष्ठित और पूज्य व्यक्ति(व्यंग्य) धूर्त चालाक पाखंडी ऐयार बदमाश ।	भूषण	।	54/180	
■ हज़ारी	फा०वि० एक हजार वाला, एक हजार से सम्बन्धित ।	वृन्द	वृग्र	175/363	
हफ्तहज़ारी	फा०पु० मुगल राजकाल की एक प्रतिष्ठित पदवी, इस पदवी का अधिकारी ।	वृन्द	वृग्र	153/216	>हफ्तहजारी

शृंगार प्रसाधन

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
अंबर	अ०सं०पु० एक प्रसिद्ध बहुमूल्य सुगंधित पदार्थ, जो मछली के मुंह से द्रवित होता है एवं दवा का काम देता है।	ग्वाल	ग्वार	117/92	
आईनः	फा०पु० दर्पण मुकुर आदर्श,	नागरी	नाग्र	505/762	>आइने
	वि० स्पष्ट, साफ ।	,,	,,		>आइना
अफ़्शाँ	फा०स्त्री० स्त्रियों के बालों अथवा गालों पर छिड़कनेवाला सुनहला या रुपहला चूर्ण । प्रत्यय–झाड़नेवाला, छिड़कनेवाला जैसे–दस्त अफ़्शा–हाथ झाड़नेवाला	,,	,,	351/3	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
इत्र	अ०पु० इत्र सुगन्ध पुष्प सार	भूषण	2	115/11	
		रसलीन		268/82	
		कृपाराम	1	5/284	
				3/130	
		वृन्द	8	186/453	
			10	226/257	
			6	44/56	
		पद्माकर	ज०वि०	122	
तह्रीर	अ०स्त्री० लिखना, हस्तलिपि लिखावट, दस्तावेज, लिखित प्रमाण, इबारत, हल्की लकीर खतः सुरमे की लकीर प्रमाण पत्र ।	पजनेस	1	33/84	>तहरीर
शंगर्फ	फा०पु० ईंगुर एक प्रसिद्ध पदार्थ ।				
संदल	अ०पु० चंदन	नागरी	नाग०।	499/749	
				759	

प्राकृतिक

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
आफ्ताब	फा०पु० सूर्य रवि दिनकर सुरज तेज ।	पद्माकर	8	78	>आफताब
		भूषण	1	134/10	>आफताप
		नागरी	नाग्र	505/762	
		वृन्द	9	156/227	
आब	फा०पु० पानी जल नीर सलिल, चमक । कवि → पानी ।	पदमाकर	8	45	
		भूषण		97/340	
		रसलीन	1	306/15	
		वृन्द	वृग्र	166/276	>आबै
		नागरी	नाग्र	116/155 158/69, 104, 502/759	

मू0शा0	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व0प0
आब्शार	फा0पु0 झरना निर्झर प्रपात	नागरी	नाग्र	504/759	>अबसारैं
आस्मान	फा0पु0 आकाश गगन फलक	भूषण	1	84/288	
			3	85/291	>आसमान
				130/1	
		गंग		8	
		वृन्द	9	159/235	> आसमाँन
गर्म	फा0वि0 तप्त, उष्ण, गर्म-तासीरवाला, तीव्र, शीघ्र, क्रुद्ध ।	ग्वाल	1	30/37	
गर्मी	फा0स्त्री0 उष्णता, हरारत, गर्मी, रोग, बुखार, जोर तीव्रता, क्रोध, गर्व, घमंड	ग्वाल	ग्वार	28/34	
चमन	फा0पु0 उद्यान आराम बाग ।	नागरी	नाग्र	500/750	>चिमन
चर्ख	फा0पु0 चक्कर आकाश पहिया कुम्हार का चाक कड़ा धनुष रहट, कुर्त्ते का गला ।	ग्वाल	1	34/49	> चरख
जंगल	फा0पु0 वन सहरा वियावान चटयल मैदान ।	केशव	2	517/30	
जुल्मत	अ0स्त्री0 अंधकार				
जुलुमात	अ0पु0 जुल्मत का बहु0 अंधेर अंधकार समूह ।	नागरी	नाग्र	/758	>जुलमात
दरख्त	फा0पु0 वृक्ष, पेड़	बोधा	2	140/8	>दरखत
				139/2	
		गंग	1	/329	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
दर्या	फा०पु० नदी, सरिता	गंग	1	/329	>दरिया
		पद्माकर	3	470	>दरियाव
			8	28	
		भूषण	1	13	
		मतिराम	1	310/69	
				361/373	
				305/41	>दरयाव
		भूषण	1	35/108	
				28/95	
				49/13	
		भिखारी	3	220/38	>दरयाव
दुनूया	अ०स्त्री० मर्त्यलोक, मृत्युलोक जगत, संसार, आलम, संसार के निवासी ।	भूषण		296	>दुनिया
		रसलीन	3	306/13	
नाफा	फा०सं०पु० कस्तूरी की थैली यह थैली कस्तूरी वाले मृगों की नाभि में मिलती है ।	ग्वाल	1	35/51	
फ़र्श	अ०पु० बिछौना बड़ी दरी, समतल, भूमि, हमवार, जमीन, सीमेंट से पक्की की हुई जमीन, जमीन की सतह, बैठने के लिए बिछाने का वस्त्र ।	पद्माकर	8	66	>फरस
		ग्वाल	1	33/46	
		पजनेस	1	29/73	
फ़लक	अ०पु० आकाश आसमान स्त्री० – सवेरे का उजाला, उषा ।	पद्माकर	3	/690	>फलका

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मँबा	अ०सं०स्त्री० सोता स्रोत	जसवंत	1		> बँबी
बर्फ़	फा० उभ० जमा हुआ पानी जो मशीन से बनाते हैं और पानी ठंडा करने के काम आता है । हिम ।	ग्वा०र०	ग्वा०र०	28/33	> बरफ
बागुच	फा० पु० छोटाबाग, फुलवारी	नागरी	नाग्रा	210/154	> बगीचा
बह्र	फा०सं०पु० समुद्र सागरसमूह	भूषण	1	22/72	> बहरि
बाग़	फा०पु० उद्यान आराम बाटिका देव गुलिस्ताँ कागज की फुलवारी लगाम, वस्त्र ।	भूषण		उदा० /23 161/42	>
हूर	अ०स्त्री० हौरा का बहु०परन्तु उर्दू और फारसी में एकवचन बोलते हैं । वह स्त्री० जिसके बाल और आँखें बहुत स्याह हों और शरीर बहुत गोरा हो । स्वर्ग में रहनेवाली सुन्दर स्त्री, स्वर्ग वधू ।	ग्वाल	1	38/58	

ओढ़ने-बिछाने के कपड़े तथा तत्सम्बन्धी सामान

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गलीचा	फा०पु० कालीन	ग्वाल	1	117/92	> गलीचन
				36/54	> गलीचे
गिलम	फा०स्त्री० ऊनी कालीन मोटा गद्दा ।	पजनेस		131/43	
		पद्माकर		उदा०	
	कवि → मोटे गद्दों पर भी	भिखारी	1	23/152	
		बोधा	2	194/9	
गुलदस्तः	फा०पु० फूलों का गुच्छा, रंग-बिरंगी फूलों का मुट्ठा पुष्पस्तबक, पत्रिका रिसाला	भिखारी	3	272/3	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गुलदस्तः	फा०पु० फूलों का गुच्छा, रंग-बिरंगी फूलों का मुट्ठा, पुष्पस्तवक, पत्रिका, रिसालः	भिखारी	3	272/3	
चराग़	फा०पु० दीप, दीपक, चरना	आलम और शेख	अ०केलि	114/169	> चिराक
चिराग़	फा०पु० दीपक				
चादर	फा०स्त्री० ओढ़ने का वस्त्र, खेमा, रावटी, तख़्ता, शीट प्रच्छाद ।	भूषण	4	138/7	> चादरै
चदरा	फा०सं०पु० नदी के बहाव का समतलरजल ।	पद्माकर			
चिक्	तु० चिलमन, पर्दा कवि-घूंघट (संभावना)	पजनेस	प०प्र०	16/36-43	के बीच
तक्यः	अ०पु० सिर के नीचे रखने का नर्म और गुदगुदा वस्त्र, उपधान, मस्नद, मुसलमानों के मुर्दे दफ्न होने का स्थान् कब्रिस्तान ।	भूषण	1	4/10	> तकिया
तकिया	फा०पु० मस्नद रोक के लिए या सहारे के लिए प्रयुक्त होने वाली पत्थर की पटिया ।	,,	,,	,,	> तकिया
तख़्त	फा०पु० बड़ी चौकी बादशाह या राजा के बैठने की चौकी राज्य राष्ट्र हुकूमत जीन (वि) बड़ा ज्येष्ठ कला । कवि - सिंहासन ।	पद्माकर भूषण केशव	6 1 2	34 58/198 521/13, 17	> तखत

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध०प०
तोशक	फा०स्त्री० पलंग पर बिछाने का रूईदार गद्दा, घर-गृहस्थी का सामान, खाने-पीने की सामग्री ।	ग्वाल	1	33/46	> तोसक
पाअंदाज	फा०पु० वह टाट या चटाई जो कमरे आदि के दरवाजे पर पाँव पोछने के लिए पड़ी रहती है ।	बिहारी	1	265	> पायंदाज
पापोश	फा०सं०पु० जूता पदत्राण	सेनापति	1	102/23	
फ़ानूस	फा०पु० लैम्प की चिमनी जिसमें से रोशनी छनती है। आलोचक, बड़ी किंदील, कंडील,	नागरी	नाग	351/7	
मशअल	अ०स्त्री० एक लम्बी लकड़ी में कपड़ा लपेट कर और उसे तेल में तर करके जलाते हैं ।	देवदत्त	3	170/7 190/29	
			4	210/10 293/26	
	यही मशअल है, मशाल ।	भिखारी	1	37/253	>मसाल
मस्नद	अ०पु० तकिया, लगाकर बैठने की जगह, वह फर्श जिस पर प्रतिष्ठित जन बैठते हैं। बड़ा तकिया गाव तकिया ।	ग्वाल	2 1	119/98 26/28	>मसलंद
		भूषण	1	35/110	> मसनंद
		वृन्द	बृग्र	181/415	>समनंद
शमआदान	अ०फा०सं०पु० जिसमें मोमबत्ती रख कर जलाते हैं ।	ग्वाल	2	119/98	
ज़हाज़	अ०पु० समुद्र मे चलनेवाली बहुत बड़ी नाव, पोत, वाहिल ।	भूषण	1	47/154 18/61	
		मतिराम	2	342/257, 375/71. 357/353 399/368	

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
ज़हाज़	(क्रमशः)	देव	3	196/28	
		केशव	2	605/30	
			1	211/398	
बादवान	फा०पु० जहाज में लगाया जानेवाला पर्दा जिसमें हवा भरकर जहाज चलता है, पोतपट, मरुत्पट, पाल	पजनेस	1	37/95	> बादबानन
लँगर	फा०पु० अपाहिजों व कंगालों को प्रतिदिन दिया जानेवाला भोजन, समुद्र में जहाज को ठहराने वाला भारी बोझ ।	वृन्द	बृ०ग्रं०	177/380	

शिष्टाचार के शब्द

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
बँदगी	फा०स्त्री० प्रणाम, सलाम, पूजा इबादत, आज्ञा पालन ।	भूषण	2	116/15	
मेज़बानी	फा०स्त्री० मेहमानदारी, भोज दावत । (मेजवान फा० आतिथेय करने वाला)	बोधा	2	225/4 196/27	
तस्लीम	अ०स्त्री० सौंपना, सलाम करना कबूल करना, आज्ञा का पालन करना ।	केशव	2	501/46-52	
		वृन्द	बृ०ग्रं०।	275/129	
तुज़ुक	तु०पु० सज्जा, सजावट, प्रबंध व्यवस्था, सैन्य सज्जा राजसभा, की सजावट कानून, अपने कलम से लिखी हुई अपनी जीवनी, आत्म-चरित । कवि-अदब ।	भूषण	1	58/198 13/38	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ख०प०
तौर	अ०पु० व्यवहार, चाल-चलन	बोधा		उदा०	
सला	अ०स्त्री० दावत के लिए दिये जाने वाले निमंत्रण । कवि- तौर तरीका ।	नागरी	6	105/151	

दार प्रत्यय

दार प्रत्यय

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
दार	फा०स्त्री० सूली; फाँसी, प्रत्यय– वाला जैसे-हिस्सेदार				
आबदार	फा० वि० चमकदार, पानीदार, धारदार, पानी पिलानेवाला।	पजनेस	प०प्र०	46/116	
अमलदारी	अ०फा० स्त्री० शासन सत्ता, राज्याधिकार । कवि– राज्य के लोग सेवक ।	नागरी	।	86/21	> अमलदार
ऐबदार	अ०फा०वि० दोषयुक्त	गंग	।	13	
कजदार	कज–फा०वि०+दार प्रत्यय, कज–टेढ़ा । कवि– टेढ़ा ।	नागरी	ना०ग्र	178/149 506/763	
खबरदार	अ०फा०वि० सचेत सतर्क सावधान चेतावनी देने का शब्द, होशयार ।	बोधा वृन्द	2 ।।	45/23 266/38 272/99	
गुजरदार					
गुलदार[1]	वि०फा० गुल+दार – फूल दार, बेल-बूटे वाला ।	चन्द्रशेखर		उदा०	
घेरदार[2]	हि०+फा०– घेर मण्डल परिधि ।	ग्वाल		58/107	
चवरदार	हि०+फा० चँवर डोलानेवाला सेवक ।				

1. गँज गलीमन के गिलमैं गुलदार
   गलीचन की छवि छावत ।। – चन्द्रशेखर
2. घेरदार पाइचो इजार कीमखापी ।। – ग्वाल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्व०प०
चोबदार	फा०पु० लकड़ी लेकर आगे चलने वाला व्यक्ति प्रतिहारी द्वारपाल । कवि—छड़ीबरदार, आसाबरदार ।	पद्माकर	6	21	> चोपदारौ
छड़ीदार[1,2]	हि० छड़ीदार, चोबदार ।	भूषण	1	13/38	> छरीदार
छत्रबरदार →	हि०				
जमादार	पु० फा० सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान	ग्वाल	ग्वा०र०	32/42	
जमानतदार	अ० फा० पु० प्रतिभू जामिन जमानती जमानत लेनेवाला	बोधा	2	13त/3	> जमान्दार
ज़री	फा० वि० + दार फा० स्त्री०—सोने का बना हुआ, स्वर्णमय, जरीवाला, जरी — फा० वि० सोने-चाँदी के तार जिन पर सुनहला मुलम्मा हो । गोटा किनारी का कपड़ा ।	पजनेस	प०प्र०	35/88	> जरीदार
ज़ेबादार	फा० वि० सुन्दर दिलकश, शोभनीय, सूक्ष्म । कवि — शोभावाला, या सुन्दर वाला	पजनेस	प०प्र०	10/24	> जेबदार
ढालदार	हि० + फा - ढाल वाला				
तब्लदार	फा० पु० तबला बजानेवाला तब्लः फा० पु० संदूकची पिटारी खाल मढा एक बाजा प्रसिद्ध बाजा, तबला । तब्लः फा० पु० दुन्दुभि, भेरी, नक्कारा ।	वृन्द	वृ०ग्र०	156/227	

1. आये दरबार बिललाने छरीदार देखि
   जापता करन लरे नेक हू न मनके ।। — भूषण

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
तबीयत + दार	अ०स्त्री० धर्म, आदत, मन फा० दिल, चित्त । बोधा – रसिक– समझदार, भावुक ।	बोधा	1	6/33	> तबियेदार
तरहदार	फा०वि० सुन्दर आकृतिवाले अच्छी बनावट के ।	गंग	1	359	
तेजदार	तेज फा०वि० जिसमें धारहो,	,,		31	
	तीव्र प्रचंड, शीघ्र, गुस्से होशियार, चालाक, दक्ष, कुशल, उत्साहपूर्ण, प्रतिभा-शाली, बुद्धिमान, तत्पर, दूर तक देखनेवाली नजर, महँगा । इस काव्य में अन्य बहुत से दार प्रत्यय वाले शब्द आये हुए हैं, जैसे – झोकदार, फेंकदार, रोकदार, तेजदार, नोकदार, सूबेदार, हवालादार, जमादार आदि ।	ग्वाल	1	32/42	
दग़ादार	दगावाला, छल ठगी मक्कारी	पद्माकर	3	522	
	कवि–विश्वासघाती, बोधा–प्रिय	बोधा	1	11/64	
			2	57/11	
दाबदार	दाब–हि०–रोब, रोबवाला, इस छन्द में अड़दार व गड़दार जैसे शब्द भी आये हैं ।	भूषण	1	10/34	

ताव गीर तरू तोर तरून तरहदार तरायल सहित

मैगल धाइयत है ।। – गंग

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्य०प०
दावादार	अ०+फा० दावा करने वाले मू०श०—दा'वीदार अ०फा०पु० दावा करने वाला, अपना अधिकार जताने वाला, वादी मुद्दई ।	पद्माकर	3	709	
दिमाग़दार[1]	अ०फा०पु० अभिमानी, मग़रूर बुद्धिवर्धक मस्तिष्क को शीतल रखनेवाला । दिमाग बढ़ाने-वाला, अभिमानी ।	ग्वाल	"	53/95	>दिमाकदार
दिलदार	फा०वि० प्यारा प्रेमिका माशूक़	बोधा	1	6/30	
				12/68	
			2	54/33	
		नागरी	8	500/751	
			"	505/762	
		गंग	1	243	
दुनूयादार	अ०फा०वि० संसार के मोह में लिप्त, घर गृहस्थीवाला, अवसरवादी ।	नागरी	ना०ग्र	508/4	>दुनियाँदार
पेचदार	फा०वि० जिसमें पेंच हो, जिसमें बल हो, जटिल, उलझा हुआ । कवि-घुंघराले	नागरी	8	236/34	
बलदार[2]	वि०फा० शिकनदार, टेढे, घुंघराले ।	ग्वाल			

1. आई मैं अकेली या कलिंदजा के कूलन पै
   न्हाई लाय केसन दिमाकदार सोधे यें ।। – ग्वाल 53/95 (वर्तमान गुप्ता)
2. ग्वाल कवि विमल बिछात पै विसुधि सोई
   बिछुरे सुबार बलदार चित्त चोरे से ।। – ग्वाल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
फोंकदार	फोक — हि०पु० तीर का पिछला छोर, वस्त्र की फटन	गँग		31	
फौजदार	फ़ौज अ०स्त्री० सेना बल, लश्कर फ़ौज़ - अ० कल्याण				
बरछीदार					
मनसबदार	अ०पु० अधिकारी, ओहदेदार	मतिराम	ल०ल०	320/122	
		भूषण	1	56/189	
राहदारी[1]	फा०सं०स्त्री० चौकीदारी सड़क का कर, चुंगी महसूल	ग्वाल	1		
शिक़दार	अ०फा०पु० किसी क्षेत्रविशेष का पदाधिकारी ।	बोधा	2	150/12	>सिकदार
सरदार	फा०पु० नायक अध्यक्ष स्वामी पति ।	केशव		523/50	
				526/17	
				536/43	
				546/62	
		वृन्द	11	276/136	
				277/144	>सिरदार
				289/236	
		वृन्द		185/433, 186/446	
				189/473, 193/510	
				202/567, 153/216	
				167/286, 162/256	
				165/265, 160/245	
		सोमनाथ	1	28	
		मतिराम	2	302/26	

1. ग्वालन ते गोपन ते गहकि गहकि मिले
   गली मैं चली है भली बात राहदारी की ।। — ग्वाल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
सितारेदार	सितारः फा०पु० तारा, ग्रह, भाग्य, तक्दीर । कवि — सलमा-सितारे से टकी ।	नागरीदास	7	158/104	
सुर्खदार[1]	फा०वि० लाल रंग वाले	ग्वाल		49/85 उदा०	>सरोकदार
सूबःदार	अ०फा०पु० सूबे का शासक गवर्नर राज्यपाल सिपाही का एक बड़ा ओहदः सूबः प्रान्त, प्रदेश ।	भूषण गंग	1	93/323	
हयादार[2]	अ०फा०वि० जिसमें लज्जा हो लज्जाशील, लज्जाशालीन ।	भूषण	1	115/10	> हयादारी
हवालादार[2]		गंग		51	

1. सुर्खदार — नूर भरे नमित न मुदन न मुद नैन
नागर नवेली के नसीले नैन नोकदार ।
- - - - - - - - - - - - - थोकदार ।
- - - - - - - - - - - - - सरोकदार ।
- - - - - - - - - - - - - सोकदार ।। —ग्वाल 49/85.

2. हवालादार — सूबेदार मोर बग दादुर हवालादार
जमादार औ तकुर पिक मन भायो है ।।
भूपती उमंगी कामदेव जोर जंगी
ज्ञान मुजरा को पावस फिरंगी बन आयो है ।। — ग्वाल

बरदार प्रत्यय

बरदार प्रत्यय

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	व्यु०प०
बरदार[1]	फा० प्रत्यय० उठानेवाला जैसे- नाजबरदार नाज उठानेवाला । (सेना०- बरदार, जूता उठानेवाला)				
गुर्जबरदार[2]	फा०वि० गुर्ज से लड़नेवाला गुर्ज रखने वाला, गदाधर ।	भूषण		116/16	> गुर्जबरदार
चवरबरदार	चँवर हि०पु० सुरगाय की पूँछ का गुच्छा जिसे मूठ में डाल कर देवमूर्तियों या राजाओं पर डुलाते हैं । कलंगी, झालर कवि- चँवर लेकर चलनेवाला या डुलाने वाला ।	वृन्द		156/227	
छत्रबरदार	छत्र- सं०पु० छाता राजचिह्न के रूप में राजाओं के ऊपर लगने वाला छाता । कवि- छाता, उठानेवाला ।				
छड़ीबरदार	छड़ी- हि०स्त्री० पतली लकड़ी हाथ में लेकर चलने वाली, पतली लकड़ी चोबदार ।				
ढालबरदार	ढाल- हि० वह जगह जो बराबर नीचे होती चली गई हो उतार, ढंग तरीका सं० थाली की तरह का एक अस्त्र जिसे तलवार आदि का वार रोकने का काम लिया जाता है । ढाल उठाने या ढोने वाला या ढाल से सुसज्जित ।				

1. पूरी गज गति बरदार है सरस अति उपमा सुमति
   सेनापति बनि आइ है ।। - सेनापति 6/17
   सेनापति तिरधार पाइपोस बरदार हौ तो राजा रामचन्द्र के दरबार को ।।-सेनापति 102/23
2. कैयक हजार जहाँ गुर्ज बरदार ठाढे
   करिक हुस्यार पकरि समाज की ।। - भूषण 116/16.

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
तरवार बरदार	तरवार - हि० तलवार, तलवार उठाने वाला ।	भूषण		148/36	
तेगबरदार[1]	तेग- अ०स्त्री० तलवार			"	
पंखबरदार	पंख- हि०पु० पर, डैना कवि- पंखा उठानेवाला ।	,,		"	
बरछीबरदार	बरछा- हि०पु० फेंक कर मारने का शस्त्र, भाला यह लंबे डंडे में नुकीला चपटा फल लगा होता है और यदि यह फल चपटा और चौड़ा न होकर यदि सँकरा व गोल नुकीला हो तो उसे बरछी कहते हैं । भाला के प्रकार का शस्त्र ।				

1. तेगबरदार स्याह पंख बरदार स्याह ।
   निखिल नकीब स्याह बोल बिराह को ।। - भूषण

जादः प्रत्यय

जादः प्रत्यय

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	द्वपु०
ज़ादः	फा०वि० जन्मा हुआ बेटा फा०पु० पगदंडी, मार्ग, अ०स्त्री० चोटी, घुघराले बाल				
जाद	फा०पु० खाद्या सामग्री, प्रत्यय- उत्पन्न- जैसे खानः जाद - फा०वि० घर में उत्पन्न, घर का पैदा हुआ, घर की लौंडी से उत्पन्न दासीपुत्र । इस शब्द का प्रयोग वक्ता अपने लिये भी करता है ।				
अमीरजादः	अ०फा०वि० अमीर का लड़का धनीपुत्र, आर्यपुत्र, शरीफ़जादा	ठाकुर	।	27/75	>अमीरजादे
असील	अ०वि० कुलीन, शरीफ, खरा, उत्तम, अच्छे लोहे का अस्त्र कवि- कुलीन या शरीफ का लड़का ।	"	"	"	>असील जादे
खानः जाद	फा०वि० घर में उत्पन्न घर का पैदा हुआ घर की लौंडी से उत्पन्न दासी पुत्र इस शब्द का प्रयोग वक्ता अपने लिये भी करता है ।				
पीरजादः	फा०पु० पीर का लड़का धर्मगुरु का बेटा ।	ठाकुर		27/75	
फ़क़ीर	अ०वि० भिक्षुक, मंगता, भिखमंगा, संन्यासी, आसक्त आशिक, नम्रता प्रदर्शन के लिए वक्ता अपने को भी कहता है ।	"		"	

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
मीरजादे					
मीरजादः	फा०पु० मीर का लड़का शहजादा ।	ठाकुर		27/75	
मीर	अ०पु० अमीर का लघु रूप, अग्रगण्य, सरआमद, अध्यक्ष, नायक, सरदार, आगे बढ़ जाने वाला सैय्यदों की उपाधि ।				
राव+जादे	राव सं० राजा, सरदार, राय राय – हि० राजा सरदार भाटों की उपाधि, वि० बड़ा, बढ़िया, स्त्री०फा० सलाह, सम्मति । कवि– राजा का लड़का ।	,,		,,	
राइजादे	हि०पु० छोटा राजा, सरदार, वि०हि० उत्तम श्रेष्ठ । कवि – छोटे राजा का लड़का	,,		,,	
शहजादः	फा०पु० राजकुमार , राजपुत्र बादशाह का लड़का, युवराज वली, अहृद ।	,,		,,	
सियाह	फा०वि० कृष्ण असित काला				
सियाह+जादः					
हराम	अ० जिसका खान-पान धर्म में वर्जित हो, अविहित व्यभिचार, पर स्त्री अथवा पर पुरुष गमन जिना प्रतिष्ठित, पूज्य, मुकद्दस				
हरामजादः	हराम का बच्चा, दोगला जारज वर्णसंकर धूर्त खबीस ।	ठाकुर		27/75	

जादः को स्त्री० बनाकर बने शब्द

सेखजादी

शेख़ी	– तु० स्त्री० डींग, शान
शैख	– अ० पु० बूढ़ा, वृद्ध, अध्यक्ष, सरदार, प्रतिष्ठित, श्रेष्ठ, बुजुर्ग, कुल का नायक, कवि– सरदार की लड़की ।
शह	– फा० पु० शाह का लघु रूप
जादी	– शाह, फा० पु०–बादशाह, राजा, शासक, नृप । कवि– राजकुमारी ।
मालजादी	– अ० फा० स्त्री० वेश्या, पुत्री, व्यभिचारिणी, एक गाली ।

वृन्द 15 350/146

गर प्रत्यय

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गर	फा०प्रत्यय बनाने वाला कारीगर				
कारीगर	फा०वि० शिल्पकार, शिल्पी,	ग्वाल		64/128	
	दस्तकार, हुनरमंद, कुशल,	ठाकुर	1	32/90	
	छली, धूर्त ।				
बोजागर	फा०पु० (बोजः-शराब)	रहीम			
	चावल से बनी हुई शराब				
	बेचने वाला ।				
सितमगर	फा० वि० सितम करनेवाला	नागरी	8	505/762	
	अत्याचारी ।				

गार प्रत्यय

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
गार	अ०प्रत्यय – करनेवाला जैसे खिदमतगार, सेवा करने वाला ।				
गुनहगार	गुनाहगार फा०वि०पापी दोषी, अपराधी ।	जसवंत	ज०ग्र० 9	4	
रोजगार	फा०पु० उद्योग, व्यवसाय, समय, युग ।	भिखारी	1	65/455	
गीर	फा०प्रत्यय पकड़नेवाला जैसे – माहीगीर– मछली पकड़नेवाला, काटनेवाला, जैसे –गुलगीर, चिराग का गुल काटने वाला ।				
आलमगीर	अ०फा०वि० विश्वव्यापी, संसार में फैला हुआ, विश्वविजयी, संसार को जीतने वाला ।	भूषण			
दामनगीर	फा०वि० दामन पकड़नेवाला दामन पकड़ कर रोकने वाला	भूषण बोधा		60/206 उदा०	
दस्तगीर	फा०वि० हाथ पकड़ कर सहायता देने वाला, अर्थात् सहायक	ब्रजवासी रसलीन	8 3	507/766 306/14	

खानः शब्द जोड़कर बने शब्द

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
खानः	फा०पु० गृह, गेह, घर,	केशव	2	507/15	>खान
	संदूक आदि का खाना जन्म		4	625/65	
	कुंडली आदि का घर, छेद, विवर ।	पद्माकर	3	260	>खाने
अदलखाने	अ०वि०फा० – तर्कयुक्त संगतियुक्त + गृह कवि– न्यायालय, अदालत	भिखारी	1	76/519	>अदलखाने
खिलवतखाने	एकान्त कमरा	भूषण	1	493 106/361	
खसखानः	फा०पु० खस का मकान, झोपड़ा ।	,,	1	337/338	> ख़सखाने
ख़स	फा०स्त्री० सूखी घास, एक सुगन्धित जड़, उशीर, पूस	नागरी	ना०प्र०	503/759	
		पद्माकर	3	260	
गुसुल+खानः	गुसुल अ०पु०+खाना फा० स्नानघर ।				
गुस्लखानाः	अ०फा०पु० नहाने का स्थान स्नानगृह ।	भूषण ,,	1 शि०भू०	191 10/34	
तहखानः	फा०पु०जमीन दोज़, मकान, तलगृह, अधोगृह, भूगर्भ, भूगेह ।	भूषण	1	105/361	> तहखाने
तोपखानः	तु०फा०वह सेना जो बाँधे चलती है, तोप रखने का स्थान ।	वृन्द	वृ०ग्र०	161/249	> तोपखाँने

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	ध्व०प०
तोशक्खानः	फा०पु० वह स्थान जहाँ खाने-पीने का सामान रहता है । तोशः खानः इसका अप भ्रंश है ।	वृन्द	वृ०ग्र	166/280	> तोषपखाने
तोशः खानः	फा०पु० कवि-वस्त्रों तथा आभूषणों का भंडार ।	गंग	।	उदा० 305	> तोसेखाने
पेशखानः	फा०पु० घर गिरस्ती का सामान	वृन्द	वृ०ग्र	166/278	> पेसखाने
फ़ीलखानः	फा०पु० हस्तिशाला हाथीखाना	गंग	ग्रंथ	305	
		भूषण	।	105/36	
शुतुरखानः	फा०पु० उष्ट्रशाला	,,	।	~~[illegible]~~ 35	> सुतुरखाने
सिलहखान	अ०फा०पु० जहाँ हथियार रहते हों । शस्त्रागार ।	भूषण	।	105/361	सिलहखाने
हरमखानः	अ०फा०पु० अन्तपुर बड़े आदिमियों का जनान-खाना	गंग भूषण	। ।	305 105/361	> हुरमखाने

1. खड्गी खजाने खरगोस खिलवत-खाने
   खीसै खोले खसखाने खांसत खबीस है ।। → भूषण 106/361
   तोसे-खाने फील-खाने खजाने हुरमन्खाने
   खाने-खाने खबर नबाब खाना खान की ।। → गंग
   सुकर सिलहह-खाने फकत करीस है ।। → 105/361
   हिरन हरमखाने स्याही है सुतुर-खाने
   पाढे पील-खाने औ करंज खाने कीस है ।। → भूषण 105/361

अर्थ

(1) अर्थ संकोच

(2) अर्थ विस्तार या प्रसार

(3) अर्थ परिवर्तन ।

अर्थ-संकोच

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	प्रचलित अर्थ
अंगूर	फा०पु० एक सुप्रसिद्ध फल, द्राक्षा, भरते हुए जख्म के लाल दाने ।	बिहारी	1	3/373	एक फल
आहू	फा०पु० सं० मृग, हरिण, छिद्र, दोष, ऐब । कवि – मृग ।	पद्माकर	6	/121	मृग, हरिण
उम्दः	अ०वि० उत्तम श्रेष्ठ बढ़िया सुन्दर, मनोरम, विश्वास पात्र	ग्वाल	1	117/92	श्रेष्ठ
कुसूर	अ०पु० हवेली दोष, त्रुटि, कमी ।	बोधा	2	213/36	दोष
खलीकः	अ०पु० जनता, संसार में उत्पन्न हर वस्तु, स्वभाव ।	चन्द्र	ह०ह०	30/197	संसार
खसम	अ०पु० शत्रु, बैरी, दुश्मन, स्वामी, मालिक, पति ।	पद्माकर केशव	3	588 519/52	पति
खातिर	अ० स्त्री० वह विचार जो मन में उत्पन्न हो, हृदय, मन, सम्मान, सत्कार, लिहाज, आदर लिये वास्ते ।	ग्वाल	1	48/81	लिये, वास्ते
खुश	फा०वि० प्रसन्न मुबारक सुन्दर प्रिय दर्शन पवित्र, नेक, उत्तम नेक, उत्तम ।	तोष नागरी	सु०निधि	126/102 499/749	प्रसन्न
खैर	अ०स्त्री० कुशल मंगल शुभ, उपकार पुण्य प्रदान बख्शिश, अव्य(अस्तु)	आलम शेख	आलम केलि	115/272	२
गर्द	फा०स्त्री० रज धूलि खाक नगर शहर सूरज खेद रंज लाभ वफा (प्रत्य) फिरनेवाला जैसे जहाँ गर्द–संसार में फिरनेवाला।				खाक, धूल

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/सं०	प्रचलित अर्थ
गश	फा०वि० सुन्दर, हसीन, नाज से इठला कर चलने वाला(वाली) मूर्च्छित, बेहोश (बेहोशी)।	रसलीन	1	75/376	> बेहोश
जबूरः	फा०पु० छोटी तोप, बाण का फल, एक औजार, शहद की मक्खी ।	वृन्द	19	163/256, 190/482	तोप लादने की गाड़ी ।
जा'फर	अ०पु० नहर, नदी, खरबूजा, चौदह इमामों में से एक ।	रसलीन	3	304/11	चौदह इमाम में से एक ।
तख़्त	फा०पु० बड़ी चौकी, बादशाह या राजा के बैठने की चौकी राज्य, राष्ट्र, हुकूमत, जीन वि० बड़ा ज्येष्ठ कलां ।	पद्मा भूषण केशव	6 1 2	34 58/198 521/17,13	हुकूमत, राष्ट्र
तोशक	फा० स्त्री० पलंग पर बिछाने का रुईदार गद्दा, घर-गृहस्थी का सामान, खाने-पीने की सामग्री ।	ग्वाल	ग्वार	33/46	> गद्दा
दाम	फा०पु० फंदा, जाल, जंगली चौपाये, जो हिंसक न हो दवाओं की एक तौल एक रुपये का चालीसवां भाग, एक पैसे ।	ठाकुर	ठारा	25/69	मूल्य
दामन	फा०पु० कुरते या अंगरखे का वह भाग जो लटकता रहता है, अंचल, मैदान, समतल भूमि ।	तोष भिखारी	 1	 21/241	> आँचल

मू०शा०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	प्रचलित अर्थ
नक़्शः	अ०पु० आकृति, मुखाकृति, शैली, सजधज, हुलया, मानचित्र, हालत, सांचा, रेखाचित्र, नमूना, छवि ।	गंग	1	/243	चित्र
निगार	फा०पु० प्रतिमा, चित्र, महबूब, प्रेमिका, हाथ-पांव पर मेंहदी से बनाये चित्र । प्रत्यय– चित्रित जैसे जर निगार– स्वर्ण चित्रित ।	गंग	1	/243	हसीन, सुन्दर
पज़ाव :	फा०पु० ईंट या चूना पकाने का भट्ठा, उर्दू में केवल ईंट के भट्ठे के लिए आता है ।	भिखारीदास	2	158/314	ईंट पकाने का भट्ठा
परवानः	फा०पु० पतंगा, आदेश पत्र, फर्मान, राजादेश, भक्त, मुग्ध वह कुत्ते बराबर जन्तु जो सिंह के आगे-आगे चलता है ।	आलम और शेख़	आलमकेलि	114/169	मुग्ध
पेशकश	फा०स्त्री० पुरस्कार, भेंट, नजराना, प्रार्थना, इल्तिजा, खिराज (लगान)	भूषण		71/242	भेंट
फ़ानूस	फा०पु० लैम्प की चिमनी, जिसमें से रोशनी छनती है । आलोचक, बड़ी किंदिल, कंडील ।	नागरी	ना०ग्र०	351/7	कंडील
बहाल	फा०सं०पु० आनन्द, प्रमोद, उदण्ड, अनुशासन, हीन ।	रघुराज	आनन्द	.	आनन्द

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	प्रचलित अर्थ
बेश	फा०वि० अधिक जियादः मीठा, तेलिया, सिंधिया ।	पद्माकर	6	11	अत्यन्त
बशारत	अ०स्त्री० शुभ-संवाद, खुशखबरी	नागरी	नाग्र	/762	संदेश
मज्लिस	अ०स्त्री० सभा, महफिल, करबला के शहीदों की शोकसभा ।	मतिराम		362/378	महफिल
मदद	अ०स्त्री० सहायता, पक्षपात, हिमायत, आश्रम, राजमजूरों का काम ।	वृन्द	वृग्र	167/285	सहायता
मुलम्मा	अ०पु० गिलिट किया हुआ चाँदी या सोने का पानी चढ़ाया हुआ, कलई पालिश ।	नागरी	नाग्र	167/97	कलई
रब(ब्ब)	अ०पु० स्वामी पति मालिक बड़ा भाई अभिभावक, सरपरस्त, ईश्वर परमात्मा, खुदा ।	भूषण		118/20	खुदा
रवा	फा०वि० उचित वाजिब विहित हलाल (प्रत्य) पूरा करनेवाला जैसे हाजत रवा-- इच्छा पूरी करनेवाला	नागरी	नाग्र	505/762	जायज उचित
राह	फा०स्त्री० मार्ग पंथ तरीका यत्न प्रतीक्षा, आशा, उम्मीद ।	आलम और शेख	आ०केलि	115/271	रास्ता
रिंद	फा०पु० शराबी, रसिया, निश्चित लंपट, मस्त, धार्मिक बन्धन से मुक्त ।	नागरी	नाग्र	189/177	मतवाला
रिसाल	अ०पु० वह पत्रिका जो पुस्तक के रूप में किसी नियत समय पर प्रकाशित हो किसी विषय पर छोटी-सी पुस्तक, सैनिक की टुकड़ी, सवारों का दस्ता ।	भूषण	1	33/103	सैनिक की टुकड़ी

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	प्रचलित अर्थ
रुखसत	अ०स्त्री० विदा विदाई आज्ञा फुर्सत विश्रामावकाश, ती तील, दुल्हन, का दूल्हे के घर जाना।	वृन्द	वृ०ग्र	173/334	विदा
लंगर	फा०सं०पु० लंगोट, वह भोजन जो सदा गरीबों में बाँटा जाता है, सदावर्त, डीठ, बदमाश अवरोध ।	सेनापति वृन्द		15/45 133/128	लंगोट, सदावर्त
लश्कर	फा०पु० सेना, फौज, भीड़ समूह।	गंग	1	313	
शबीह	फा०स्त्री० चित्र तस्वीर, छायाचित्र फोटो, सदृश, समान, मिस्ल	~~बिहारी~~ पद्माकर	1 3	 513	चित्र
शादी	फा०स्त्री० हर्ष आनन्द, विवाह व्याह ।	नागरी	ना०ग्र	127/7	प्रसन्नता
शिकस्त	फा०स्त्री० पराजय, हार, टूट फूट, शिकस्तमी, एक लिखावट, घसीट ।	पद्माकर	7	/77	हार
शोर	फा०वि० खारी नमकीन कोला हल, नामवरी, पागलपन ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	25/166 24/160	कोलाहल
सनद	अ०स्त्री० प्रमाण, प्रमाण-पत्र, आश्रय, विश्वास, नमूना, आदर्श, उदा० उपाधि । अ०वि० प्रमाणित ।	बेनीप्रवीण	न०र०त०	11/59	प्रमाण
सरशार	फा०वि० ऊपर तक भरा हुआ परिपूर्ण छलकता हुआ उन्मत, मस्त ।	नागरी	ना०ग्र	500/751	मदमस्त

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	प्रचलित अर्थ
सादः	फा०वि० कोरा, बेदाग, भोला, भाला, निर्मल, साफ दिल, मूर्ख, बे लिखा कागज या बिना छपा या कढ़ा कागज ।	नागरी	नाग्र	508/5	कोरा
सुन्नत	अ०स्त्री० नियम, पद्धति, तरीका, मार्ग, रास्ता, स्वभाव आदत, खलः, मुसलमानी ।	भूषण		118/20-21	खतनः
हसन (सीन)	अ०पु० गणना, शुमार, अनुमान, अंदाज, श्रेष्ठता, बड़ाई ।	नागरी	नाग्र	499/648	
बा	फा०उप० शब्द शुरूआत में आकर साथ वाला पूर्ण आदि का अर्थ देता है जैसे बा आवो ताब – चमक दमक के साथ बा ईमान – ईमान वाला बा असर – प्रभावपूर्ण ।				समादृत
हुजूर	अ०पु० उपस्थिति, मौजूदगी, साक्षात्, आमना-सामना, संबोधन के लिए एक आदर-सूचक शब्द श्रीमान ।	चन्द्रशेखर	ह०ह०	17/103 33/223 37/264	श्रीमान्

अर्थ-प्रसार

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं	अर्थ-प्रसार
अंकुस	फा०पु० अंकुश, हाथी चलाने का काँटा।	वृन्द	वृग्र	83/320	हाथी को वश में करना ।
अंकुस(हि०) रोक ।					
अदल	अ०पु० न्याय, इंसाफ, न्याय कर्ता, मुंसिफ । सं० बिना पत्ते का, बिना फौज या दल का ।	भूषण वृन्द दूलह	4 9	153/53 156/227 उदा०	न्याय –बिना दल के –बिना फौज के
अमलः	अ०पु० कर्मचारी वर्ग किसी संस्था या कार्यालय के काम करनेवाले लोग ।	पद्माकर भूषण	हि०ब० 5 1	17 29 26/87	शासन कार्य
अमल	अ०पु० कार्य, लोकाचार, तर्ज अमल संसार में अच्छा बुरा किया हुआ काम, कृत्य, कोइ जप या वजीफा ।	मतिराम भिखारी नागरी	1 1 नाग्र	261/264 52/361 200/206 358/363	 नशा ह शासन नशा
अमल	अ०स्त्री० आशा, आस, उम्मीद	वृन्द	वृग्र	164/261	पालन करना व्यवहार
इश्क-तूदः	– इश्क=प्रेम तूद= मिट्टी का ढेर, अंबार राशि, समूह, कवि–प्रेम से परितृप्त ।	बोधा गंग	2 1	122/21 333	 तोप
कमान	फा०स्त्री० धनुष, तीर चलाने का यंत्र, कौस ।	भिखारी केशव भूषण गंग	3 1	255/55 38 118/39 28	धनुष तोप तोप धनुष
खुशी	फा०स्त्री० हर्ष आनन्द रुचि बच्चे की पैदाइश, बालजन्म, स्वीकृति, खुश ।	बोधा नागरी	2 7	128/70 128/10	हर्ष

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	अर्थ प्रसार
ग़र्क़	अ०वि० डूबा हुआ, निमग्न,	पद्माकर	6	78	सिर से पैर तक डूब गये ।
			8	37	पानी में डूब जाना ।
ग़र्क़	अ०पु० पानी में डूबना, निमज्जन ।				
निशान	फा०पु० अलामत, धब्बा,	भूषण	112/3		डंका
	दाग, खोज, पता, सुराग, झंडा-पताका ।			118/20	
बाज़ी	फा०स्त्री० कौतुहल, खेल	देव	सु०	381	खेल
	शर्तपरा, धोखा ।		देमाप्र	4:57	चालाकी
			,,	6:20	घोड़ा
मुआफ़िक़[1]	अ०वि० योग्य, लायक,	पद्माकर		उदा०	योग्य
	अनुकूल, मित्र, दोस्त ।	वृन्द	8	106/619	मेल, संघटन
यारी	फा०स्त्री० मित्रता, (यारि-बिहारी)	बिहारी		/87	प्रियतमा

1. देखिबे ही माफक है, माफक सरीर की ।। – पद्माकर ।

अर्थ-परिवर्तन

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	अर्थ-परिवर्तन
अनीस	अ०वि० मित्र, सखा	नागरीदास	ना०ग्र		सेनापति स्वामीकार्तिकेय
अरबी	अ०वि० अरब का निवासी अरबी भाषा ।	पद्माकर	हि०बा०	35	घोड़ा ताशा नामक बाजा ।
अहदी	अ०वि० बहुत ही आलसी बड़ा ही काहिल ।	केशव	2	495/20	मुगल काल के कर्मचारी जो बड़ा काम पड़ने पर कहीं जाते हैं ।
आमेज	फ०प्र० मिलाने वाला, जैसे रंग आमेज रंग मिलानेवाला कवि— युक्त, सना हुआ ।	देव	सु०सा०त०	439	युक्त, सना हुआ
खवास	अ०पु० खास का बहु० मुख्य लोग, गुण, धर्म, विशेषता	भूषण	1	90/312	नौकर
		केशव	2	525/13	
		मतिराम	1	383/180	
		ग्वाल			दासी
खास(स)	अ०वि० विशेष मुख्य प्रधान	पद्माकर	3	51/89	भली-भांति
खुदादाद	फा०वि० खुदा का दिया हुआ, ईश्वरदत्त ।	रसलीन	1	6/18	ईश्वर
गंजबख्श	फा०वि० खजाना बाँटने या देने वाला, बहुत बड़ा दाता एक मुसलमान ऋषि की उपाधि कवि —	सोमनाथ	सो०ग्र	पृ/155	खजाना लुटाने वाला
जबर[1]	फा०क्रि० जोर दिखाना, बल प्रदर्शित करना ।	रघुनाथ		उं०वा०	उत्पन्न हुई

1. सोच बड़े मन में उपज्यौ तन में बड़ी विह्वलता जबर्यो ।। — रघुनाथ ।

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	अर्थ-परिवर्तन
जिहाज़	अ०पु० ब्याह का दहेज, मृतक का सामान, कफ्न आदि, यात्रा की सामग्री ।	वृन्द	वृग्र	179/388	जीहाजधानी जीहाज खाने वाली –अर्थात् कटारी ।
ज़िहार	अ०पु० कटि देश	सोम	सोग्र	176/	करधनि
तलब	अ०स्त्री० माँगना, वेतन, इच्छा बुलावा, नशीली वस्तु, जिसके खाने या पीने का अभ्यास हो की चाह ।	बोधा	2	58/22	खोज
तलाशी	तु०स्त्री० खोज, जुस्तुजू, ढूंढ	भिखारी	2	60/280	उपमान ढूंढने वाली
दस्तः	फा०पु० चाकू, छुरी आदि की मूठ ।	पद्माकर	हि०ब०	191	(दस्ताने करि) तलवार फेर कर
दाना	फा०वि० बुद्धिमान, मेधावी, चतुर, कुशल ।	वृन्द	वृग्र	159/233	पुरुष
पील	फा०पु० हस्तीगज, हाथी, शतरंज का एक मोहरा ।	भूषण	1	48/157	औरंगजेब
बदी	फा०स्त्री० पाप, गुनाह, दोष, अपराध, निंदा, बुराई, अपकार, कृतघ्नता ।	वृन्द	वृग्र	151/203	दुश्मनी
बहरियः	अ०पु० जल सेना, जंगी बड़ा	घनानन्द	घ०र०	104/188	सेना का सामान
मग़्रिबी	अ०वि० पश्चिम का पाश्चात्य	पद्माकर	1	192	विशेष प्रकार की तलवार ।
मजनूं	अ०वि० वातुल, पागल	आलम और शेख	आलमकेलि	115/273	प्रेमी
रदाअ	अ०पु० कीचड़, जल, कल्क	वृन्द	गृग्र	176/378	धूल
सला	अ०स्त्री० दावत के लिए दिये जाने वाला निमन्त्रण ।	नागरी	नाग्र	105/141	तौर तरीका

मू०श०	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ	अर्थ-परिवर्तन
सिपर[1]	फा०स्त्री० तलवार रोकने का अस्त्र, चर्म कवच ।	पर्दमाकर		उदा०	एक प्रकार की छोटी तोप ।
सुलेमान	फा०पु० सुलेमाँ-यहुदियों का बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है । एक पहाड़ ।	पद्माकर	।	197/	विशेष प्रकार की तलवार
सूबः	अ०पु० प्रान्त प्रदेश	भूषण		143/19	सूबेदार
हलवी	अ०वि० हलब का निवासी हलब सम्बन्धी, हलब का बना हुआ, हलब एक प्रसिद्ध नगर, जहाँ का दर्पण प्रसिद्ध है ।	पद्माकर	।	198	तलवार विशेष
हर्बः	अ०पु० अस्त्र-शस्त्र, हथियार, आक्रमण, शक्ति ।	नागरी	नाग्र	512/45	तलवार की धार

1. छूटै सब्ब सिप्पै करै दिग्ध दिप्पै सबै सत्रु छिप्पै कहूँ है न दिप्पै ।। – पर्दमाकर

मुहावरें व मसलें

मुहावरे तथा मसलें

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं
अंकुस न होना[1]	नियंत्रण न होना, मर्यादा का ध्यान न होना ।	बोधा	2	67/8
अक्ल पर बास[2]	अपना प्रभाव जमा देना	ग्वाल		43/71
अक्ल से खुदा पहचानना[3]	ईश्वर का ज्ञान होना	बोधा	1	/85
अहिन जाति[4]	बहुत कठोर होना	देव		

1. तरुनी सबै मद मत्त सी मदिरा पिये द्विज गान
   गिनतीहिं नही महावतै नहिं अंकुस कुल कान ।। 67/8
2. देखो कलि जू के राजनीति को तमासो यह
   बास किय्यो आय हर एक की अकल पै ।
   खानदान वारे पानदान लिये दौरत है,
   तान गावन वारे बैठि जोवत महल पै ।।
   मलमल धारे जे वे धूर पर मल मल,
   परमल खान वारे सोवै मखमल पर ।। 43/71
3. नेह तज्यौ घर सौं बर सो बरहू बटपार के हाथ बिकाने ।
   त्यागि तिन्हें तिनुका करि कूबरी हाथ लै आधिक राति पराने ।।
   काहू सो को अनुकूल जहान मैं सो जस बोधा कहाँ न बखाने ।
   ऊधो जू यामैं कछू सक ना हम आकिल ही ते खुदा पहिचाने ।। /85
4. अहिन जाति अहीर अहो तुम्हें कान्ह कहाँ कहो काहू की पीर न

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं
विज्ञान का अराबा दूर करना[1]	ज्ञान का रथ दूर करना ज्ञान भुला देना ।	बोधा	1	2/10
आब देना[2]	इज्जत देना	रसलीन		306/15
आफत जी की[3]	झंझट में, जान की मुसीबत	बोधा		183/46
आफत देना[4]	मुसीबत में डालना	बोधा	2	80/42
आफत पड़ी जानपर[5]	जान की मुसीबत, प्राण संकट मेंपड़ता ।	बोधा	2	80/35

1. करि प्रेम वही की बटा करबी पतवारी प्रतीत की लै छिलि है ।
   पुनि दूरि विज्ञान अराबो अही जल जैतुन के मुख में ढिलिहैं ।।
   कवि बोधा उसी दिल माहिर की नउका भव सिन्धु में लै पिलिहैं ।
   हम राम दोहाइ न झुठी कहैं व्रजराज सो बाँधि भुजा मिलि हैं ।। 2/10
2. पाहन बुलाइ राजा एक छन में नवाजा जोगी हार कर लाजा भयो तप लीन है
   राजा सुता आइ सब ओठ ताकि लाइ लब प्रान को बचाइ तब कीने परवीन है
   आली जिनके जनाब हिंद को दइ है आब हिंदुलवली खिताब विधि बानी दीन है
   दीन के नगारे बाजे जब इसलाम गाजी आए अजमेर काजी ख्वाजा मोनदीन हैं ।306/15
3. रस में देहु कंदला बाला । बेरस ना करिये क्षितिपाला
   बेरस भए होय नहिं नीकी । राज जाय अरु आफत जी की ।। 183/46.
4. सर्वसत्याग इसी पर कीन्हा । पर ना तजी जात यह बीना
   संकर से बिनती यह कीन्हीं । यह बीना मोहि आफत दीन्ही ।। 80/42.
5. आफत पड़ी जान पर जेती । तजी न मगरूरी दिल सेती ।
   पल पल ध्यान मित्र को आवत । कहै बहै जोई कोइ आवत ।। 80/35.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
आफताब होना[1]	बहुत सुन्दर होना (चन्द्रमा के समान सुन्दर होना) ।	बोधा	2	105/47
आसिक इस्क न-पाक को बरनत नहीं सबाब ।[2]	अपवित्र प्रेम की सुन्दरता वर्णन नहीं की जाती । (मसल)	बोधा	2	84/40
आसिक की वेवाकिफी जाहिर जग मैं हौन।[3]	प्रेमी की अनुभवहीनता संसार में (सबको) पता हो जाती है । प्रेम का जाहिर हो जाना । खोया-खोया सा रहना ।			
इज्जत बचाना[4]	मर्यादा बचाना	भूषण	1	97/337
इश्क का जोर होना[5]	प्रेम का प्रभाव होना	बोधा	2	53/25
इश्क की करनी[6]	प्रेम के कारण जो हुआ	,,	2	152/30

1. पल सूझे सूझे बहुत कूके इतिक मसाल
   आफताब लौ हूवै रही उदै कै रही बाल ।। 105/47.
2. त्यों विचारि माघो दयो ता बनिता कों ज्वाब ।
   आसिक इस्क न पाक कों बरनत नहीं सबाब ।। 84/40.
3. बिछुरो कहि है कौन दूवै चित्त जब स्कत्र है ।
   जाहिर जग मैं हौन आसिक की बेवाकिफी ।। 50/68
4. हिदुवान द्रौपदी की ईजति बचैवे काज झपटि विराटपुर बाहर प्रमान के
   वहै है सिवाजी जेहि भीम हूवै अकेले मार्यो अफजल कीचक को कीच घमासान कै ।
5. कल नहिं परत निसहू भोर । बेसक इस्क को भयो जोर ।। 53/35
6. है वह सत्य आप जो करनी । मो सों सुना इस्क की करनी
   पीर पराइ लखत न कोई । जाके लागत जानत सोई ।। 152/30.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
इश्क की चोट[1]	प्रेम का असर	बोधा	2	152/32
इश्क की सैन[2]	प्रेम का संकेत	,,	2	93/36
इश्क न जानत नीच[3]	मसल- प्रेम ऊंच नीच का विचार नहीं करता या नहीं देखता या प्रेम समाप्त नहीं होता या कम नहीं होता।	बोधा	1	1/6
इश्क ब्रह्म जानै नहीं[4]	प्रेम में ब्रह्म का ज्ञान नहीं रहता (मसल)।	बोधा	1	/2
इश्क नशा देना[5]	प्रेम का असर होना	,,	2	57/8
इश्क नशा पीना[6]	प्रेम करना	,,	2	51/8

1. बोधा कबि गुनग्यान ध्यान भूले सनबंधी
   लगे इस्क की चोट सुनो विक्रम सकबंधी ।। 152/32.

2. रचना जुत द्विज के बचन सुने इस्क की सैन
   रही रैन नैनी सबै जड़ता धरि भरि नैन ।। 93/36.

3. उपजै इस्क जु अंग ते, रहत अंग के बीच
   हाड़ मांस गलिबो करै, इस्क न जानत नीच ।। 1/6.

4. नाना मत उपासना मत मत न्यारे ठौर
   इस्क ब्रह्म जानै नहीं आसिक मानत और ।। /2.

5. इस्क नसा तू मो कहँ दीन्हा । अजब कैफ मेरे हिय कीन्हा ।। 37/8.

6. इस्क नसा बेशाक पिये कहै सखी सों बैन ।
   मेरे तेरे चित्त को तनकउ अंतर है न ।। 51/8.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
इश्क पंथ छूटै नहीं[1]	प्रेम का मार्ग या प्रेम नहीं छूटता ।	बोधा	2	51/10
इश्क पंथ नहीं चिह्नत	प्रेम का रास्ता नहीं पहचानते, प्रेम न पहचानना ।	बोधा	2	54/38
इश्क पयोधि में डालना[2]	अत्यधिक प्रेम में डालना	बोधा	2	104
इश्क पयोधि में डूबना[3]	प्रेम सागर में निमग्न अत्यधिक प्रेम में पड़ना	बोधा	2	141/25
इश्क फंदी मन प्रकृति अनैसी[4]	(मसल)-- इश्क के, प्रेम के बंधन में फंसे मन की प्रकृति बुरी होती है ।	बोधा	2	133/16
इश्क बखानना[4]	प्रेम की प्रशंसा करना	बोधा	2	156/51
इश्क बीच सिर देना[5]	प्रेम में पड़ना, प्रेम करना	,,	2	132/9

1. सो मैं तोसों कहत हों परे न दूजे कान
   कान-कान जाहिर भए कान-कान ह्वै जान ।
   ज्यों चकोर ससि सो पगो दुख सुख लह्यो दुरै न
   दृग फूटे जिह्वा जरी इश्क पंथ छूटै न ।।
2. नैया नेह चढाय झोली इश्क पयोधि में
   मांझ धार छुटकाय गयो सनेही माधावा ।। 129/104.
3. तुव गुन मानिक चाय बूड़ी इश्क पयोधि में
   कर ते गयो हिराय धन रहियो धारा गई ।। 141/25 (चाय=चाव, उमंग धन=नायिका, धारा गई=रत्न को लेकर धारा न जाने कहाँ चली गई ।)
4. पर दारा अपनी करि जानत । ताहि सों तुम इस्क बखानत । -- 156/51
5. निमिष इस्करामूज पर वारों सुरति सुराज ।
   इस्क बीच सिर नादयो जग सो जियो अकाज ।। 132/9.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
इश्क बाग देखना[1]	प्रेमोपवन, अच्छा सुन्दर बागीचा देखना ।	बोधा	2	91/6
इश्क मग में बेहाल करना ।[2]	प्रेम में व्याकुल कर देना	बोधा	2	119/43
इश्क मग लेना[3]	प्रेम करना	बोधा	2	146/64
इश्क मजाजी जानना[4]	लौकिक प्रेम जानना	बोधा	2	53/41
इश्क माते[5]	प्रेम के नशे में मतवाला	बोधा	2	93/19
इश्क सहित मारबो भलो[6]	(मसल) प्रेम करके मरना अच्छा है ।	बोधा	2	133/34

1. जहँ इस्क बाग लखि अति प्रवीन । तहँ क्षिप्र विप्र परबेस कीन ।
   निज दरद कह्यो सब द्रुमन पाहिँ । मृग मीन आदि जो मिलत जाही ।। 91/6

2. करी बिहाल इस्क मग मोही । अब मै जान देहु नहि तोही ।। 119/43

3. तब माधो जवाब अस दीन्हा । जिनने नहीं इस्क मग लीन्हा ।
   तिनको लगी बात वह फीकी । जानै कौन पराये जी की ।। 146/64.

4. हजरत नबी कही थी आगे । सौ कुर्रा काजी कौं लागे ।
   बोलै कागा कर्कश बानी । तू क्या इस्क मजाजी जानी ।। 54/41.

5. नसा कध्थी न खाते हैं । अये हम इस्क माते हैं ।
   गये थे बाग के ताईं । उतै वे छोकरी आईं ।। 93/19.

6. जौ बिसेध जग माहिँ । एक बेर मरने परे
   तौ हित तजिये नाहिँ । इस्क सहित मरिबो भलो ।। 133/14.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
इश्क हकीकी खूब[1]	अत्यधिक)(लौकिक प्रेममें) अलौकिक प्रेम होना ।	बोधा	2	25/38
इश्क हकीकी है जग-जाहिर ।[2]	(मसल) अलौकिक या ईश्वरीय प्रेम संसार में प्रकट है ।	बोधा	2	28/2
इश्क हकीकी है फुरमाया[3] बिना मजाजी किसी न पाया	(मसल) बिना लौकिक प्रेम के अलौकिक प्रेम नहीं मिलता । ईश्वरीय प्रेम प्राप्त करने के लिए मानवीय प्रेम आवश्यक है ।	बोधा	2	54/40
दुसरा न जाने तौन[4] इश्क को सराहिये ।	(मसल) उत्तम प्रेम छुपा हुआ ही होता है । या सराहनीय, प्रशंसनीय प्रेम वही है जो किसी को ज्ञात न हो ।			
देह रहने पर इश्क का निर्वाह होता है[5] ।	शरीर से ही इश्क का निर्वाह होता है बिना शरीर के प्रेम नहीं हो सकता ।	बोधा	2	125/59

1. होय मजाजी में जहाँ इस्क हकीकी खूब ।
   सो साँचो ब्रज राज है जो मेरा महबूब ।। 25/38.
2. रुचिर कथा सुनि है दिल माहिर । इस्क हकीकी है जग जाहिर ।। 28/2.
3. ज्ञात ये दिवाल तुम बोलो । कारन उर अंतर को खोलो ।
   इस्क हकीकी है फुरमाया । बिना मजाजी किसी न पाया ।। 54/40.
4. दूसरो न जाने तौन इस्क को सराहिये ।। 50/69.
5. चित्त मैं करी चिंता येह । निबहत इस्क राखे देह ।। 125/59.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं
मन का इश्क पंथ पर चूर्ण होना ।[1]	प्रेम में मन अपना नहीं रह गया । प्रेम के मार्ग पर चूर होकर खो गया ।	बोधा	2	122/40
राखे इश्क ह्बूब सो[2]	निःसार बातों से प्रेम की रक्षा करना ।	बोधा	1	6/32
सुख दै इश्क खरीदो खोटा[3]	झूठा प्रेम करना ।	बोधा	2	57/9
जान जाने वाला इलाज[4]	प्राणा घातक उपचार ।	बोधा	2	122/47
एक टक देखना ।[5]	बिना पलक झपकाये देखना ।	घनानन्द		उदा०
ऐड़दार[6]	घमंडी	मति०		302/26

1. रहत कँदला के घर माहीं । द्वादस दिन बीते तिहि काहीं ।
   सर्बस सुख सनेह परिपूरन । मन भो इस्क पंथ पर चूरन ।। 122/40.

2. कुनहदार अनियारो आछो सुखी करै दिल खूबों सों
   खिलवत खिन खिन खूबी वारो राखै इस्क ह्बूबों सों ।
   मस्ताने प्रेम दिवाने जे तिन जाने मन मनसूबों सों
   कवि बोधा अरज सुबुंद हिये उन महिरबों महबूबों सों ।। 6/32.

3. सुख दै इस्क बिसाहा खोटा । चोटै जीव देन का टोटा ।। 57/9.

4. कबहूं न कीजै जानके जिय जान हार इलाज ।। 122/47.

5. घन आनन्द मीत सुजान बिना अखियाँ को लागत एक टकी

6. जेते ऐड़दार दरबार सिरदार सब ऊपर
   प्रताप दिल्ली पति को अभंग भो ।। 302/26.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
कजाकी करना[1]	लूटना, डकैती डालना,	रसलीन		
	दगा फरेब, अत्याचार	बिहारी	।	240/209
	करना ।	बोधा	।	4/21
कबूतरी का चून बदलना[2]	नेत्र टेढ़ा करके परस्पर मुख में अन्न कण या दोनों का आदान-प्रदान, मुख से मुख में खिलाना व खाना ।	कृपा०	।	26/103
कमान कसना[3]	युद्ध के लिए तैयार होना, तत्पर होना ।	पजनेस	।	32/81

1. फिरि फिरि दौरत देखियत, निचले नैकु रहैं न
ए कजरारे कौन पर, करत कजाकी नैन ।। 209.
जौ लौं लगी न पूरी बढ़ी न पीर ।
तौ लौं तु ही कजाकी करि लै बीर ।। 21.
बदन अनूप वाको हरत सरोज रूप अधर ललाइ को बंधूक न धरत है ।
रूप गरबीली मुख मानिक हँसीली भौंह कुटिल कटीली रसलीन को हरत है ।
झपकीली पलकैं दाँत दारिम से झलकैं मुख छूटी रहैं अलकै तैं कैसे निसरत है ।
प्रेम मद्य छाकी करें निपट चलाकी वाकी बाँकी बाँकी अखियाँ कजाकी सी करतहै ।।

2. मचे सुरत पति को बधू, बिहँसि लयो भरि अंक ।
बदलति चून कबूतरी त्यौं बीरी ताकि बंक ।। 26/103.

3. काम कमान कस्यो जब बान को खींचे लगे तन दुबलौ बीछे ।
बाल खिलाफी गिला करि के हरि आगे चले पै परे पग पीछे ।। 32/81.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
कमान उतर जाना[1]	धनुष का उलटा हो जाना, काम लायक न रहना।	ग्वाल	1	37/56
कमान समान बात[2]	कड़वी बात, चोट पहुँचानेवाली बात।	वृज	दि०भू०	124/13
कसम, कसम खाना[3]	शपथ लेना प्रतिज्ञा करना।	बोधा	2	93/22
		बिहारी		
		रहीम		
		भूषण	2	541
		बोधा		116/14
कसाइ[4]	कठोर निर्दय व्यक्ति	पजनेस	1	33/44
		बोधा	2	85/11
		बोधा	2	200/29

1. सूख गये फूल भौंर झौंर उड़ि गये मानो।
   काम की कमान की कमान सी उतरि गई।। 37/56.
2. चित्त रखे जबान को ध्यान मैं नित्त न बात कमान समान करै।। 124/13.
3. बँधु तो मुराद बक्स बादि चुक करिबे को।
   बीच लै कुरान खुदा की कसम खाई है।।
4. गरजि गये जै घन गरज गये हैं भला फेर ये कसाइ आये गरिजि गरजि कै।।
   भाल मैं लिखत करैं भुलाने मेरी बैर कहूँ माखन के बीच फटकार चाहियतु है।
   सो ना चूक तेरी बोधा भावतो मिलो ना फिर बिछुरन जानि याते सुखीर हियतहै।
   जाके बड़े नैनन समाने मेरे नैन तासों बीच पारि दीन्हों कैसे धीर गहियतु है।
   भइ नाहिं रंच तोहि करुना कसाइ तू तौ ऐसो निरदई तासों दइ कहियतुहै 85/11
   महा मत्त मानो मही को हलावै। चढ़ी चँचला ज्वाल माला फिरावै।
   रैं मोरवा सोरवा भूमि छाई। करै तोर वा पौन तीनो कसाई।। 200/29.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
कसाइ होना[1]	कठोर होना	भूषण	4	144/22
		ग्वाल		52/93
कहर फरमाना[2]	गजब कहना, विपत्ति-जनक बात कहना ।	बोधा	2	55/43
कागज का भवन बनाना[3]	हवाई किला बनाना, काल्पनिक बात ।	घना०	घ०कवि०	166
कागज की नाव[4]	असफल प्रयत्न ।	घना०	1	31

1. भूषन भनै रे भुव भूषन द्विजेस तै
   कला निधि कहाय कै कसाइ कत होत है ।। 144/22.
   संभु शिर पाईं सिंधु नद कहवाईं फिर हूवै के
   द्विज राज हाय होत क्यों कसाईं तू ब। 52/93.

2. हरगज दरगज बिलबिल बेला । खुब खेल मस्ताना खेला ।
   हजरत नबी कहर फरमाया । कानी को काना बर आया ।। 55/43.

3. पीठि दियै सब दीठि परै निमुहै जगईठिनि कौन सबेरे
   दौरि थक्यौ जित ही तितही तिनही चितयौ न कहूँ हित हेरै ।
   कागर भौन लै आगर मौन दे बात बसी पै सुजानहिं टेरै
   नैनहि काननि सो ही सदा घन आनन्द औरनि मुख फेरै ।। घना० 166.

4. भए कागद-नाव उपाव सबै घन आनन्द नेह नदी गहरै ।। घना० 31.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
काजी को कोड़ा लगना[1] (कुर्रा)	मनमानी करने वाले को दंड मिलना ।	बोधा	2	54/41
काल का पलीता होना ।[2]	बहुत तेज जलने वाला सब कुछ नष्ट कर देने वाला ।	सेनापति	1	83/38
किताब पढ़ाना[3]	शिक्षा देना	बोधा	2	204/42
किब्लः नुमा सा[4]	अ०फा०बु० पश्चिम की दिशा बताने वाला यंत्र दिग्दर्शक यंत्र, एक निश्चित दिशा में ठहरनेवाला ।	बिहारी	1	242/215

1. हजरतनबी कही थी आगे, सौ कुर्रा काजी को लागे
   बोले कागा कर्कश बानी, तू क्या इस्क मजाजी जाने ।।
2. रह्यो तेल पी ज्यौं घियहू को पूर भीज्यौ,
   ऐसो लपट्यो समूह पट कोटिक पहल कौं ।।
   वेग सौं भ्रमत नभ देखियै बरत पूँछि,
   देखियै न राति जैबो महल महल कौं ।।
   सेनापति बरनि बखानैं मानो धूमकेतु,
   उदयो बिनासी दसकंधर के दल कौं ।।
   सीता को संताप कि खलीता उतपात कौं,
   कि काल कोपलीता प्रलै काल के अनल कौं ।।
3. मेघइ मेघइ धूम हौं बिरहिन तालिब इल्म (कहीं-कहीं तालिम इम पाठ है)
   महिरम बे मालूम बिरह किताब पढावसी ।। – बोधा 204/42
4. सबही तनु समुहानि छिनु, चलति सबन दै पीठि ।
   वाही तन ठहराति यहि, किबलनुमा सी डीठि ।। 215

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं
किमत कृपान में[1]	शक्ति अंकना, तलवार में शक्ति है ।	भिखारी	4	188/6
कीमत होना[2]	बड़ाई होना, इज्जत होना ।	भूषण	1	4 15
कुरबान करना[3]	निछावर कर देना, उत्सर्ग इनाम में देना, चढ़ा देना (पूजा आदि की सामग्री देवता पर चढ़ा देना)	बोधा	1	5/31

1. पानिप के आगर सराहै सब नागर,
 कहत दास कोस तें लख्यो प्रकास मान मैं ।
 रज के संजोग ते अमल होत जप तप,
 हरि हितकारी बास जाहिर जहान मैं ।
 श्री को धाम सहजे करत मन काम थकै,
 बरनत बानी जा दलन के विधान मैं ।
 एते गुन देखे राम साहिब सुजान मैं कि,
 बारिज विहान मैं की कीमति कृपान मैं ।। 150/50

2. भूषन भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं,
 किम्मति इहाँ लगि है जाकी झट झोट मैं ।।

3. एक सुभान के आनन पै कुरबान जहाँ लगि रूप जहाँ को ।
 कैयो सतक्रतु की पदवी लुटियै लखि कै मुसकाहट ताको ।
 सो कजरार गुजरान जहाँ कवि बोधा जहाँ उजरान तहाँ को
 जान मिलै तो जहान मिलै नहिं जानीमिलै तो जहान कहाँ को ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं
कुल का किला तोड़ना[1]	सब तरह का बंधन तोड़ना, किसी तरह का बन्धन न मानना। विजय प्राप्त करना ।	बोधा	2	68/8
कुलुफ लगना[2]	बन्द होना, ताला लगना	बोधा	1	14/79
कुहाम छाना[3]	हाहाकार मचना, रोना चिल्लाना या हाय-हाय होना ।	बोधा	2	64/36
कोकिल कलामिनि[4]	मधुर भाषिणी मधुर या प्रिय बोलने वाला या वाली ।	बेनीप्रवीण		33/218
बिना कमान के मारना[5]	असंभव काम करना, बिना हथियार के घायल करना, बिना धनुष के तीर चलाना ।	बृज०	दि०भू०	256/28

1. तरुनी सबै मदमत्त सी मदिरा पिये द्विजगान ।
   गिनतीहिं नहीं महावतै नहिं अंकुसै कुल कान ।।
   बेरी न राखै लाज की उठि बँदने सुख साज
   कुल को किला वो तोड़िके भजि जाय यौं करि काज ।। 68/8.
2. प्रेम कोठरी कुलुफ लखि बोधा कठिन अपार
   रची जुलुफ महबूब की रुचिर कुंचि की तार ।। 14/79.
3. घर-घर कूहर सी भइ कूह रही पुर छाय
   ऊहर सब कूहर भई बनितन लगी बलाय ।।
4. कानन करनफूल कोमल कपोल कंठ कंबुक कपोत कीर कोकिल कलामिनी ।।
5. चित्त राखै जबान को ध्यान मैं नित्त न बात कमान समान करै ।। 13.
   तीक्षन नयन रुई ईक्षन है मैन बात ।
   अधिक करत बिन मारत कमान के ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
खजाना खुलना[1]	अत्यधिक प्राप्त होना, मनमाना प्राप्त होना	ग्वाल	ग्वा०र०	75/150
खता खाना	धोखा पाना			
खाक	कुछ न होना, केवल भस्म होना ।	बे०प्र०	।	56/397
खाक करना	नष्ट करना			
खाक का ढेर(तूदा)[2]	नष्ट होना, बरबाद होना, धूल में मिलना	नन्दराम		
खाक होना	नष्ट होना	भूषण	।	75/125
खाक में मिलना[3]	नष्ट होना	,,	।	105/360

1. खेल में खिलावत खिलारी तै मिलाई खूब
   खुलिगे खजाने खिलिवत मै खुसीन के ।। ग्वाल 75/150.

2. ज्यों ज्यों मोरन को कहति मोर पक्ष धर लाल
   काम खाक तूदा करत त्यों-त्यों हनि शरजाल ।। नन्दराज

3. थाक सो खाक बिजैपुर भो मुख आय गो खान खवास के फेना ।। 75/245.
   बानर बरार बाघ बैहर बिलाइ बिग
   वगरे बराह जानवरन के जोम है ।
   भूषन भनत मारे भालुक भयानक हैं
   भीतर भवन भरे लील गऊ लोम है ।
   ऐड़ायल गजगन गैड़ा गरात गति गेहन
   में गोहन गरूर गहे गोम है ।
   सिवा जी कि थाक मिले खल कुल खाक बसे खलन
   के खेरन खबीसन के खोम है ।। 105/360.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
खातिर जमा रखना[1]	निश्चित रहना, विश्वास करना ।	ग्वाल	ग्वा०र०	48/81
खान होना[2]	अत्यधिक होना	घना०	घ०क०	/140
		मति०	।	/127
खाम की बात[3]	गलत बात अविवेकपूर्ण बात ।	ग्वाल	।	
खिलवत् खुशी दोस्ती लेखे[4]	(मसल) एकान्त, प्रसन्नता व मित्रता भाग्य से मिलती है ।	बोधा	2	128/70

1. जिसका जितेक साल भर मैं खरच तिस्से
   चाहिये तौ दूना पै सवायो तो कमा रहे ।
   हुर या परी सा नूर नाजनी सहूर बोरी
   हाजिर हमेस होय तौ दिल भी थमा रहे ।
   ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोहबत हा
   याद मैं गुसैया के हमेस बिरमा रहे ।
   खाने को हमारे हैं न काहू की तमा रहे
   सु गाठि मैं जमा रहे तौ खातिर जमा रहे ।। आनन्दमय जीवन, ग्वाल 48/81
2. मोहिनी की खानि है सुभाय ही हँसनि जाकी ।
   लाडिली लसनि ताकी प्राननि ते प्यारियै ।। घना० 140
   नागर बिदेस मै बिताइ बहु घौस आयौ नागरि कै हिये मैं हुलासनि की खानि की ॥ 127.
3. धाम की न धनि की न धन की न तन की
   तपन की न पात बात कीन्हीं सब खाम की ।।
4. हिये लगि मिल लो पिय मेरे । अब फिर मिलन हाथ विधि केरे
   खिलवत खुसी दोस्ती लेखे । वे दिन बहुरि न बहुरत देखे ।। 128/70

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
खूनी का खुशहाल होना[1]	मारनेवाला या अत्याचार करनेवाला का प्रसन्न होना, उल्टी बात होना ।	बिहारी	1	336/511
खोजा दरबार[2]	कायरों की सभा या चापलूसों की सभा।	दास		
खौफ देना[3]	भय दिखाना, डराना	बोधा	2	208/72
उत्पात का खलीता	बहुत अधिक उपद्रवी अधिक उत्पात मचाने वाला ।	सेनापति	1	83/38 उदा० दे० कालका पलिता
बिना खसम के होना[4]	अनाथ होना, मालिक का मर जाना ।	केशव	2	519/52
गरीब का हाथी खरीदना[5]	दुर्लभ वस्तु होना, असम्भव होना, सामर्थ्य से बाहर की बात ।	बोधा	1	/101

1. छुटत न पैयतु छिनकु बसि नेह नगर यह चाल
   मार्यौ फिर फिर मारिये, खूनी फीरै खुस्याल ।। 336/511.
2. मीत न पै है जान तू यह खोजा दरबार
   जौ निसि दिन गुदरत रहै ताही को पैठार ।।
3. ताही पै सावन रिस कीन्हीं फिर तिहि खौफ भादवै दीन्हीं ।। 208/72
4. करि अग्ग साह निसान भुल्लि लखि भूप हसम हर कहूया
   फुल्लि जेह तह हसम खसम बिन भये। केशव
5. रति को ना नेवारी व्यथा मन मारी नहीं मन क्यों मथियै ।
   कवि बोधा कही हँसि सेवति ने यह प्रीत अनोखी मैं ना नाथियै ।
   तिनहू तैं न चाह सरी भ्रमरी तो करील पै कौन कथा कथियै ।
   घटि चेत गयो सुनि केतकी को का गरीब केसाह करै हथियै ।। /101

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गरूर गहि[1]	साभिमान अभिमान के साथ ।	बिहारी	।	273/307
गर्क-गर्क कर[2]	तन्मय होकर निमग्न होकर प्रेम में तन्मय होना ।	ग्वाल		
गर्द करना[3]	धूल में मिलाना, नष्ट कर देना ।	पद्‌मा०	5	/20
गर्द मिलाना[4]	धूल में मिला देना, नेस्तनाबूद, नष्ट कर देना ।	भूषण	स्फु० का०	150/40

1. लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर (सबी=चित्र, अ० शबीह)
   भए न केते जागत के चतुर चितेरे कूर ।। 307.

2. गरकि-गरकि प्रेम पारी परजंक पर
   धरकि-धरकि हिय होल सो मभरिजात ।। ग्वाल

3. बे दरद बे परद गजब गुनाहिन के गंगा को गरद कीन्हें
   गरद गुनाह सब ।। - पद्‌मा०

4. पक्कर प्रबल दल भक्कर सों दौरि करि आप
   साहि जू को नद बांधि तेग बांकरी ।
   सहर मिलायो मारि गरद मिलायो गढ़ उबरे न
   आगे पाछे भूपऽकितना करी ।
   हीरा मनि मानिक की लाख पोटि लादि गयो
   मंदिर ढहायो जो पैकाढी मूल कांकरी ।।
   आलम पुकार करे आलम पनाह जू पै होरी सी जराय सिवा
   सूरति फनां करी ।। 150/40.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गर्द होना[1]	नष्ट होना	बे0प्र0		22/141
गर्मी झुकना[2]	अत्यधिक गरमी पड़ना	ग्वाल	1	28/34
गर्मी का गढवासिनी होना[3]	गर्मी समाप्त हो गई गर्मी छुप जाना ।	बिहारी	1	191/70
नगर को गश्त देना[4]	नगर का भ्रमण करना	बोधा	2	55/46
गिरेबान आडी देना[5]	आघात सहना, गर्दन पर वार लेना, गर्दन देकर सहना ।	बोधा	2	110/39
गुनाह पालना[6]	अपराध करना ।	ग्वाल	1	54/99
गुलामी कबूल करना[7]	स्वामित्व स्वीकार करना दास बनना, वश में होना,	दास	4	30/24.

1. गरद भइहूवै वह दरद बतावै कौन सरद मयंक मारी करद करेजे मैं ।। बे0प्र22/141
2. ग्रीष्म की गजब धुकी है धूप धाय धाम गरमी झुकी है
   जाम नाम अति तापनी ।
3. रहि न सकी सब जगत मैं, सिसिर सीत कै त्रास
   गरमी भजी गढ़वै भई तिय कुच अचल मवास ।।
4. यौं ही गश्त नगर को देही । पै नहिं लख मैं परत सनेही ।। 46.
5. तुम काहू देखी नहीं या की कला कमान
   हौं साहस बल कै तहीं आड़ी दै गिरमान ।। 110/39.
6. बोले क्यों न आली का गुनाह उन्है पाली रसी ।। 54/99
7. जा मग सिधारे नंदनंद बृजस्वामी दास
   जिनकी गुलामी मकरध्वज कबूलि गो ।। 30/24

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
गुलाम कहाना[1]	वश में होना	दास	4	252/61
		रस0	3	301/3
गुस्सा फुरमाना[2]	क्रोध करना	बोधा	2	77/8
गूंगे की सैन[3]	मूक का संकेत वाचन	बोधा	2	69/28
गोल पर भीड़ पड़ना[4]	छोटी सेना पर बड़ी सेना का भरी पड़ना	बिहारी	1	242/217
चर्ख से चन्द्रमा उतरना[5]	बहुत अधिक उजाला होना, दुर्लभ वस्तु लाना, असम्भव कार्य करना ।	ग्वाल	1	34/49
चश्म टुक फेरना[6]	पहले सी कृपा या स्नेह दृष्टि न होना । कटाक्ष करना ।	बोधा	2	93/20

1. काम है मेरो तमाम यहै सब जाम गुलाम तिहारे कहाऊ ।। दास
   तौ बिनती करि औरन पास कहाइ के आप गुलाम नबी को ।। रसलीन
2. बनिता को बस कहाँ पुरुष अपलोक लगावै
   सेवक को बस कहाँ गुसा साहिब फुरमावै ।
   बालक को बस कहाँ जननि जो विष दै मारै
   दये को दान न देय भिक्षु को जतन बिचारै ।। 77/8.
3. है प्रबीन बीना लिये मीना कृत तुव नैन ।
   मौन गहैं फरबो करत गूंगा की सी सैन ।। 69/28.
4. जुरे दुहूँनु के दृग झमकि, रुके न झीनै चीर ।
   हलुकी फौज हरोल ज्यौं परे गोल पर भीर ।। 217.
5. चमचम चाँदनी सी चमक चमक रही, राखी है उतारि मानो चन्द्रमा चर्ख तै ।।
6. उन्हीं जादू कछू किन्हा । हमर दिल कैद कर लीन्हा ।
   अचानक भया भट मेरा । उन्होंने चस्म टुक फेरा ।। 20

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छं
चश्म वारो[1]	नेत्र न्योछावर करना	पजनेस	।	35/89
चश्म से खूं बरसे[2]	क्रोध आना (लाल नेत्र है)	,,	प०प्र०	33/84
चश्मा देना[3]	नेत्र पर ऐनक लगाना	बिहारी	।	345/541
चतुराई का चश्मा देना	अपने को चतुर बनना चतुराइ का ऐनक आंख पर लगाना, सयाना होना ।	कृपाराम	।	23/86

1-2. पजनेस तस दुंदुकता[1] बिसमिल जुलफे[2] फुरकत[3] न कबूल[4] करे
महबूब[5] चुना[6] बदमस्त[7] सनमु[8] अजदस्त[9] अलाबल[10] जुल्फ बसे ।।
मजमूये[11] न काफ[12] समक[13] रु[14] र[15] सम क्यामत[16] चश्म[17] से खूं[18] बरसे
मिजगा[19] सुरमा[20] तहरीर[21] दुता[22] नुकते[23] बिन वे किन[24] ते किन[25] से ।।

1. न्योछावर
2. केश
3. वियोग
4. स्वीकार
5. प्रिय
6. वैसा
7. बुरे मिजाजवाला
8. प्रिया प्रेमिका
9.
10.
11. समस्त, संग्रह
12.
13.
14.
15.
16. प्रलय
17. नेत्र
18. खून, लाल
19. बरौनी
20. काजल
21. लकीर
22. झुका हुआ
23.
24

3. करी बिरह ऐसी तऊ गैल न छाड़त नीचु
दीनै हूं चश्मा चखनु चाहै लहै न मीचु ।। 541 ।

4. नवल बधू तन तरुनई नई रही है छाइ
दे चसमा चख चतुरइ लघु सिसुता लखि जाइ ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
लोभ का चसमा देना[1]	नेत्र पर लोभ रूपी ऐनक लगाना – स्वार्थी या लोभी होना, बनना ।	बिहारी	।	204/104
चादर चुड़ी रखना[2]	विधवा होने से बचाना हिन्दू-चूड़ी व मुसलमान--चादर सुहाग का प्रतीक या चिह्न है । सुहागकी रक्षा करना ।	बिहारी	।	398/713
चार दिन की चांदनी[3]	थोड़े दिन का सुख	रस०	।	22/96
चुगल होना[4]	भेद प्रकट करने वाला पीठ पीछे भेद या शिकायत करनेवाला ।	बिहारी	।	310/428
चुगुलन को इतबार[5]	पीठ पीछे शिकायत करनेवालों का विश्वास होना ।			

1. घर घर डोलत दीन ह्वै, जन जन जाचितु जाइ ।
   दियै लोभ चसमा चखनु लघु पुनि बडौ लखाइ ।। 104.
2. घर घर तुरकिनि हिन्दुनी देति असीस सराहि ।
   पतिनु राखि चादर चुरी तै राखी जय साहि ।। 713.
3. भइ व्याधि ऐसी कछू छुटो खल ते हेत ।
   द्वयोस चार की चांदनी मो चित करत अनेत ।। 23/96.
4. आजु कछू और भए, ठए नए ठिक ठैन
   चित के हित के चुगल ए, नितकै होंहि न नैन ।।
5. चलि आयो युग चार ते बौजन ते संचार (बौने व हिजड़े प्रतिहारी रखे जातेथे)
   राजन के दरबार में चुगुलन को इतबार ।। 71/43.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
चुगली करना[1]	शिकायत करना भेद देना	बोधा	2	71/42.
कान-कान जाहिर होना[2]	एक से दो कान मे बात पड़ने पर, दो व्यक्तियों के सुनने से बात फैल जाती है, सबको ज्ञात हो जाती है।	बोधा	2	51/10
जँग को आना[3]	हमला करने के लिए तैयार घायल करने के लिए आना	बोधा	2	200/30
जबाँ चलाना[4]	धृष्टतापूर्वक उत्तर देना कहना।	बोधा	2	168/78
जबान पर न लाना[5]	न कहना।	पद्मा०		6
जबान सम्हालकर बोलना[6]	मर्यादा के अनुकूल बोलना।	ग्वाल०	।	101/45

1. कस्तूरी मृग नाभि में कीन्हीं विधि न विचार।
   करते रसना चुगुल की लेते बधिक निकार ।। 71/42.
2. सो मैं तोसों कहत हौं परे न दूजे कान।
   कान कान जाहिर भए कान-कान ह्वै जात ।। 51/10.
3. सजल घटा चहु दिसि धावत मनहु मतंग जँग कह आवत ।।
4. निज कुबुद्धि कर धनुध गहि सस्सी जबाँ चलाय।
   हरिनी सी बनिता हनी विक्रम बीन बजाय ।। 168/78.
5. लाज बिराज रही अखियान में प्रान में कान्ह जुबान में नाहीं ।। 6
6. मोहि व्यभिचारिणीकमीन कहि बोलती है।
   राखती न नैकहू सम्हार के जुबान को ।। 101/45.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जम का बिरादर होना[1]	बहुत निर्दयी होना । यमदूत होना, मृत्यु लाने वाला ।	नन्दराम		
जमजाम में सीसा सिकंदरी होना,[2]	(या दूरबीन ले के देखना)	पजनेस	दि०भू०	।84/2।
जामेजम	फा०पु० ईरान शासक जमशेद ने एक पियाला बनाया था, जिससे संसार का हाल ज्ञात होता था ।			
शिशा सिकन्दरी	उसमें लगे शिशा को सिकंदरी शिशा कहते हैं ।			
दूरबीन	फा०स्त्री० दूरदर्शक यंत्र से देखना ।			
जमराज सा जालिम होना[3]	मृत्यु लानेवाले देवता यम की तरह जुल्म करनेवाला, बहुत निर्दयी या कठोर होना।	अनुनेन	दि०भू०	/4।

1. आदर के राखौ प्रान कैसे हुक्म नादर लै
   जम के बिरादर ये बादर उनै रहै ।। - नन्दराम ।
2. स्याम सलम मैं सोहै बुलाक सखी सत मोण सोहाग मैं लीजै ।
   ढीली डगै मुरि मैन जुड़ी गिरि जंघन मैन मसूसनि भीजै ।।
   हौं लगि जोयो यही पजनेस सयानहूँ लोग यही तजबीजै ।
   या जमजाम मैं सीसा सिकदरी या दुरबीन ले देखिबो कीजै ।। ।84/2।.
3. दुति देखत दंतन की हीय हारत हीरन के गन दाड़िम हैं ।
   वसुधा बिच चारु कुधा की मिठाईं सुधाधार सो घर सालिम हैं ।।
   अनुनैन बनी भृकुटि कुटिलै कल मैन के चाप से आलिम है ।
   जग जाहिर जोर जनाइ सकै अखियाँ जमराज सो जालिम हैं ।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ज्वारी का जमानतदार कौन है ।[1]	(मसल) बुरे व्यक्ति का साथ कोई नहीं देता ।	बोधा	2	97/3
जात रूप दूरि जाना[2]	सोने की चमक का भी छुप जाना ।	बिहारी	1	267/290
ज़ादर खाक	फा०पु० धन दौलत, सोना । (जात रूप=सोना)			
जादू का खेल या जादू के बस होना ।[3]	असम्भव व आश्चर्य - जनक कृत्य ।	बोधा	2	71/40

1. चोर को सनेही को है राड़ को सँघाती कहूँ
   निर्गुनी को दायक सरोगी को बनारसी ।
   निर्धन को ब्योहुरो सपक्षी व्यभिचारिन को (पक्ष करने वाला)
   औगुन को गाहक विडँब उपचार सी (आडम्बर)
   बोधा कवि अपनी अनैसी को सहैया को है (बुरी)
   पानी को सरीक पर पीर को निवारसी (निवारण करने वाला)
   गरजी को गरजी निवाज को गरीबन को
   ज्वारी को जमानुदार भिखारी को सिपारसी ।। 97/3
2. केसरि कै सरि क्यौं सकै चंपकु कितकु अनूपु
   गात रूप लखि जातु दुरि जात रूप को रूप ।। 290.

3. जादू बस केहरि करी बाँधे आवत ब्याल ।

   जागत मुवो मसानहूँ लखि जादू को ख्याल ।। 71/40.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जान पर आफत आना[1]	बड़ी दुर्गति होना,विपत्ति आना ।	बोधा	2	80/25
जान है तो जहान है[2]	(मसल) जान प्राण रहने पर ही सब कुछ है ।	बोधा	1	5/31
जाब्ता भागना[3]	कानून नियम या व्यवस्था का भंग होना या टूट जाना ।	लाल कवि		
जाल के दूमाले में पड़ना[4]	जाल के फंदे में फँसना	पद्माकर	दि0भू0	181/17

1. आफत परी जान पर जेती । तजी न मगली दिल सेती ।।
   पल पल ध्यान मित्र को आवत । कहै वहै जोई कहि आवत ।। 80/35.

2. एक सुभान के आनन पै कुरबान - - - -
   कैंयो सत - - - -
   सो कजरा गुजरात जहाँ कवि बोधा जहाँ उजरान तहाँ को
   जान मिलैं तो जहान मिलै नहीं जान मिलै तो जहान कहाँ को ।। 31.

3. दारा साह बजत रन छाज्यौ । जबत पातसाही को भाज्यौ ।। लाल कवि

4. अब हूवै हैं कहाँ अरबिंद सो आनन इंदु के हाय हवाले परे ।
   पदुमाकर भाषे न भाषे बनै जिय ऐसे कछुक कसाले परे ।।
   एक मीन बिचारो बिंध्यो बनसी पुनि जाल के जाइ दुमाले परे ।
   मन तो मनमोहन गोहन गो तन लाज मनोज के पाले परे ।। 181/17

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जीर्ण जामा की पीड़ा हकीम जी जानते हैं और मनकी पीड़ा मन भावन जानता है ।	(मसल) शरीर की पीड़ा या व्याधि को हकीम ही समझ सकता है और मन की पीड़ा मन मीत समझ सकता है ।	बोधा	। 2	8/43 166/57
बड़ो की जुबान[2]	(मसल) धनवान अथवा सम्मानित व्यक्ति की कही हुई बात वापस नहीं होती ।	बोधा		159/73
जुबान के दाप से मरना[3]	बोली सुन कर ही मौत सा कष्ट होना, आवाज पीड़ा पहुँचाती है ।	बोधा	2	208/70

1. ----

जोई है सोई है नेकी बदी मुख से निकसे उपहास बढ़ावन
याहि ते काहु जनैयै नहीं लहि कै दिल की न रहै फिरि आवन ।
जीरन जामा की पीर हकीम जी जानत है मन की मन भावन ।। 43

• जोई है ----
याहिते काहू जनैये न वीर लहै हित की पै कहै नहीं दावन ।
जीरन ---- जानत है हम के मनभावन ।। 166/57.

2. भानु उदै उदया चल ओर ते पूरब कौं पुनिपाँव करै ना ।
ज्यौं सिर नेत सती धरिकै घर के फिरिबे कहूँ चित्त धरै ना ।
ज्यौं गजदंत सुभाय कह्यो कदली तरु दूसरि बेर फरै ना ।।
त्यौं ही जबान बड़े नर की मुख सौं निकसै व फेरि फिरै ना ।। 159/73.

3. चातक याते करौं बिनती बिन काम क्षमौ अपनी या अलापन ।
तै अपने पिय को सुमिरै पै मरै हम तेरी जुबान के दापन ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
जुराफा करना[1]	जिराफ बना देना अर्थात् जैसे जिराफ अपने जोड़े से अलग होते ही मर जाता है, वैसे ही नायक - नायिकाओं की जिराफ जैसी प्रवृत्ति बना दी है । मार डालना ।	बिहारी ग्वाल	। ।	190/66 35/31
जेर करना[2]	परास्त करना, नष्ट करना	भूषण		
जोम की बात[3]	युद्ध की बात, घमण्ड की बोली ।	बोधा	2	181/29
जौहर खुलना[4]	गुण प्रक्ट होना ।	ग्वाल	।	46/77

1. मिलि विहरत बिछुरत मरत दम्पति अतिरस लीन ।
   नूतन विधि हेमन्त ऋतु जगत जुराफा कीन ।। 66
   आयो अब जाड़ो जग करन जुराफा सो ।। 35/31.
2. चाक चक चमू के अचाक चहूँ ओर चाक-सी फिरति धाक
   चंपति के लाल की ।
   भूषन भनत पात साही मारि जेर कीन्हीं
   काहु उमराव ना करेरी करबाल की ।।
   जंग करि जोर सो निजाम साहि जेर कीनो रन में नमाये हैं रूहेले छल
   बल ही ।
   साहन के देस लूटे साहजी के सिवराज
   कूटी फौज अजौं मुगलान हाथ मल हीं ।।
3. ज्यों सप्रेम नवलाहि लखि कामी उर अकुलात
   त्यो ही नृप प्रज्वलित भो सुनत जोम की बात ।। 181/29.
4. दाम परै गौहर को पेव गुन खुलै जैसे ।
   तैसे काम कंपरै ते नैर जौहर खुलत हैं ।। 46/77.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
प्रेम का पंथ जवाहर है[1]	(मसल) प्रेम एक रत्न की तरह है, अमूल्य होना ।	बोधा	1	11/67
लट की जंजीर डालना[2]	जुल्फों के वश में करना जुल्फों से मोहित कर लेना ।	बोधा	2	55/53
तबल बजाय कै[3]	सबकी जानकारी में, खुले आम युद्ध की घोषणा करके ।	भूषण	3	121/30
तमाशा देखना[4]	मजा लेना ।	बोधा	1	14/90
तसबी कर में रखना[5] या तसबी करना ।	माला लेकर जप करना बार-बार याद करना या माला बनाना, बार-बार याद करना, आँसुओंकी माला बनाली-हरदम याद में रोते रहना ।	बोधा	2	142/29

1. कवि बोधा न आन के जाइबे कोँ यह प्रेम को पंथ जवाहर है
   दिल माहर ताको मिलै बिछुरै याकि मातै सोई दिलमाहर है ।। 11/67.
2. लट छोर जंजीरन डार दियो छुटबे पुन बेसक जोर कियो ।। 55/53.
3. भूषन भनत तुरकान दल थंभ काटि अफजल मारि डारे तबल बजाय कै । भूषण
4. कसक लगी जाके हिय में ताही हिय में कसकी री
   सहर तमासा देखता सबही तिनकी होत हँसी री ।
   प्रसुतपीर बँध्या क्या जानै झलकन पहिरी पीरी
   दिल जानै कै दिलवर जानै दिल की दरद लगी री ।। 90.
5. साँकर लौं बरुनी कसिकै असुवान मई तसबी कर राखै ।
   डोरे रहे बनि बाय सुरंग तहाँ कफनी पल टारि कै झाखै ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
तस्बीर हो जाना[1]	कोई गति न होना, स्तब्द हो जाना ।	बे0प्र0	।	25/239
ताव में आना[2]	जोश में आना	आलम		
तुरकी सी बात[3]	रहस्यमय होना, स्पष्ट न होना ।	रसलीन	।	81/406
तुर्रा रखना[4]	इज्जत व धर्म बचाना	लालकवि		
बसंत का तोरा[5]	बसंत का बन्दूक (अन्याय)	बोधा	34/54	
चूहे के चाम से दमामा[6] नहीं मढ़ा जाता ।	बड़े व्यक्तियों के काम छोटे व्यक्तियों द्वारा पूर्ण किये जा सकते या छोटे व्यक्तियों द्वारा बड़ों के काम सिद्ध नहीं हो पाते ।	बिहारी	201/94 221/154	

1. चित्त चितेरी रही चकि सी जकि एक ते ह्वै गई द्वै तसबीर ।। 25/239.

2-3. आलम बिलोकि मोहिं मुख मार्‌यो तौ में आइ।
मैं हूं मन में कह्यो सुबीतो रैन आज ही ।।

3. पिय तन नख लखि जो करत तिय बेदन अविदात
कछु खुलति कछु नहिं खुलति तू तुरकी सी बात ।। 81/406.

4. लग्यो होत तुरुकन को जौरा, को राखै हिंदुन को तौरा ।। लालकवि

5. पवन बबूरा बजत कठोरा । क्षिति पै नृप बसंत को तोरा ।। 34/54

6. कबौं न छोटे नरन सो सरत बड़ग के काम ।
मढ्यौ दमामा जात क्यौं कहि चूहे के चाम ।। 94.

6. कैसे छोटे नरनु तै, सरत बड़ने के काम ।
मढ्यौ दमामा जात - - - - चूहे के चाम ।। 154.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दगा का डाका पड़ना[1]	धोखा देना	ठाकुर	दि०भू०	68/81
दगा करना[2]	धोखा देना, छल करना ।	,,	1	7/18.
दगा दगादार का दगा सी देना[3]	धोखेबाज (प्रिय) का धोखा देकर प्रिय हृदय जलाना । उसे दुख पहूँचाना (धोखा देकर हृदय जला दिया) ।	बोधा	2	57/11
4. दगादार से यारी[4]	धोखे बाज से मित्रता ।	बोधा	2	/64
दमामा घहराना[5]	नगाड़ा बजना, युद्ध की घोषणा होना ।	बोधा	2	134/33

1. एक ही सौं चित्त चाहिए वोर लौं बीच दगा के परै नहीं डाको ।
   मानिक सौं मन मोल लियो पुनि फेरि कहा परखायबो ताको
   ठाकुर काम नहीं सबको यह लाखन में परबीन है जाको
   प्रीति करै में कहा धौ लागै करि कै फिरि वोर निबाहिबो वाको ।। 81
2. औध की आस बताइ दगा करि राखि गये फिर स्वास चली करी ।। 7/18.
3. हौ तौ दिवानी भई सोभई उनसो न करी जड़ता वजिकै दई ।
   यारी नहीं कुयारी करी दगा रे दगादार दगा सी दई ।।(11)
   दई= है देव, 2.दिया, दी, दगा=धोखा, जला दिया ।
4. ---- विष खाइ मरै कै गिरै गिरि तैं दगादारतैंयारी कभी न करै ।। 64
5. बोधा कवि पवन दमामो दीह घहरात
   सुमन सुगंध सोई जस बगरायो रे ।
   बिरही समाज बाधिबे के काज लाज त्यागि
   साजि ऋतुराज रति राज पठवायो रे ।। 33.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दर-दर फिरना[1]	दुर्दशाग्रस्त होना हर तरफ से धिक्कारे जाना	रहीम		/19
दरबार में पड़े रहना[2]	शरण में होना, आश्रित होना।	बिहारी	1	167/9
दरबार में मान घटना[3]	इज्जत या आदर कम होना	बोधा	2	78/19
दरोबस्त होना				
दर्द का रुक्का[4]	विरह भरा पत्र	बोधा	2	140/9
दर्द का दर्या में प्रवेश[5]	जानबूझ कर दर्द लेना प्रेम का कष्ट पाना।	बोधा	1	6/33
दर्द गर्द करना[6]	दर्द मिटा देना, समाप्त कर देना।	बोधा	2	134/29.

1. ये रहीम दर-दर फिरैं माँगि मधुकरी खाहिं ।। रहीम
2. जिहिं तिहिं भाँति डर्यौ रह्यौ पर्यौ रहौ दरबार ।। 9.
3. धन का नास न गायबो घर को लटो चरित्र
   घटै मान दरबार में प्रगटन कीजै मित्र ।। 19.
4. उड़ि बालाके बाँह पर बैठो सुवा प्रबीन
   मघोनल के दरद को रुक्का ताको दीन ।। 9.
5. पहिचाने प्रेम रकाने जे बे परद दरद दरियाब हिलै
   मगरूर दिखाते आखिर या दिल सूर प्रेम को पंथ पिलै।
   तकि तबियेदार उदार वाहि अरु गनै न धक दै नैन झिलै
   तब खूब इस्क बोधा आसिक जब मिहरबान महबूब मिलै ।। 6/33.
6. तुम गुनवंत भूप बर दायक। विक्रम तो कहँ होम सहायक
   निष्कलंक विक्रम क्षितिधारी। तेरो दरद गरद करि डारी।। 29.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दर्द का घटना[1]	विरह या वियोग का कष्ट कम होना ।	बोधा	2	157/65
दर्द न होना[2]	(मसल) विरह न होना, जुदाई का गम न होना,	बोधा	2	143/39
दर्द पाना[3]	विरह का कष्ट सुनना	बोधा	2	181/30
दर्द बिताना[4]	पीड़ा या विरह दूर करना ।	बोधा	2	85/39
दर्द बखानना[5]	पीड़ा कहना	बोधा	2	85/39
दर्द बाढै[6]	वियोग की पीड़ा बढ़ना तेज हो जाना ।	बोधा	2	125/49

1. खूबी के समाज ठौरठौर देखि आयो यार
   पै ना दिलदार के या दरद कहूँ घटै ।। 157/65.
2. बिछुरे दरद न होत खर सूकर कूकरन कौं
   हंस मयूर कपोत सुघर नरन बिछुरन कठिन ।। 143/39.
3. यह बचन सुनत ही जर्यो भूप बैठो सकोप ह्वै काल रुप ।
   द्विज दरद पाय उज्जैन राय । नृप काम सेन पर चढ़्यो धाय ।। 181/30.

4-5 दिलवर होय तासों दिल की बखानै पीर हीन दिल कैसे दिल दरद की जानि है ।
   जिनके लगी ना सो का पीर जानै घायल की, घायल की पीर कों घाय ही प्रमानि है ।।
5. बोधा कवि बिछुरि मालती नवेली तौ है, औरउ कली न तौन दरद बितानि है ।
   भूले जिन भरम गमावैं चंचरिक कैसे अपत करील तेरो दरद बखानि है ।।

6. गिरी परी ढाढै दरद बाढै रही गर लिपटाय ।
   कर धार देखो नारिका की नारिका न लखाय ।
   तब माधवा उर सैंकि कै भरि अंक लीन्हीं बाल ।
   सरभिदगी उर आनि कीन्हीं रिंदगी ततकाल ।। 125/49.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दर्द भरा[1]	पीड़ा युक्त	बोधा	2	97/2
दर्द मइ[2]	पीड़ा युक्त	,,	2	82/14
दर्द सुनाना[3]	प्रार्थना करना, दुख कहना ।	,,	2	388/32
दर्द हरना[4]	कष्ट दूर करना	,,	2	173/77
दलाल होना[5]	बिचौलिया होना,	देवदत्त	2	243/63
	क्रय विक्रयकर्ता के मध्य मध्यस्थता करना व एवज (बदले) में कुछ लेना ।	ठाकुर		25/69
दहसति खाना[6]	डर जाना, डरना	बे0प्र0	1	57/405
दाद देना[7]	सराहना करना, वाह-वाह करना, न्यायकरना इंसाफ करना ।	केशव		

1. दरद भरे द्वारे खड़े चिन्ता कीन्हीं चित्त ।
   कहि लहिये यों रंग क्यों ना वह रसना मित्त ।। 97/2
2. नगन जटित अभरन सब साजत दीपमाल सी बाल बिराजत ।
   दरद मई सब बात बखानै सो प्रवीन रस के पथ जानै ।। 81/14
3. तेरे ढिग आयो दरसन पायो दिल को दरद सुनायो ।
4. तुम बिरह बियोगी रघुबर जोगी याते सरन बनायो ।। 32.
4. तेरो दरद हरौ मैं जबहीं अन्नपान पाऊं मैं तब हीं ।। 77.
5. शशि लटों तब हौं पलटो प्रगटो सु निरंतर अंतर कैंची ।
   या मन मेरे अनेरे दलाल ह्वै हौं नन्दलाल के हाथ लै बेंची ।। देव
6. बांध्यो बारिध बीर द्वौ, उतरे सहित सहाय ।
   सुनि दसमुख बल गन करत, कछु दहसतिस खाय ।
7. करी साहि को जाय फिरादी अधिक अनाथन दीजै दादि ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
क्यों खर्चे दाम[1]	व्यय-भार वहन(न करना) क्यों करें।	कृपाराम	1	60/271
चाम का दाम[2]	जल्दी नष्ट हो जानेवाली	बोधा	1	/94
	वस्तु, अपनी चलती में अन्याय करना, अँधेर करना।	बोधा	2	159/74

1. बजमारी सहजै मिलै जो निजु बैठे धाम ।
   सखि तन निरखि कहै प्रिया क्यों खरचे पियदाम ।। 60/271.

2. चाम के दाम गुनीन के आम यों
   बिस्वा की प्रीति पलीत को मेवा ।
   रैनापती सपने मैं सती अरु भानुमती
   करै पाँख परेवा ।।
   बोधा जुबान जथा सठ की
   लखौ फागु को बाप देवारी को देवा ।
   आखिरो चूमि के कौन गयो
   करि धूम को धाम और सूम की सेवा ।। 15,16/94.

   धूम धाम, चाम दाम बाम बाजी खैंचे आम फागु
   जैसे बावरा तो मन को कलेवा है ।
   भानमती सती जैसे सपने की रती
   जैसे सन्यासी पती जैसे पाठको परेवा है ।
   बोधा कवि कपट की प्रीत
   भीति रेनुका करिबो दहत जैसे सूमन की सेवा है ।
   ------------------- ।। 159/74.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ०/छ०
दाम चुकाना[1]	मूल्य अदा करना, कुछ लेके बदले में कुछ देना ।	बोधा	2	4/23
दाम दफ्तर में[2]	धन संपत्ति, मात्र कागज पर लिखा होना, वास्तव में न होना, केवल लिखित रूप में होना ।	रघुनाथ	दि०भू०	।69/7।

1. तब नेह नफा दिल मोल कियो
छवि आपनी लै कै बयाने दई ।
पुनि माल लै दाम चुकायो नहीं
मुलाकात चिह्नारिऊ भूमि गई ।।
छटै कीमति बोधा जो माल फिरै
बाज के बेवपार में टूट ठई ।
उनकी पै बनै हम यों समुझै
मनु बेच्यो न जानी लूट भई ।। 23.

2. आए जुरि जाचिबे को जाचक जहाँ लौं रहे,
एहो कवि रघुनाथ आजु तीनों थर में ।
ऐते मान दान तिन्है भूप दशरथ दीन्हें,
देत यों दिखाई कहूँ कोउ सोध धर में ।।
बसन के नाते बास पास कौसिला के एक,
भूषन के नाते नथ नाक दला कर में ।
घोड़े हाथी चित्रन के रहे चित्रसारी माँझ
राम के जनम रहे दाम दफदर में ।। ।69/7।.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दाम देते न बनना[1]	मूल्य न देना	कृपाराम	1	35/138
दाम परै	मूल्य लगाना	ग्वाल	1	46/77 दे0जौहर खुलत मैं
दाम रूपइया होत[2]	मूल्य बढ़ना (दमडी का रुपया होना) ।	बिहारी	1	245/224
दाम लगाना[3]	मूल्य आंकना, मूल्य निश्चित करना ।	ठाकुर	1	25/69
दाम सँवारना				
परखइया को दोष का		बोधा	2	70/35
घर का खोटा दाम[4]				
दावन गीर होना[5]	दुखदाई होना ।	बोधा	2	84/31 205/50

1. गहति फेंट तकि और तिय कहे सुलोचनि बैन ।
   दही देहु मो फेरि जो देत सो दाम बनै न ।। 35/138
2. कुटिल अलकु छुटि परतु मुख बढ़िगौ इतौ उदोतु ।
   बंक बकारी देत ज्यौं दाम रुपैया होत ।। 224.
3. गुन गाहक से बिनती इतनी हक नाहक ना हठ गावने है,
   यह प्रेम बजार के अन्तर सो पर नैन दलाल अकावने हैं ।
   कहि ठाकुर औगुन छोड़ि सबै परवीनन लै परखावने हैं,
   अब देखि विचारि निहारी कै माल जमा पर दाम लगावने हैं ।। 25/69
4. माधोनल करि का सकत जो नहिं आवै बाम ।
   परखइया को खोर का घर को खोटो दाम ।। 70/37.
5. सदा सुखदायक जे लखि बीर । भए इहि सावन दावन गीर ।। 84/31
   सजि सावन दावनगीर चढ़्यो नभ घोर कठोर निसान मढ़्यो ।
   बक पँगत स्वेत ध्वजा फहरै तिनको लखि कै बिरही थहरै ।। 205/5.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दिल अंदर की बात न खोलना ।[1]	मन की बात न कहना	बोधा	2	46/52
दिल अंदर में रोना[2]	मन ही मन दुखी होना ।	बोधा		59/22
दिल का दर्द खोलना ।[3]	मानसिक कष्ट व्यक्त करना, हृदय का कष्ट व्यक्त करना ।	बोधा	2	
दिल का दर्द सुनाना ।[4]	मनोव्यथा कहना, वियोग का कष्ट वर्णन करना ।	बोधा	2	88/33 55/48

1. बेसक इस्क विप्र उर माहीं । पढ़िबो गुनिबो सूझत नाहीं ।
   बीना लीये नगर में डोलै । दिल अंदर की बात न खोलै ।। 46/52

2. निर्दइ दर्द पै मेरो कौन बस त्यारी तू
   तो अंदर में मेरो दिल अंदर में रोवत ।। 59/22.

3. सुनि यों हाल माधवा बोल्यो दरद आपने दिल को खोल्यो ।। 75/69.

4. तेरे दिग आयो दरसन पायो दिल का दरद सुनायो ।
   तुम बिरह वियोगी रघुवर जोगी याते सरन मनायो ।। 88/33.

   बहु विधि सैंकर को गुनगायो । पीछे दिल को दर्द सुनायो ।। 55/48.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दिल की खोलना[1]	मन की सब बात कहना	बोधा	2	69/22
दिल की दिलगीरी[2]	हृदय की उदासी	बोधा	2	142/29
दिल की पीर खोलना[3]	हृदय का कष्ट कहना	बोधा	2	51/11
दिल की बीमारी[4]	विरह का रोग, हृदय या मन का रोग ।	बोधा	2	157/67
दिल कैद करना[5]	प्रेम में बांधना ।	बोधा	2	93/20
दिल खोलके हँसना[6]	बिना किसी हिचक के बिना दुराव के, बहुत अधिक प्रसन्न होना ।	बोधा	2	96/26
दिल जाने कि दिलवर जाने ।[7]	(मसल)	बोधा	2	14/90
दिल की दरद लगी री।[8]			2	142/29 दे० दिल गीरी में

1. तन की छांह भई संग डोलै । है कासो न दिल की खोलै ।। 69/22
2. यह दिल की दिलगीरी लखतु न आज ।
   कै दिल जाने की दिलवर दिलजान ।। 142/29.
3. निश्चय पाय बाल तब बोली । पीर आपने दिल खोली ।
   कहै - - - - यह भारी ।। 51/11.
4. कहा राज लै करिये स्वामी । जो न घटै दिल की बेरामी ।। 157/67
5. उन्हीं जादू कछू कीन्हा । हमर दिल कैद कर लिन्हा ।
   अचानक भया भट मेरा । उन्होंने चस्म टुक फेरा ।। 93/20.
6. कधी बँद चोलिया कसदी । कधी दिल खोल के हँसदी ।। 96/26.
7.,8. कसक लगी जाके हिय में ताही मेहिय में कसकी री ।
   सहर तमाशा देखता सबही तिनकी होत हँसी री ।
   प्रसुत पीर बँध्या का जानै झलकन पहिरी पीरी ।
   दिल जानै कै दिलवर जानै दिल की दरद लगी री ।। 90.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दिल थमा रहना[1]	कष्ट न होना, मन शांत रहना ।	ग्वाल		48/81
दिल दर्द अनुरागना[2]	प्रेम के दर्द से प्रेम होना ।	बोधा	2	93/21
दिलदार से जौ लौ न[3]	(मसल) बिना प्रेमी के मिले उद्धार नहीं होता ।	बोधा	1	11/68
दिल दिवाना होना[4]	प्रेम में अनुरक्त होना, पागल होना ।	बोधा	2	93/34
दिल पर बिमारी ओढ़ना[5]	हृदय रोग होना या हृदय में कष्ट पाना या मनोरोग ।	बोधा	2	215/54
दिल भरी दिल महरम[6]	(मसल) दुखी होकर प्रेमी कह रहा है कि यही रीति है ।	बोधा	2	46/35

1. जिसका जितेक साल भर में खरच तिस्से, चाहिये तौ दूना पै सवायो तो कमारहे
हुर या परी सा नूर नाजनी सहूर बोरी हाजिर हमेस होय तौ दिल भी थमा रहे ।
ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोहबत हा याद में गुसैयाँ के हमेस बिरमा रहे
2. कलेजा छेद कर ज्यादा, भया मन मार में मादा ।
इश्क दिलदार सो लागा हमच दिल दर्द अनुरागा ।। 93/21.
3. दिल दार पै जौ लौ न भेंट भई तब लौ तरिबो का कहावतु है ।
4. उन्हीं का रूप नीमाना । भयो दिल देख दीवाना ।
कछू ना चाहना येती । हमारी चाह उन सेती ।। 93/34.
5. अब जिन मोहि दुरावौ स्वामी । छिन दिल पर ओढ़ो बेरामी ।। 215/54
6. सुनु सुभान यह रीति । दिल भरी दिल महरम कहत ।
दीद दीद पर प्रीति । माधव लीलावति जथा ।। 46/35.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दिल माहिर की नौका[1]	ईश्वर(प्रेमी)का सहारा लेकर ।	बोधा	1	2/10
दिल माहिर होना[2]	घनिष्ठ मित्र होना	बोधा		11/67
दिल मोल करना[3]	प्रेम करना ।	बोधा	1	4/23
दिल लगी[4]	प्रेम होना ।	बोधा	1	14/81
दिल हीन होना[5]	कठोर होना ।	बोधा	2	85/39
भिखारी दिल को दरसन भीख[6]	(मसल) यदि हृदय भिखारी है तो उसे भीख में केवल प्रेमी का दर्शन ही चाहिए, दर्शन का उत्सुक ।	बोधा	1	4/24
दिवानी फिरना[7]	प्रेम में मस्त होकर घूमना ।	बोधा	2	/53

1. कोर प्रेम वही की बटा करबी पतवारी प्रतीत की लै सिलि है ।
   पुनि दूरि विज्ञान अराबो अही जल जतुन काम के मुख में ढिलि है ।।
   कवि बोधा उसी दिल माहिर की नउका भव सिंधु में लै पिलि है ।
   हम राम दोहाइ न झूठी कहैं ब्रजराज सो बाँधि भुजा मिलि है ।। 2/10.

2.

3. तब नेह नफा दिल मोल कियो छवि आपनी लैके बयाने दई ।
   - - - - लुटि भई ।। 4/23.

4. जाके लगी दिल जानत ताहि को जान पराये की जानत को है ।। 14/81.

5. देखिये -- दर्द बिताना ।

6. सब जग देख्यो बोधा एक न दीख । देह भिखारी दिल को दरसन भीख ।। 4/24.

7. यह चाह न बोधा सरी कबहूँ यही पीर ते बीर दिवानी फिरौ
   परवाह हमारी न जाने कछू मनु जाइ लग्यो कहु कैसे करौ ।। 53.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दिवानी होना[1]	मोहित होना, प्रेम में पागल होना ।	बोधा	2	57/11
दिवाने की गली ढूंढना[2]	प्रेमी का घर ढूंढ़ना ।	बोधा	2	54/31
मजा न दिल की पाई[3]	हार्दिक आनन्द न प्राप्त होना ।			14/89
दीद दीद पर प्रीत[4]	हर दृष्टि पर प्रेम और प्रगाढ़ होना ।	बोधा	2	46/35
दीवाल रखना[5]	मर्यादा बनाये रखना ।	भूषण	भू०ग्र०	209.
दुनिया के ऊपर होना[6]	असाधारण होना । ऐसा रूप भाव या स्थिति होनी जो सबमें न हो।	,,	,,	158
दुराज की रैयति[7]	दो राजाओं की प्रजा होना अर्थात् कष्ट में जीना ।	तोष	सु०नि०	11/34.

1. हौं तौ दिवानी भई सो भई उनसों न करी जड़ता वजिकै दई ।
   यारी नहीं पै कुयारी करी दगा रे दगादार दगा सी ढई ।।
2. गली ढेरत दिवाने की गई सुध भूल खाने की ।।
3. महिरम जान माल हम बेचो नेह नफा ठहराई ।
   सो आसिक को देन न भावे, मजा न दिल की पाई ।। 14/89.
4. सुनु सुभान यह रीति । दिल भरि दिल महरह कहत ।
   दीद दीद पर प्रीति । माधव लीलावति जथा ।। 46/35.
5. साहि के सपूत सिवराज समसेर तेरी दिल्ली
   दल दाबि कै दिवाल राखी दुनी में ।।
6. भूषन भनत महराज सिवराज बड़े दाबी
   दुनी ऊपर कहाये कौन हेत हौ ।। 158.
7. लाल तिहारिये सौंह कहौ वह बाल भइहै दुराज की रैयति ।। 11/34 तोष

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
देवा का दल[1]	राक्षस या नरभक्षी का समूह, क्रूर मनुष्य का समूह, बहुत बलवान होना ।	भूषण	भू०ग्र०	उदा०
देह की खबर न होना ।[2]	तन बदन की सुध न होना । बेसुध ।	भूषण	,,	225
दोजख मैं पड़ना[3]	नर्क मैं पड़ना, मर जाना ।	बोधा	2	189/18
दोस्तीम मानना[4]	घनिष्ठता होना ।	बोधा		/20

1. देस दहपट्टि आयो आगरे दिली के मेड़े ।
   बरगी बहरि मानौ दल जिमि देवा कौ ।। — भूषण

2. देह की खबरि सु गेह की चलावै कौस ।
   गात न सोहात न सोहाती परिचारिका ।। 225.

3. तब यो रन जोर पमार कही
   अब ही यह जानि परी सबही ।
   तुव दोजक माँह परमार परै
   अकि तो कहैं फारि सिकार करै ।।

4. नगर लोग सबही पछिताने
   बड़ी दोस्ती हमसौं माने ।। /20.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
रब की दुहाई करना[1]	चारों ओर अल्लाह मुसलमानी धर्म (इस्लाम) का प्रचार होना ।	भूषण	भू०ग्र०	118/22
के गनि बाँधि नफा सजनी पर हाथ बनीज सनेसन खेती ।[2]	(मसल) लोकोक्ति पराये हाथ व्यापार और संदेश के द्वारा खेती करनेवाला कब नफा प्राप्त करता है अर्थात् इन दोनों को हानि होती है ।	अन्य	दि०भू०	70/88

1. कुंभ कर्न असुर औतारी अवरंग जेब,
   किन्हीं कत्ल मथुरा दोहाइ फेरी रब की ।। 118/22.

2. मैं न गई पठई हरि पै निज
   भागिन दोस न तो कहँ देती ।
   कीन्हो भलो जो करैं अब स्वारथ
   जानि परी पर कारन हेती ।
   अन्य जू री बनाई सबै चतुराई
   करी अब जानि कै जेती ।
   के गनि बाँधि नफा सजनी पर
   हाथ बनीज सनेसर खेती ।। 70/80

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
नकीब फीराना[1]	ढिंढोरा पीटना, घोषणा करवाना ।	बोधा	2	217/25
नकीब बोलना[2]	भाट का चारण का विरुदावली गाना ।		दि0मू0	92/136
नजर करो[3]	भेंट करू, उपहार देना	बोधा	2	59/28
(गरदन हाजिर है)	जान देना, मृत्यु के लिए समर्पित होना।			
नजर बचाना[4]	दृष्टि से बचना, चोरी चोरी छिपना ।	पदमा0	हि0मु0	29.
नजराना सौपना[5]	भेट या उपहार देना	बोधा	2	24
नफा ठहराना[6]	लाभ या फायदे का सौदा करना ।	बोधा		
नब्ज काटना[7]	मार डालना ।	पदमा0	हि0ब0	187.

1. नगरी मह नकीब फिरायो मोदी और दिवान बुलायो ।। 25.
2. कोकिल नकीब नये पत्र न पताक तंबू ।
   चन्द्रिका निहारि क्षिति मंडल मैं छायो रे ।। 134/30.
3. अब मै नजर करौं का तेरी । हाजिर चितवत गरदन मेरी ।। 59/28.
4. सजि सेज भूषन बसन सब की नजर बचाइ रही नींद मिसि
   पौढि के दृग दुआर सो लाइ ।। 29.
5. नजरानी सौंपी नर नायक फिरि बिनती कीन्हीं जो लायक ।।
6. महिरम जान माल हम बेचो नेह नफा ठहराइ
   सो आसिक को देन न मावै मजा न दिल की पाई ।। 89.
7. गहि गहि [illegible] पिसकब्जै मरकनि गब्जै ।
   तकि तकि नब्जै काटत है ।। पदमा0

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
नाजना सहूर बोरी[1]	सुघड़ स्त्री, बुद्धिमान स्त्री ।	ग्वाल	।	48/81
निव्वाज खानी[2]	कफन खाने वाली अर्थात् साक्षात मौत ।	पद्मा०	2	194/
निसान की धुन सुन कर भागना ।[3]	डर कर भाग जाना ।	गंग	दि०भू०	61, 62/66
निशानी पाना[4]	चिह्न पाना यादगार स्वरूप (भौतिक) वस्तु पाना ।	बोधा	2	56/57

1. जिसका जितेक साल भर में खरच
तिस्से चाहिये तौ दूना पै सवायो तो कमा रहे ।
हूर या परी सा नूर नाजनी सहूर बोरी
हाजिर हमेस होय तौ दिल भी थमा रहे ।।
ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सोहबत
हा याद में गुसैया के हमेस बिरमा रहे ।। 48/81.

3. नवल नबाब खानाखान जू तिहारी धाक भागे
देशपती धुनि सुनत निसान के ।
गंग कहै तिनहूँ की रानी राजधानी छोड़ि फिरै
बिललानी सुधि भूली खानपान की ।।
कहूँ मिली हाथिन हरिन बाघ, बानरन,
उनहूँ ते रच्छा भई उनही के प्रान की ।।
सची जानी गजन भवानी जानो केहरिन,
मृगन कलानिधि कपिन जानी जान की ।। 6.

4. उनमुत-उनमुन-उनमुन मेला । इश्क हकीकी झेलम झेला ।
लखि कै ध्यान बनी को आवै । पूरन प्रेम निसानी पावै ।। 57

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
निहायत (भूल) करना[1]	बहुत अधिक या बड़ी गलती करना ।	बोधा	2	33/41 35/4
नेकी के बदले बदी या नेकी करने पर बदी ।[2]	अच्छाई, भलाई के बदले बुराइ होना।	बे०प्र०	न०र०त०	30/195
नेकी बदी जो भाल में है[3]	अच्छाई बुराई जो कुछ भाग्य में लिखा है ।	ठाकुर	1	68/80
नेकी बदी जो है सो है[4]	अच्छाई बुराई जो भी है।	बोधा	1	8/43
नेकी बदी सिर पर ओढ़ना[5]	यश अपयश दोनों ही समान भाव से स्वीकार करना ।	बोधा	2	51/16
उलटी एक पनाह[6]	रीति बदलना, आदत बदलना ।	बोधा	2	32/35

1. व्याहु व्याहु बोधा सुकवि करी निहायत खूब ।
   बरद बाँदि दी आसिका बेदरदी महबूब ।। 35/4.

1. लिखिकर ऐसे प्रेम नवीनो । कौन विचार बिरह लिखि दीनो ।
   याते विधि की भूल अनैसी । जो पै करत निहायत एसी ।। 33/41.

2. लागी अंगोछन पोछन अंग कहै रज रौंवरे लाल लदी ।
   ता दिन ते हमसे नहीं बोलत नेकी किये अब होत बदी है ।।

3.

4. जोइ है सोइ है नेकी बदी मुख से निकसे उपहास बदावन ।। 166/57.

5. मरिकिन जाउँ प्रति नहिं छोड़ो । नेकी बदी सीस पर औढ़ो ।। 16.

6. हिय ते बिछुरे नाह हिम ऋतु इमि आगम जगत ।
   उलटी एक पनाह सीत दिवस दाहैं करत ।। 32/35.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
ढाल की पनाह[1] दिवाल की पनाह लोन की पनाह	ढाल की शरण, ढाल के दुवारा, दीवाल के शरण में, अर्थात् दिवाल के ओट में, नमक के ओट में ।	रघु०	दि०भू०	/54
पनाह ताकत[2]	शरण चाहना	भूषण	भू०ग्र०	147
पलीत को मेवा[3]	भूत की मिठाई — सहज में मिला हुआ धन या वस्तु जो जल्दी नष्ट हो जाय ।	बोधा	।	/94
पशु व परिन्द होना[4]	मूर्ख होना	ग्वाल	।	48/82

1. काल की सी डाढ़ जम डाढ़ काढ़ेके बरन
   देखे नर नाहर को रूप नर नाह ब जू
   लोह के पहार मधि कोप कै अमर सिंह
   एक-एक घाय हनी सिगरे सिपाह जू ।
   के तक हजारी मारे सैा के सँघाती हारे
   छेक्यो छत्र धारी पै सिधारी हिंद राज जू
   ढाल की पनाह न दिवाल की पनाह एक
   लोन की पनाह बचे आलम पनाह जू ।। 54.
2. भूषण जे पूरब पछाँह नरनाह ते वै
   ताकत पनाह दिल्लीपति सिरतात की ।। 147.
3. चाम के दाम गुनीन के आम यो बिस्वा की प्रीत
   पलीत को मेवा । - - - - औ सुम की सेवा ।। 94.
4. देखबे मैं मानुस की अक्रृत दिखाइ परैं ।
   पर नर पसु औ परिंद है ये जाँचे मैं ।। 48/82

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
पान पानी से प्रीत न होना[1]	खाने-पीने में रुचि न होना, इच्छा न होना ।	बोधा	2	53/30
पान फेरना[2]	पान को ऊपर नीचे करते रहते हैं, जिससे सड़ने न पाये । देख-भाल करना । बहुत ध्यान देना ।	भूषण	भू०ग्रं०	219
पानदान ले के दौड़ना[3]	चाकरी करना	ग्वाल	।	43/71
पाप की पताका आस्मान में फहरना या लहराना।[4]	अत्यधिक पाप का बढ़ जाना । पाप प्रचार होना पुर्णरूप से अधिकार होना ।	ग्वाल	।	42/7
पैर में मेहदी लगी होना[5]	किसी काम को न करने का बहाना बनाना ।	घना०	।	228

1. है उद्बेग की यह रीति । पानी पान सो नहिं प्रीति ।। 53/30.
2. सूखत जानि सिवाजी के तेज ते पान से फेरत औरंगसूबा ।।
3. दे॰मु॰अक्ल पर बास किये
4. काम क्रोध लोभ मोह तेग तीर धनु
   नेजे अदया अखंड तो पनच घहरात है ।
   ग्वाल कवि गब्बर गसीले गोल गोला चले टोला
   कूर बचनो के पूर लहगत है ।
   हुजियो हुस्यार यार साच के भाव से
   माहिं पाप की पताका आसमान फहरात है ।। ग्वाल
5. उत ऊतर पाय लगी मिंहदी सुकहाँ लगि धीरज हाथ है ।। घना०

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
फकीर होना[1]	संसार त्याग देना, वीतरागी होना ।	बोधा	2	89
फते तिहारे हाथ[2]	विजय, निश्चित जीत, अपने वश में विजय होना ।	बिहारी	।	398/712
फनाँ करना[3]	नष्ट करना ।	भूषण	।	150/40 दे० गर्द मिलाना ।
फना का छोर छूना[4]	मृत्यु की सीमा छूना आत्म हत्या करना ।	बोधा		87
फाल बाँधना[5]	उछल कर लाँघना, कदम भर का फासला ।	पद्मा०	हि०श०स०	
चित में फिक्र व्याप्त होना[6]	चिंता का भाव, मन में ध्यान बना रहना ।	बोधा	2	140/10

1. बिछुरी गुहि मालती प्रान पिया तिहि पीर फकीर भयो भटको ।। 99.
2. सामाँ सेन, सयान की सबै साहि के साथ ।
   बाहुबली जयसाहि जू, फते तिहारे हाथ ।।
3. --- आलम पुकार करै आलम पनाह जू पै
   होरी सी जराय सिवा सूरति फनाँ करी ।। स्फुट काव्य 150/40.
4. बोधा बचे न घरी पल मैं छुटि जाइगो छोर छुए तैं फना को ।
   रोसु कै काहू सो काकहिये हमैं रोसु न और सौं रोसु जना को ।। 87.
5. कहै पद्माकर त्यौं हुंकरत, फुंकरत फैलत फलात ।
   फाल बाँधत फलंका मैं ।। पद्मा०
6. आनन्द तन मन मित्र तुव फिक्कर व्यापति चित्त ।। 140/10.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
फरियाद ठानना[1] (दरवाजे जाना)	न्याय माँगना (किसी के यहाँ जाना।)	बोधा	2	66/56
फौजदार के फिरत थाने रहत थनैत[2]	निडर होकर रहना ।	बोधा	2	80/41
ढोल दै दै बदनाम करना ।[3]	घूम-घूम के या डुग्गी पीट कर या जोर जोर से बोल कर बुराई करना।	ठाकुर	1	18/51
नाम बदनाम है[4]	अपयश होना	ठाकुर	1	25/70
बदनाम करना[5]	गलत सम्बन्ध बताना या कहना ।	ठाकुर	1	76/18
बदनामी की बात करना[6]	कलंक की बात ।	ग्वाल	1	103/51

1. दरवाजे महराज के गये फिरादै ठानि ।। 66/56.

2. फूलत वाकु निदाघ मैं बन ते गुजरे चैत ।
फौजदार के फिरत ज्यों थाने रहत थनैत ।। 80/41.

3. तब ढोल दै दै बदनाम किये अब कौन की लाज लजाँवरी री ।। ठाकुर

4. किजिये न नीच संग नाम बदनाम है । - - - -
नाहक गँवाइबो गवारनी को काम है ।। 25/70.

5. या वृजवासी सबै बदनाम करै तुम्हरो और मेरो

6. मायके की सासरे की कुल कानि खामी करी
बात बदनामी की सुनी न काहू धरी है ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृष्ठ
बदनामी की गली बचा के रहना ।[1]	बदनामी से बच के रहना ।	बोधा	दि0भू0	/50
बदनामी के बीज बोना[2]	अपयश का काम कर चुकना ।	ठाकुर	।	15/42
		बिहारी	।	234/193
बहार आना[3]	अधिकता होना	ग्वाल	।	35/58
बारूद की जमात में अँगार[4]	विस्फोटजनक बात, जल उठना, जल जाना, गुस्सा आना।	ग्वाल	।	77/156
बड़ी बलाइ (बलाय)[5]	कष्ट देने वाले	बिहारी	।	234/193
उपजी बड़ी बलाइ[6]	कोई बड़ी बीमारी होना ।	,,	।	361/593

1. तुम जानती हौ कै अजान सबै करि आगे को ऊतरु धावती हौ ।
   बतराती कछु की कछु हित के अनुराग की आँखे छपावती हौ ।।
   हमे काह परी जो मनै करिबै कबि बोधा कहै दुख दावती हौ ।
   बदनामी की गैल बचाइ रहो कुलै काहे कलंक लगावती हौ ।। 50
2. अब सम्झावतो को समझै बदनामी के बीजन बोय चुकी री ।। 15/42ठाकुर
3. ग्वाल कवि कहै हूर परी से सुरंग बारी नाचती उमंग सो तरंग तान ताला की।
   बाला कीबहार औ दुसाला की बहार आइ पाला की बहार मै बहार बड़ी प्यालाकी।
4. मानो कहाँ रस की रसाइन गुपाल तुम कूबरी कसाइन के पाइन परे रहौ
   कहतै तिहारी बात गातते मभूके उठे परत बरूद की जमात ज्यों अँगारा है ।।
5. लोभ लगे हरि रूप के करी साँटि जुरिजाइ ।
   हौ इन बेची बीच ही, लोइन बड़ी बलाइ ।। 193.
6. नेहु न नैननु कौ कछू, उपजो बड़ी बलाइ ।
   नीर भरे नित प्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ ।। 593.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
बला से[1]	कोइ परवाह नहीं	बिहारी		421 या
			।	217/143
बलाय जाय[2]	मेरी बलाय जाय मैं नहीं (बलाय=कष्ट)	बिहारी	1	247/228
बलाय लगना[3]	बिमारी होना ।	बोधा	2	64/36
बिरह-बलाय[4]	विरह का रोग	बिहारी	1	351/561
बहार आना[5]	अधिकता होना	ग्वाल	1	38/58
बहार बरसना[6]	खुशी का समय होना	बोधा		136/42

1. तौ अनेक औगुन भरहिं चाहै याहि बलाइ ।
   जो पति सम्पत्ति हू बिना जदुपति राखै जाइ ।। 143.

2. ताहि देखि मनु तीरथनि बिकटनि जाइ बलाइ ।
   जा मृगनैनी के सदा, बैनी परसत पाइ ।। 228.

3. घर घर कूहर सी भइ कूह रही पूर छाय ।
   ऊहर सब कूहर भई बनितन लगी बलाय ।। 64/33.

4. तर झुरसी, ऊपर गरी कज्जल जल चिरकाइ
   पिय पाती बिन ही लिखि, बाँची बिरह बलाइ ।। 351/561.

5-6. ग्वाल कवि कहै दूर परी से सुरँगवारी
   नाचती उमँग सो तरँग तान ताला की ।
   बाला की बहार औ दुसाला की बहार आइ
   पाला की बहार मैं बहार बड़ी प्याला की ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
बाज आना[1]	ऊब जाना, हैरान, दिलचस्पी न रहना ।	केशव	केशव ग्रं०मु०	513/70
		दास	दि०भू०	166/67
		ग्वाल	1	57/104
		बे०प्र०		60/432
बाज उड़ाना[2]	दुष्ट का साथ होना	बोधा	2	/65

1. राति की वे गति द्यौस की ए अब हौं तेरी बातनि बाजहि आई ।। 513/70

दास अब को कहै बनक लोल नैनन की,
सारस खंजन बिनु अंजन हराये री ।
इनको तौ हासौ वाके अंग मैं अगिनि बासो,
लीला ही जोसारो सुख सिंधु-बिसराये री ।
परे वे अचेत हरे वे सकल चेत हैंत,
अलक भुजंगी उसी लोटन लोटाय री ।
भारथ अकथ करतूतिन न हारि लही
या तै घनस्याम लाल होते बाज आए री ।। 166/67.

2. ग्वाल कवि कहौ कौन मुख ते कहत बात कौन मुख लैके इहां आवत अलापते ।
ऐसे या मिलाप ते बिहारी बाज आइ हम खुसी है खिलारी अब तेरे वे मिलापते ।

बाज हौ आइ सनेह सौं रावरे बावरे बोलत लाज बिहूने ।
जाहू चले भले मोहन लाल जू पैठि पराये परे घर सूने ।। बे०प्र०

2. चाह के चित्त मरालन की निज हाथ तैं तू जिन बाज उड़ावै
गंग के नीर की आसा करै सरिता जल दोड़ कहां बनि आवै ।
जो तजने तो तजो हित कै कवि बोधा न वाद वितर्क बढ़ावै
संपति सौं जो प्रवेस नहीं तो वृथा क्यौं दरिद्र सौं तोरि नसावै ।। 65.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
विषाद की बरगाह बढ़ना[1]	दुःख का बढ़ना	उदयनाथ		
बे आब होना[2]	बे इज्जत होना, इज्जत उतर जाना ।	भूषण		
बे पाइ होना[3] या	आश्चर्य चकित होना ।	बिहारी	1	221/156
बे हाथ पैर का होना	स्तब्ध होना किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाना ।	,,	1	221/153
बेहाल होना[4]	मूर्च्छित होना ।	,,		238/204
मखमल पर सोना[5]	आराम की जिन्दगी बसर करना	ग्वाल	1	43/71
मगरूरी चक चूर होना[6]	गर्व दूर होना	बोधा	1,2	4/20, 84/38
मगरूर दिखाना[7]	घमण्ड करना ।	बोधा	1	6/33
मगरूरी दिल पर चढ़ना[8]	गर्व होना	बोधा	2	64/36

1. किंकिन की धुनि तैसी नूपुर निनाद सुनि
   सौतिन के बाढ़त विषाद बरगाह की ।।
2. जिनकी गरज सुने दिग्गज बे आब होत ।
   मद ही के आब गड़काब होत गिरि है ।। भूषण
3. कौंहर सौ एड़ीनु की, लाली देखि सुभाइ
   पाइ महावरु देइ को आप भई बे पाई ।। 156.
4. लागत कुटिल कटाच्छ सर क्यौं न होहि बेहाल ।
   कढ़त जिहियहि दुसाल करि, तऊ रहत नट साल ।। 204
5. दे॰ मुहा॰- अक्ल पर बासा किये
6. बोधा गुमान भरी तब लौ फिरिबो करौ जौ लौ लगी नहिं पूरी ।
   पूरी लगे लखु सूरन की चकचूर ह्वै जाति सबै मगरूरी ।। 4/20
7. पहिचाने प्रेम रकाने जे बेपरद दरद दरियाव हिलै ।
   मगरूर दिखाते आखिर या दिल सूर प्रेम को पंथ पिलै ।।
8. नौढा को रस पाय । मगरूरी दिल पै चढ़ी ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
मगरूरी न तजना[1]	गर्व न छोड़ना	बोधा	2	80/35
मगरूर तासो दूना[2]	घमण्डी से घमण्ड का	बोधा	2	111/62.
मगरूरी करना ।	व्यवहार करना । जैसा व्यक्ति हो, उसके साथ वैसा चलना ।			
मजकूर कहाँ[3]	गिनती कहाँ, चर्चा या महत्व का न होना ।	दूलह		
मजकूर होना[4]	महत्व होना चर्चा होना	बोधा	2	54/31
मजलन मारे[5]	पड़ाव मारना, मंजिल तै करना ।	दयानिधि		
मजलिस मुजरा लेना[6]	समूह में बैठकर आनंद लेना ।	बोधा	2	206/57
मति जोर होना[7]	बुद्धिमान, बुद्धि का तेज।	बोधा	2	38/30

1. आफत पड़ी जान पर जेती । तजी न मगरूरी दिल सेती ।।
2. होय मगरूर तासों दूनी मगरूरी कीजै ।
   लघु होय चलै तासो लघुता निबाहिये ।।
3. तेरे रूप जीत्यौं रति रंभा मेनका को ।
   और नारिन बिचारिन को मजकूर कहाँ ।। दूलह
4. इसी मजकूर है उनमाद । जो कीजै सही न संवाद ।
5. हारे बट मारे जे बिचारे मजलन मारे ।
   दुखित महा रे तिनहूँ को सुख ना दियौ ।। दयानिधि
6. समय पाय बिरहीन को भेख टर्स्टी देत ।
   सरिता के तट बैठि कै मजलिस मुजरा लेत ।। 206/57.
7. भोर सोर सुनि सहर में लीलावती मतिजोर ।
   आय जुहारी बिप्र को पुरबासिनहीं भोर ।। 38/30.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
मर्दानगी का काम[1]	साहस, हिम्मत का काम	ठाकुर	1	31/86
मसाल बुझना[2]	अंधेरा होना ।	बोधा	2	107/31
गाँठ से माल हिराना[3]	गाँठ से माल खोना अमूल्य वस्तु खोजाना।	बोधा	1	16/97
माफ हजार[4]				
माफी सबै हबूब[5]	माफी देना, कर मुक्त करना ।	बोधा	2	28/22
मुकाबले में पीठ देना[6]	भाग जाना, हार मानना	बोधा	2	32/33
मुंहजोर दृग[7]	बहुत बोलने वाला धृष्ट	मति		258
	बेबस नैन दीठ नेत्र ।	बिहारी	बिहारी ।	362/598

1. काम इहै मरदानगी कौ, सिर आन परै सु लिये बहने ।। 31/86 ठाकुर
2. ---- देखत ही हालै बुझी मसालैं अचरज चाहन बोई ।। /31
3. बोधा दसा अपनी कहु भृंग किधो कछु गाठि ते माल हिरानो ।
   रोवत संग लिये भ्रमरी तू मयो कहु कौन के सोच दिवानो ।।
4.
5. आना को बीघा जुतत माफी सबै हबूब ।
   फिर यह भुई कहँ पाय है तोसो राजा खुब ।। 217/22.
6. जिन प्रेम मुकाबले मैं पीठ दई नर ते जग बीच जिये तौ कहा ।। 32/33

7. मानत लाज लगाम नहि नेक न गहत मरोर ।
   होत लाल लखि बाल के दृग तुरंग मुंहजोर ।। मति० 258
   लाज लगाम न मानहीं नैना मो बस नाहिं ।
   ये मुंह जोर तुरंग लो रवैंचत हूँ चलि जाहिं ।। 598.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
मुंह स्याह होना[1]	बदनाम होना या कलंकित होना ।	रहीम भूषण बोधा	1 । 2	170/20
मोदी सा पकड़ना[2]	आसानी से पकड़ना या गिरफ्तार करना ।	भूषण बोधा		150/38
मोरचा लगना[3]	निस्तेज होना, निष्प्रभ होना, चमक कम होना।	बिहारी	।	258/260
भुजंग की यारी[4]	खतरनाक व्यक्ति की दोस्ती	गंग	दि०भू०	62/67.

1. तमक ते लाल मुख सिवा को निरखी भये ।
   स्याह मुख नौरंग सिपाइ मुख पियरे ।। भूषण
   रहिमन थोरे दिनन को कौन करे मुख स्याह ।। रहीम
   मुख मोर स्याह देखौ न कोय । इहि काल चिता बनि त्यार होय
   इमि सुनत बचन नृप वियोग । तब सचिव कह्यो विग्रह्यो संजोग ।। 170/20
2. प्रबल पठान फौज काढ़ि कै कराल महा
   अपनी मनाय आन जाहिर जहान को ।
   दौरि करनाटक में तोरि गढ कोट लीन्हे
   मोदी सो पकरि लोदी सेर खाँ अचानको ।
   भूषन भनत सब मारि कै बिहाल करि
   साहि के सुवन राचे अकथ कथानको ।।
3.
4. मेटिकै चैन करै दिन रैन ज्यों चाकरी ये न सदा सुखकारी ।
   ताको न चेत धरै गुन को भए नेकु सो लेस निकारत गारी ।।
   लेहै कहा हम छाड़ि महाप्रभु है जु महा छिवार बिहारी ।
   राज को संग कहै कवि गंग सुसिंघ को संग भुजंग की यारी ।। 62/67

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
यारी में ख्वारी करना[1]	बरबादी करना	बोधा	2	215/13
सुदिन के साथी यार[2]	अच्छे दिनों के साथी सभी होते हैं ।	बोधा	2	151/22
रंग उड़ना[3]	भय या लज्जा से चेहरे की रंगत जाती रहना, फीका पड़ना, हतप्रभ होना ।	घना०		
रंग और होना[4]		बिहारी	1	394/700
रंग कह देना, रंग निचुरत से नैन[5]	सब हाल कह देना	,,		306/418
रंग न छोड़ना[6]	अपना स्वरूप या स्वभाव न छोड़ना ।	वृन्द		626/101

1. माधो मेरे यार यारी में ख्वारी करी ।
   बीती अवधि अधार अब जीवों अधार किहि ।। 215/53.
2. सुदिन के साथी होत हाथी हथियार यार ।
   तात मात सोदरा औ नारि लरिका कहीं ।।
   सुदिन के साथी राजा राउ खान सुलतान
   मान या बितान तब पालकिन की लही ।
   बोधा कवि सुदिन समापति भये तौ आय
   आपत्ति अन्यास सुख प्रापति कहीं नहीं ।।
   वा दिन सपूतियाँ कपूतियौ ता दिन अहै ।
   अदिन परे ते नीर नदिन रहै नहीं ।। 151/22.

4:

3. उड़ि चल्यौ रंग कैसे राखियै कलंकी मुंह ।। 700.
5. मोहि करत कत बावरी करै दुराउ दुरै न कहै देत रंग राति, जे रंगनिचुरत से नैन ।
6. -- तजत न अपनो रंगमणि विम्बहर विषधर संग सदा रहत इक संग ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
रँग बरसाना[1]	आनन्द देना	घना०		184/185
रँग में ढालना[2]	अनुवर्ती होना	रसखान	घ०वस्व०	पृ/131
		बे०प्र०		10/51
रँग में रँग जाना[3]	किसी भाव या प्रभाव	घना०		198
	में तल्लीन हो जाना।	कृपा०		~~84/340~~
रँग रक्त[4]		बोधा		74/340
रँग होना[5]	अनुराग होना	बिहारी		187/59
रकम घट-बढ़ होना[6]	हिसाब में घटी बढ़ी होना।	बिहारी		265/282

1. प्रेम सो लपेटी कोऊ निपट अनूठी तान,
   मो तन चिताय गाय लोचन दुरायगौ।
   तब ते रही हौं घूमि झूमि जकि बावरी ह्वै
   सुर की तरँगनि में रँग बरसायगौ।।
2. मानि है काहू की कानि नहीं जब रूप ठगी हरि रँग ढलैगी।।
3. लाज अचै बिन काज खगौ तिनही सो पगौ जिन रँग रए हौ।। घना०
4. रैन अँधेरी नील पट मृग मद चर्चें अँग।
   सघन घटा सी लखि परै रँगी श्याम के रँग।। 74/340.

3. जाके रँग रँगे सँग जगे हैं बेनी प्रवीन
   बेनी ऐसी कौन रमनी तिहारे समतूल की।। 10/51.

6. नब नागरि तन मुलुक लहि, जोबन आमिर जोर
   घटि बढ़ि तैं बढ़ि घटि रकम करी और की और।। 282

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
रद्दी करना[1]	बेकार या व्यर्थ कर देना	बिहारी		258/262
	फीका कर देना ।	ग्वाल	।	37/55
राह चलाना[2]	रास्ते पर मारना, चले जाना ।	बोधा		58/259
राह दारी की बात[3]	सड़क पर कर वसूलने की बात ।	ग्वाल	।	
राह पड़ना[4]	डाका पड़ना, लूट पड़ना ।	पद्मा०		
रूखी रूख[5]	रूखा पन, कठोरता दिखाना ।	बिहारी		365/608

1. सोहत धोती सेत में, कनक बरन तन बाल
   सादर-बादर बीजुरी, भा रद कीजति लाल ।। 262.
   चाँदनी है चोवन पै परदे दरीचन मैं
   दुहरे दुलीचे है गलीचे गोल गद्दी मैं ।
   ग्वाल कवि भाँति-भाँति भोजन है भामिनी है
   दीप है दुसाले हैं मसाले मैन मद्दी मैं ।
   चापि के चुहद्दी साज सौं जपै विहद्दी वैस
   कह्या सीत रद्दी तब डूब्यो आय नद्दी मैं ।।
2. ग्वालन ते गोपन ते गहकि गहकि मिले ।
   गली मैं चली है भली बात राह दारी की ।।

4. कहै पद्माकर त्यौं रोगन की राह परी ।
   दाह परी दुखान में गाह अति गाज की ।। पद्मा०
5. नहिं नचाइ चितवति दृगनु, नहिं बोलती मुसुकाइ ।
   ज्यौं ज्यौं रूखी रूख करति त्यो त्यौं चित्तु चिकनाइ ।। 608

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
रुख लेना[1]	इच्छा जानना, किसी की ओर होना ।	घना०		131 पृ०
आँख रँगना[2]	आँख लाल होना, प्रेम में अनुरक्त होना ।	बिहारी		306/417
चाह का रँग[3]	प्रेम का भाव ।	घना०	घ० क०	
नवरँग में एक रँग भी न रहना ।[4]				
बूढ़े को रँग होना[5]	वृद्धों को प्रेम आना, बूढ़ों को प्रेम होना ।	बिहारी	।	187/59
सहज रँग न आना[6]	स्वाभाविक स्वरूप न आना ।	बिहारी	।	286/348
साँवले रँग में रँगना[7]	कृष्ण के प्रेम में अनुरक्त होना ।	ठाकुर	।	34/94

1. एक ही टेक न जानति जीवन प्रान सुजान लियैं रुख ।।
2. जिहिं भामिनि भूषन रच्यौ, चरन महावर भाल ।
   उन्हीं मनौ अँखियाँ रँगी ओठनु कै रँग लाल ।। 417.
3. चाह के रँग में भीज्यौ हियो बिछुरे मिले प्रीतम साँति न मानै ।
4.
5. कुढँग कोपु तजि रँगरलि, करति जुबति जग गोइ ।
   पावस बात न गूढ़ यहि बूढ़न हूँ रँगु होइ ।। 87/59.
6. अजौ न आए सहज रँग बिरह दूबरे गात ।
   अबही कहा चलाइयतु, ललन चलन की बात ।। 286/348.
7. हम साँवले रँग रँगी सो रँगी ।। ठाकुर

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
सावला रंग होना[1]	काला या मैला होना	शंभु०	दि०भू०	145/53
सोने का रंग कसौटी लगै ।[2]	(मसल)	महाकवि	,,	
लंका की मुहीम[3]	बहुत बड़ा या बहुत कठिन काम, युद्ध संग्राम या लड़ाई ।	गंग		
वासिलात बूझना[4]	हिसाब करना, आय-व्यय अथवा कुल आय का जोड़ ज्ञात करना ।	बे०प्र०	1	5/12
खरा शोर करना[5]	स्पष्ट बोलना, आवाज करना ।	बोधा		34/46
दीरघ शोर होना[6]	बहुत अधिक कोलाहल होना	बोधा	2	174/41

1. मैलो कर डारत पीत पटा घर जानन पैर बोलावन धावन ।
   लाल मलीन ह्वै जात जबै जब बारही बार सनेह लगावत ।।
   ध्वाइए औ रहिए कवि संभु ए धोइबो मो पै नहीं बनि आवत ।
   तू कलपावत एरी भटू हम सावरे सैन ही कल पावत ।। 53
2. साँवरी हाहुंगी साँवरे संग मैं बावरी बात सिखाइ है कौने ।
   सोने को रंग कसौटी लगै पै कसौटी को रंग लगै नहीं सोने ।। 90.
3. बाढ़ी सीत सैं संका काँपै उर दूवै अतंक
   लघुसंका के लगेते होत लंका की मुहीम ।।
4. राख्यो है किसोरपन जोबन बहाल करि
   मदनमहीप वासिलात बूझि लेन को ।। बे०प्र० 5/12.
5. पिक चातक सोर खरे करिहैं बिरही जन प्रानन ते हरि हैं ।। 34/46
6. भयो दल मैं अति दीरघ शोर सुन्यो नृप बिक्रम को हठ घोर ।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
दोनों दल में शोर[1]	दोनों तरफ की सेनाओं या समूह में कोलाहल होना ।	बोधा	2	189/36
शर्म खाना[2]	लज्जित होना	ग्वाल		19/10
शरमिन्दगी उर आनि[3]	हृदय में लज्जा के भाव आना मन में लज्जित होना ।	बोधा	2	125/49
शरमिन्दगी न खाना[4]	लज्जा न करना, बेशर्म होना ।	बोधा	2	65/42
शान चढ़ाना[5]	किसी एक बात को और बढ़ाना, तीव्र बनाना।	घना०	हि०मु०	672/114
शान मारना[6]	घमंड की बात करना ।	गिरधरदास	कुण्ड	672/18
शिकार करना[7]	घायल करना ।	बिहारी		232/186

1. तन भाई च्चीस लै आयो उत रन जोर ।
   है जाके बलजोर के दोनों दल में शोर ।।
2. ---- पानिप परम मंजु मुकुता सरम खाय ।। 19/10
3. गिरी परी ढाढै दरद बाढै रही गर लिपटाय ।
   कर धार देखो नारिका की नारिका न लखाय ।।
   तब माधवा उर सौंकि कै भरि अंक लीन्हीं बाल ।
   सरमिंदगी उर आनि कीन्हीं रिंदगी ततकाल ।। 125/49.
4. सिसु तो पुकारे दुवार में भरतार खोरन माहिं ।
   द्विजनंद की पइरिंदगी सरमिदगी नहिं खाहिं ।। 65/42.
5. तीछन ईछन बान बखान सो पैनी दासनि लै शान चढ़ावत ।। घना०
6.
7. खेलत सिखर अलि भले चतुर अहेरी मार ।
   कानन चारी नैन मृग, नागर नरनु शिकार ।। 186

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
शोर कर के मारना[1]	बोली से कष्ट होना	बोधा	2	207/65
शोर करना[2]	कोलाहल करना, हाहाकार करना, विलाप करना ।	,,	2	169/82 76/2
शोर छाया[3]	अधिक से अधिक दूरी तक आवाज का फैलना या पहुँचना ।	बोधा	2	146/63
शोर तजना[4]	बोलना छोड़ देना ।	बोधा	2	132/28
शोर पारना[5]	प्रसिद्धि फैलाना ।	बिहारी	1	381/660
शोर बढ़ना[6]	चर्चा चलना ।	बोधा	2	66/54

1. कहूँ वज्र की घोर पप्पी चिहारै ।
   कहूँ मोरवा सोर कै मोहिं मारे ।। 207/65.
2. हा हा कहि सोर सखीन कर्‌यो । काहू पल एक न धीर धर्‌यो ।। 82.
2. कर गहि माधवा को लीन्ह । इहि विधि सोर तिहि ठौं कीन्ह ।। 76/2
3. बजे ढोल सारी पुरी सोर छायो । वियोगी को नाहीं कहूँ सोध पायो ।। 146/63
4. कैधों मोर सोर तजि गये री अनत भागि ।
   कैधों उत दादुरन बोलत है ए दई ।।
   कैधों पिक चातक महीप काहू डारे मारि,
   कैधों बकपांति उत अंत गति ह्वै गई ।
   आलम कहत मेरे अज हूँ न आए पीव
   महाविपरीत कैधों बुद्धि वै ठई ।।
   मदन महीप की दुहाई फिरिबे ते रही,
   जूझ्यो कहूँ मेघ कैधों बीजुरी सती भई ।। 28.
5. पार्‌यो सोरु सुहाग कौ, इनु बिनु हीं पिय नेह ।
   उन दौंही अँखिया ककै, कै अलसौही देह ।। 381/660.
6. बाढ़ो सहर मैं यह सोर । माधो है सही चितचोर ।। 66/54

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
बचे न बड़ी सबील हू[1] चील्ह घोसवा मांस ।	(मसल) चील्ह के घोसले में रखा मांस अनेक चेष्टा करने पर भी नहीं बचाया जा सकता है ।	बिहारी	1	372/621
सवाब लेना[2]	सुन्दरता देखना ।	बोधा	2	69/26
सफेद होना[3]	बहुत अधिक उजाला होना ।	ग्वाल	1	35/49
कौन सखत है[4]	ब्यौरा न होना, अनगिनत होना ।	बोधा	2	136/42
स्वान सिपाही ने हन्यो -[5]				68/12
सिफत इस्क दरियाव[5]	प्रेम समुद्र का गुण कहते नहीं बनता।	बोधा		175/13

1. बहकि न इहि बहिनापुली, जब तब पीर बिनासु ।
बचे न बड़ी सबील हू, चील घौसुवा मांस ।। 631.
2. हंस्यो न बोल्यो जोरि दृग दीन्हों नहीं जबाब ।
बूझौ थौ बनितान सौं मो ढिग लयो सबाब ।। 69/26.
3. ग्वाल कवि कहै दसो दिशा ह्वै गई सफेद ।
खेद को रह्यो न भेद फूली है हरष ते
लीपी अबरष ते की टीपी पुज पारद ते
कैधौं दुति दीपी चारु चांदी के बरख ते ।। 35/94.
4. आठउ दिसान दरवाजे अस्ट राजै खाईं ।
कोट औ कंगूरन की कौन सखत है ।। 136/42.
5.

6. ज्यौं हाथ मैं माधवा नृपति लख्यो निज नैन
सिफत इस्क दरियाव की मुख ते कहत बनै न ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
सिर चढ़ना[1]	सिर से लगा कर अधिक प्रेम देकर ।	बिहारी		351/562
सिरताज होना[2]	श्रेष्ठ होना ।	बिहारी	।	230/183
सिर झुकना या सिर नवाना[3]	आदर देना, करना	सेनापति	हि0 मू0	693/2
	सादर प्रणाम करना	पद्मा0	,,	695/2
	लज्जा से सिर झुकना	सेनापति	,,	695/87
	विनम्रतापूर्वक कुछ करना	केशव		377.
		केशव		/97
सिर पर आ पड़ना[4]	जब एनवक्त आ जाय	केशव	।	309
	भोगना जो आ पड़े ।	ठाकुर	।	31/86 देo मर्दानगी में
सिर पर पगड़ी बाँधना[5]	दायित्व या गौरव मिलना	सेना	।	121
सिर मौर[6]	श्रेष्ठ होना, ऊंचा स्थान मिलना ।	घना0		225
		पद्मा0		67

1. कर लै चूमि चढ़ाइ सिर उर लगाइ भुज भेटि ।
   लहि पाती पिय की लखति बाँचति धरति समेटि ।। 562.
2. औरे ओप कनीनिकनु, गनी घनी सिरताज ।
   मनी धनी के नेह की, बनी छनी पट लाज ।। 183.
3. बुद्धि के बिनाइ कै गुसाईं कविन्नाइकै, सु लीजियौ बनाइ कै कहत सिरनाइकै ।
   ताते प्रथमहि नाइका कहत बनाइ ।
   जुगति जथामति आपनी सु कविन को सिरनाइ ।। पद्मा0
   इत सुर राज उत ठाढे है असुर राज, सीस दिगपाल भुवपाल नवावत है ।। से0
   सब देव अदेवनि अरु नर देवनि, निरखि निरखि सिर नाय ।। केशव.
   नरी किन्नरी आसुरी सुरी रहति सिर नाइ ।। केशव
4. मति भूलि गई तब सोच करत अब जब सिर ऊपर आई ।। केशव 309
5. आप तन देखिये न देखौ करतूति मेरी अधम उधारिबे की तेरे सिर भागरे ।।
6. नेही सिरमौर एक तम ही लौं मेरी दौर नाही और ठौर कोहि साँकरे सँभारिये । घ0
   अलंकार ये तीनहू बरनत कवि सिरमौर ।। पद्मा0

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
सिरे का[1]	अव्वल दरजे का श्रेष्ठ	पद्मा०		2
सुरंग लगाना[2]	प्रेम करना, सुरंग(मार्ग) किले को तोड़ने के लिए सुरंग की सहायता ली जाती है ।	बिहारी	1	295/377
सूम की सेवा[3]	व्यर्थ का कार्य, जिसमें	बोधा	1	/94
	कुछ लाभ न हो ।		2	159/74
मुंह स्याह होना[4]	कलंकित होना ।	बोधा	2	170/20
मुंह पर स्याही झलकना[5]	कलंकित होना ।	भूषण	1	231
कही लुकमान हकीम[6]	हकीम लुकमान का कहा हुआ ।	बोधा	2	164/3

1. नव रस में जु सिंगार रस सिरै कहत सब कोइ ।। पद्मा०
2. क्यौं हूं सहबात न लगै, थाके भेद उपाइ ।
   हठ दृढगढ गढवै सुचि, लीनै सुरंग लगाइ ।। 377.
3. स्याही जाय सब पात साही मुख झलकी ।। 231.
4. मुख मोर स्याह देखौ न काय ।
   इहि काल चिता बनि त्यार होय ।।
   इमि सुनत बचन नृप के वियोग ।
   तब सचिव कह्यो विग्र्यो संजोग ।। 20.
5. स्याही जाय सब पातसाही मुख झलकी ।। 231.
6. नहीं यह बेदन बेदन देखि ।
   कही लुकमान हकीम बिसेखि ।। 164/43.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
हकीम का जतन यम होना	अच्छा करने पर बुरा हो जाना, या कष्ट कारक होना। रक्षा ही मृत्यु का कारण बन जाय।	बोधा	2	169/81
हकीम मुकाम गाना[2]				
हकीम की न चलना[3]	दवा का असर न होना, रोग में आराम न होना।	बोधा	2	142/35
हकीमों के उपचार लगा के थक जाना।[4]	हकीम का उपचार कारगर न होना, रोग में आराम न होना।	बोधा	2	8/42
हजार कोस की दूरी लगना।[5] (पैंड़ो कोस हजार)	थोड़ी दूरी भी बहुत अधिक महसूस होना।	बिहारी	1	284/342

1. होनहार को ख्याल जम भो जतन हकीम को।
   उठ्यो ढाल ते काल कहो ओट दिजै कहा।

2.

3. करे उपचार बिचार अनेक लगै नहिं रोगहु जोगहु एक।
   हकीमन की न चलै मनसाह लखै तिय देह अपूरब दाह ।। 142/35

4. केतन आइ लगाइ थके कवि बोधा हकीमन को उपचारो।
   पै न घरै वह पीर अली न मिलै वह पीर को जानन हारो ।। 8/42

5. सारी निसा मतिराम मनोहर केलि के पुंज हजार उघारे ।। मति 95

5. जदपि तेज रौहालबल, पलकौ लगी, बार
   तौ ग्वैड़ौ घर कौ भयो पैंडो कोस हजार ।।

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
हजार तरह से[1]	अनेक प्रकार से	मति०	हि०मु०	95
हजार घाइ करना[2]	अनेक चोट या घाव करना।	बिहारी	1	235/196
हजार माफ[3]	सभी गलती माफ करना	बोधा	2	134/28
हजार वर्ष जीये[4]	बहुत अधिक दिन तक जीवित रहना।	बोधा	2	174/37
हद्द बांधना[5]	सीमा निश्चित करना अधिकार।	भूषण	1	414 118/21
हद्द बांधत वेद-पुरानन की।[6]	वेद और पुराणों की भी सीमा निश्चित करते हैं अर्थात् वेद पुराण लिखने वाले (ब्रह्माजी)	~~ओप्रार~~ बोधा	~~x~~ 2	~~xx/8x~~ 34/49
हद्द रखना[7]	सीमा सुरक्षित करना या रखना।	भूषण	1	129/51

1. सारी निसा मतिराम मनोहर केलि के पुंज हजार उघारे।। मति 95.
2. करत बचावत बिय नयन पाइक घाइ हजार।। 235/196.
3. बाइस चूकै बिप्र की माफ कहत संसार।
   नृपति विक्रमादित्य के द्विज की माफ हजार।। बोधा, 134/28.
4. एक बेर मरने परै बोधा यहि संसार।
   तौ जैसे दस दिन जिये तैसे वर्ष हजार।। 174/37.
5.
6. मुख चारि भुजा पुनि चारि सुने हद बांधत वेद पुरान की।
   तिनकी कछु रीभि कहि न परै इहि रूप या कोकिल तानन की।। 34/49, ~~xx/8x~~.
7. राजन की हद्द राखी तेग बल सिवराज।
   देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर मैं।। 129/51.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
हबसी का लड़का होना[1]	कुरूप या काला होना बहुत काला ।	गंग	दि०भू०	
हमेसा हाजिर होना[2]	हर वक्त सेवा के लिए उपस्थित या तत्पर रहना ।	ग्वाल	।	48/81
हराम जादा होना[3]	अमर्यादित होना, उत्तम व्यक्ति का अधम या नीच होना ।	ठाकुर	।	27/75
हलक सूखना[4]	प्यास लगना गला शुष्क होना ।	देव	बि०स०	286
हलाल करना[5]	गरदन हलाल, धीरे-धीरे तड़पा के मारना ।	ठाकुर	32/91	

1. को बरनै उपमा कवि गंग सो तोही में है गुन उरबसी के
   जा दिन ते दरसो मुसकानि सो कान्ह भये बस तेरे हँसीके ।
   चंद से आनन में तिल राजत ऐसे विराजत दांत मिसीके
   फलन के फलवारिन में मनो खेलत है लरिका हबसी के ।।
2. हूर या परी सा नूर नाजना सहूर बोरी ।
   हाजिर हमेस होय तो दिल भी थमा रहे ।। ग्वाल
3. मीर जादे पीर जादे असल अमीर जादे साहिब फकीर जादे जादे आप खो रहे
   राव जादे राइ जादे साहजादे कुल के असील जादे नींद ही में सो रहे ।।
   दान किरवान समै ग्यान गुन ध्यान समै सब जादे मिटि के हरामजादे हो रहे ।।
4. ---- लागी रहै हिलकी हलक सूखी हालै हियौ ।
   देव कहै गरोसभरो आवत गहक गहक ।।
5. आपनेइ हाथ लै कै करत हवाल एसो, कांपे हनिहारं यौं हलाल गरदन को ।
   ---- एक सो निबाहिबो है काम मरदन को ।। 32/91.

मुहावरे	अर्थ	कवि	रचना	पृ/छ
हाकिम बरियाई लेत[1]	(मसल) अधिकारी जबरदस्ती कुछ भी ले लेता है ।	बोधा	2	156/52
हाजिर रहना[2]	खिदमत या सेवा मैं रहना ।	ग्वाल		45/75
हाथी देकर अंकुश न देना ।[3]	हाथी दे कर अंकुश देने मैं शोच करना, बड़ी चीज देकर छोटे चीज देने मैं हिचकना	देव	दि०भू०	238/63
हिम्मत हेराना[4]	हिम्मत नष्ट होना ।			73/95
हिम्मत हिसिगइ[5]		भूषण		४४९
हुक्म पाना[6]	आदेश मिलना	ग्वाल	।	39/61

1. ल्यावत चोर चुराय कै दियो भिखारी लेत ।
   बरियाई हाकिम कहै आन मिलै सो हेत ।। 52.
2. ग्वाल कवि हाजर खुदा की बंदगी मैं रहु ।। 45/75.
3. हाथी दै निशकि काहू अंकुश को बाद कीन्हो ।
   सो परवानो सोची प्रिय प्यारे बिछुरावती ।। 238/63.
4.
5.
6. ग्वाल कवि कैसो लालू लाहो हो गुलाल लाल
   पाऊ जो हुकुम तो लगाउ माल भूम कै ।।

उपसंहार

उपसंहार

शब्द समूह के विचार से प्रत्येक भाषा एक प्रकार से खिचड़ी होती है। किसी भी भाषा के विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि वह अपने प्रारंभिक विशुद्ध रूप में अब तक चली आ रही है। दो व्यक्ति अथवा समुदाय भाषा-माध्यम की सहायता से अपने विचार परस्पर प्रकट करते है तब भाषा का मिश्रित होना आश्चर्य की बात नहीं। भाषा के सम्बन्ध में विशुद्ध शब्द का व्यवहार करने से केवल इतना समझा जा सकता है कि किसी विशेष काल या देश में उसका वह विशेष रूप प्रचलित था या है। जो भाषा आज विशुद्ध कहलाती है, वह पाँच-सौ वर्ष पश्चात् दूसरे रूप में कहलायेगी।

सामान्यतः हिन्दी शब्द समूह तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है :-

(1) भारतीय आर्य भाषाओं का शब्द-समूह।

(2) भारतीय अनार्य भाषाओं से आये शब्द तथा

(3) विदेशी भाषाओं के शब्द।

हिन्दी शब्द समूह में सबसे अधिक संख्या उन शब्दों की है, जो प्राचीन आर्य भाषाओं से मध्यकालीन भाषाओं में होते हुए चले आ रहे हैं। व्याकरण की परिभाषा में ऐसे शब्दों को तद्भव कहते है, क्योंकि यह संस्कृति से उत्पन्न माने जाते थे। इनमें से अधिकतर शब्दों का सम्बन्ध संस्कृत शब्दों से जोड़ा जाता है किन्तु जिन शब्दों का सम्बन्ध संस्कृत से नहीं जुड़ता उनमें ऐसे शब्द भी हो सकते है, जिनकी व्युत्पत्ति प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के ऐसे शब्दों से हुई हो, जिनका व्यवहार प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के साहित्यिक रूप (संस्कृत) में न होता हो। इसलिए तद्भव शब्द का संस्कृत शब्दों से सम्बन्ध निकल आना आवश्यक नहीं है। इस कोटि के शब्द प्रायः मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं

से होकर हिन्दी में आये हैं इसलिए इनमें से अधिकतर के रूपों में बहुत परिवर्तन हो जाना स्वाभाविक है । सर्वसाधारण की बोली में तद्भव शब्द अत्यधिक संख्या में मिलते हैं । साहित्यिक हिन्दी में गँवारू समझे जाने के कारण इनकी संख्या कम हो जाती है । वस्तुतः ये असली हिन्दी शब्द हैं । कृष्ण शब्द की अपेक्षा कन्हैया अथवा कान्हा शब्द हिन्दी का अधिक सच्चा शब्द है ।

भारतीय अनार्य भाषाओं से आये हुए शब्द :

हिन्दी के तत्सम तथा तद्भव शब्दों में से अधिकांश शब्द ऐसे हैं, जो प्राचीन काल में अनार्य भाषाओं से तत्कालीन आर्य भाषाओं में आ मिले थे, जो हिन्दी के लिए वस्तुतः आर्यभाषा के शब्दों के सदृश है । प्राकृत वैयाकरण जिन प्राकृत शब्दों को संस्कृत शब्दों में नहीं पाते थे, उन्हें अनार्य भाषाओं में आये हुए समझ लेते थे ।

विदेशी भाषाओं के शब्द :

एक लम्बे समय तक भारत विदेशी शासन में रहा इस कारण यह स्वाभाविक है कि विदेशी भाषा का प्रभाव हिन्दी पर पड़े । इसे दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है । पहला इस्लामी और दूसरा योरोपियों का प्रभाव जो प्रायः सैद्धान्तिक रूप में बहुत कुछ समान है । एक प्रकार के वे शब्द जो कचहरी, सेना स्कूल आदि विदेशी संस्थाओं में प्रयुक्त होते थे, दूसरे वे शब्द जो विदेशी प्रभाव के कारण आयी हुई नवीन वस्तुओं तथा नये ढंग के पहनावे, खाने, खेल, यंत्रों के नाम आदि होते थे ।

संस्कृत के स अक्षर की ध्वनि फारसी में ह के रूप में पाई जाती है, इसलिए संस्कृत के सिंधु तथा सिंधी शब्दों का फारसी रूप हिन्द व हिन्दी शब्द हो गया और यह शब्द फारसी का कहलाया । फारसी में हिन्दी का शब्दार्थ हिन्द सम्बन्धी है किन्तु इसका प्रयोग हिन्द के निवासी अथवा हिन्द की भाषा के अर्थ में होता रहा है । हिन्दी शब्द के साथ-साथ ही हिन्दू शब्द भी फारसी से ही आया है ।

फारसी में हिन्दू शब्द का प्रयोग इस्लाम धर्म पर विश्वास न करने वाले हिन्दवासी के अर्थ में प्रायः मिलता है । इसी अर्थ के साथ यह शब्द अपने देश में प्रचलित हो गया । शब्दार्थ के विचार से हिन्दी शब्द का व्यवहार हिन्द अथवा भारत में बोले जाने वाली किसी भी आर्य, द्रविड़ या अन्य भाषा के लिए हो सकता है । किन्तु वस्तुतः इसका व्यवहार उत्तरभारत के मध्य भाग में हिन्दुओं की आधुनिक साहित्यिक भाषा के अर्थ में विशेषतया और इसी भू भाग की बोलियों एवं उनसे सम्बन्धित प्राचीन साहित्यिक रूपों के अर्थ में सामान्यतया होता है । साथ ही इन स्थानों के ग्रामीण क्षेत्रों की मारवाड़ी ब्रज छत्तीसगढ़ी मैथिली आदि की ओर प्राचीन ब्रज अवधी आदि साहित्यिक भाषाओं को भी हिन्दी भाषा में ही समझा जाता है । हिन्दी भाषा का यही अर्थ भारत स्वतंत्र होने से पहले प्रचलित था ।

फारसी, अरबी, तुर्की और पश्तो के शब्दों का प्रभाव 1000 ई० के लगभग से होने लगा । प्रायः 600 वर्ष तक हिन्दी भाषी जनता पर तब तक रहा जब-तक हिन्दी भाषी जनता पर तुर्क अफगान और मुगलों का शासन रहा, जिनके कारण बहुत से शब्द ग्रामीण भाषा तक में समाविष्ट हो गये ।

हिन्दी भाषा में अरबी फारसी शब्दों के आगमन का सबसे बड़ा कारण मुसलमानों का भारत में आना और बस जाना था । मुसलमानों के आने से बहुत पहले भी अरब व ईरान के साथ भारत का सम्बन्ध था, अरब व्यापारियों के भारत आने की बात की पुष्टि हो चुकी है । भारत का प्रभाव अरबों पर और अरबों का प्रभाव भारतवासियों के सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन पर पड़ता था । मौलाना सुलेमान नदवी ने अपनी पुस्तक अरब व हिन्द के ताल्लुकात में कहा है कि महाभारत के जमाने में भी हिन्दुस्तान में ऐसे लोग थे, जो अरबी जबान से वाकिफ थे । गो मुश्किल से इसका यकीन आ सकता है, ताहम चूंकि एक बड़े पण्डित ने इनको माना है इसलिए मुझको इसके इन्कार की जुर्रत नहीं । सत्यार्थ-प्रकाश के मुसन्निफ स्वामी दयानन्द जी ने ग्यारहवें समुल्लास (पहला, प्रो० अध्याय-147) में लिखा है "महाभारत में जब कौरवों ने लाख का घर बना कर पांडवों को

उसके अन्दर जलाकर फूंक देना चाहा, तो विदुर जी ने युधिष्ठिर को अरबी जबान में बताया व युधिष्ठिर जी ने उसी अरबी जबान में उसका जबाब दिया ।"

अगर हम इसको ठीक मान लें तो फिर अरब व भारत के पुराने सम्बन्ध में कुछ और कहने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती । यों भी यह बात मानी जा चुकी है कि भारत का अरब देशों से पुराने काल में सम्बन्ध था भारत की पुरानी पुस्तकों में अरबों का व अरबों की पुरानी पुस्तकों में भारत का हाल मिलता है । अरब इतिहासकारों ने 'जाट' व 'मेड़' इन दो लड़ाकू जातियों का वर्णन किया है, अरब सेना के साथ जाटों ने भी ईरान के विरुद्ध में युद्ध किया था । ये जाट बड़े अच्छे सिपाही थे और अरबों को इन पर बड़ा भरोसा था ।

अरब के बाद मुसलमानों के आक्रमण हुए और इन मुसलमानों को भारत के प्रति इतना मोह हो गया कि ये इसी धरती पर बस गये तथा यहीं के होकर रह गये । इन्होंने अपने देश और जन्मभूमि की ओर कभी मुड़ कर देखने की जरूरत ही न समझी । मुसलमानों के भारत में बस जाने से यहाँ की भाषा पर मुसलमानों की भाषा का प्रभाव पड़ने लगा और यह प्रभाव धीरे-धीरे तब तक पड़ता रहा जब तक मुगलों का राज्य रहा । मुगल पराभव के साथ ही इसका प्रभाव थम गया ।

संवत् 1000 के बाद से मुसलमानों ने भारत पर बारम्बार अफगानिस्तान के रास्ते से चढ़ाइयाँ की । इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में पंजाब मुसलमानों का अड्डा बन गया । सन् 1207 ई0 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया और दरबार की भाषा फारसी नियुक्त किया और धर्म की भाषा अरबी चली आ रही थी । अरबी तुर्की शब्द सीधे हिन्दी में नहीं आये वे सब फारसी में से होकर आये हैं । 7 वीं शताब्दी में ईरानियों के अरबियों द्वारा पराजित होने पर ईरान राज्य में अरबी सभ्यता के साथ-साथ इस्लाम धर्म का प्रचार भी हुआ। इस धार्मिक आन्दोलन के कारण सहस्रों अरबी तुर्की शब्द फारसी में आ गये । अतः ~~~~ ~~~~ हिन्दी में आने के पूर्व अरबी तुर्की शब्दों की मूल ध्वनियाँ नष्ट प्राय हो चुकी थीं और उनका रूप फारसी के समान हो गया था । अतः हमने समस्त

मुसलमानी शब्दों का व्यावहारिक दृष्टि से फारसी मान कर हिन्दी सम्बन्धी ध्वनि-परिवर्तन विवेचन किया है ।

ज्वाद

संस्कृत में फारसी خ (खे) { ذ (ज़ाल) ز (ज़े) ض (जोय) ظ (जोय) } ع (ऐन) غ (गैन) ف (फ़े) ق (काफ) आदि के लिए कोई ध्वनि नहीं थी, परन्तु हिन्दी में उनके लिए क्रमशः ख़ ज़ अ़ ग़ फ़ क़ आते हैं । प्रत्येक विदेशी भाषा की ध्वनियों को अपनी ग्राहक भाषा की ध्वनियों के अनुसार परिवर्तित होना पड़ता है । अतः कुछ फारसी शब्द तो तदनुसार विकृत हो ही जाते हैं । परन्तु अनेक इस कारण भी परिवर्तित हो जाते हैं कि हिन्दी विद्वानों का मत है कि फारसी आदि विदेशी शब्दों का हिन्दी रूप देकर प्रयुक्त किया जाय और यह ठीक भी है । इस प्रकार फारसी शब्दों के हिन्दी में आने पर उनमें अनेक ध्वनिपरिवर्तन हो जाते हैं ।

सबसे अधिक मुसलमानी शब्द बलबन के राज्य में ही आने प्रारंभ हुए जिसकी परंपरा मुगल काल तक अक्षुण्ण बनी रही क्योंकि बलबन ने ही भारत में प्रभुता-सम्पन्न मुस्लिम राज्य को स्थापित किया । बलबन सन् 1206 से 1290 तक विद्यमान रहा, इसने दरबार की भाषा फारसी निश्चित की । इसके दरबार में विद्वानों को समुचित स्थान प्राप्त था क्योंकि वह स्वयं शिक्षित एवं शिष्ट था व साहित्यकारों व विद्वानों के प्रति अनुरागी एवं सहिष्णु था । उन्हें दरबार में आश्रय देता था । मध्य एशिया से मंगोलों से आतंकित होकर अनेक विद्वान् और साहित्यकार भाग कर भारत चले आये थे । बलबल ने इन्हें राज्यसभा में शरण दी थी । इससे उसकी राज्यसभा विद्वानों विद्यानुरागियों और साहित्यकारों का केन्द्र बन गया था । इसकी राज्यसभा इस्लामी ज्ञान विद्या और संस्कृति की केन्द्र थी । महमूद गजनवी के समय महाकवि फिरदौस ने अपनी अमर रचना शाहनामा लिखा था जो फारसी की प्रसिद्ध रचना है (इसमें कोतवाल शब्द का प्रयोग है, जो हिन्दी भाषा से लिया गया शब्द है जिसका अर्थ किला का मालिक है) । बलबन के दरबार में शाह नामा का नियमित पाठ होता था ।

अकबर का मंत्री राजा टोडरमल ने सरकारी नौकरों के लिए फारसी पढ़ना अनिवार्य कर दिया जिससे सारे हिन्दू सरकारी नौकर फारसी पढ़ने लगे और हिन्दू घरों में फारसी की चर्चा होने लगी । दरबार की भाषा पहले ही फारसी थी । इस शिक्षा के प्रभाव से बोलचाल की भाषा में फारसी शब्दों के साथ-साथ हिन्दी समानार्थी शब्दों का बोला जाने लगा जिससे फारसी शब्द का अर्थ ज्ञात हो सके, इसका प्रभाव यह हुआ कि बोलचाल में इन युक्त शब्दों का प्रचलन प्रारंभ हो गया जो आज भी देखने को मिल जाता है । जैसे — नौकर-चाकर, गली-कूचा, शादी-ब्याह, मन्दिर-मस्जिद, लाजशर्म, बाल-बच्चे, आसा-सोटा, राह-बाट आदि ।

रीतिकाल के कवियों के प्रकाशित एवं उपलब्ध ग्रंथ 61 हैं । समग्र रीतिकालीन साहित्य का अध्ययन करने पर इसमें मुख्य रूप से दो प्रकार के कवि मिलते हैं ।

रीति कवि — जिन्होंने अपने युग की प्रवृत्ति के अनुरूप रीति ग्रंथों का निर्माण किया है ।

रीतिमुक्त — जिन्होंने पूर्ववर्ती परंपरा का पालन करते हुए या इस युग की प्रवृत्ति को स्वीकार न करते हुए ग्रंथों की रचना की जो किसी भी प्रकार के काव्य शास्त्रीय प्रभाव से मुक्त थे ।

रीति कवि —	चिन्तामणि	शास्त्र कवि —	चिन्तामणि
	मतिराम		मतिराम
	भूषण		भूषण
	बिहारी		देव
	देव		दास
	दास		प्रतापसाहि
		काव्य कवि —	बिहारी
			पद्मनेस
			राम सहाय
			चन्दन

रीतिमुक्त — घनानन्द
आलम
बोधा
ठाकुर
सूदन

काव्यशास्त्र की परंपरा में हिन्दी भाषा में सबसे पहला ग्रंथ जो उपलब्ध है, वह कृपाराम की हिततरंगिणी है। जिसका रचना काल संवत् 1598 वि० है।

भारतीय प्राचीन भाषाओं और उनसे विकसित उपभाषाओं तथा बोलियों के शब्दों के साथ विदेशी भाषाओं के शब्द भी ब्रज भाषा के अन्तर्गत पर्याप्त मात्रा में देखने को मिल जाते हैं। इनमें अरबी फारसी का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। इन शब्दों के ग्रहण का मुख्य कारण जैसा कि निवेदन किया जा चुका है, यहाँ के निवासियों का विदेशी मुसलमानों के साथ दीर्घकाल तक का संसर्ग। फारसी के शब्द जहाँ मुगलशासकों की भाषा होने के कारण जन-साधारण में अधिक प्रचलित हुए वहीं अरबी और तुर्की के शब्द क्रमशः अरब सौदागरों तथा आक्रमणकारी तुर्कों से ग्रहण किये गये। कतिपय अरबी शब्द फारसी के माध्यम से भी आये होंगे क्योंकि इसके अनेक शब्द उसमें सामान्य रूप से प्रयुक्त होते रहे हैं। किन्तु परिमाण की दृष्टि से इनमें फारसी शब्द ही अधिक कहे जा सकते हैं, अरबी के शब्द भी प्रचुर हैं पर तुर्की के शब्द अत्यन्त विरल। कहने की आवश्यकता नहीं कि इन तीनों ही भाषाओं के शब्द मूल और विकृत दोनों ही रूपों में ब्रज भाषा के आरंभ काल से ही इसमें प्रयुक्त होते रहे हैं। रीतिकाल तक आते-आते चूंकि मुसलमानों का आधिपत्य समग्र ब्रजभाषा-भाषी प्रदेश पर जम चुका था और अधिकांश कवि मुसलमानों अथवा मुसलमानों से सम्बद्ध आश्रयदाताओं के यहाँ अपने काव्य की रचना कर रहे थे, अतएव जन-साधारण तथा राजदरबारों में प्रचलित इस प्रकार के शब्दों का ग्रहण एवं प्रयोग करना इनके लिए कठिन नहीं था। दूसरे उस समय की परिस्थितियों से प्रभावित लोगों की विचारधारा की सही अभिव्यक्ति इन्हीं के द्वारा संभव थी। ऐसी दशा में इनका

यथास्थान प्रयोग करना उनके लिए अनिवार्य था । यही कारण है कि संस्कृत काव्य शास्त्र के आधार पर रचित होने पर भी यह काव्य इनके प्रयोग से अछूता नहीं रह सका, उसमें यत्र-तत्र पर्याप्त परिमाण में प्रयुक्त हुए हैं । वैसे इनकी विशेषता अपने-आप में यही रही है, कि उक्त भारतीय भाषाओं एवं बोलियों से इन भाषाओं की प्रकृति एवं स्वरूप के भिन्न होने होने पर भी ये इस प्रकार जमाये गये हैंकि उनके बीच में खटकते नहीं उन जैसे ही प्रतीत होते हैं । कुछ उद्धरण देखे जा सकते हैं :—

शृंगार :

1. जड़े मनि मँदिर मोतिन की चिकैं मानिक सौसे रची ।।

— पजनेस ।

भरे नहरें नग हीरन हौज चले जैत्र खिले गुलबेस ।
जमुर्रद के तमजाम तियाचदि सँदली ओढे सखी सब पेस ।
हरे घन में ज्यों सुनहरी घटा पै सुनहरी छटा छोडे दिनेस

— पजनेस प्रकाश ।

2. गार सुमार करी बेसुमार सो पीर उन्हें न तुम्हें परवाहो ।
अँगनि ते कढि के तिय एन सो आनि लगे गढि कै मरवाहो ।
वै तुम सो हित मानत है निरदै तुम नेह कहा निरवाहो ।।
जाने कहा सुकुमारन की गति आखिर गौवनि को चरवाहो ।

— 348 दशम अध्याय ।

3. बेनीप्रवीन — नवरस तरंग 22/141.

4. प्रताप साहि — व्यंग्यार्थकौमुदी /60.

5. अजब अजाब अरविन्द की आभा पर भ्रमत गजब सी न एतिक सराबी में ।

6. देव — रसविलास, तृतीय वि० 22.

7. जहर सी नैन के कहर कहार की ।।

रीतिकाल के अन्तर्गत जिन कवियों की रचनाएं मुझे सुलभ हुई और मैंने उनका अध्ययन किया वे हैं -- आलम और शेख, आलम, केशव, कृपाराम, गंग, ग्वाल, घनानन्द, चिन्तामणि, चन्द्रशेखर, जसवंत सिंह, ठाकुर, देव, तोष, नागरीदास, पजनेस, पद्माकर, बिहारी, बेनीप्रवीन, भिखारीदास, भूषण, मतिराम, रघुनाथ, रसखान, रसलीन, वृन्द, सोमनाथ और सेनापति ।

इनकी जीवनी और इनके काव्य देखने से पता चलता है कि इनके काव्यों में अरबी-फारसी के शब्द क्यों ग्रहण किये गये हैं, जिनका मुख्य कारण निम्न है :-

(1) किसी एक राजा या अनेक राजा के दरबार में रहकर किया गया काव्य,
(2) शिक्षा की भाषा फारसी रही है,
(3) मुसलमान के पीर फकीर और उनके कैाजों के बारे में किया गया वर्णन या उनके सम्मान में किया गया काव्य,
(4) कवि का स्वयं मुसलमान होना, या
(5) मुसलमानों के संपर्क में रहना प्रत्येक कवि के काव्य में कुछ शब्द अरबी-फारसी के अपने मूल रूप में ही हैं और कुछ में विकृतियाँ आ गई हैं ।

<u>मूल अरबी के शब्द :</u>

अंजीर, अंबर, अक्स, अजीब, अदब, अदम, अदा, अदालत, अनहद्द, अनीस, अबस, अबीर, अब्द, अब्बास, अमल, अमली, अमारी, अमीन, अमीर, अरब, अरबी, अलगोजा, अव्वल, असर, अदम, आदमी, आदी, आबाद, आमिल, आयत, आराम, आलम, आला, आलीजाह, आसा, इज्जतराबी, इमाम, इल्म, इल्लत, इलाज, इलाहा, इलाही, ईजार, ईमान, ईसा, उलूम, एन, एराकी, औलिया, करम, करीम, करामात, कलंदर, कलाम, कसबाती, कायम, किताब, कीमत, कुदरत, कुमैत, खाली, खास, खासा, खिलअत, खिलवत,-खाने, गदर, गनी, गनीम, गौर, जन्नत, जनाब, जवाहिर, जाये, जारी, जाल, जासूस,

जुहूर, जेब, जोहरी, तक्सीर, तजल्ली, तमाम, तरह, तलब, ताले, दफ, दलील, दीन, दुमाला, दुलदुल, दौलत, नबी, नही, नाजिर, नाल, निहायत, नुक्ता, नूर, नूरानी, बका, बखील, बदन, बरकत, बिसात, मंसब, मकान, मगरूर, (यतीम रमल वासिलात), मजाजी, मनसबदार, मनसूबा, मरातिन, मसल, मस्ती, माल, माहिरे, मीर, मीरन, मुजरा, मुतलक, मुनासिब, मुलम्मा, मुसाहिब, मुसाहिबनि, मौज, मौजूद, मौलवी, यतीम, रमल, वफा, वासिलात, सैदल, सनदी, सनद, सदा, सबील, सला, सलातीन, सलाम, सलाह, सहन, साइस, साद, साबित, सालिम, साहब, साहिबी, सलाह, सिलाह, सिलाही, सुराही, सूरत, हराम, हकीम, हद्‌द, हरम, हरीफ, हलका, हलकान, हलाल, हवाई, हवाल, हाल, हाकिम, हिम्मति, हिम्मत, हिसाब, हुस्न, हूर, हैफ, हैरत, हैवान (कुल 170 शब्द)।

मूल फारसी शब्द :

अंकुस, अंगूर, अदा, अनार, अब्र, अरब्बी, अलमस्त, आँन, आब, आब+ताब, आबदार, आबदाना, आबाद, आमद, आमदनी, आराम, आह, कजदार, कजबंद, कबूतर, कबूतरी, कमर, कमान, कस, काकरेजी, कामयाब, कारकून, कारचोबी, कारीगर, कासनी, कुन्नस, कुलंग, कूच, कूजा, खाम, खिंग, खिलवत, खूं, गंज, गजा, गलीमन, गलीचा, गिर्दी, गिरह, गिलम, गिल, गुजरान, गुनाह, गुनहगार, गुफ, गुमान, गुरदा, गुल, गुलदार, गुलाब, गुलाल, गुले,—गुलाब, गुलेशब, गैरमिसिल, गोय, चमन, चरखी, चाम, चाकर, चाकरी, चुना, चूक, चोब, चौगान, जंग, जंगल, जमादार, जमीदोज, जमुर्रद, जमेजाम, जर जरब, जरबीला, जहान, जादू, जान, जानवर, जाम, जिगर, जीन, जेर, जोर, तंग, तंबूर, तंबूरची, तनजेब, तबक, तमामी, तरहदार, ताब, तार, तास्‌तार, तावगीर, तास, तुर्फातुंग, तुंद, तुका, तूल, तूती, तूदा, दर, दरमियान, कुदर, दस्‌दर, दरकूच, दरगाह, दरगुस्त, दरदस्त (दस्तदर), दरबा, दरबार, दरवान, दस्त, दस्तगीर, दस्तूर, दहलीज, दाऊदी, दाना; दावनी, दाम, दामनगीर, दारू

दिल, दिलअन्दर, दिलदार, दीद, दीदार, दुकान, दुकानदार, दुचंद, दुर, दोस्ती, नख, नग, नाज, नादान, नाफा, नावक, निगार, निगाह, निहाल, नीमा, नील, नेक, नै, पनाह, पर, पाक, पाक-दिल, पान, पानदान, पायक, पीर, पील, पीलबान, पेचदार, पै, पोच, बंद, बंदगी, बजोर, बदनाम, बदनामी, बदमस्त, बदरंग, बदर, बदराह, बदी, बरजोर, बरजोरी, बरबाद, बलंद, बलदार, बहार, बहाल, बाजार, बाजू, बादवान, बादशाह, बाब, बारकसी, बारगह, बारीक, बाला, बीबी, बेकार, बेताब, बेदिल, बेवकूफ, मखतूल, मनी, मलंग, मायल, माही, मियाँ मियान, मीना, मुदाम, मुहचंग, मेज, मैदान, यक, यकरोज, यारि, रंगरेज, रंगरेजना, रंगामेज, रफ, रबाब, रवा, रान, राह, राहदारी, रिंद, रुख, रुमाल, रोज, लंगर, लगाम, लब, संजाब, समंद, सरासर, सितम, सितमगर, सियर, सिप्पै, सिपाह, सुबुक, सुम, सौदागर, हरगिज, हरदम, हिलाक, हदूद, कुल 240 शब्द ।

मूल तुर्की शब्द :

उजबक, कनात, करावीन, कुमक, कुली, कैंची, खातून, खान, चाक, चिक, जार, तुजुक, तुफ्क, तुफंग, तुर्क, तुर्की, तुरमती, तोप, बहादुर, बहादुरी, मुगल, सू । कुल 22 शब्द ।

पुर्तगाली — कारतूस (एक शब्द) ।

संकर शब्द :

अरबी-फारसी : अजब बहार, अदलखाने, अमलदारी, आलमगीर, आलमनवाज, आलमबादशाह, आलमपनाह, आलमपनाह सलामत, आलमशाह, आशिकजार, आशिकनवाज, इयादार, हरम खाना, हुस्नपरस्तिश, आलमखान, जवाहरहार, तबिअतदार, दावादार, नजरबंद, बैयाना, फर्शबंद, मालहम, मुबारकबाद, सफजंग, सफजंगी, इत्रगुलाबदान, इश्क चमन, इश्कतुदः, इश्कनामः, इश्क पियालः, इश्कबाग, उम्रअंदाजः, ऐबदार, कत्लबाज,

करमगुनाह, कहकमान, खबरदार, खातिरजमा, खासदान, गर्दमन्द, गरीबनवाज, अपने विकृत रूप में आये हुए संकर शब्द है । कुल 41 शब्द ।

फारसी-अरबी : अजगैब, खुशजाहिर, दिलमाहिर, नमकहलाली, पुरनूर, बदजाती, बदसूरत, बदहाल, बेशकीमत, बेहाल, बेहिजाब, बेअख्तियार, बेइंसाफ, बेकद्र, बेतकल्लुफ, बेनज़ीर, बेफिक्र, बेमेहर, बेवस्वसः, बेशक, बेशकीमत, बेहाल, बेहवास, मस्तेजाम, मस्तहाल, मेहनज़र, रंगमहल, रंगरूस, हयेसम, लबे आब, सरखाना, अपने मूल रूप व कहीं-कहीं विकृत रूप में भी आये हैं । कुल 31 शब्द ।

ध्वनि-परिवर्तन :

फारसी से हिन्दी में आने पर ध्वनियों में निम्न परिवर्तन देखने को मिलते हैं :-

(1) साधारण ध्वनि परिवर्तन — 14.

(2) विशेष ध्वनि परिवर्तन — 9.

साधारण : इनमें क़ ख़ ग़ ज़ फ़ अ़ क्रमशः क ख ग ज फ और अ में बदल गये :-

क़ > क : अरक़ > अरक, आशिक़ > आसिक, इश्क़ > इश्क, क़तार > कतार, क़ैद > कैद, क़दम > कदम, क़नात > कनात, क़बूल > कबूल, क़रार > करार, क़सम > कसम, क़ाज़ी > काज़ी, क़ाफ > काफ, क़ाफ़ि > काफि, क़ाबिल > काबिल, क़िरानसाँनी > किरानसानी, क़ुरान > कुरान, क़ुली > कुली, क़ैंची > कैंची, क़ैद > कैद, क़ैफ़ > कैफ, क़ौल > कौल, ख़ालिक > खालिक, गुलक़ंद > गुलकंद, जौक़ > जौक, तहक़ीक > तहकीक, ताक़त > ताकत, नक़ी > नकी, नक़ीब > नकीब, नाहक़ > नाहक, बक्क़ > बक्क, बेक़रारी > बेकरारी, रक़म > रकम, लाइक़ > लाइक, हक़नाहक > हकनाहक, हक्क़ > हक्क, के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

ख़ > ख : अमीरख़ान > अमीरखान, आख़िर > आखिर, आख़िरी > आखिरी, ख़ंजर > खंजर, ख़त > खत, ख़ता > खता, ख़बर > खबर, ख़बरदार > खबरदार, ख़बीस > खबीस, ख़राब > खराब, ख़रद > खरद, ख़याल > खयाल, ख़वास > खवास, ख़वासिन > खवासिन, ख़सख़ास > खसखास, ख़सूर > खसूर, ख़्वार > ख्वार, ख़्वारी > ख्वारी, ख़ाक > खाक, ख़ातिर > खातिर, ख़ादिम > खादिम, ख़ारिज > खारिज, ख़ास > खास, ख़िज़्र > खिज्र, ख़िताब > खिताब, ख़ुमार > खुमार, ख़ुमारी > खुमारी, ख़ुदा > खुदा, ख़ुदाई > खुदाई, ख़ुश > खुस, ख़ुशअदा > खुशअदा, ख़ुशदिल > खुशदिल, ख़ुशमिजाजी > खुशमिजाजी, ख़ुशरू > खुसरू, ख़ुशामदी > खुशामदी, ख़ुशी > खुसी, ख़ून > खून, ख़ूनी > खूनी, ख़ूब > खूब, ख़ेश > खेस, ख़ैबर > खैबर, ख़ैर > खैर, ख़ौफ > खौफ, तख़्त > तख्त, नाख़ुश > नाखुस, बलख़ > बलख, बख़ील > बखील, बेख़ुद > बेखुद, सख़्त > सख्त, सुख़न > सुखन, रूप में प्रयोग हुआ है ।

ग़ > ग : ग़नीम > गनीम, ग़म (ग्म) > गम, ग़रज़ > गरज, ग़रीब > गरीब, ग़रीबी > गरीबी, ग़रूर > गरूर, ग़लत > गलत, ग़लीज > गलीज, ग़ाज़ी > गाजी, ग़ाफ़िल > गाफिल, ग़ालिब > गालिब, ग़िज़ा > गिजा, ग़ुलाम > गुलाम, ग़ुलामी > गुलामी, ग़ुबार > गुबार, ग़ैरआब > गैरआब, ग़ोल > गोल, तेग़ > तेग, दग़ा > दगा, दग़ादार > दगादार, दग़ाबाज़ी > दगाबाजी, दाग़ > दाग, दिमाग़ > दिमाग, बाग़ > बाग, बाग़ी > बागी, बेग़म > बेगम, बेग़रज़ी > बेगरज़ी, सौग़ात > सौगात, के रूप में प्रयुक्त किया गया है ।

ज़ > ज : ज़ाल ज़े ज़्वाद और ज़ोय इन चारों के लिए केवल ज (जीम) का प्रयोग हुआ है ।

ज़ाल > जीम — अज़ान > अजान, इज़्ज़त > इज्जत, गज़ > गज, गज़क > गजक, ज़ंजीर > जंजीर, ज़ंजीरज़ेर > जंजीरजेर, ज़ख़्म > जख्म, ज़बर > जबर, ज़बरदस्त > जबरदस्त, ज़बराना > जबराना, ज़बाँ > जबाँ, ज़बान > जबान, ज़बानी > जबानी, ज़रदोज़ी > जरदोजी, ज़रबफ़्त > जरबफ्त, जरबाफ > जरबाफ,

ज़े > जीम : ज़रकश > जरकस, ज़रकशी > जरकसी, ज़रतार > जरतार, ज़रा > जरा (ज़रा में ज़े व ज़ाल दोनों ही को लिखने में प्रयोग होता है ।)

ज़री > जरी, ज़रीदार > जरीदार, ज़वाल > जवाल, जहाज़ > जहाज, ज़ीना > जीना, ज़ुबान > जुबान, ज़ुल्फ > जुल्फ, ज़ेर > जेर, ज़ेरदस्त > जेरदस्त, ज़ेवर > जेवर, ज़ोम > जोम, ज़ोर > जोर, ताज़ी > ताजी, तेज़ > तेज, नाज़ > नाज, नाज़नी > नाजनी, बाज़ > बाज, बाज़ी > बाजी, बाज़ूबंद > बाजूबंद, मालज़ादी > मालजादी, मिज़ाज > मिजाज, रोज़ > रोज, रोज़गार > रोजगार, वज़ीर > वजीर, हज़ार > हजार, हज़ारी > हजारी के रूप में लिखा गया है ।

<u>जोय > जीम</u> : अज़ीम > अजीम, अज़ीमुस्सान > अजीमुस्सान, काज़िम > काजिम, ज़ालिम > जालिम, ज़ाहिर > जाहिर, नज़रबाज़ > नजरबाज, नज़र > नजर, नाज़िरः > नाजिरः ।

<u>ज्वाद > जीम</u> : गज़ब > गजब, ज़िया > जिया, नब्ज़ > नबज, मौज़ा > मौजा, राज़ी > राजी, हौज़ > हौज, के रूप में परिवर्तन देखने को मिला ।

<u>फ़ > फ</u> : अरबी – कैफ़ि > कैफी, जाफ़र > जाफर, फ़ौज > फौज, वफ़ा > वफा, फ़ंद > फंद, फ़कीर > फकीर, फ़रस > फरस, फ़सादी > फसादी, फ़िदा > फिदा, फ़िराक़ > फिराक, मुसाफ़िर > मुसाफिर, सूफ़ > सूफ, सैफ़ > सैफ, हरीफ़ > हरीफ, हातिफ़ > हातिफ ।

<u>फारसी</u> – आफ़त > आफत, फ़रेब > फरेब के रूप में प्रयुक्त हुए हैं ।

<u>श > स</u> : (फारसी) में स के लिए तीन वर्ण हैं – से सीन स्वाद सीन का ही प्रयोग हुआ है :– आशिक > आसिक, इश्कनशा > इस्कनसा, इशारत > इसारत, इशारा > इसारा, ऐश > [illegible] > तास, रौशन > रौसन, शराब > सराब, शरीक > सरीक, शान > सान, शामिल > सामिल, शाइर > साइर, हब्शी > हबसी, हशम > हसम, तु० तलाश > तलास, तलाशी > तलासी, फा० आतश > आतस, आतशबाजी > आतसबाजी, आशना > आसना, आश्ना > आस्ना, कश्मीर > कस्मीर, खरगोश > खरगोस, गश्त > गस्त, गश > गस, गोश > गोस, गोशः > गोसा, गुलाबपाश > गुलाबपास, जश्न > जसन, ज़ीन पोश > जीनपोस, जोशन > जोसन, तराश > तरास, तरकश > तरकस, तरकशमय > तरकसमय, तोशक > तोसक, दरपेश > दरपेस, निशस्तगाह > निसस्तगाह, निशा > निसा, निशान > निसान, पेश > पेस, पेशकश > पेशकस, वेश > वेस, मुश्क > मुस्क, मुश्की > मुस्की,

शबीह > सबीह, शरार > सरार, शहाब > सहाब, शादी > सादी, शाक्स > साक्स, शाल > साल, शीर > सीर, शिकस्त > सिकस्त, शिकार > सिकार, शिताब > सिताब, शीशी > सीसी, शीश: > सीसा, शुम > सुम, शोख > सोख, शोर > सोर के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

(2) अल्पोच्चरित "ह" हिन्दी में आ के रूप में परिवर्तित हो गया है - जैसे - अः > आ।

अलाहदः > अलाहदा अलहदा, अरावः > अराबा, अजूबः > अजूबा, आईनः > आईना, आफ्ताबः > आफताबा, उम्दः > उमदा, किस्सः > किसा, कुर्तः > कुर्ता, कुल्लः > कुल्ला, खसखानः > खसखाना, गंजिफः > गंजिफा, गुस्सः > गुस्सा(गुसा), गोलः > गोला, चश्मः > चसमा, चिलतः > चिलतह, चिल्लः > चिल्ला, चूजः > चूजा, जामः > जामा, जीनः > जीना, जुर्रः > जुर्रन, तुर्रः > तुर्रा, निशानः > निशाना, नैजः > नैजा, परवानः > परवाना, पजावः > पजावा, बहानः > बहाना, बोजः गर > बोजागर, मक्कः > मक्का, महबूबः > महबूबाँ, मस्तानः > मस्ताना, मेवः > मेवा, रेजः > रेजा, सक्तः > सकता, सुर्मः > सुरमा, शोरः > सोरा, सूबः > सूबा के रूप में प्रयोग किये गये हैं।

कहीं-कहीं अल्पोच्चरित 'ह' का लोप भी देखने को मिला है। जैसे - अंदेशः > अंदेश। औ की प्रवृत्ति - कमीनः > कमीनौ, गोलः अंदाज > गोलंदाज, दरीचः > दरीचन, दिवारे कह कहः > दिवारे कह कह, दौरः > दौर, नार्कदः > नार्कद, परंदः > परंद, परिंदः > परिंद, बस्तः > बस्त, रिसालः > रिसाल, सब्जः > सबज, सायः बान > सायबान।

अः > ई - अलाहदः > अलाहदी, खस्तः > खस्ती, ताजः > ताजी, दरीचः > दरीची, दीवानः > दिवानी, शिकस्त > सिकस्ती।

अः आ में परिवर्तित होता है साथ में मध्य में इ का आगम भी देखने को मिलता है। जुम्लः > जुमिला, तक्यः > तकिया, बख्यः > बखिया, बागचः > बागीचा (मध्य में ई का आगम)।

अल्पोच्चरित ह का ए हो जाना — खास: > खासे, गोश: > गोसे, जनान: > जनाने, दरवाज: > दरवाजे, दुशाल: > दुसाले, पेशखान: > पेशखाने, मज: दार > मजेदार, दमाम: > दमामे, दिवान: > दिवाने, आइन: > आइने, अलाहद: > अलाहदे, इशार: > इशारे, खिजान: > खजाने, खान: > खाने, खसखान: > खसखाने, जाद: > जादे — मीरजादे, पीरजादे इत्यादि । जमान: > जमाने, तहखान: > तहखाने, तोपखान: > तोपखाने, शाहजाद: > साहजादे, शामियान: > समियाने, साद: > सादे, शकरपार: > सक्करपारे, हरमखान: > हरमखाने, शुतुरखान: > सुतुरखाने, सूब: दार > सुबेदार, सिलहखान: > सिलहखाने, हरामजाद: > हरामजादे, हवाल: > हवाले,

अ: का ऐ होना : जैसे — मुकाबल: > मुकाबलै

अ: का ओ होना : जैसे — अराब: > अराबो, इशार: > इसारो, दमाम: > दमामो ।

अ: का औ होना : जैसे — अजूब: > अजूबौ ।

कुछ विशेष परिवर्तन भी देखने को मिलते हैं —

(1) आगम,

(2) स्वर आगम, तथा

(3) व्यंजन आगम ।

आदि स्वर आगम — चमन > चिमन, जमूअ > जूमिओ, नवाज़ > नेवाज़, पशेमान > पिसेमान, फरमाना > फुरमाइ,

मध्य स्वरागम : हलन्त वाले ध्वनियों में स्वर ध्वनि आ गई है । जैसे — अक्ल > आकिल, अक्ल, अकिल, अक्बर > अकबर, अद्न > अदन, अफ़्शा > अफसाँ, अफ़्सर > अफसर, अफ़्सोस > अफसोस, अल्मस्त > अलमस्त, अस्ल > असील, अस्लम > असलेम, अस्बाब > असबाब, अस्वार > असवार असबार,

अह्दी > अहदी, आश्नाई > आसनाई, आस्मान > आसमान, इक्बाल > इकबाल, इक़्राम > इकराँम, इख़्लास > इखलास, इमुरोज > इमरोज, इल्बास > इल्बेस, इल्म > इलम, इलमै, इस्लाम > इसलाम, उज्र > उजुर, उम्र > उमिर, कत्ल > कतल, क़स्बः > कसब, कश्मीर > कसमीर, कह्र > कहर, किश्मिश > किसमिस, किश्मिशी, > किसमिसी, खस्म > खसम, खुल्क़ > खलक, खुशबख़्ती > खुशबखतिया, [illegible] खुशहाल, > खुसिहाल, गंजबख़्श > गंजबक्स, ज़र्द > जरद, जह्र > जहर, जिन्हार > जिनहार, ज़िक्र > जिकिर, जुल्म > जुलम, जुलुम, तक़्सीर > तकसीर, तक्रार > तकरार, तख़्त > तखत, तद्बीर > तदबीर, तब्ल > तबल, तस्लीम > तसलीम, तह्रीर > तहरीर, दफ़्तर > दफतर, दस्तख़त > दसखत, दह्शत > दहसति, दुन्या > दुनिया, दुनी, > दुश्मन > दुसमन, पाज़ेब > पाइजेब, पापोश > पाइपोश, पमाल > पाइमाल, पाइमाली, पिश्वाज > पिसवाज, फ़ज्र > फजर, फ़त्ह > फतुह, फ़र्मान > फरमान, फ़ह्म > फहमे, बदख़्शाँ > बदखशान, बर्क़ंदाज > बरकनदाज, बह्स > बहस, बुल्बुल > बुलबुल, मक़्बूल > मकबूल, मख़्मल > मखमल, मख़्मली > मखमली, मग़रूर > मगरुर, मग़्रिबी > मगरबी, मज़्कूर > मजकूर, मजनूँ > मजनु, मज्बूत > मजबूत, मज्लिस > मजलिस, मत्लब > मतलब, मद्होश > मदहोस, मस्नद > मसलंद, मसुनद, महबूब > महबूब, मह्रम > महिरम, महरम, मह्शर > महशर, मिल्क > मिलक, मुंशी > मुनसी, मुचल्का > मुचलका, इस तरह कुल 145 शब्द मध्य स्वरागम के देखने को मिले ।

अन्त स्वरागम : अस्ल > असीले, उम्र > उमर, उमरा > उमराउ, उसूल > उसुले, कस्रत > कसरति, कलाम > कलामै, कह्र > कहरी, कीमत > किमति, खबर > खबरि, गद्र > गदर, जुराफ़ > जुराफा, देव > देवा, नज़र > नजर, बला > बलाइ, बह्र > बहरि, मग़रूर > मगरुरि, मसल > मसला, मुराद > मुरादा, रजा > रजाइ, के रूप में व्यवहृत हुए हैं ।

आदि व्यंजन आगम : गुर्ज > ग्गुरजनि, दीवनी > जिदीवने के रूप में व्यवहृत हुए हैं ।

<u>मध्य व्यंजन आगम</u> : अकबर > अकब्बर, अक्ल > अक्कल, अजूब > अजब्ब, अंमारी > अंबारी, रयाकी > यक्की, कमर > कम्मर, कलाबतून > कलाबत्तन, कीमत > किम्मति, कुल > कुल्ल, गजब > गजब्ब, गर्कः > गरक्कि, गर्क गिलः > गिल्ला, गुर्ज़ > गुरुज्जे, जबर > जब्बर, दिलेर > दिलवारे, पजामः > पायजामा, पाअंदाज > पायनदाज, बदी > बद्दी, बहाल > बहल्ला, बेहद > बेहद्द, मुकाबा > मुक्कबा, मुश्किल > मुसक्किल, रदी > रद्दी, रोजरोज > रोज ही रोज, वजीर > उज्जीर, सलाह > सल्लाह, हलब्बी > हलब्बी, हुनर > हुन्नर के रूप देखने को मिले ।

<u>अन्त व्यंजन आगम</u> : अदानी > अदानिया, अफ़्जूं > अफ़्ज़ूद, अदा > अदाह, अरबी > अरबीन, आमद > आवदनी, उमरा > उमराव, कद्द > कद्दन, कद्रदाँ > कदरदान, कलक > कलकान, कलाम > कलामिनी, ख़सम > खसमाना, खास > खासन, खुशअदा > खुशअदाह, खुशबू > खुशबोही, जक़द > जर्कदत, जलाल > जलुलत, तख्त नशीं > तखत नसीन, तसद्दुक़ > तसदुदुकता, ताजी > ताजिया, तुर्शः > तुरशना, तुर्क > तुरकिनि, दफ > दफेर, दरिया > दरियाव, दरयाव, दरय्याव, दस्तः > दस्ताने-करि, नवाज़ > नेवाजत, नशीं > नशीनम्, परवा > परवाहि, पश्म > पश्मीनन, पोयः > पोइस, फना > फनाह, फराख > फरागत, बख्श > बक्सत, बाजिंद > बाजीनदार, बू > बोहन, बेपर्वा > बेपरवाही, बेपरवाह, मजनः > मजन्नस, मज्मूअः > मजमूये, मेह्रबानी > मेहरबानगी, मुरस्सः > मुरस्सेकारी, रफ़ू र या रफ़ू अ > रफ्फयत, रिंद > रिंदगी, रुख > रुखाये, रुजूअ > रुजुक, सब्र > सबूर, शरीक > सरीकिनि, हक्क > हकाहक के रूप में प्रयुक्त हुए है ।

लोप के उदाहरण भी पर्याप्त देखने को मिले ।

<u>आदि स्वर लोप</u> : इसमें निम्न शब्द दृष्टिगत हुए है — अयाल > याल, कियामत > क्यामत, खयाल > ख्याल, जवान > ज्वान, जवाब > ज्वाब, पयादः > प्यादे-प्यादन, पियालः > प्याले-प्याला, मियान > म्यान, सवाल > स्वाल, सियाह > स्याह, सियाही > स्याही के रूप में प्रयुक्त हुए है ।

<u>मध्य स्वर लोप</u> : अजब > अज्ब, अखीर आखर, आखिर > आखर, उत्फ़ > उतक, खलक > खल्क, खुशहाल > खुस्याल, खुशहाली > [illegible], खुस्याली, [illegible] जैयिद > जैयद, तअज्जुब > तज्जुब, तकीअ > तका, तीरंअदाज > तीरंदाज, [illegible] दरमियान > दरम्यान, मुआफिक > माफक, माफिक, मुसव्विर > मुसव्वर, रजज़ > रज्ज, रवाअः > रद, रुक्अः > रुका, रुक्का > रुक्क, लाजिम > लाजम, सिफ़त > सिफ्त के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

<u>अन्त स्वर लोप</u> : सनम > सनम् ।

<u>आदि व्यंजन लोप</u> : अफसोस > सोस, दगाबाजी > बाजी के रूप में ।

<u>मध्य व्यंजन लोप</u> : अआज > अगाज, अल्लाम > अलाम, इज्जत > ईजत, उम्मीद > उमीदै-उमेद, एहतिमाम > इतमाम-इतिमान, कज़्ज़ाक़ > कजाकु, कज़्ज़ाकी > कजाकी, कद्देआदम > कदआदम, कस्साब > कसाइ, खुशहाल > खुसाला, जमानतदार > जमान्दार, ज़िंदगी बख्श > जिंदबक्स, ताजियानः > ताजन, तर्रार > तरारे, तोशाखाना > तोसेखाने, दल्लाल > दलाल, दावात > दोत, नज्दीक > नजीकहि, नशशः > नसा, नायब > नेब, फर्माबरदार > फरमार, फर्राश > फरास, बदख्वाह > बदखाह, ब्लगार > बगार, मज्हब > मज्ब, मस्लहत > मसलत मसलति, मस्जिद > मसीत, महल (ल्ल) > महल-महलन, महलनि, मुआफ > माफ, मुक्कैश > मुकेस, मुफ़्लिस > मुफिस, मुहिम्म > मुहिम, मुरस्सा > मुरसा, मुतसद्दी > मुसद्दी, मुशाज्जर > मुसजर, रंग बरंग > रंग रंग, रद्द > रद, रद्दी > रदासे, रब (ब्ब) > रब, लक्का > लकी, सक्का > सका, सर्राफ > सराफ, सुन्नत > सुनति, हक्क > हक, हम्माम > हिमाम, हमायल > हमेल हो गया है।

<u>अन्त व्यंजन लोप</u> : आनक > आ, अर्जा > आ, आलीजाह > आलीजा, कुहाम > कूहर, कोताह > कोता, जमूरक > जमूरे, जुल्कर्नैन > जुल्कर्न, तस्बीह > तस्बी, ताब > तौ, नवाजिश > नवाजा, पैकानी > पैक, फौरन > फौरी, बेआब > बेआब, बोहदः > बोह, मसखरगी > मसखरी, मिल्कीयत > मिलकिया, रंजिश > रंज रंज, शहादत > सहादी, हलाकत > हलाक, हैबत > हेबा हो गया है।

विपर्यय – स्वर व व्यंजन दोनों तरह के विपर्यय देखने को मिले —

(1) स्वर विपर्यय : असली > असील, अजीमत > अजमति, कलाबतू > कलाबुत, कलाम > कलमा, काहिल > काहली, गियार > गयारी, चादर > चदरा, जिरिह > जिरही, नवाजिस बहरियः > बहीर, हाल > हला के रूप में मात्रा विपर्यय दिखाई देता है ।

(2) व्यंजन विपर्यय : अव्वल > अवलम, आतशबाजी > आसतबाजी, इश्के पेचाँ > आक्सपेंचा, कुफुल > कुलुफ, कुहल > ~~कुल्ह~~, कुल्हली कुल्लह के रूप में ।

(3) समास विपर्यय : में खाकेपा > पायखाक, खासोआम > आमखास, आमखास, पयादः पाई > पाइपयादे, मस्ते शराब > सराबमस्त, रफ्तः होश > होशाम रफ्त प्रयुक्त हुए हैं ।

मात्रा भेद :

ह्रस्वीकरण की प्रवृत्ति भी निम्न शब्दों में देखने को मिली । अर्बा > अर्ब, ~~अजार~~ आज़ार > अजार, आदाब > अदाब, आबखोरा > आबखोर, आबशार > अबसारे, आवाज > अवाज, आस्तीन > असतीन, आशनाई > असनाइ, आहू > अहू, इलाहा > इलाह, खुदाया > खुदाय, चालाकी > चलाकी, जाब्ता > जबद, जेबा > जेब, जेबादार > जेबदार, तालिम > तलीम, नाकारी > नकारी, नापाक > नपाक, नाशपाती > नासपाति, बाज़ार > बजार, बारगी > बरगी, बारगीर > बरगीर, माहताब > महताब, करामाती > करामति, कही > कहि, खलीकः > खलिक, जुदाई > जुदाइ, दीवान > दिवान, नीलोफर > निलोफर, मीरजा > मिरजा, मुद्दई > मुद्दइ, शाही > साहि, दूरबीन > दुरबीन, बारूद > बरूद, तुफैल > तुफेल । औ > ओ : तौर > तोर, रौगन > रोगन, रौशनी > रोशनी, रौशनाई > रोसनाइ, सौसन > सोसनी, हामिल > हमाल, हौल > होल के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं ।

<u>दीर्घीकरण</u> : का उदाहरण भी कुछ मिले है । जैसे – अरबी > आरबी, कशिदा > कसीस, कुब्ब > कूब, गुंचा > कूंचे, चुना > चूं, जिहाज़ > जिहाजधानी, ताकि > ताकी, दालान > दाला~~निशानी~~, दाल(ल्ल) निशानी > ~~दल्ल~~निसानी, पेंच > पेच, बदफैल > बदफैले, मुकाते > मुकातै ।

<u>समीकरण</u> :

<u>पुरोगामी</u> – इस परिवर्तन का रूप निम्न शब्दों में देखने को मिला – आमेज > आमेजे, आमेजन > आमेजना, एलची > एलच, कद्दू > क्कद, तवेल > तबेले, नजील > नजीली, नैजः > नेजे, पेश खेम > पेशखेमा, फिक्र > फि किर, मुल्क > मुलुक, सुमार > सुमारु, हजारहा > हजारह, हलाक > हलाका, हुक्म > हुकुम ।

<u>पश्चगामी समीकरण</u> – इसमें कश्ती > किस्ती, किवाम > किमाम, गिरिह > गिरहबाज, गिरीबान > गिरबान, चिकिन > चिक्न, जियादः > जादा, गिरिह > गिरह, जुलूस > जलूस, जुल्मत —, जुलुमात —, जाहिर > जाहर, तकाबुल > तकाबल, तफावुत > तफावत, दामाद > दमाद, नदिर > नादर, नाजुक नाजक, पेशानी > पिसानी, बुशारत > बसारत, मरातिब > मरातब, मशरुअ > मुसरु, मसुरु, सादिक > सादक, कत्लेआम > कतलाम, मेहमान > महमान, मेहराब > महराब, रिहल > रहल, सरकश > सक्कस, सरदारी > सिरदारी, के रूप में परिवर्तन देखने को मिला ।

<u>विषमीकरण</u> :

<u>पुरागामी</u> – गिरिफ्त > गिरफ्तै, गुलला > गुलेला, चुगुल > चुगुल, दमामा > दमल, दुरुस्त > दुरस्त, बकवाद > बकवादु, बुलंदबलंद > बखतबुलंद ।

<u>पश्चगामी</u> : आहन > अहिन, आशिकी , कुसूर > कसुर, गुरुर > गरुर, ~~कुसूरशिकायत~~ नुजूम > निजूम, नुजूमी > निजूमी, फुतूर > फितूर, मरातिब > मुरातब, हुजूर > हजूर हजूरि ।

अघोषीकरण – घोष ध्वनियों के स्थान पर अघोष ध्वनि का आ जाना – जैसे – चिराग् > चिराक, दिमाग् > दिमाक, शिगाफ > काफ, दिमागदार > दिमाकदार, अबदाली > अबताली, कस्द > कस्त, कवाइदः > कवाइत, पादशाह > पातशाह, पादशाही > पातसाही, फस्द > फस्त, मदद् > मदति, आफ्ताब > आफताप, किमख्वाब > कीमखाप, कीमखापी, जाब्ता > जापता, चोबदार > चोपदारी, तरकीब > तरकीप, बदपरहेज > पदपरहेज हो जाना । ग का क और ब का प होना ।

महाप्राणीकरण – अल्पप्राण ध्वनियों का महाप्राण ध्वनियों में बदल जाना । असपी > असफी (प के स्थान पर फ), कौम > खोम, चाबुक > चाभुक, फ़िद्मत फ़िदमत, कत्तर > खत्तर, कत्तरवारे > खत्तरवारे, मज़ाक > मजाखे, मुबारक > मुबारख, रसद > रसधि, वरक् > वरख, सबलत् > सबलथ, हमावर > समहरि, संदूक > सिंदुख, और हर्फः > हर्फ के रूप में परिवर्तन होना ।

अल्पप्राणीकरण – ख > क, फ > प, द > त होने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है । जैसे – दोज़ख > दोजक, बक्श > बक्से, बख्शिश > बखेसे, बलख़ > बलक, सीख़ > सीक, फौलाद > पोलाद, अफ़्सोस > अपसोस, फलीद > पलीद, फ़ानूस > पानस हो जाता है ।

संघीकरण के भी कुछ उदाहरण मिलते हैं । जैसे – ज़ोरआवर > जोरावर, मशहूर > मसूर, मुद्दई > मुद्दी, रईयत > रैयति रैयति के रूप में लिखा जाना ।

अनुनासिकता – के उदाहरण भी हैं । जैसे आन > आँन, आराम > आँराम, आस्मान > आसमाँन, कूच > कूँच, दाना > दाँने, दुनयादार > दुनियाँदार, मेह्रबान > महरबाँन, सरहद > सरहँदा, कशिश > कसीसें, अफ़सोस > अपसोसें फारसी में तथा कत्लेआम > कतलाँन, लौज > लौंज, सलामत > सलाँमत, हैरान > हैराँन हो जाना अरबी में देखने को मिलता है ।

स्वन का परिवर्तन – इस ध्वनि में स्थान भेद से निम्न परिवर्तन दिखे –

(1) अलिफ के बाद ऐन आने पर हमेशा आ होता है :–
जैसे – आ'रब > आरम्भ, आ'लम > आलम, आ'ला > आले हो गये ।

(2) मध्य में ऐन आने पर समीपवर्ती व्यंजन में आ की मात्रा जुड़ जाती है । जैसे – मश् अल > मसाल, शमअदान > समादानु, हक़्तआला > हक्कताला हो गये ।

(3) अन्त में ऐन आने पर भी आ की मात्रा हो गई । जैसे – जम् अ > जमा, तमअ > तमा, नफ़् अ > नफा हो जाना ।

(4) कुछ स्थान पर ع ऐन का प्रयोग आ की मात्रा के रूप में ही हुआ है । जैसे – जा'फर > जाफर, जा'फरानी जाफरान, ता'रीफ > तरीफ (ऐन का लोप), ता'लीम > तालीम, ता'बीज > तबीज (ऐन का लोप), दा'वत > दावत, दा'वा > दावा, मा'लूम (समीकरण), > मालिम, वा'दः > उबादो (आदि स्वरागम) हो जाना ।

(5) ऐन का ऐ हो जाना । जैसे – इस्ते'माल > इस्तैमाल व फे'ल > फैल हो जाना ।

(6) कहीं-कहीं ऐन का लोप भी देखने में आता है – जैसे – इनुआम > इनाम, जमाअत > जमात हो जाना ।

कुछ स्थान पर ध्वनि परिवर्तन ब्रजभाषा के अनुरूप हुआ है । जैसे बहु० वचन बनाने के लिए अन्त में न लगाने की प्रवृत्ति। अलगारों, तोहफा, मर्दः, मर्द का अलगारन, तोफन, मरदन, लिखना । अन्त में इन प्रत्यय की भी प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है । जैसे – अहदी > अहदिनि, खवास > खवासिन, खिलवत > खिलवतिन, जुल्फनि > जुल्फनि, महल > महलनि आदि । बहुवचन बनाने में अन्त में ए ऐ ओ और औ कर देने की प्रवृत्ति भी आम है । जैसे – किला का किले और इसी प्रकार बंदा, का बंदे, मुरब्बा का मुरब्बे, चादर का चादरै, पेशकश का पेसकसै तथा महबूब का महबूबों, मर्द का मरदौं तथा मरदौ होना यार का यारौ हो जाना ।

कुछ शब्दों में अन्त में इकारान्त की प्रवृत्ति भी दृष्टिगत है । अज्मत > अजमति, अदूल > अदली, आलमगीर>आलमगीरी, करामत> करामति, के क्रम में लिखा जाना । इस प्रकार के करीब 21 शब्द दिखे ।

कहीं-कहीं ए को अ में और अ को ए में बदल दिया गया है । अ और ऐ के बीच भी परिवर्तन दिखते हैं ।

आ का ए व ऐ में बदल जाना । जैसे — किताब को कितेब, जुबा का जुबे, तमाशा का तमाशे । कहीं इ>अ में बदलता हुआ भी दिखता है । इख्तयार का अख्त्यार, इलाह का अलह आदि ।

<u>य > इ</u> : य का इ में व इ का य में परिवर्तन भी इक्का दुक्का है । खुश्यः का खुसी, तगय्युर का तगीर, विलायत का विलायती लिखा जाना ।

<u>इ > य</u> — अजायब का अजाइब व लाइक का ~~[illegible]~~ लायक लिखा जाना ।

इसके साथ कुछ व्यजनों में भी परिवर्तन दिखते हैं । ~~इसके साथ कुछ व्यजनों में भी परिवर्तन दिखते हैं~~ । जैसे र के स्थान पर ल, व ल के स्थान पर र होना ज और द भी एक दूसरे का स्थान लेते हुए दिखते हैं । ज के साथ त का भी स्थान परिवर्तन हुआ है । कुछ परिवर्तन ये भी हैं — द > य, न > र, द > र, ब > य, य > ल, इ > य, व > उ, व > औ, व > ब, ब > व के उदाहरण कुछ ही मात्रा में है । म > ब, ब > म ।

भिन्न वर्तनी के भी उदाहरण मिलते हैं । औरंग का अवरंग लिखना ।

<u>उ > ओ</u> : ऊ > ओ, ऊ > औ, ओ > उ का उदाहरण भी मिलते हैं ।

कुछ परिवर्तन बे नियम भी हुए हैं, जिनको एक अलग श्रेणी में ही रख दिया है ।

फूलों के 8, फलों के 6, मेवों के 2, देश के नाम 14, जाति के नाम 16, बादशाह या राजा के लिए 23 शब्द, मुस्लिम नाम 27, शरीर के

अंगों के नाम 30, धर्म के 49, ईश्वर के 13 नाम आये हैं । गाली के 17, जेवर के 12, शिक्षा के 7, वाद्य के 11 युद्ध के 7, कवच के लिए 4, सेना के लिए 13, शस्त्र के लिए 44, पताका के लिए 5, रंग के कुल 23 शब्द, रोग व दवा के 10, सम्बन्ध में पुत्र व दामाद का जिक्र है । व्यवसाय में 62 नाम आये हैं । खेल के 9 शब्द । खाद्यपदार्थ 13, जानवर व पक्षी 20 शब्द, अधिकारी के लिए 16, वस्त्र के नाम 20, कपड़ों के भेद में 35 प्रकार, बर्तन 14, शामियाना 10, सेवक के लिए 25 शब्द, मणिमोती के लिए 8, हाथी से संबंधित 8 व 2 शब्द रंग के लिए, घोड़े के लिए 31, भवन या मकान 27 शब्द, उपाधि 20 शब्द, शृंगार प्रसाधन 7, प्राकृतिक वस्तु के लिए 23 शब्द, ओढ़ने बिछाने के कपड़े तथा तत्सम्बन्धी सामान के 17, जहाज से सम्बन्धित 5 शब्द, शिष्टाचार के लिए 6 शब्द आये हैं ।

बार प्रत्यय : के लगभग 40 शब्द ।

बरदार प्रत्यय केग 10 शब्द ।

जादा प्रत्यय के 11 शब्द । जादः को स्त्री० बनाकर 5 शब्द बने हैं ।

गर प्रत्यय के 5 शब्द तथा गार प्रत्यय के 2, गीर प्रत्यय के 5 खानः या खाना प्रत्यय जोड़ कर कुल 13 शब्द ।

अर्थ : अर्थ संकोच, प्रसार व परिवर्तन के उदा० भी प्राप्त हैं । अर्थ-संकोच के 47 शब्द, अर्थ प्रसार के 103, अर्थ परिवर्तन के 26 शब्द मिले ।

मुहावरे - जीवित भाषा के प्राण मुहावरे होते हैं । इनके द्वारा भाषा की सजीविता में वृद्धि होती है । भाषा को समृद्ध सम्पन्न एवं प्रभावशाली बनानेवाली विभिन्न शक्तियों में मुहावरे का अपना विशिष्ट स्थान है । शब्द की तीनों शक्तियों - अभिधा, लक्षणा और व्यंजना पर आधारित यह अभिव्यक्ति प्रकार शब्द या वाक्यांश के माध्यम से अभिव्यक्ति को एक अनूठापन एक तीखा चुटिलापन एवं मार्मिकता प्रदान करता है । फारसी मुहावरे का शुद्ध रूप से प्रयोग न के बराबर मिलता है, बल्कि हिन्दी मुहावरे के कुछ शब्दों को फा० अ० के शब्दों द्वारा बदल दिया गया है

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. रीति काव्य की भूमिका : नगेन्द्र
2. काव्यशास्त्र का इतिहास : भगीरथ मिश्र
3. हिन्दी रीति साहित्य : भगीरथ मिश्र
4. हिन्दी साहित्य कोश : भाग-1 : धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान संपादक),
   ब्रजेश्वर वर्मा
   धर्मवीर भारती
   रामस्वरूप चतुर्वेदी
   रघुवंश (संयोजक) ।
5. घनानन्द और स्वछन्द काव्यधारा : डा० मनोहर लाल गौड़,
   नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
6. रीतिकालीन कवियों का काव्य-शिल्प : ले०डा० महेन्द्र कुमार
7. साहित्य कोश : भाग-2.
8. रीतिकाल के वस्त्राभूषण : डा० लल्लन राय
9. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास : डा० नगेन्द्र
10. हिन्दी साहित्य का अतीत : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
11. शृंगारावली : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
12. अरब व हिन्द के ताल्लुकात : मौ० सुलेमान हादवी
13. चतुर्दश भाषा निबन्धावली : शिवपूजन सहाय
14. पर्सियन इनफ्लूएन्स आफ हिन्दी : डा० हरदेव बाहरी
15. हिन्दी मुहावरे : डा० प्रतिमा अग्रवाल : एम०ए०, डी०फिल्
16. अद्यतन हिन्दी शब्दकोश :
17. ए न्यू हिस्ट्री आफ इंडिया : ईश्वरी प्रसाद
18. बद्रनाह का उर्दू-हिन्दी शब्दकोश

19. मध्यकालीन भारत : भाग- 1, 2, 3 : सं० डा० इरफान हबीब
20. नागरी प्रचारणी पत्रिका, वाराणसी
21. मध्यकालीन भारत : डा० ईश्वरी प्रसाद

आधार-ग्रन्थ-सूची

1. आलम केलि, आलम और शेख, सं० लाला भगवानदीन, प्र० उमाशंकर मेहता, रामघाट, काशी, सं० 1979, प्र०सं० ।

2. आलमकृत माधवानल काम कंदला, आलम, सं० डा०रामकुमारी मिश्र, प्राध्यापिका-हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, प्र०डा०रत्नाकुमारी, स्वाध्याय संस्थान, विज्ञान परिषद् भवन, प्रयाग, सन् 1982.

3. कवित्त रत्नाकर, सेनापति, सं० पं० उमाशंकर शुक्ल, भू०पू०रीडर, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद । प्र० हिन्दी परिषद् प्रकाशन, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्र०सं० 1936 तथा छठा सं० 1971 ई० ।

4. (आचार्य) केशवदासकृत रसिक प्रिया का प्रिया प्रसाद तिलक, आ०केशवदास, टीकाकार-विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, ज्ञानवापी, वाराणसी, प्र०सं० सं० 2015 तथा द्वि०सं० 2024 वि०.

5. केशव ग्रन्थावली, खंड-2, सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिन्दी वि० काशी विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्र० हिन्दुस्तानी एकेडेमी उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, प्र०सं० सं० 1966 तथा द्वि०सं० 1959 वि० ।

6. केशव ग्रन्थावली, खंड-3, सं०तथा प्र० वही ।

7. कृपाराम ग्रन्थावली, कृपाराम, सं० पं० सुधाकर पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सं० 2026 वि० प्र०सं० ।

8. गंग कवित्त, गंग कवि, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र एवं बटे कृष्ण, ना०प्र०सभा, वाराणसी, सं० 2017 वि०, प्र०सं० ।

9. ग्वाल रत्नावली(महाकवि), ग्वाल, ले० कवि किंकर, भारतवासी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद, सं० 2019 वि०, प्र०सं० ।

10. ग्वाल कवि, ग्वाल, काव्य संकलन- प्रभुदयाल मित्तल, सं० 2019 वि० ।

11. घनानन्दरत्नावली, घनानन्द, संकलनकर्ता-कवि किंकर, मु०वप्र० भारतवासी प्रेस,

12. चन्द्रशेखर कृत हम्मीरहठ, चन्द्रशेखर, सं० जगन्नाथदास बी०ए० (रत्नाकर), काशी ना०प्र०सभा ।

13. ठाकुरशतक, ठाकुर, चरखारी निवासी श्रीयुत बाबू काशी प्रसाद (संगृहीत), काशी भारत जीवन प्रेस, 1961.

14. दूषण उल्लास, कवि चिन्तामणि तथा कवि रघुनाथ, सं० गोविन्द द्विवेदी, शोध सहायक, हिन्दी विभाग, सागर विश्वविद्यालय, प्र० बुन्देली पीठ प्रकाशन, हिन्दी विभाग, सागर वि०वि० (म०प्र०) ।

15. देव ग्रंथावली, महाकवि देव, डा०पुष्पारानी जायसवाल, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद तथा नागरी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद ।

16. देव ग्रन्थावली, महाकवि देव, सं० लक्ष्मीधर बाजपेयी, (मालवीय) नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, (चन्द्रलोक जवाहरनगर), 1967, प्र०सं० ।

17. शब्दरसायन, महाकवि देव, सं० डा०जानकी नाथ सिंह, मनोज (बी०ए०आनर्स), एम०ए०डी०फिल०, लेक्चरर लखनऊ विश्वविद्यालय, सं० 2014, तृ०सं० ।

18. नव रस तरंग, महाकवि बेनीप्रवीण, सं० कृष्ण बिहारी मिश्र, प्र० प्राचीन कवि-माला कार्यालय, काशी, 1925 प्र०सं० ।

19. नागेरीदास ग्रन्थावली, प्रथम खंड, नागरीदास, सं०मंडल- कृष्णदेवप्रसाद गौड, हरवंशलाल शर्मा, करुणापति त्रिपाठी, सुधाकर पाण्डेय, भोलाशंकर व्यास, शिवप्रसाद मिश्र (संयोजक) सं० डा०किशोरीलाल गुप्त, ना०प्र०सभा, वाराणसी, सं० 2022 वि० प्र०सं० ।

20. पजनेशप्रकाश, पजनेस, सं० बाबू श्रीकृष्ण वर्मा, प्र० काशी भारत जीवन यंत्रालय में प्रकाशित, बनारस सिटी ।

21. पद्माकर ग्रन्थावली, पद्माकर, सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, प्र० ना०प्र०सभा, काशी, सं० 2016, प्र०सं० ।

22. बिहारी सतसई, महाकवि बिहारी, देवेन्द्र शर्मा इन्द्र, एम०ए०, हिन्दी विभाग, श्यामलाल कालेज, दिल्ली, प्र० विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, सन् 1978, नवम् सं० ।

23. बोधा ग्रंथावली, बोधा कवि, सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, ना०प्र०सभा, काशी, सं० 2031 वि०, प्र०सं० ।

24. भिखारीदास ग्रंथावली, भिखारीदास, सं० वि०प्र० मिश्र, प्र० ना०प्र०सभा, वाराणसी, सं० 2013 वि०, प्र०सं० ।

25. भिखारीदास ग्रंथावली, द्वितीय खंड, सं० वि०प्र० मिश्र, प्र० ना०प्र०स०, सं० 2014 वि०, प्र०सं० ।

26. भूषण ग्रन्थावली, भूषण कवि, सं० एवं टीकाकार – स्व० राव राजा डा० साहित्य वाचस्पति पं० श्यामबिहारी मिश्र, एम०ए०डी०लिट् और राय बहादुर साहित्यवाचस्पति पं० शुकदेव बिहारी मिश्र, बी०ए०, प्र० ना०प्र० सभा, काशी, सं० 2005, षष्ठ सं० ।

27. मतिराम ग्रंथावली, मतिराम, स्व० कृष्णबिहारी मिश्र व स्व०ब्रजकिशोर मिश्र, प्र० ना०प्र०सभा, काशी, सं० 2021 वि०, प्र०सं० ।

28. रसखान रत्नावली, रसखान, सं० डा०भवानीशंकर याज्ञिक, हि०सा०सम्मेलन, प्रयाग, प्र० श्रीगोपालचन्द्र सिंह ।

29. रसलीन ग्रन्थावली, सैयद गुलामनबी "रसलीन", सं० सुधाकर पाण्डेय, ना०प्र०सभा, वाराणसी, सं० 2026 वि०, प्र०सं० ।

30. वृन्द ग्रंथावली, कविवर वृन्द, सं०डा०जनार्दनराव चेलेर, एम०ए०(हिन्दी/संस्कृत), पी०एच०डी०, हिन्दी विभाग, श्री वेंकटेश्वर वि०वि० तिरुपति(आन्ध्र), विनोद पुस्तक मन्दिर, सन् 1971, प्र०सं० ।

31 सोमनाथ ग्रन्थावली, प्र०सं०, सोमनाथ, सं० सुधाकर पाण्डेय, ना०प्र०सभा, काशी, सं० 2029, प्र०सं० ।